Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AYURVEDA KA VAIGYANIK ITIHAS

1971

G K U

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

amaj Foundation Che

ain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1971
57
23

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

आयुर्वेदमहामण्डलका

षष्ठ–अष्टम् वार्षिकविवरण

सं० १६७१ वै०

079419

आयुर्वेदका वार्षिक इतिहास

कलकत्ते के

षष्ठ वैद्यसम्मेलनमें

माघ कृ० ११ सं० १६७१ को स्वीकृत।

सम्पादक

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य,

मन्त्री, आयुर्वेदमहामण्डल, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *
पुस्तक की संख्या ......
पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या ११०८४
पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रीधन्वन्तरये नमः ।

आयुर्वेद महामण्डलका

अष्टम् वार्षिक विवरण ।

ब्रह्मदक्षाश्विदेवेश भरद्वाज पुनर्वसु ।
हुताशवेश चरक प्रभृतिभ्यो नमो नमः ॥

माननीय सभापति प्रतिनिधिगण और उपस्थित सज्जन महोदय,

आज वैद्यसम्मेलनकी स्थायीसमिति (आयुर्वेदमहामण्डल) के आठवें किन्तु सम्मेलनके वार्षिक अधिवेशनोंके हिसाबसे छठे वर्षका कार्यविवरण आपकी सेवामें उपस्थित किया जाता है । गतवर्ष परीक्षार्थ रिपोर्ट तैयार करनेमें इस बातका ध्यान रखा गया था कि जहाँ तक हो सके कार्यविवरण इस ढङ्गसे लिखा जाय कि उसमें वैद्यसम्मेलनकी स्थायीसमितिके साल भरके कामोंका वर्णन तो विदित ही हो; किन्तु यह भी मालूम हो सके कि इस समय आयुर्वेदकी स्थिति कहाँ पर है और उसके सैनिक कहाँ पर क्या काम कर रहे हैं । अर्थात् इससे आयुर्वेदके वार्षिकइतिहासका पता लगे । देखते हैं कि वह ढङ्ग लोगोंको बहुत पसन्द आया है । जिसने देखा है उसने प्रायः प्रशंसा की है और कहा है कि यह ढङ्ग तो अन्य देशव्यापी सभाओंके लिये भी अनुकरणीय है । बात भी एक तरहसे ठीक मालूम पड़ती है । जिस सभाका सम्बन्ध सम्पूर्ण देशसे है, उसकी रिपोर्टको लोग इसी चावसे देखना चाहते हैं कि इस ढङ्गका काम भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें किस रूपसे हुआ है । आयुर्वेदमहामण्डलका यह वार्षिक कार्यविवरण आयुर्वेदसम्बन्धी वार्षिक डाइरेक्टरीका काम देसकता है । यही नहीं वैद्यसम्मेलनके साथ आयुर्वेद-विद्यापीठ भी है जिसकी रचना आयुर्वेदकी युनिवर्सिटीके ढङ्ग पर हुई है । युनिवर्सिटियोंमें प्रतिवर्ष कैलण्डर निकला करते हैं, हमारे आयुर्वेद-विद्यापीठका यही कैलण्डर भी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब है किन्तु आयुर्वेदमहामण्डल और आयुर्वेद-विद्यापीठका कार्य ज्यों ज्यों विस्तृत होता जाता है और ज्यों ज्यों उसका काम लोगोंमें प्रियता और प्रभाव जमाता है त्यों त्यों अन्य कार्य सञ्चालन करते हुए इस प्रकारकी रिपोर्ट तैयार करनेका काम विकट और अधिक समय सापेक्ष्य होता जा रहा है। इस कार्यकी उपयोगिता बढ़ानेके लिये यह आवश्यक है कि इसका आयोजन साल भर बराबर होता रहे। आयुर्वेद क्षेत्रमें काम करनेवालोंको जिन लोगोंसे पाला पड़ता है वे ऐसे नहीं हैं कि इशारेसे ही काम करनेवालोंके दायित्वका अनुभव करलें, उनकी कठिनाई और सुविधा असुविधाका विचार कर लें। उन्हें बारम्बार खोदते रहने पर भी कठिनाईसे होश होता है, बारम्बारकी चितावनीसे वे आवश्यक ज्ञातव्य विषयोंकी जानकारीकी सूचना देते हैं सो भी पूरी तरहसे नहीं, सन्तोषजनक रीतिसे नहीं। इस विवरणके लेखकको साहित्यके क्षेत्रमें भी कुछ काम करने और देखनेका अवसर आया करता है; परन्तु उधरका अनुभव जितना प्रसन्नताकारक रीतिसे समयावधानका विचार कर सुविधाके साथ होता है ठीक उसके अधिकांश विपरीत इधरका अनुभव है। अवैतनिक काम करनेवालोंके लिये यह बहुत ही कष्टकारक, विरक्ति उत्पन्न करनेवाला और असुविधाका काम होता है कि जिस कामके लिये एक बारकी सूचना बस है उसके लिये उन्हें अपनी उपजीविकाका बहुमूल्य समय व्यर्थ झंझटोंमें खोना पडे और खुशामद तथा समझौवल बुझौवलके पत्र व्यवहारमें अटके रहना पड़े। कोई काम जितना ही महत्वका हो, जितने ही अधिक आयास और अधिक समय तक अपने कर्तव्यमें ही लगे रहनेका हो उस कामके लिये उतना ही अधिक आवश्यक है कि अवैतनिक कार्यकर्ता लोग केवल कार्य दिशा समझाते रहनेके लिये कामोंकी देखभाल करते रहनेके लिये रहें और अच्छे सुयोग्य वैतनिक कार्य कर्ताओंके द्वारा ऐसे कार्योंका सम्पादन कराया जाय। वह कार्य ही जिसका कर्तव्य, वह कार्य ही जिसकी दिनरातकी चर्या और वह काम ही जिसके रात दिन सोचने विचारनेका विषय होगा, विशेष बात यह कि वह कार्य ही जिसकी उपजीविका होगी, वह जितने परिश्रम और खूबीसे उसे पूर्ण कर सकेगा उतनी उत्तमतासे वह मनुष्य नहीं कर सकता जिसे और भी दिन रातमें कितने ही झंझटके कामोंमें फँसे रहना पड़ता है। विशेष कर ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता उस समाजमें अधिक होती है जहांके योग्य और कर्मी पुरुष उन कामोंके करनेसे जी चुराया करते हैं जिनके करनेमें उनका लाभ अथवा स्वार्थ नहीं होता अथवा बहुत गौण और मनस्तृप्ति माननेके ही लिये होता है। यही नहीं बल्कि उस समाजके ऐसे लोगोंके वर्ताव अथवा औदासिन्यके कारण सम्पूर्ण कामोंका बोझ एक ही मनुष्यके जिम्मे विशेष रूपसे पड़ जाता है। आशा है वैद्य-सम्मेलन और उसकी संस्थाएँ इस विषय पर विचार कर अपना कार्य निर्वाह करनेका प्रयत्न करेंगी।

किसी संस्थाके कार्योंका क्षेत्र विस्तृत होना इस विषयका परिचय देता है कि समाज उसके कार्योंको पसन्द कर रहा है, उसकी सफलताकी आकांक्षा रखता है और उस कार्यमें यथाशक्य सहायता पहुंचानेके लिये भी उत्सुक है। वैद्यसम्मेलन और उसकी स्थायी समिति (आयुर्वेद महामण्डल) भी ऐसे ही परिचयका अनुभव कर रही है। यह आनन्दकी बात है कि क्रमशः वैद्य-सम्मेलनका काम भारतव्यापी होनेके साथ ही सर्वसाधारणकी अधिक सहानुभूति प्राप्त करता जा रहा है। लोगोंको यह मालूम हो रहा है कि यह चार दिनके तमाशेकी संस्था नहीं है बल्कि सालभर बराबर काम करने वाली संस्था है। इसका पता इसी बात से लगता है कि अब जिस किसीको आयुर्वेद के सम्बधमें किसी बात के जानने की आवश्यकता होती है वह आयुर्वेद महामण्डलको लिख कर जिज्ञासा करता है। अवश्य ही स्वर्गवासी आयुर्वेद-महोपाध्याय शङ्करदाजी शास्त्री पदे महोदयका आत्मा स्वर्गमें भी प्रसन्न होगा और उन लोगों पर आशीर्वादवर्षण कर रहा होगा जो गणनाथके समान इसके विघ्नोंका नाश करनेका प्रयत्न करते हैं, योगीन्द्रके समान उसके रथका सञ्चालन करनेके लिये सन्नद्ध रहते हैं, जो लक्ष्मीके रामके समान उसकी गोहार सुननेके लिये वैसे ही तैयार रहते हैं जैसे देवताओंकी पुकार सुननेके लिये लक्ष्मी नारायण, जो यादवपतिके समान इस महायज्ञानुष्ठानके सहायक हैं, जो श्रीगोपालके समान गोवर्धनधारण करने पर तत्पर हैं, जो जटाधारी शंकरके समान उसको शुभ कामना करते हैं, जो तनके सुखकी परवाह न कर मैदानमें कबड्डो मारने और सूर्यके समान प्रकाशका प्रसाद बांटनेमें कमर कसे रहते हैं और जिनके कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य लोग इस आयुर्वेदके केदार (क्षेत्र) के ठाकुर बननेका प्रसाद पा रहे हैं।

उस स्वर्णयुगका क्षितिजमण्डल अनति दूर दिखाई पड़ रहा है, जब हमारा आयुर्वेद फिर भारतवासियोंके आदरणीय हृदय-सिंहासन पर विराजित होकर आदरभक्ति प्राप्त करेगा, उसके अभ्युदयका अरुणोदयकाल क्रमशः समीप आता जा रहा है। अवश्य ही स्थूल दृष्टिसे देखने वालोंको वह सहसा नहीं दिखाई पड़ता और मन्दगतिसे उसका आगमन होनेके कारण उसके प्रकाशसे हमारे नेत्रोंको चकाचौंध नहीं लगती ; परन्तु भाइयो, घबड़ाइये मत, आज आप दक्षिणानिलमें विहारी कवि के शब्दोंमें "चुवत स्वेद मकरन्दकन तरु तरु तर विरमाय। आवत दक्षिण देशतें थक्यो बटोही वाय" के लक्षण नहीं पाते उसमें परिमलमलय समीरकी मनभावनी स्वाभाविक छटाके बदले शिव हैं स्वामी जिनके ऐसों की उद्दण्डता और उत्पात प्रियताका आभास पा रहे हैं अथवा विहारी कविके शब्दोंमें ही "रुक्यो सांकरे कुञ्जमग करत झोंक झुकरात, मन्द मन्द मारुत तुरँग खूंदत आवत जात" कीसी चपलता देख रहे हैं और सचमुच वह आपको खूंदता हुआ सा मालूम पड़ रहा है, उसकी चपलता आपके चित्तको चञ्चल बना रही है परन्तु उस कृष्णका भरोसा रखो जो रङ्क को राव बनाता है। आप देख रहे हैं कि पश्चिमका सुखद समीर जो वृष्टिके बादलोंको लाकर देशमें सुखकीवृष्टि करता वह सह्याद्रिकी चोटियोंसे ही टकरा कर वहीं छिन्न भिन्न हो जाता है ; परन्तु उपासनोंकी उपासनासे यह बाधा भी किसी दिन दूर हो जावेगी। वह देखिये पूर्व और सर्वलोक विहारी तिमिरविदारी के सुखकारी आगमनकी सूचना देनेके लिये उषःकाल उपस्थित हुआ है ; वह देखिये पूर्वाकाशकी ललाई मानों मन्दमुसकानसे इस बातका परिचय दे रही है कि यहीं से बाल-सूर्य किसी समय उदय होकर तमाम देश को प्रकाशित करेगा और भ्रम तथा अज्ञानके अन्धकारको नष्ट कर सबके मुँहसे आयुर्वेदका यशोगान करावेगा। अब तक इस विषयमें यदि कुछ नहीं हुआ तो इसमें दोष हमीं लोगों का है और इस समय भी यदि कुछ थोड़ा ही हो रहा है तो उसमें भी हमारे उद्योगोंका दोष है। जैसे आपके शिथिल और ढीले उद्योग हैं उसी प्रकार आपको उसका फल मिल रहा है "क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत उद्योगोंको एकत्रित और विशाल रूपमें दिखाने वाली जो मध्यस्थ अथवा केन्द्रशक्ति होती है उसे शक्तिशाली और प्रभाव पूर्ण बनानेसे समुदायको समुन्नति होती है। हमारे वैद्यसमुदायका ध्यान अपने उस केन्द्रीभूत संस्था आयुर्वेदमहामण्डलको जैसा चाहिये वैसा प्रभावपूर्ण बनानेकी ओर विशेष रूपसे आकर्षित नहीं हुआ। इसी लिये हमारे उद्योग व्यर्थ जाते हैं। हमें अबभी, 'संघशक्तिःकलौयुगे' का ध्यान रख कार्य करना चाहिये।

आयुर्वेद महामण्डल ।

अब ऐसे थोड़े ही मनुष्य होंगे जिन्हें इस संस्थाका नये सिरेसे परिचय कराना पड़े। जहाँ सम्मेलन होना होता है उनका मुख्य ध्यान इसी बात पर रहता है कि किस प्रकारके उद्योग किये जायँ जिससे हमारे यहाँका सम्मेलन शानदार हो, उसमें अच्छे अच्छे और प्रभावशाली मनुष्य पधारें और हमारे यहां के सम्मेलनका असर राजा प्रजा सब पर अच्छी रूपसे पड़े। इसके बाद सम्मेलन-का चार दिनोंका दृश्य—उत्सव आगे जो काम होनेवाले होते हैं उनकी अनुक्रमणिका अथवा सूची मात्र तैयार करनेका काम करता है। सम्मेलनका काम समाप्त होने पर स्वागतकारिणी सभाका कर्तव्य अपने किये कामोंको सर्वसाधारणके सामने रखनेके लिये रिपोर्ट तैयार करने मात्रका रह जाता है। असली कार्यवाही सम्मेलनकी उस स्थायी समितिको करनी पड़ती है जिसे साल भर बराबर अपने कार्योंका भुगतान करना पड़ता है और भले बुरेके लिये सर्व-साधारणके सामने उत्तर दाता रहना पड़ता है, उसी स्थायी कार्य-कर्त्री उसी उत्तरदात्री संस्थाका नाम आयुर्वेद-महामण्डल है। यह आयुर्वेद-महामण्डल समग्र भारतके सभी प्रान्तोंके नियमित लगभग १२५ प्रतिनिधि सभासदोंकी एक कौंसिल अथवा सभा है। यदि ऐसी संस्था न हो अथवा होकर भी वह कर्तव्यदक्ष न रहे तो सम्मे-लनके प्रभावकी बड़ी हानि हो। परन्तु आयुर्वेद-महामण्डलकी नये ढङ्गकी सृष्टि हुए अभी तीन ही वर्ष बीते हैं तो भी इसने अपनी उपयोगिता और कर्तव्यदक्षताकी छाप सर्वसाधारणमें एक प्रकारसे जमा सी दी है। इसका यही प्रमाण है कि आयुर्वेदके विष-यमें जिसे कुछ जानना होता है वह प्रायः आयुर्वेदमहामण्डलको लिखता है, यदि कहीं किसी को सुयोग्य वैद्यकी आवश्यकता होती है तो वह आयुर्वेदमहामण्डल से पूछता है, किसी औषधालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा पाठशालाके लिये वैद्यकी माँग होनेसे वह यहाँसे पूर्ण की जाती है, वैद्यक सीखे हुए नवयुवकोंको व्यवसायका स्थान अथवा व्यवसायका ढङ्ग बताया जाता है, व्यवसायमें पड़े हुए वैद्य भाइयों-को समय समय पर पूछने पर उचित सलाह बतायी जाती है, किसी विवादस्त विषयके सम्बन्धमें यथा शक्य समुचित समाधान किया जाता हैं। इस बातका सबसे अधिक ध्यान रखा जाता है कि चाहे पत्र व्यवहारमें जितना समय और व्यय हो परन्तु जहांतक हो सके कोई सज्जन उत्तरसे वञ्चित न रहे। जहां तक सम्भव होता है सब लोगोंके पत्रोंका उत्तर अथवा उनकी आज्ञाकी पूर्ति शीघ्रताके साथ की जाती है। यही कारण है कि इस वर्षमें कोई साढ़े छः हज़ार पत्र कार्यालयसे बाहर भेजे गये हैं। सम्भव है इसे कोई कागज़ी घोड़े दौड़ाना ही समझ ले; परन्तु जहां अधिक काम होता है, वहीं अधिक कार्यवाहीकी आवश्यकता होती है।

चुनाव।

आयुर्वेदमहामण्डलके नियमित १०१ सभासदोंका सङ्गठन नियमानुसार हो जाता है; परन्तु आज तक ब्रह्म देशके सभासद्के स्थानकी पूर्ति कभी नहीं हुई। इस वर्ष वहांके एक आयुर्वैदिक वैद्यका नाम आयुर्वेदमहामण्डलको मालूम भी हुआ था; परन्तु कई पत्र भेजने पर भी वहांसे कुछ उत्तर नहीं मिला। मेरी समझमें यह उचित होगा कि एक वर्ष और भी उद्योग करके देख लिया जाय; यदि आगामी वर्ष भी उक्त स्थानकी पूर्ति न हो सके तो सम्मेलनको इस पर विचार करना चाहिये कि ब्रह्मदेशके सभासद्-की संख्या नियमावलीमें रखी जाय अथवा नहीं। महामण्डलके सङ्गठनके सम्बन्धमें एक बात और भी कहनेकी है कि उसका चुनाव जहां तक सम्भव हो सम्मेलनमें ही कर डालना चाहिये। विषय निर्वाचिनी समितिमें कुछ अधिक समय जागनेके डरसे अथवा सम्मेलनके कार्योंकी मालिका बढ़ जानेके कारण इसे मन्त्री पर डालनेसे हर एक प्रान्तके वैद्योंसे लिखा पढ़ी करनेमें महीनों लग जाते हैं और तब तक आयुर्वेदमहामण्डलका काम रुका रहता है। किन्तु वैद्यसम्मेलनमें यह काम अनायास हो सकता है। वहां प्रायः सभी प्रान्तोंके वैद्य उपस्थित रहते हैं अतएव उनसे निवेदन करनेसे इसकी पूर्ति उसी समय हो सकती है और सच पूछा जाय तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनावका यही सर्वप्रिय मार्ग भी है। हां, जिस प्रान्तके सभासद हों वहांका चुनाव चाहे पीछे हो भी जाय।

एक निवेदन सभासदोंकी संख्याके सम्बन्धमें भी करना आवश्यक है। प्रायः सभी प्रान्तके वैद्योंकी यह इच्छा देखी जाती है कि हमारे प्रान्तके वैद्योंकी संख्या आयुर्वेदमहामण्डलमें अधिक रहे; और इसे शुभ लक्षण तथा सौभाग्यका विषय ही मानाना चाहिये; परन्तु आयुर्वेदमहामण्डलके सभासदोंकी संख्या कार्य सौ कार्यके लिये है संख्याकी अधिकता दिखानेके लिये नहीं। आयुर्वेदमहामण्डल वैद्यसम्मेलनकी कार्यकारिणी समिति है; किसी कामके करनेमें सभी प्रान्तवासियोंके हिताहितका ठीक विचार हो सके और कार्यका गुरुत्व परिलक्षित हो तथा उस कार्यके सम्बन्धमें सभी प्रान्तके प्रतिनिधियोंकी सम्मतिसे लाभ उठाया जा सके यही सब प्रान्तके प्रतिनिधियोंके द्वारा उसके सङ्गठन करनेका हेतु है। यह संख्या केवल इस विचारसे नहीं निश्चित की जाती कि अमुक प्रान्तकी मनुष्य संख्या अधिक है, अथवा अमुक प्रान्तमें अधिक वैद्य हैं इसलिये संख्या भी अधिक होनी चाहिये। अवश्य ही इस तत्वको मान दिया जाता है, किन्तु साथ ही इस बात पर भी विचार किया जाता है कि किस प्रान्तके वैद्य आयुर्वेदमहामण्डलके काममें सम्मति देनेके काममें किस प्रकार तत्परता दिखलाते हैं। जिस प्रान्तके वैद्योंकी ऐसी इच्छा हुआ करती है उन्हें इस बातका भी विचार करना चाहिये कि अभी जितनी संख्या है वह अपने कर्तव्यको किस हिसाबसे पूर्ण करती है। इसके सिवाय कार्यकारिणी समितिमें सभासदोंकी संख्या जितनी अधिक होगी, काम करनेवालोंका काम उतना ही अधिक बढ़ जायगा। पत्र व्यवहार बहुत बढ़ जायगा और यह बढ़ा हुआ काम उस समय अधिक कष्ट कर प्रतीत होगा जब अनेक बारके पत्र व्यवहारका भी कुछ फल न होगा और कार्यालयके कितने ही पत्रोंका कुछ भी उत्तर नहीं आवेगा। भारतके बड़े लाटकी कौंसिलमें भी साठ इकसठसे अधिक सभासद नहीं हैं। जिन भाइयोंको वैद्यसम्मेलनके कामोंमें योग देने और उसके सभासद बनकर उचित सम्मति प्रदान करनेकी इच्छा है उन्हें आयुर्वेद-विद्यापीठके सभासद होनेके लिये मार्ग खुला हुआ है। उन्हें भी तो मण्डलकी कार्यवाहीमें उपस्थित होकर सभासदोंके समान सम्मति देनेका अधिकार प्राप्त है। परन्तु अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक केवल दो ही तीन बार ऐसा सुअवसर दिखाई पड़ा है कि बाहरी एक दो सभासदोंने प्रसङ्गवश उपस्थित होकर आयुर्वेद-महामण्डलकी कार्यवाहीमें योगदान किया है। जो हो, जिस प्रान्त-के प्रतिनिधि सभासदोंकी संख्या बढ़ानेकी आवश्यकता हो उसके विषयमें किसीको विरोध भी नहीं है; परन्तु यदि थोड़े प्रतिनिधि भी चाहें तो बहुत काम कर सकते हैं और अपने प्रान्तवासियोंकी सम्मति उत्तमताके साथ व्यक्त कर सकते हैं। उसके लिये सुलभ मार्ग यही है कि प्रत्येक प्रान्तके प्रतिनिधि समय समय पर अपने प्रान्तवासी जनसाधारण और वैद्योंकी आवश्यक विषयोंमें सम्मति लेते रहें और उसीके आधार पर अपनी सम्मति व्यक्त किया करें। इसके लिये यह आवश्यक है कि ऐसे प्रतिनिधि अपने प्रान्तमें सार्व-जनिक सभाएँ करने और अपने प्रान्तके प्रभावशाली लोगोंसे मिलते रहनेका बराबर प्रयत्न करते रहें। इससे काम भी खूब होगा और वैद्य सम्मेलनके उद्देश्यों और प्रभावका विस्तार भी अच्छा होगा। जो लोग कामके लिये नहीं केवल शोभा के लिये अपने प्रान्तवासी सभासदोंकी संख्या बढ़ानेके पक्षपाती हैं उनकी सम्मति पर वैद्यसम्मेलनको विचार करना चाहिये।

सभासदोंमें उत्साह।

इस वर्ष प्रायः सभी प्रान्तके प्रतिनिधियोंमें कार्य सम्बन्धी जागृति और उत्साह अन्य वर्षसे किञ्चित अधिक पाया गया। किन्तु बङ्गाल प्रान्तमें वैद्य सम्मेलनका डङ्का बजते रहने पर भी वहाँ के अधिकांश सभासदोंका औदासिन्यभाव बना ही रहा। अवश्य ही पहले पदकी स्वीकृति करने पर भी अथवा कई महीनों तक कार्यमें योग देते रहने पर भी घोड़ा मारा, राजशाहीके कविराज श्रीयुक्त हारानचन्द्र चक्रवर्ती महोदयने अधिक उमर होने के कारण इधर कार्यमें योग देनेमें अपनी असमर्थता प्रकट की और स्वर्गीय कविराज विजयरत्नसेन महोदयके सुपुत्र कविराज हेमचन्द्रसेन महोदयने अपने पदका इस्तीफा लिख भेजा और कविराज दुर्गानारायण सेन तथा कविराज विरजाचरण सेन ने महामण्डलसे भेजे हुए पत्रोंको इनकार लिख कर वापस किया। महामण्डलने सबोंसे फिर प्रार्थना की कि इस वर्ष बीचमें इस प्रकारकी विरक्ति दिखाना ठीक नहीं है, ऐसा ही हो तो आगामी वर्षके आरम्भमें ही आप इस पदको न स्वीकार करें। मद्रास प्रान्तके भी कम सभासदोंने मण्डलके कार्यका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान रखा; परन्तु मालूम पड़ता है कि यह किसी विरक्तिके कारण नहीं। अभी उस प्रान्तमें वैद्य सम्मेलनके उद्देश्योंका प्रचार करनेकी बहुत आवश्यकता है; और वहां वालोंको इसके विषयमें बहुत कुछ जाननेकी आवश्यकता है। तथापि अन्य वर्षोंकी अपेक्षा इस कार्यमें कुछ उन्नति ही दिखाई पड़ती है। महाराष्ट्र प्रान्तके सभासदोंकी उदासीनता भी क्रमशः कम हो रही है। परन्तु मध्यप्रदेश और मध्य भारतकी अवस्था बहुत शोचनीय है। मध्यप्रदेश और मध्य भारतके बहुत कम सभासद अपने कार्यका गुरुत्व समझते हैं। आयुर्वेद महामण्डल प्रायः इस बातसे अनजान रहता है कि वहाँ आज कल क्या हो रहा है। राजपूताना, गुजरात, पञ्जाब, युक्तप्रदेश और विहारके सभासद यद्यपि पूणरूपसे तो नहीं तथापि बहुत कुछ आयुर्वेद महामण्डलके कार्यमें सहायक रहते हैं। किन्तु इस कार्यमें सभी प्रान्तोंमें अभी अधिक उत्सुकता, उत्साह और कर्तव्यदक्षताकी आवश्यकता है।

सभासदोंका स्वर्गवास।

इस वर्ष आयुर्वेदमहामण्डलको अपने कई सुयोग्य, विद्वान् और कर्तव्यदक्ष सभासदोंका वियोग सहन करना पड़ा है और इससे उसकी बहुत हानि हुई है। यही नहीं बलिक आयुर्वेदका अभ्युदय करनेके कई प्रयासी सभासदोंकी कमी हो गयी है।

१ पण्डित त्र्यम्बक गुरुनाथ काले उन उद्योगी और विद्याव्यासङ्गी सज्जनोंमें थे जो आजन्म दरिद्रताके पाशमें बँधे रहना स्वीकार करते हैं; किन्तु सरस्वतीकी गोद छोड़ना स्वीकार नहीं करते। आप जैसे विद्वान् और खोजी थे उससे यदि कहीं नौकरी की होती या औषधालय स्थापित कर व्यवसाय ही किया होता तो अच्छी स्थितिमें रहते। परन्तु आपके खोजोंका प्रयत्न इतना जबरदस्त था कि रातदिन पुस्तकोंके पन्ने उलटानेमें ही आपके बीतते थे। पहले आप साहित्य विषयक समालोचक पत्र निकालते थे, उसमें भी आपके खोजोंका फल प्रकाशित होता था; किन्तु उसी समय आपके हाथ कुछ रसायन शास्त्रके ग्रन्थ लगे। उनमें आपका चित्त बहुत रमा और 'सब तज हर भजके' समान आप इसी व्यवसायमें निमग्न हो गये। कौन रसायन शास्त्रका ग्रन्थ कहाँ मिलता है, किसमें कौन सी विशेषता है, कौन सी त्रुटि है, किसका पाठ कहाँ शुद्ध अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशुद्ध है। रसायन शास्त्रके कौन कौन आचार्य कब हुए, कौन पहलेका है, कौन पीछेका है, किसने किस ग्रन्थसे कहाँ पर कैसा आधार लिया है, इस रसायन शास्त्रकी प्रवृत्ति कबसे हुई और किस किस प्रकार उन्नति हुई है। इन बातों पर जितना प्रकाश आपने डाला उतना किसी वैद्यके द्वारा आज तक नहीं हुआ था। आयुर्वेदीय ग्रन्थमाला, तथा भिषग्विलास आदिमें आपने कई रसायनके ग्रन्थ खोज कर सम्पादित भी किये। "भारतीय रसायन शास्त्र" नामकी आपकी पुस्तक आपके खोज और परिश्रमका परिचय दे रही है। रसरत्नाकरके "वादि खण्डका" पता आपने ही लगाया। रसायनके प्रयोग भी आप बराबर करते रहते थे और इसी लिये आपने पनवेलके श्रीयुक्त विष्णुकृष्ण पुराणिक महोदयके औषधालयमें बहुत दिनों तक नौकरी भी की थी। अभी गत ही वर्ष आपको वैद्यसम्मेलनमें रसायनाचार्यकी उपाधि मिली थी। आपसे आयुर्वेदके अभ्युदयकी बड़ी आशा थी किन्तु कुटिल कालने वैसा नहीं होने दिया।

योगायोगकी बात देखिये कि रसायनाचार्य महोदयके साथ साथ ही पनवेलके धूतपापेश्वर औषधालयके मालिक वैद्यराज विष्णु कृष्ण पुराणिक महोदय भी उसी महीनेमें स्वर्गवासी हुए। आप उन कर्मी पुरुषोंमें थे जो आयुर्वेदकी उन्नति शब्दोंसे नहीं बल्कि क्रियासे कर बतलाते हैं। आपने अपने औषधालयको पहले छोटे प्रमाणमें स्थापित किया और अपने उद्योग और पुरुषार्थसे इतना बढ़ाया कि यन्त्रोंकी सहायतासे उसे चलानेकी आवश्यकता पड़ी। कदाचित यही पहला वैद्यक कारखाना था जो यन्त्रोंकी सहायतासे चलता हो। आपकी औषधियोंका प्रचार इतना जबर दस्त हुआ कि महाराष्ट्र प्रान्तमें शायद ही कोई अच्छा नगर होगा जहाँ आपके एजेण्ट न हों अथवा आपकी औषधियां जहाँ न मिलती हों। वैद्यसम्मेलनका दूसरा अधिवेशन पनवेलमें विशेष कर आपके ही पुरुषार्थ और अर्थ व्ययके कारण सफल हुआ था।

तीसरी शोक जनक मृत्यु नाशिकके प्राणाचार्य पण्डित गोपाल रामचन्द्र विवलकरकी हुई है। आप धीर गम्भीर और उदार हृदय सज्जन थे। नाशिकके प्रथम वैद्यसम्मेलनकी सफलतामें आपका जबरदस्त हाथ था। आप उसकी स्वागतकारिणी सभाके सभापति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। विशेषता यह कि आप इस गये गुजरे दिनमें भी आयुर्वेदके स्वदेशी डाक्टर थे। स्वदेशी डाक्टर पदका प्रयोग करनेसे सम्भव है हमारे वे भाई मनही मन प्रश्न करने लगें जो इसी देशके उत्पन्न हिन्दू सन्तान विदेशी पद्धतिको डाक्टरी करते हैं, कि क्या हम स्वदेशी डाक्टर नहीं हैं ? परन्तु शोक है कि सत्याभास होने पर भी हम इस बातको स्वीकार करनेमें सहमत नहीं हैं। आप मद्यमिश्रित विदेशी औषधि खिलाकर लोगोंके केवल धनका ही अपव्यय नहीं कराते वल्कि उनके धर्मका भी अपहरण कर रहे हैं; तिस पर भी आपमें कभी यह भाव नहीं उदय होता कि जो अपने देशकी ही ओषधियां रोग हरण करनेमें समर्थ हों उन्हें आयुर्वैदिक ग्रन्थोंके अनुसार बनाकर अथवा वैद्योंके पाससे बनी बनायी लेकर काममें लावें और जिन विदेशी आषधियोंके विना काम नहीं चल सकता उन्हें यथा सम्भव इसी देशमें तैयार करने करानेका उद्योग करें। इसके सिवाय अपने चीर फाड़के काममें आप सर्वथा विदेशी पद्धति ही स्वीकार कर रहे हैं, यदि कभी देशी अस्त्रचिकित्साका भी मनन कर चीर फाड़का काम करें, तो सम्भवतः आपको कुछ सहायता ही मिलेगी अथवा और कुछ नहीं तो यही मालूम होगा कि हमारे आयुर्वेदकी अस्त्रचिकित्सामें कहां कैसे सुधारकी आवश्यकता है। परन्तु ऐसे स्वदेशी भाव जिन डाक्टरोंमें नहीं हैं उन्हें भला हम स्वदेशी डाक्टर किस मुंह कहें और जो ऐसा करते हैं वे हमारे सर्वथा पूज्य और वन्द्य हैं। यह ऐसे नाम मात्रके स्वदेशी डाक्टरों-की ही करतूत थी कि कुछ दिन पहले लोग आयुर्वेदको तिरस्कृत समझने लगे थे; परन्तु समयके प्रवाहने उस भावको बहा दिया और आयुर्वेदकी मनमोहनी छटा फिर लोगोंके दृष्टिगोचर होने लगी है। भला हो कविराज गणनाथसेन ऐसे पश्चिमी विद्यापारङ्गत किन्तु स्वदेशी भावापन्न डाक्टरोंका जिनके उद्योगसे लोग अब यह समझने लगे हैं कि आयुर्वेदमें शस्त्र चिकित्साकी पूरी सामग्री है और विदेशी शस्त्रचित्साका मूल आयुर्वेदकी शस्त्रचिकित्साकी नकल मात्र है। अब वह समय शीघ्र दिखनेकी आशा है जब देशी डाक्टर देशी चिकित्सापद्धतिके सहायक होंगे। जो हो, स्वर्गीय गोपालराव हमारे इने गिने उन स्वदेशी डाक्टरोंमेंसे एक थे जो विदेशी डाक्टरी न जानने पर भी सुश्रुत वाग्भटके सहारे कठिन अस्त्रचिकित्सा करते थे। यही नहीं मूढ़गर्भकी अस्त्र-चिकित्सामें आप एक प्रकार सिद्धहस्त थे। आपके यहां अस्त्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्साके कई अस्त्र हमने स्वयं देखे हैं; उन्हें आपके पितामह तथा कुछ आपने सुश्रुतके अनुसार कारीगरोंसे तैयार कराये थे। दग्धकर्ममें भी आपकी ख्याति थी। कई रोग आप हाथकी कलाई आदिमें दाग कर आराम किया करते। प्रथम वैद्यसम्मेलनने आपको प्राणाचार्यको उपाधि दी गयी थी। आपने अपनी कुछ क्रिया अपने एक शिष्य पं० अनन्तहरि पाटणकर को सिखलायी भी है। जो हो; आपके स्वर्गवाससे भी आयुर्वेदकी बहुत हानि हुई है।

आयुर्वेदमहामण्डलके पञ्जाब प्रान्तीय मन्त्री रावलपिंडीनिवासी श्रीयुक्त गोस्वामी पण्डित गणपति शास्त्री वैद्य महोदयकी मृत्यु भी दुःखदायी हुई है। आपको कानपुर और मथुराके वैद्यसम्मेलनमें जिन्होंने देखा है वे जानते हैं कि वे कैसे विद्वान और सुयोग्य वैद्य थे। आयुर्वेदके कामोंमें आप अच्छा उत्साह प्रदान किया करते थे। आजकल आप संस्कृत श्लोक बद्ध अँग्रेज़ी शारीर और अस्त्रचिकित्साका अनुवाद कर रहे थे। बहुत कुछ काम हो भी गया था; परन्तु आपकी मृत्युसे अब वह अधूरा ही रह गया।

शोक है कि आयुर्वेदमहामण्डलके एक और सभासद प्रयाग निवासी वैद्यराज पण्डित वैद्यनाथ शर्मा लोकान्तरित हुए हैं। आप स्वर्गवासी पण्डित जगन्नाथ शर्मा राजवैद्यके कनिष्ट भ्राता थे और मिष्ट भाषी तथा उत्साही थे। रुग्णावस्थाके कारण आप आयुर्वेदमहामण्डलके कामोंमें विशेष योगदान नहीं कर सकते थे; परन्तु आपसे मण्डलको भविष्यमें अच्छी आशा थी।

इनके सिवाय अजमेरके मनीषि समर्थदानजी, बम्बईके लखपती सेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी, लखनऊके वकील पण्डित भैरवप्रसाद जी पाण्डेय और काशीपुर तराईके पण्डित मुकुन्दराम जोशी महोदयोंकी मृत्युसे भी मण्डलको शोक है। यद्यपि ये प्रत्यक्ष सभासद नहीं थे तथापि आपके द्वारा आयुर्वेदको बहुत सहायता पहुँचा करती थी और समय पर आयुर्वेदमहामण्डल भी उनकी सहायतासे लाभवान होता।

अधिवेशन ।

आयुर्वेदमहामण्डलका पूरा सङ्गठन करनेमें इस वर्ष बहुत समय लगा। सभासदोंसे पत्रव्यवहार, प्रान्तिक मन्त्रियोंसे सम्मति लेने और सभासदोंकी स्वीकृति लेनेमें अधिक समय लगा। इसलिये आयुर्वेदमहामण्डलका पहला अधिवेशन वैशाख शुक्ल पौर्णमाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। वर्ष भरमें सब छः साधारण अधिवेशन और दो विशेष अधिवेशन हुए। आयुर्वेदमहामण्डलका कोई बाहरी सभासद किसी भी अधिवेशनमें उपस्थित नहीं हुआ; किन्तु आयुर्वेदविद्यापीठके एक सभासद दो अधिवेशनोंमें उपस्थित हुए और अन्य सभासदोंके समान अधिकारयुक्त कार्य किया। आयुर्वेदमहामण्डलके साधारण अधिवेशनोंमें सभासदोंकी उपस्थितिका औसत ७ से कुछ अधिक रहा यह संख्या गत वर्षसे कम है। इस वर्ष औसत २७ सभासदोंने पत्र द्वारा अधिवेशनके विचारणीय विषयोंमें अपनी सम्मति भेजी। यह औसत भी गतवर्षसे कम थी। गतवर्ष सम्मति भेजनेवालोंकी औसत ३५ थी। जो सज्जन पत्रद्वारा सम्मति भेजते हैं उनसे एक बातका निवेदन करना आवश्यक है। मालूम पड़ता है बहुतसे सभासद यह समझते हैं कि सम्मति भेजनी ही है वह किसी न किसी दिन भेज देंगे। इसीलिये किसीकी सम्मति अधिवेशन होनेके एक दिन पश्चात् किसीकी दो दिन चार दिन यहां तक कि दश दश दिन पश्चात् तक प्राप्त होती है। इससे कभी कभी आयुर्वेदमहामण्डल उपयोगी और बहुमूल्य सम्मति प्राप्त करनेसे वञ्चित रह जाता है। क्योंकि विचारणीय विषयोंका विचार हो जानेकेपश्चात् वे सम्मतियां आर्वेदमहामण्डलके किसी कामकी नहीं रह जातीं। इसलिये जो सज्जन सम्मति भेजते हैं वे यदि अधिवेशनकी तिथिके तीन चार दिन पहलेसे ही भेज दें तो उत्तम हो। सम्मति देनेके विषयमें भी एक निवेदन करना है। प्रत्येक सभासदके पास सम्मतिके लिये जो पत्र भेजे जाते हैं वे इसीलिये कि हमारे प्रतिनिधि सभासद अपनी यथामति सम्मतिसे हमें उचित मार्ग दिखावें, हमें ठीक कार्यवाही करनेके लिये विचारोंमें प्रकाश पहुँचावें। परन्तु यदि उनमें अधिकांश यही लिख दें कि जो आप करेंगे सो हमें स्वीकृत होगा तो मण्डलके अधिवेशनमें उपस्थित सभासद पेंचमें पड़ जाते हैं और उचित मार्ग शोचनेके लिये उन्हें अधिक विचार करना पड़ता है।

जो हो; आयुर्वेदमहामण्डलके प्रथम अधिवेशनमें आयुर्वेदमहामण्डलके सभासदोंके स्थानकी पूर्ति की गयी और प्रान्तिक मन्त्रियोंके स्थानकी पूर्ति हुई।

आयुर्वेदमहामण्डलके दूसरे अधिवेशनमें (ज्येष्ठ शुक्ल १३ सं० १९७१) विहार और बम्बई सरकारके पास एक मेमोरियल इसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजना निश्चय हुआ कि उक्त सरकारोंके अधीन जो संस्कृत विद्यालय खुल रहे हैं उनमें आयुर्वेदकी भी शिक्षा दी जाय । बम्बई सरकारके पास आसव-अरिष्टोंके विषयमें भी लिखा पढ़ी करनेका निश्चय हुआ । निश्चय हुआ कि आयुर्वेदविद्यापीठकी परीक्षाएँ सम्मेलनके पहले हो जाया करें । मथुराके सम्मेलनमें जिन परीक्षार्थियोंने परीक्षा दी थी उनका परीक्षाफल स्वीकृत हुआ और यह निश्चय हुआ कि सम्मेलन कार्यालयकी ओरसे प्रति तीसरे महीने वैद्यसम्मेलन पत्रिका निकाली जाय । इसी अधिवेशनमें सहकारी मन्त्रीका वेतन जून महीनेसे २५) मासिक किया गया और निश्चय हुआ कि जो परीक्षार्थी किसी वर्ष सब विषयोंमें उत्तीर्ण न हो सके उसे दूसरे वर्ष परीक्षा देनेमें यह सुविधा की जाय कि जिन विषयोंमें उसने सैकड़ा ४० नम्बर पाये हैं उन विषयोंकी परीक्षासे वह मुक्त किया जाय । इसी अधिवेशनमें निश्चय हुआ कि सहकारी मन्त्री लाहौर जाकर आय व्यय-निरीक्षक महोदयसे हिसाब जँचवा लावें । परन्तु यह काम अब तक न हो सका क्योंकि जब सहकारी मन्त्री जानेको उद्यत हुए थे तब आय-व्यय निरीक्षक पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा पर्यटनमें थे और जब वे आये तब सहकारी मन्त्री अपने पद पर न रहे । इसके बाद कार्यालयमें कोई ऐसे कार्यकर्त्ता न रहे जो हिसाब किताब समझा सकते ।

तीसरे अधिवेशनमें (श्रावण शुक्ल ४ सं० १९७१) स्वर्गवासी सभासदोंके लिये शोक प्रकाश किया गया । प्लेग, विशूचिका और मलेरिया रोगकी जाँच सम्बन्धी प्रश्नावली बनानेके लिये एक उपसमिति बनायी गयी । म्युनिसिपलिटीमें वैद्योंकी नियुक्तिके सम्बन्ध में विचार हुआ । आयुर्वेद विद्यापीठकी परीक्षाओंका प्रबन्ध करनेके लिये एक समिति बनायी गयी । १५ सज्जनोंके आवेदन पत्र स्वीकार हुए वे आयुर्वेद विद्यापीठके सभासद स्वीकार हुए ।

चतुर्थ अधिवेशनमें (आश्विन कृष्ण २ संवत् १९७१) निश्चय हुआ कि विद्यापीठकी इस वर्षकी परीक्षामें जो परीक्षार्थी नियमानुसार तिहाई नम्बर पाकर जिस विषयमें पास हुए हैं उस विषयमें आगामी बार उनकी परीक्षा न ली जाय । व्याख्यानमाला सम्बन्धी प्रस्ताव पर विचार हुआ । बम्बई प्रान्तके पण्डित त्र्यम्बकगुरुनाथ काले महोदयकी मृत्युके कारण रिक्त हुए स्थान पर अहमदनगरके आयुर्वेद पञ्चानन पण्डित गङ्गाधर शास्त्री गुणे और प्रयागके पंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यनाथ शर्मा राज वैद्य महोदयके रिक्त स्थानमें उन्हींके सुपुत्र पण्डित अमरनाथ शर्म्मा बी. ए. की नियुक्ति स्वीकृत हुई। कलकत्तेके कविराज विरजाचरण सेन और कविराज दुर्गानारायण सेनने आयुर्वेद महामण्डलके पत्रोंको इतने दिन बाद लेनेसे इन्कार किया और कविराज हेमचन्द्र सेनने अपने पदका इस्तीफा लिख भेजा था। निश्चय हुआ कि इनसे कारण पूछा जाय और अनुरोध किया जाय कि आप इस विषयमें पुनः विचार करें। क्योंकि अभी वैशाख महीनेमें जब आयुर्वेद महामण्डलके मन्त्री कलकत्ते गये थे तब तीनों सज्जनोंने आयुर्वेद महामण्डलके कार्योंके साथ अनुराग प्रदर्शित किया था। उत्तीर्ण परीक्षार्थीको पदक देना निश्चय हुआ। शारीर सम्बन्धी नक्शे तैयार करनेके लिये विचार हुआ।

पञ्चम अधिवेशनमें (कार्तिक शुक्ल ७ संवत् १९७१) निश्चय हुआ कि स्वागतकारिणी सभाको आयुर्वेद व्याख्यानमालाकी सुविधा करनेको लिखा जाय। लखनऊके हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी स्वागतकारिणी सभाने आयुर्वेद-महामण्डलसे अनुरोध किया था कि वह भी उक्त सम्मेलनमें अपने प्रतिनिधि भेजे तदनुसार लखनऊके सम्मेलनमें उपस्थित होनेके लिये कुछ सज्जन प्रतिनिधि चुने गये थे और उनमेंसे कई एक वहाँ गये भी थे। इस प्रकार परस्पर सभाओंका सहयोग बहुत आनन्द वर्धक है और देशकी संघशक्तिको अधिक दृढ़ करनेवाला है। अतएव ऐसी पद्धतिको उत्तेजन मिलना चाहिये। व्यास पण्डित पूनमचन्दजी तनसुखके उपाधिधारियोंके चिन्ह सम्बन्धी प्रस्तावके विषयमें निश्चय हुआ कि इसका विचार सम्मेलनमें ही हो कार्यकर्ताओं और स्वयं सेवकोंको पदक आदि देनेके विषयमें निश्चय हुआ कि इसका सम्बन्ध स्वागतकारिणी सभाओंसे है, वे अपनी शक्ति देख यथा योग्य कार्यवाही करें। यह भी निश्चय हुआ कि सहकारी मन्त्री पण्डित श्रीनिवासाचार्य शास्त्री अपने पदसे अलग किये जायँ। कलकत्तेकी स्वागतकारिणी सभाके पास एक निबन्धोंकी सूची भेजी गयी कि वह इनमेंसे जिन विषयोंको उचित समझे उनमें योग्य विद्वानोंसे निबन्ध लिखावे। सम्मेलनमें उपस्थित करने योग्य प्रस्तावोंकी भी एक सूची भेजी गयी और ऐसे ११ सज्जनोंकी भी सूची भेजी गयी जिनमेंसे किसी सज्जनको स्वागतकारिणी सभा सभापति बना सकती है। १४ सज्जनोंके सभासद फार्म स्वीकृत हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठे अधिवेशनमें [पौष कृष्ण ११ सं० १९७१] आयुर्वेद-महामण्डल और आयुर्वेद-विद्यापीठकी नियमावली पर कुछ संशोधन कर उन्हें षष्ठ वैद्यसम्मेलनमें उपस्थित करना निश्चय हुआ। काशीके पण्डित श्यामसुन्दराचार्यजीका उत्तीर्ण परीक्षार्थियोंके पदक देनेके सम्बन्धमें प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। आयुर्वेद-विद्यापीठका परीक्षा फल स्वीकृत हुआ। अहमदाबाद, मुरादाबाद और बीकानेरकी वैद्य-सभाओंका आयुर्वेद-महामण्डलसे सम्बन्ध स्वीकृत हुआ। चार सज्जनोंके आयुर्वेदविद्यापीठके सभासद बननेके फार्म स्वीकृत हुए। वैद्यसम्मेलन पत्रिकाके सम्पादकोंकी नियुक्ति स्वीकृत हुई।

दो विशेष अधिवेशनोंमें प्रथम विशेष अधिवेशन श्रावण कृ० १० सं० १९७१ को श्रीमान बड़े लाट लार्ड हार्डिञ्जकी सहधर्मिणी श्रीमती लेडी हार्डिञ्जकी मृत्यु पर शोक प्रकट करनेके लिये हुआ और लाट साहबके पास सहानुभूति तथा समवेदना सूचक तार भेजा गया। जिसका उत्तर यथावसर कृतज्ञता सूचक उनके प्राइवेट सेक्रेटरीके द्वारा प्राप्त हुआ है। इसी अधिवेशनमें रसायनाचार्य पं० त्र्यम्बक गुरुनाथ कालेकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया। दूसरे विशेष अधिवेशनमें पं० वैद्यनाथ शर्मा प्रभृति सज्जनोंके स्वर्गवासपर शोक प्रकट किया गया। यह अधिवेशन भाद्रपद कृष्ण ४ सं० १९७१ को हुआ।

वैद्यसम्मेलन पत्रिका।

इस वर्ष आयुर्वेद महामण्डलने जो नवीन और आवश्यक काम किये हैं, उनमेंसे "वैद्यसम्मेलन पत्रिका" का प्रकाशन एक है। इस विषयकी आवश्यकता बहुत दिनोंसे लोगों को प्रतीत हो रही थी परन्तु धनाभावके कारण इस पर हाथ नहीं लगाया जाता था। कानपुरके वैद्यसम्मेलनके समय विषय निर्वाचिनी समितिमें इस विषय पर चर्चा हुई थी। परन्तु उस समय यही तय रहा कि इस समय विविध भाषाओंमें जो वैद्यक सम्बन्धी पत्र निकलते हैं, उनके सम्पादकोंसे अनुरोध किया जाय कि वे वैद्यसम्मेलनके कर्मोंमें अधिक मनोयोग दें और उसके अभाव अभियोगके सम्बन्धमें बराबर टीका टिप्पणी करते रहें। अवश्य ही दो तीन पत्रों ने इस विषयमें ध्यान दिया; परन्तु दो एक पत्रोंने तो यही ढङ्ग रखा कि सम्पादक की सूचनाके लिये कार्यालयसे जो अप्रकाश्य पत्र जाते उन्हें ही ज्योंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्यों छाप देते थे। यह ढङ्ग आयुर्वेद महामण्डलकी दृष्टिमें अच्छा नहीं जँचा और इससे उसने अपने प्रभावकी हानि समझी। इस प्रकार एक ऐसे पत्रकी आवश्यकता बनी ही रही और सभासद गण भी जब तब इस विषयका प्रस्ताव करते ही रहे। अन्तमें मथुराके वैद्यसम्मेलनके समय विषयनिर्वाचिनीसमितिमें फिर इस विषयकी चर्चा उठी, वहाँ भी धनाभाव आगे आया। किन्तु कुछ प्रभावशाली प्रतिनिधियोंकी यह सम्मति हुई कि यदि मन्त्री द्रव्य और योग्य सम्पादकका प्रबन्ध कर सकें तो आयुर्वेद-महामण्डलमें इस विषयको उठा कर वे पूर्ण कर सकते हैं। मालूम पड़ता है कि सभासदोंको इसकी आवश्यकता विशेष प्रतीत हो रही थी; क्योंकि लखनऊकी वैद्यसभा, रत्नमाला चम्पारनके चिकित्सक चूड़ामणि पंडित चन्द्रशेखरधर मिश्र राजवैद्य और झाल-रापाटनके नवरत्न पंडित गिरिधर शर्मा प्रभृतिके पत्र आये कि आयु-र्वेद-महामण्डलमें सम्मेलनकी ओरसे एक पत्र निकालनेके सम्बन्धमें हमारी ओरसे प्रस्ताव उपस्थित किया जाय। वहाँ भी इसी बातका विचार हुआ कि द्रव्य कहाँसे आवेगा और सम्पादन कौन करेगा? इसके सिवाय आयुर्वेदमहामंण्डलने सोचा कि इस समय वैद्यक सम्बन्धी कई पत्र चलही रहे हैं और उनसे किसी न किसी तरह आवश्यकताओंकी पूर्ति हो ही जायगी। किन्तु इस विषयके भी कई पत्र मण्डलके पास थे जिनमें कई सज्जनोंने पूछा था कि यदि वैद्यसम्मेलनके आयुर्वेदमहामण्डल अथवा आयुर्वेदविद्यापीठके हम सभासद हों तो हमें क्या लाभ होगा? यद्यपि उनसे निवेदन किया गया कि किसी सभाके उद्देश्योंकी पूर्तिमें सहायक होनेके ही लिये लोग सभासद होते हैं; अतः आयुर्वेदविद्यापीठके सभासद होकर आप आयुर्वेदके उद्धारके एक कारण होंगे। तथापि कुछ लोगोंको सन्तोष नहीं हुआ और उन्होंने फिर पूछा कि जैसे नागरीप्रचा-रिणी सभाएँ जिसे सभासद बनाती हैं उन्हें कोई मासिकपत्र पुस्तकें आदि देती हैं, उस तरहका बदला हमें क्या मिलेगा? इन सब प्रश्नोंका विचार कर आयुर्वेदमहामण्डलने निश्चय किया कि यों भी आयुर्वेदमहामण्डलको अपनी रिपोर्ट आदि निकालनेमें सालमें दो सौ रुपये ख़र्च करने ही पड़ते हैं; अतएव यदि मन्त्री सम्पादन-का प्रबन्ध कर सकें तो अभी एक ऐसा त्रैमासिक पत्र निकालें जिसमें सम्मेलनमें आये हुए निबन्ध, उसकी कार्य सूचना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिककार्यविवरण आदि छपा करें; किन्तु इस कार्यमें सालमें दो तीन सौ रुपयेसे अधिक खर्च न हों । विषयका विचार हुआ था परन्तु सम्पादनके विचारमें फिर भी कई महीने लगे । अन्तमें मन्त्रीने अपने सहयोगमें दो सम्पादकोंको लेकर कार्यारम्भ करना विचारा और इस सम्मेलनके पहले तक उसके दो अङ्क सभासदोंको देखनेको मिल भी गये । यह आनन्दकी बात है कि सभासदोंने पत्रिका निकलने पर प्रसन्नता प्रकट की है और उसे पसन्द भी किया है; परन्तु उसका तीन तीन महीनेमें निकलना बहुतोंको खटक रहा है, इधर धनाभाव मण्डलका हाथ रोक रहा है । तथापि अगले वर्षके लिये सम्मेलन चाहे तो उसे द्विमासिक पत्रिका बनानेकी आज्ञा दे दे और साल भरमें अन्ततः २५ फार्म निकालनेकी अनुमति कर दे । ऐसा होनेसे साल भरमें लगभग ५०) रुपयेका खर्च बढ़ जायगा किन्तु सम्भव है अधिक सभासदोंके होनेसे उसकी पूर्ति हो जाय । डाकखानेकी रवानगीका जो खर्च बढ़ेगा उसके लिये यह प्रबन्ध किया जा सकता है कि अधिवेशनोंकी सूचनाके लिये जो पृथक पत्र भेजे जाते हैं उनमेंसे जो अधिवेशन पत्रिका निकलनेके समीप हों उनकी सूचना पृथक् न भेजी जाय, पत्रिकामें छाप दी जाय, उसी परसे सभासदगण अपनी सम्मति भेज दें । इस वर्षके लिये इसके सम्पादक पं० किशोरीदत्त शास्त्री रिवाड़ी, पं० सूर्यप्रसाद वाजपेयी चमरौली उन्नाव और जगन्नाथप्रसाद शुक्ल हैं ।

सर्वसाधारणका आकर्षण ।

गत वर्षकी रिपोर्टमें इस बात पर जोर दिया गया था कि सर्वसाधारणका झुकाव यदि आयुर्वेदकी ओर कम है तो उसका दोष सर्वसाधारण पर नहीं किन्तु उसके अगुओं पर है । क्योंकि 'गतानुगतिको लोकः' के अनुसार जनता अपने अगुओंके अनुकरण पर चलती है । साथ ही सर्वसाधारणसे भी यह निवेदन किया गया था कि अपने भाग्यविधाता उन्हें स्वयं बनना चाहिये और सदसद्विवेकबुद्धिसे भले बुरेका निर्णय कर किसी कार्यको स्वीकार अथवा अस्वीकार करना चाहिये । देखते हैं इस प्रवाहकी कुछ उन्नति हुई है । जब हम देखते हैं कि कलकत्तेकी स्वागतकारिणी सभाकी सहायताके लिये श्रीमानसुसङ्ग नरेश, श्रीमान नाटोराधिपति, वङ्गदेशके प्रधान अगुआ वाग्मिवर माननीय सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, बाबू वैकुण्ठ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथ सेन, बाबू मोतीलाल घोष, माननीय बाबू भूपेन्द्रनाथ बसु, श्रीयुक्त माननीय सिराजउल इसलाम, माननीय बाबू अम्बिकाचरण मजूमदार, पण्डित राजेन्द्रनाथ शास्त्री, श्रीयुक्त सुरेन्द्र सर्वाधिकारी, श्रीसतीश्चन्द्र विद्याभूषण प्रभृति कमर कस कर खड़े हुए हैं और उसके लिये सर्वसाधारणसे अपील कर रहे हैं, तब अवश्य ही हृदयमें बलवती आशाका सञ्चार होता है। जब हम देखते हैं कि बम्बई प्रान्तमें माननीय उपासनी प्रभृति सज्जन गवर्नर साहबकी कौंसिलमें इस बातका प्रश्न करते हैं कि क्या सरकार आयुर्वेदकी शिक्षा दीक्षाके लिये कुछ खर्च करेगी? और माननीय फ़ीरोजशाह मेहता और महाराज कुरुन्दवाड़ सरीखे अगुआ कौंसिलमें आयुर्वेद और वैद्योंका पक्ष ग्रहण कर रजिस्ट्रेशन बिलका विरोध करते हैं, यही नहीं प्रान्तिक संस्कृत कालेजमें आयुर्वेदकी साङ्गोपाङ्ग पढ़ाई करानेके लिये सतारेकी प्रान्तिक राजनैतिक कानफरेंसमें बम्बई वाले सर्वसम्मतिसे प्रस्ताव स्वीकृत करते हैं, तब अवश्य ही शरीरमें पुलकावली दौड़ जाती है। भले ही अभी ऐसे प्रयत्नमें सफलता न हो; परन्तु दृढ़ताके उद्योगसे सब कुछ होना सम्भव है। जब हम देखते हैं कि मद्रासकी कायदा बनानेवाली कौंसिलमें माननीय कृष्णराव सरीखे सभासद आयुर्वेदको सहायता देने और उसकी शिक्षाको उत्तेजन देकर उन्नत करनेके लिये सरकारी खजानेसे कुछ खर्च दिलानेके लिये प्रस्ताव उपस्थित करते हैं, तब हृदय गद्गद होजाता है। भले ही ऐसे उपयोगी प्रस्तावका विरोध किसी देशीके मुखसे हो; परन्तु इससे स्पष्ट है कि यदि किसी कारणसे इस प्रवाहमें रुकावट न हुई तो एक न एक दिन यह प्रभावशाली आन्दोलन होगा। जब हम देखते हैं कि पञ्जाबकी हिन्दू कानफरेंसमें सर्वसाधारणके स्वास्थ्य-विचारके लिये आयुर्वेदकी शिक्षा प्रणालीको उत्तेजन देनेके विषयों पर बहस होती है तब मालूम पड़ता है कि मुर्दा हिन्दू जातिमें सचमुच जीवन सञ्चारकी आशा हो रही है। यही नहीं जब हम देखते हैं कि विहार प्रान्तके सपूत अपने प्रान्तमें खुलनेवाले सरकारी संस्कृत विद्यालयोंमें आयुर्वेदकी शिक्षा रखनेके लिये आन्दोलन करते हैं और उसमें सफल होते हैं तब यही विश्वास होता है कि भविष्य बहुत ही आशाजनक है। अवश्य ही एक सिरेसे दूसरे सिरे तक, गरीबसे अमीर तक, अपढ़से सुशिक्षित तक, निम्नकोटिसे लेकर उच्च कोटिके पुरुषों तकमें जातीयताकी लहर लहराने लगी है और वह अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम प्राचीन बातोंका महत्त्व लोगों को सुझानेमें समर्थ कर रहो है, आयुर्वेदकी ओर लोगोंका अनुराग बढ़ रहा है। परन्तु इसके साथ ही हम वैद्योंका और आयुर्वेदका अभ्युदय चाहनेवाले कर्म वीरोंका कर्तव्यक्षेत्र भी बढ़ता जा रहा है। अवश्य ही इन कार्योंमें अभी जो सफलता नहीं हो रही उसका दोष हम लोगों पर और हमारी जातिमें जातीयताका जोश फूंकने वाले समाचारपत्रके सम्पादकों पर, विशेष कर वैद्यक सम्बन्धी पत्रों के सम्पादकों पर भी है। हम वैद्योंका यह कर्तव्य है कि मध्यकालीन मुर्दानगी, उदासीनता और लापरवाहीको छोड़ उदरम्भर न बनते हुए अपने स्वार्थके साथही जिसके कारण अपने स्वार्थकी पूर्ति होती है, उस आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये भी कुछ करें और अपने परिचितोंमें भी ऐसी प्रेरणा उत्पन्न करें। स्वयं प्रभावशाली बननेका प्रयत्न करें और प्रभावशाली पुरुषोंसे मिलते जुलते रहें, उन्हें बीच बीचमें आयुर्वेदकी दशा और उसके प्रति उनके कर्तव्यका स्मरण कराते रहें। समाचार-पत्र सम्पादकों को भी उचित है कि वे जैसे बहुतसे काल्पनिक विषयोंके आन्दोलनोंमें आकाशपाताल एक किया करते हैं उसी प्रकार कुछ ऐसे विषयोंपर भी समय समय पर ज़ोर दिया करें, जिनका पूर्ण करना हमारे हाथ है और जो हमारी जातीयता, हमारी जीवनीशक्तिके आधारस्तम्भ हैं, हमारी प्राचीनकीर्तिके द्योतक हैं और जिनसे हमारा पुरुषानुक्रम सम्बन्ध दृढ़ चला आता है। वैद्यक-पत्रोंकी जवाबदारी सबसे अधिक है और दो चार को छोड़ अपनी जवाबदारीको समझने अथवा पूर्ण करने में भी वे अव्वल नम्बरके लापरवाह हैं। इसमें सन्देह नहीं कि गर्मी सुजाक आदि विविधरोगके नुसखे और ग्राहकोंके प्रसन्न करने योग्य आकर्षक विषयोंकी चर्चा करनेसे बहुतोंका कौतूहल होगा, बहुतोंका उपकार भी होगा, ऋषि-वर्णित विषयोंको बारम्बार नये पुराने ढङ्गसे दोहरानेसे वैद्योंका और सर्वसाधाणका उपकार होगा अतएव इन विषयोंका चर्चा भी रखिये; परन्तु जिन उपायोंसे आपका आयुर्वेद फिर ताज़तवाना होगा, जिन उपायोंसे उसकी ओर लोगोंका अधिक आकर्षण होगा, जिन बातोंके बतलानेसे सर्वसाधारण और उनके अगुओंको आयुर्वेदके-प्रति उनके कर्तव्यका ज्ञान, अथवा स्मरण और स्फूर्ति होगी, जिन प्रयत्नोंसे आयुर्वेदके पुनरभ्युदयका आन्दोलन सफल होगा, जिन युक्तियोंसे आयुर्वेदकी उन्नतिके मार्गके विघ्न दूर होंगे, जिन प्रमाणोंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
079419

आयुर्वेदके विरोधियोंका मुंह बन्द होगा, जिन तत्वोंसे आयुर्वेदको हेय समझनेवालोंका भ्रम दूर होगा, जिन कार्योंसे आप सर्वसाधारण-के अधिक सम्मान भाजन बनेंगे उनका वर्णन भी किया कीजिये, बारम्बार ऐसे विषयोंपर विचार कीजिये और अपनी सम्पादनकला-को सफल करते रहिये।

079419

देशीनरेशोंका झुकाव।

गत वर्ष इस बातकी शिकायत की गयी थी कि देशी नरेशोंके यहां आयुर्वेदकी पुकार नहीं पहुँचती। दुःखके साथ कहना पड़ता है कि इस स्थितिमें अब तक विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। इस वर्ष भी नहीं सुनायी पड़ा कि किसी देशी रजवाड़ेमें आयुर्वेदके सम्बन्ध-में कोई विशेष उल्लेख योग्य घटना हुई हो। जिन नरेशोंके पूर्व पुरुष रघु-दलीप आदि एक ब्राह्मणकी, एक प्रजाकी, एक गायकी पुकार सुनकर धैर्य धारण नहीं करते थे और स्वयं झटपट प्रतिकार-को दौड़कर अपना सर्वस्व यहां तक कि जान तक धोखेमें डालना कोई बड़ी बात नहीं समझते थे, उन्हीं नरेशोंके आराम महलकी चारदीवाली पार करनेमें भी आयुर्वेदकी पुकार समर्थ नहीं होती, यह दुःखकी बात है। कुछ लोगोंकी सम्मति है कि देशी नरेशोंके सम्बन्धमें कोई अभिप्राय प्रकट करना ठीक नहीं हैं; परन्तु क्या यह मर्म व्यथाकी बात नहीं है कि जिनके सामने रोने, मचलने और विनय अनुनय करनेका, मीठी अथवा कड़ी तीखी सुनानेका हमें अधिकार है, जो जातिसे, धर्मसे, रक्तसे और हर प्रकारसे हमारे हैं, उनके सामने हम कुछ न कहें, उनके पास तक हम अपने अभाव अभियोगकी बात न पहुँचावें; किन्तु ब्रिटिश सरकार पर हर तरहका ज़ोर लगाने और फल पानेकी आशा करते रहें? मेरा तो विश्वास है कि सबसे पहले हमें देशी रजवाड़ोंमें आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये प्रयत्न करना चाहिये, वहां उसकी प्रकाशमान प्रभा चमकानी चाहिये, तब हमें अन्यत्र आ-युर्वेदकी उन्नतिके आन्दोलन पर अधिक बल प्राप्त होगा। यदि हमें सचमुच आयुर्वेदके लिये कुछ करना है तो किसी संस्कृत विद्या-लयके साथ आयुर्वेदकी एक आध कक्षा खुल जानेसे अपनेको कृत-कृत्य नहीं मान लेना चाहिये, यह तो केवल राजमान्यताका एक मानसिक सन्तोष है। असलमें हमें एक विशाल और देशव्यापी आयुर्वेदविद्यालय स्थापित करनेका उद्योग करना ही पड़ेगा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके लिये यह बहुत आवश्यक है कि ज़मीन्दारों, भूस्वामियों और नरेशोंको हम अपने अनुकूल कर सकें और उनसे अपने कार्यमें सहायता प्राप्त कर सकें। इसके लिये जिन साधनोंसे नरेशोंके हृदयमें आयुर्वेदकी वर्तमान हीनावस्था और उसके अभ्युदयकी आवश्यकताके विचार प्रतिबिम्बित करा सकें उन साधनोंका हमें बराबर प्रयोग करते रहना चाहिये। जिन वैद्योंको नरेशोंके पास जानेका अवसर आता है अथवा जिन राजवैद्योंको देशी नरेशोंकी सेवा-चिकित्सा करनी पड़ती है उनका कर्तव्य है कि वे अवसर पाते ही आयुर्वेद सम्बन्धी वर्तमान घटनाओंका उनके सामने ज़िक्र करते रहें। क्या कारण है कि इन्दौरके स्टेटसर्जन मिस्टर ताम्बे वहां राजसाहाय्य और प्रजासाहाय्यसे एक स्वास्थ्य-निवास (सेनिटोरियम) स्थापित करनेमें समर्थ हों; परन्तु किसी रजवाड़ेके राजवैद्य अपनी रियासतमें पश्चिमी अस्पतालोंके स्थापित होनेके प्रवाहको रोकनेमें भी समर्थ न हों और सम्पूर्ण रियासतोंमें देशी अस्पताल खुलवानेका कुछ उद्योग न कर सकें अथवा उसमें सफल न हो सकें। राजवैद्योंमें ऐसी कौनसी कमजोरी है अथवा नरेशोंमें ही ऐसा कौनसा विपरीत भाव घुसा हुआ है जिसके कारण आयुर्वेदके उद्योग सफल नहीं हो सकते। राजकोटके वैद्यराज श्रीयुक्त रविशङ्कर देवी शङ्करजी कई वर्षसे काठियावाड़में एक स्वास्थ्य-निवास स्थापित करनेका उद्योग कर रहें हैं, यही नहीं उन्हें कई नरेशों, पोलिटिकल एजेंटों और बम्बई प्रान्तके गवनर महोदयकी सहानुभूति भी प्राप्त हुई है; परन्तु वह कौनसी कमी है जो ऐसी ज़बरदस्त सहानुभूतियोंको भी दबा बैठती है और कार्य सिद्ध नहीं होने देती? क्या कारण है कि बघेलखण्ड, बुन्देलखण्ड, मध्यभारत और राजपूतानेके रजवाड़ोंमें पश्चिमी वैद्यकके डाक्टर पहुँचानेकी एजेंसी अथवा आढ़तकी कोठी (मेडिकल कालेज) इन्दौरमें वर्षोंसे खुली हुई अपनी दूकान चलावे; किन्तु इतने विस्तृत रजवाड़ी प्रान्तोंमें कहने योग्य एक भी आयुर्वेदका विद्यालय न हो! आँसू पोंछनेके लिये हम जयपुरके संस्कृत विद्यालयके साथ चलनेवाली आयुर्वेदकी कक्षाओंका उल्लेख कर सकते हैं; परन्तु क्या उतनेसे हमारा समाधान हो सकता है? जिसके साथ एक उत्तम प्रयोग शाला (लेबोरेटरी) न हो, एक भेषज संग्रहालय न हो, निदान और चिकित्साके अनुभवके लिये आतुरालय युक्त औषधालय न हो, ऐसा विद्यालय क्या हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाधान कर सकता है ? अङ्गरेज़ी डिसपेंसरी अथवा अस्पताल तो प्रत्येक रजवाड़ेमें हैं; परन्तु क्या कारण है कि किसी रजवाड़े में एक भी आदर्श आतुरालय युक्त औषधालय नहीं है ? क्या इसके लिये देशी नरेशोंसे कहना उचित नहीं है, क्या इसके लिये राजवैद्योंको उद्योग करना उचित नहीं है ? रजवाड़ोंमें भी स्टेट सर्जनोंकी तो तूती बोले और राजवैद्य महाराज अपने राजाकी नित्य नाड़ी पकड़ आने अथवा उनका कुशल प्रश्न पूछ आनेमें ही अपना जन्मसार्थक समझते रहें और स्टेटसर्जनके सामने अजागलस्तनवत बने रहें। हम पूछते हैं कि कोचीन नरेशके राज्यमें पश्चिमी डाक्टरोंको प्रधानता न देनेके कारण कौन सी आफ़त मँडराया करती है, जिसके छोटेसे राज्यमें सौ से अधिक आयुर्वैदिक अस्पताल हैं और अन्य रजवाड़ोंकी प्रजा डाक्टरी अस्पतालोंकी दवा खाकर कितनी दीर्घायुषी अथवा अमर बनी बैठी है ? यह क्या विलक्षण हीनावस्था नहीं है कि धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्षके साधन आयुर्वेदकी उन्नति करनेवाली सभाका सभासद बननेमें किसी रजवाड़ेका आयुर्वेद प्रेमी नौकर इस लिये डरे कि कहीं सभाका सभासद होने मात्रसे ही मेरे अफसर मुझपर रुष्ट न हो जायँ।

यह आनन्दकी बात है कि कुछ कुछ देशी रजवाड़ोंमें आयुर्वेदकी चर्चा होने लगी है और कोई कोई देशी नरेश उसकी बात सुनने लगे हैं। श्रीमान् बान्धवेश रीवांनरेशके पास आयुर्वेदमहामण्डलका जो पत्र गया था उसके उत्तरमें श्रीमान्‌की ओरसे लिखा आया है "आयुर्वेदसम्मेलन अच्छा काम कर रहा है, जिसका हाल श्रीमान्‌को मालूम है। आपका पत्र पढ़ कर प्रसन्नता हुई।" बीकानेर राज्यके पूर्वाश्रमके निवासी स्वामी गणेशानन्द भारतीने गत फरवरी महीनेमें श्रीमान् बीकानेर नरेशसे प्रार्थना की थी कि आप अपने राज्यमें कमसे कम एक अच्छी आयुर्वैदिक पाठशाला और कई देशी चिकित्सालय खोलें। हम नहीं कह सकते इस विषयमें वहाँ कुछ हुआ है या नहीं; परन्तु इतनी बात आनन्दकी है कि श्रीमान बीकानेर नरेशने अपने राज्यकी जो व्यवस्थापक सभा निर्माण की है उसमें आयुर्वेद महामण्डलके सदस्य श्रीयुक्त पं० जीवनरामजी हर्ष वैद्य भी निर्वाचित हुए हैं और 'आशा है आपके द्वारा बीकानेर राज्यमें आयुर्वेद सम्बन्धी चर्चा विशेष रूपसे होती रहेगी। उधर जब कठियावाड़के श्रीमान गोंडाल नरेश डाक्टरीविद्याके निष्णात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अनुरागी चिकित्सक हैं तब हमें सुनकर प्रसन्नता हुई कि उसी काठियावाड़ प्रान्तके श्रीमान् भावनगर नरेश महाराज भावसिंहजी बहादुर आयुर्वेदके बड़े प्रेमी हैं; यही नहीं बल्कि अच्छे कुशल वैद्य भी हैं, और आप स्वयं रोगियोंको देख कर चिकित्सा करते हैं । कुछही महीनोंकी बात है कि हमने आपकी कुशलताका समाचार बड़े आनन्दसे पाया था। ध्रांगध्रा राज्यके एक उच्चकर्मचारी श्रीयुक्तबक्षी जी मूत्राश्मरी रोगसे बेतरह पीड़ित हुए। वहाँके डाक्टरों और स्टेटसर्जनकी सम्मति हुई कि पथरी बहुत बड़ी है यहाँ इसका शस्त्रोपचार नहीं हो सकता । अन्तमें आप ध्रांगध्रा नरेशकी ओरसे बम्बई भेजे गये । वहाँके बड़े बड़े डाक्टरोंने एक्सरेजके सहारे पथरी देख कर कहा कि हिन्दुस्थानमें इसका अपरेशन नहीं हो सकेगा, आप विलायत जाइये। अन्तमें ध्रांगध्रा नरेश उन्हें विलायत भेजनेको भी तैयार हुए। इसी बीच बक्षी जीने एक मनुष्यसे सुना कि भावनगर नरेश आपने यहाँ शास्त्रोक्त औषधि रखते हैं और मूत्राश्मरीके लिये भी आपने परिश्रम किया है आप वहाँ जायँ तो सम्भवतः आपको लाभ होगा। पहले तो बक्षीजीको विश्वास नहीं हुआ कि इतने बड़े राजा इस तरह रोगीको देख कर औषध देते होंगे। तथापि गरजमन्द बावला होता है,आप महाराजके पास गये । महाराजने बड़े दयार्द्र भावसे दो घण्टे तक देखा और आपकी औषधि की ।श्रीमानके यहां कितने ही डक्टर और वैद्य हैं परन्तु रोगियोंको आप स्वयं बड़े प्रेमसे देखते हैं । अन्तमें दो महीने तक औषध करनेसे आपका रोग बिना शस्त्रक्रियाके ही अच्छा होगया ! यदि अन्य राजा लोग इसी प्रकार आयुर्वेदकी ओर दृष्टिपात करें और अपने वैद्यों द्वारा प्रजाको आयुर्वेदिक औषधियां पहुँचावें तो आयुर्वेदका उपकार हो और स्वयं उनकी प्रजाका भी उपकार हो ॥

सरकार और आयुर्वेद ।

यद्यपि सरकार प्रजाकी शक्तिसे ही शक्ति सम्पन्न होती है, तथापि वह सम्पूर्ण शक्तियोंका समवाय है । इस लिये जब प्रजाशक्तिके साथ राजशक्तिका सम्मेलन होता है तब वह शक्ति एक और एक दो न होकर एक और एक ११ का अनुभव कराती है । प्रजा कोई काम करने लगे और राजशक्ति भी उसमें सहायक हो जाय तो वह कार्य दूसरे ही आनबानसे, दूसरे ही ठाठसे पूरा होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु हमारे दुर्भाग्यसे अब तक हमारे आयुर्वैदिक आन्दोलनको सरकारकी सहायता नहीं मिली। यही कारण है कि उन्नतिशील ब्रिटिश राज्यमें भी आयुर्वेदकी कुछ उन्नति नहीं होसकी। समय बलवान होता है; और सबकी सब दिन एकसी स्थिति नहीं रहती है। इस न्यायसे आयुर्वेदके लिये भी क्रमशः समयकी विपरीत दृष्टि कम हो रही है और "चक्रनेमि क्रमेण" अच्छी दशाकी ओर उसकी गाड़ीका पहिया घूम रहा है। रात के बाद दिन होने ही वाला है; अतएव अवनतिके पश्चात् उन्नति भी अनिवार्य है। किन्तु इसके लिये आवश्यक यह है कि उन्नतिशील आन्दोलन और उन्नतिके योग्य कर्तव्य परायणता बनी रहनी चाहिये, जिस समुदायकी उन्नतिका उद्योग शीघ्रतासे जारी रहता है और जो समुदाय बिना विश्राम, बिना इधर उधर देखे अपने उद्दिष्ट हेतुकी ओर ही एकटक दृष्टि लगाये सरपट चला जाता है, उसको अवनतिकी रात शीघ्र गर्मीकी रातके समान समाप्त होती है और शीघ्र उन्नतिका सूर्य दिखाई पड़ता है किन्तु जो समाज बिना रुके गन्तव्य स्थानको तो जाता है; परन्तु रास्तेमें बचा बचा कर पैर रखता है वहाँ उन्नतिका सूर्य जाड़ेकी रातोंके समान बहुत देरीसे साढ़े सात बजे उदय होता है! परन्तु कहते लज्जा मालूम होती है कि हमारे वैद्यसमुदायकी उन्नतिका उद्योग इन दो जातियोंमें से एकके भी अनुकूल नहीं हैं। वैद्यसमुदायमें से अनेकोंको अपने लक्ष्यका ही ध्यान नहीं, उनका उद्देश्य ही अभी निर्दिष्ट नहीं है, उनका उद्योग ही अभी व्यवस्थित नहीं है, उनकी दृढ़ता अभी पक्की नहीं, अतएव उनकी उन्नति भी बहुतोंको निश्चित नहीं मालूम पड़ती। तब क्या इस समुदायकी अवनतिकी रैन सिरावेगी ही नहीं? रातका अन्त तो होवेगा ही; परन्तु अपनेमें जो दोष हैं उन्हें निकालना होगा, अपने उद्देश्यका लक्ष्यबिन्दु निरन्तर अपनी आँखोंके सामने रखते हुए त्राटक क्रियाके समान उधर देखते रहना होगा, उद्योग प्रियताके साथ, दृढ़ताके साथ अपने काममें लगे रहना होगा, परिस्थितिकी कठिनाइयोंसे घबड़ाकर लक्ष्यभ्रष्ट नहीं होना होगा, धीरे ही सही, परन्तु पैर बढ़ाते रहना होगा, प्रतिकूलताकी खाईं, विघ्नोंके पहाड़ और आफतोंके तूफान हिम्मतके साथ पार करते रहनेके लिये कमर कसे रहना होगा, फिर क्या बात है कि अवनतिका अन्त न हो। ध्रुव प्रदेशोंमें भी जैसे छः महीनेके पश्चात सूर्यका दर्शन होता है उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह बहुत बड़ी रात बिताकर आपको अपनी उन्नतिका सूर्य दिखाई पड़ेगा, आपका उद्देश्य सफल होगा। घबड़ाइये नहीं उसके लक्षण भी आपको दिखाई पड़ने लगेंगे।

सहानुभूतिका मूलसूत्र सहयोग है। इसलिये सरकारका विरक्ति भाव दूर करनेके लिये और उसकी सहानुभूति पानेके लिये अधिक अधिक उसका सहयोग हो इसका प्रयत्न करना होगा। अकार्षण विना शक्ति के नहीं होता, लोहचुम्बकमें भी आकर्षण-शक्ति तभी आती है जब उसमें बिजलीकी शक्ति भरी जाती है। इसलिये आपको स्वयंशक्तिसम्पन्न बनकर अपनी संस्था-को शक्तिसम्पन्न बनाना होगा। अपनेको सहयोगके योग्यसिद्ध करना होगा। जिस दिनसे सरकारने अपनी उपाधिमालामें "वैद्यरत्न"का रत्नप्रसून पोहा है, उसी दिनसे हमने समझ लिया था अब आरम्भ हुआ है तो क्रमवृद्धि भी होगी ही। आनन्द की बात है कि तबसे प्रतिवर्ष एक दो सज्जन "वैद्यरत्न" बनाये जाते हैं। गतवष भी एक मलावारी सज्जन वैद्यरत्न बनाये गये हैं। उनका नाम श्रीयुक्त तृप्रंगोद कोडाकल टी० परमेश्वरम् मूस एस० मलावार महोदय हैं। अवश्यही इन सब लोगोंके कारण कुछ सहवास और सहयोगकी वृद्धि होगी और सरकारको वैद्योंका स्वरूपज्ञान भी होता जायगा। इस पदवीके लिये सरकारको योग्य वैद्योंकी तालिका टटोलनी पड़ेगी और तब कुछ तो उसे उनके कार्योंका भी अनुभव होगा अतएव ऐसे लोग वैद्योंके काममें सरकारकी सहानुभूति उत्पन्न करानेके लिये जञ्जीरकी कड़ीका काम देंगे। इसीलिये ऐसे लोगोंका आयुर्वेद महा-मण्डल अभिनन्दन किया करता है। इन लोगोंको भी मण्डलने बधाईका सन्देशा भेजा था। सहयोगका एक दूसरा उपाय अपनी उपयोगिता का बतलाना भी है। इसीलिये आयुर्वेद महामण्डलकी वैद्योंसे यह अनुरोध और प्रेरणा रहती है कि वैद्य लोग अपने अपने औषधालयका रजिस्टर रखें, जिससे यह पता चलेगा कि सालभरमें उन्होंने कितने रोगियोंकी दवा की और वे सर्वसाधारणके कितने उपयोगी हुए। यही नहीं बल्कि यह भी मालूम पड़ेगा कि कितने लोगोंको वैद्यों द्वारा मुफ्त इलाज प्राप्त हुआ। इससे सरकार समझ सकेगी कि लाखोंका द्रव्य व्ययकर वह जो उपकार कुछ चुने हुए नगरों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ही अस्पतालों द्वारा कर सकती है, उससे कई गुणा अधिक सर्वसाधारणका उपकार बड़े बड़े शहरों से लेकर चार घरके झोपड़े वाले पुरवा में भी वैद्य लोग कर रहे हैं। कर्तव्यमें समानता होना भी सहयोग और सहानुभूतिका कारण होता है। सर्वसाधारणकी सेवा करना, सर्वसाधारणका उपकार करना सरकारका कर्तव्य है और उसके उस कर्तव्यमें सहायता पहुंचाना अवश्य ही उसके सन्तोषका कारण होना चाहिये। इसी लिये आयुर्वेद महामण्डल ऐसी संख्याएं संग्रह कर रिपोर्टमें छापता है यही नहीं आयुर्वेद-महामण्डलकी ओर से प्रतिवर्ष प्रयागके माघ मेलेमें एक धर्मार्थ औषधालय खोला जाता है। उसके द्वारा हज़ारों यात्रियोंको लाभ पहुँचाया जाता है और वे वैद्योंकी सहानुभूति लेकर घर जाते हैं। यहा नहीं मेला देखने और प्रबन्ध करनेके लिये जिन अफसरोंकी नियुक्ति होती है उनके कानोंमें भी वैद्योंके कार्योंकी और वैद्योंकी संस्थाकी कथा पहुँचती हैं। अवश्य ही उसका कुछ प्रभाव भी होता ही होगा। गतवर्ष माघमेलेके मैनेजर तहसीलदार श्रीयुक्त पीतम् प्रसाद जी और नायब तहसीलदार श्रीयुक्त लखपतरायजी कई बार औषधालयमें आये। कार्यका निरीक्षण किया; और उससे बहुत प्रसन्न हुए। यही नहीं स्थानके देनेमें जाइण्टमजिस्ट्रेट महोदय और सानिटरी डिपुटी कमिश्नर श्रीयुक्त नहरू महोदयने बहुत उदारता दिखलायी और इस कार्यसे सहानुभूति प्रकट की। मेलेके अन्तमें जितने रोगियोंको दवाकी गयी थी उसकी रिपार्ट यहाँके डिस्ट्रिक्टमजिस्ट्रेट महोदयके पास भी भेज दी गयी थी।

भारतीय लाट महिषी श्रीमती लेडी हार्डिंञ्जकी गत श्रावण मासमें इङ्गलेण्डमें असामयिक मृत्यु हो गयी। श्रीमान् लार्डहार्डिञ्ज जैसे प्रजाप्रिय वाइसरायके इस दुःखमें सम्पूर्ण भारतवासियोंकी हार्दिक सहानुभूति थी। इस लिये आयुर्वेद महामण्डलने भी अपना एक विशेष अधिवेशन कर शोक और सहानुभूति प्रकट की और श्रीमान् वाइसराय महोदयके पास तार द्वारा भारतीय वैद्यसमूहकी समवेदना प्रकट की। उसके उत्तरमें उनकी ओरसे उनके प्राइवेट सेक्रेटरीने कृतज्ञता सूचक तार भेजा। बड़े ही दुःखकी बात है कि उस घटनाको अभी छः महीने भी नहीं बीते, लाट साहबके हृदयका वह घाव भी नहीं भरा कि उनपर एक दूसरा और गहरी विपत्ति घहरायी है। उनके ज्येष्ठपुत्र लेफ्टिनेण्ट हार्डिञ्ज फ्रांसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाड़ाईके मैदानमें घायल होकर इसी महीनेमें मृत्युको प्राप्त हुए हैं। यद्यपि वे साम्राज्यकी गौरवरक्षाके लिये शूरताके साथ बलि हुए है—और यही इस महाविपत्तिमें धैर्यावलम्बनका सहारा है-तथापि पुत्र शोक बहुत ही जबरदस्त होता है और इस संसारमें ऐसा मनुष्य मिलना कठिन है जो ऐसी विपत्तिमें व्यथित न हो। इसलिये बड़े लाटके समान सम्पूर्ण भारतवासी भी दुःखित हुए हैं। वैद्यसमुदायकी ओर से आयुर्वेद महामण्डलने फिर भी लाटसाहबके साथ समवेदना प्रकाश की है। इसके उत्तरमें लाटसाहबने आयुर्वेदमहामण्डलके प्रति गहरी कृतज्ञता प्रकट की है।

यूरोपीय महायुद्ध और भारतीय वैद्य—जिस समय यूरोपका घनघोर महाभारत आरम्भ हुआ और भारतको उसमें सम्मिलित होकर अपनी सेना भेजनी पड़ी उस समय यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि जो भारतीय वहां गये हैं वे जब घायल होंगे तब उनकी सेवा सुश्रूषामें द्रव्य लगेगा, उनके कुटुम्बी जो यहां निराश्रित होंगे उनकी सहायता करनी पड़ेगी। इसलिये वाइसराय महोदयने एक फण्ड खोला। जो सेना भारतसे यूरोप अथवा अफ्रिकाके युद्धस्थलमें गयी है उसका जो खर्च भारतमें रहते समय होता था वह भारत सरकार देती जावेगी; और जो अधिक होगा वह विलायतके खजानेसे दिया जावेगा। इसके सिवायं यूरोप शीतप्रधान देश है, तिसपर भी बेलजियम और भी नीचा प्रान्त है। वहां अधिक जाड़ा पड़ता है, बर्फ गिरता है, इसलिये वहांकी सर्दी सहनेके लिये यहां के लोग अनभ्यस्त हैं। इस कष्टको दूर करनेके लिये स्वर्गीय लार्ड राबर्टके उद्योगसे एक फण्ड खुला है और उसके द्वारा भारतीय सैनिकोंको गरम कपड़े पहुँचाये जाते हैं। परन्तु वहां जो हताहत होते हैं उनके दुःखीकुटुम्बोंके साथ सहानुभूति दिखाना प्रत्येक भारतवासीका कर्तव्य है, वैद्य भी भारतवासी ही हैं। इसलिये उनकी ओर से भी कुछ होना आवश्यक था। सबसे पहले ३ सितम्बरको आयुर्वेदमहामण्डलकी ओर से पण्डित जगन्नाथ पञ्चभैयाके सभापतित्वमें एक सर्वसाधारण सभा हुई। उसमें बतलाया गया कि हमारी सरकार न्यायकी रक्षाके लिये, पशुबलका विरोध करनेके लिये, अत्याचार निवारणके लिये, युद्धमें प्रवृत्त हुई है। इसलिये उसके साथ हमारी सहानुभूति होनी चाहिये, उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयके लिये हमें ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये। इसके बाद श्रीमान् वाइसरायके पास राजभक्ति सूचक तार भेजा गया और उसमें सरकारके विजयकी ईश्वरसे प्रार्थना की गयी। इसके उत्तरमें वाइसराय महोदयने इस सन्देशके लिये बहुत प्रसन्नता प्रकट की। इसके पश्चात युक्तप्रान्तीय छोटे लाट महोदयकी ओरसे मन्त्रीके पास एक पत्र आया जिसमें सार्वजनिक अपीलकी प्रति भी थी। आयुर्वेदमहामण्डलने सोचा कि यद्यपि उसके सभासद अपनी अपनी बस्तीमें पृथक भावसे जो चन्दे हो रहे हैं, उनमें योगदान देही रहे हैं, तथापि यह अच्छा होगा कि उसके सभासद कुछ आयुर्वेदमहामण्डलकी ओरसे भी भेजें। आयुर्वेदमहामण्डलको यह मालूम था कि उसको इकट्ठा की हुई रकम विशेष नहीं होगी और उस आवश्यक सहायताके महासमुद्रमें एक बिन्दुका भी काम नहीं देगी तथापि यह सबको विदित है कि वैद्योंमें धनवान व्यक्ति बहुत थोड़े हैं और निर्धन गरीबोंकी ही उनमें विशेष संख्या है। उन्होंने राजभक्तिके उमङ्गमें जो पत्र पुष्प दिये उसे ही सरकार महत्वका समझेगी। सुदामाके तण्डुलोंमें श्री कृष्णको जो आनन्द आया था ५६ भोग और षड्रसव्यञ्जनोंमें वह असम्भव था। इस सहायताकी रकम ६०) हो तक गयी है। आशा है जिन सभासदोंने अभी कुछ नहीं दिया वे भी यथासाध्य कुछ न कुछ भेजेंगे।

दो मेमोरियल ।

इधर तीन चार वर्षसे सरकारकी प्रवृत्ति संस्कृत शिक्षाका विस्तार करनेकी ओर हुई है। संस्कृत ही नहीं बल्कि पूर्वकी जितनी प्राचीन विद्याएँ हैं उन सबोंकी शिक्षाका विस्तार करनेके लिये उसकी अनुकूलता हुई है। इसी बातके विचारके लिये उसने तीन वर्ष पहले सर हारकोर्ट बटलरके सभापतित्वमें एक कमिटी नियुक्त की थी। उसमें यह निश्चय हुआ था कि संस्कृतकी शिक्षाको उत्तेजन दिया जाय और न्याय, सांख्य, ज्योतिष, वेदान्त, काव्य, साहित्य आदि उसके सब अङ्ग विशेष रूपसे पढ़ाये जायँ। शोक है कि उस समय किसीका ध्यान आयुर्वेदकी शिक्षाकी ओर आकर्षित नहीं हुआ। अतएव कानपुरके वैद्यसम्मेलनने एक प्रस्ताव पास इस ओर सरकारका और विशेष कर सरकारके शिक्षासचिव तथा उक्त कमिटीके अध्यक्ष सरहारकोर्ट बटलरका ध्यान इस ओर आकर्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। तब तक इस विषयमें कोई कार्यवाही नहीं हुई। इसके पश्चात सुना गया कि सरकार बम्बई प्रदेशके पूना नगरमें और विहार प्रदेशके पुरी तथा मुजफ्फरपुरमें एक एक संस्कृत विद्यालय स्थापित करना चाहती है। आयुर्वेदमहामण्डलको आवश्यक जान पड़ा कि पहले ही यदि कार्यकर्ताओंको चिता दिया जाय तो सम्भवतः उक्त विद्यालयोंमें आयुर्वेदकी भी पैठारी हो जाय। विहार और उड़ीसाकी सरकारने २३ फरवरी सन् १९१४ के प्रस्ताव नम्बर ७८१६ के अनुसार संस्कृत शिक्षाकी उन्नतिके सम्बन्धमें विचार करनेके लिये एक कमिटी नियुक्त की, उस कमिटीमें निम्न लिखित सज्जन थे। श्रीमान् महाराजा बहादुर सर रामेश्वरसिंह जी के० सी० आई० ई० दरभङ्गा (सभापति), आनरेबल मिस्टर पियर्सन आई० सी० एस० विहार गवर्नमेण्टके अस्थायी चीफ सेक्रेटरी, आनरेबल मिस्टर जे० सी० जेनिङ्गस विहार उड़ीसाके अस्थायी शिक्षा विभागके डाइरेक्टर, माननीय बाबू द्वारकानाथ मुजफ्फरपुर, माननीय रायबहादुर कृष्णसहाय, रायसाहब भगवती सहाय स्कूलोंके अतिरिक्त इन्सपेक्टर, पण्डित रामबल्लभ मिश्र ब्रालासारके डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और कलेक्टर, पटना कालेजके संस्कृत प्रोफेसर साहित्याचार्य पण्डित रामावतार शर्म्मा, डाक्टर, डी० बी० स्पूनर, प्रयागके म्योर सेण्ट्रल कालेजके संस्कृत प्रोफेसर महामहोपाध्याय पण्डित गङ्गानाथ झा, महामहोपाध्याय पण्डित चित्रधर मिश्र, महामहोपाध्याय पण्डित रघुनन्दन त्रिपाठी साहित्याचार्य, महामहोपाध्याय पण्डित सदाशिव मिश्र पुरी, पण्डित जगन्नाथ मिश्र पुरी, महामहोपाध्याय पण्डित परमेश्वर झा, और पण्डित रघुनन्दन प्रसादसिंह चौधरी धर्मभूषण जमीदार सिलौत। इन १६ सज्जनोंके अतिरिक्त कमिटीके सेक्रेटरी श्रीयुक्त मिस्टर जी० ई० फौक्स साहब थे। इस कमिटीने छः और सात मार्चको विचारणीय विषयोंका विचार किया। सौभाग्य क्रमसे उस कमिटीमें आयुर्वेदकी चर्चा उठी। यद्यपि उस कमिटीमें इस विषयका पक्का मन्तव्य नहीं हुआ तथापि यह विचार लिख लिया गया कि आयुर्वेदको शिक्षाके लिये भी एक अध्यापककी आवश्यकता है। इसी बीचमें मुस्तफापुरमें विहारप्रान्तके वैद्योंका वैद्यसम्मेलन हुआ। उसमें इस विषयकी चर्चा हुई। और प्रस्ताव भी पास हुआ कि सरकार उक्त विद्यालयोंमें आयुर्वेदकी शिक्षाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्ध अवश्य करे। विहार सरकार इस विषय पर २० जुलाईके पश्चात विचार करनेवाली थी और उसने विज्ञप्ति कर दी थी कि २० जुलाईके पहले इस विषयमें जिसे जो कुछ कहना हो वह कहे। ज्येष्ठ शुक्ल १२ सं० ११७१के आयुर्वेदमहामण्डलके दूसरे अधिवेशनमें विहार सरकारके पास आयुर्वेदकी शिक्षाके पक्षमें मेमोरियल भेजने-के लिये मेजर वामनदास बसु आई एम. एस, डाक्टर लक्ष्मीकान्त शर्मा एल. एम. पी और जगन्नाथप्रसाद शुक्लकी एक कमिटी बना दी गयी। इस कमिटीने एक मेमोरियल बनाकर विहार सरकारके पास भेजा। मेमोरियलमें लिखा गया कि आयुर्वेदकी चिकित्सासे अब भी भारतका अधिकांश भाग आरोग्य लाभ करता है, निम्नश्रेणीसे लेकर अध्यापक, हाईकोर्टके जज, कौंसिलके मेम्बर, राजा महाराजा सब इस चिकित्सापद्धतिसे लाभ उठाते हैं। अन्य शास्त्र जब मन बह-लाव अथवा विद्याप्राप्ति के लिये हैं तब आयुर्वेद जीवन रक्षाके लिये है। हिन्दुस्तानियोंकी प्रकृतिके लिये आयुर्वेदकी औषधियां सात्म्य हैं। इसलिये पुरी और मुजफ्फर पुरके संस्कृत कालेजोंमें आयुर्वेदकी शिक्षाका प्रबन्ध कृपया अवश्य किया जाय। कहते हुए आनन्द होता है कि विहार और उड़ीसाकी सरकारने बड़ी ही उदारता और प्रजाके हितकी दृष्टिसे इस विषयका विचार किया है और अपने २५ नवम्बरके सरकारी गज़टमें संस्कृत विद्यालय सम्बन्धी जो मन्तव्य प्रकाशित किया है उसमें आयुर्वैदिक शिक्षा के सम्बन्धमें निम्न लिखित सम्मति प्रकटकी है:—

"5 The Lieutenant-Governor in Council agrees with the Committee that the Sanskrit school at Puri Should eventually be Provicialized ; and he accepts their recommendations in this matter. The establishment of Government colleges there and at Muzaffarpur, will do much to preserve Sanskrit learning in the province from extinction and in particular to promote the study of Ayur-vedic medicine on which popular feeling lays much stress"

इसमें स्पष्ट रूपसे कहा गया है कि पुरीका संस्कृत स्कूल पीछे प्रान्तिक विद्यालय होगा और मुजफ्फरपुरका कालेज सर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी विद्यालय होगा। इन दोनों के द्वारा अस्त होती हुई संस्कृत शिक्षाको और विशेषकर उस आयुर्वैदिक चिकित्सा पद्धतिको बचानेमें बहुत सहायता मिलेगी, जिसके विषयमें सर्वसाधारणका ज़ोरदार आग्रह है। यही नहीं विहारकी सरकार इस न्यायपूर्ण आज्ञाके देनेके पश्चात आयुर्वेद महामण्डलको उसकी सूचना देनेमें भी नहीं चूकी। निम्न लिखित पत्र द्वारा उसने अपनी कार्यवाहीकी आयुर्वेद महामण्डलको सूचना दी है:—

No. 2596E.

GOVERNMENT OF BIHAR AND ORISSA.

Education DEPARTMENT.

Education Branch.

FROM

J. C. B. Drake, Esqr., I. C. S.,

Offg: Under-*Secretary to the Government of Bihar and Orissa,*

To

Ranchi, the 19th December 1914.

THE Secretary.
Ayurveda Mahamandal,
Daraganj, Allahabad.

SIR

I am directed to refer to your memorial dated the 21st July 1914 to His Honour the Lieutenant Governor of Bihar and Orissa, praying on behalf of the Standing Committee of the All-India Ayurvedic Conference that the Ayurvedic Shastra may be introduced as a subject of study in Sanskrit Colleges.

2. In reply, I am to foward a copy of Resolution No.2405E, dated the 21st November 1914, recorded on the report of the Committee appointed

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

to advise on the question of Sanskrit Education in this Province and to refer to para 5 which lays stress on the promotion of the study of Ayurvedic medicines in the Government Sanskrit Colleges at Muzaffarpur and Puri, when established.

I have the honour to be,
Sir.
Your most obedient servant.

For Offg: Under Secretary to Government.

अतएव विहारकी सरकार और उसकी कौंसिल तथा छोटे लाट श्रीमान वेकर साहब बहादुरको हम केवल इसीलिये धन्यवाद नहीं देते कि उन्होंने प्रजाकी सम्मति पर ध्यान दिया है; वलिक इस लिये भी कि उन्होंने उसे ज्योंका त्यों बतलानेमें भी कसर नहीं की है। प्रायः देखा जाता है कि चाहे प्रजाकी सम्मतिके अनुसार कार्य किया ही क्यों न जाय; परन्तु बहुतसे अफसर उसे इस प्रकार पृथक् भावसे सूचना देनेकी बहुत कम आवश्यकता समझते हैं। ईश्वर करे विहार सरकार इसी प्रकार सर्वसाधारणकी सम्मतिका ध्यान रखती हुई सर्वप्रिय और सुखदायी शासन करनेमें समर्थ हो और अन्य प्रान्तिक सरकारोंको अपनी उदारताका अनुकरण करनेका अवसर देती रहेगी।

बम्बईकी सरकार भी पूनेमें एक संस्कृत विद्यालय खोलनेवाली है, उसके लिये भी आयुर्वेद महामण्डलने उद्योग किया और ऊपरकी जिस कमिटीने विहार सरकारके पास एक मेमोरियल भेजा था उसीके द्वारा बम्बई सरकारके पास एक मेमोरियल भेजा गया। यही नहीं जैसे विहार सरकारकी कार्यकारिणी सभाके समस्त मेम्बरों और व्यवस्थापक सभाके सभासदोंके पास एक एक अनुरोध पत्रके साथ मेमोरियलकी कापियां भेजी गयी थीं उसी प्रकार बम्बई सरकारकी कार्यकारिणी सभा और व्यवस्थापक सभाके सभासदोंके पास एक एक पत्रके सहित मेमोरियलकी कापियां भेजी गयीं। जो मेमोरियल भेजा गया उसकी नकल यह है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TO

HIS EXCELLENCY THE RIGHT HON'BLE GOVERNOR

OF

BOMBAY.

MAY IT PLEASE YOUR EXCELLENCY,

On behalf of and in accordance with a resolution dated the 21st June 1914 of the Standing Committee of the All-India Ayurvedic Conference whose object is the promotion and diffusion of the Ayurvedic system of medicine and of a systemic study of this ancient and most useful science we beg to approach Your Excellency with the following few lines for Your Excellency's kind consideration:—

2. We respectfully beg to convey to Your Excellency the heartfelt thanks of the All-India Ayurvedic Conference and of its branch, the Ayurvedic education Society for the proposal made by Your Excellency's Government to establish a Sanskrit College at Poona, for encouraging and promoting the ancient Sanskrit learning. In addition to the teaching of Vyakarana, Sahitya, and the Six Darshans, we most respectfully invite Your Excellency's attention to the necessity of the introduction of the Ayurveda Shastra as a subject of study from the purely educational point of view. Ayurvedic Shastra is as important as any other and is certainly of more practical interest so far as our present life is concerned. The value

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

of a study of the ancient Ayurvedic science is now being acknowledged by eminent doctors who have received the education and training in accordance with the European system of Medicine. The Ayurvedic system is a part of the very life of the people of India, and the majority of them will always, as they do now, seek remedy for their ailments from the indigenous Ayurvedic Shastra, not only because it is cheaper than the Western system but also because it suits their nature and temperament also. Encouragement and promotion of a study of this System, therefore, we respectfully submit, is a paramount duty of the Government and of all those who work for the welfare of the people. In larger towns the system is now resorted to not only by poorer but also by the aristocratic gentry such as Zamindars, lawyers, big merchants, Judges of High Courts, and Members of Councils, even in cases where the Western system often fails.

3. There is another consideration which we would respectfully urge upon Your Excellency's attention. It is often said against a study of the ancient Sanskrit learing that it is sterile as it leads to nothing practical and cannot lead to any emoluments such as the holders of English Degrees, can always look forward to. The problem which this criticism points to, would also to a great extent be solved, if Ayurveda were made a part of Sanskrit learning.

How sadly the villages and smaller towns of our country stand in need of medical advisers, is a fact of which Your Excellency is well aware. The

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

students from the college about to be opened by Your Excellency could supply this want, while earning a livelihood for themselves.

4. Our society therefore prays that having regard both to the educational and practical value of the Ayurvedic Shastra, Your Excellency may be pleased to consider its claims for introduction as a subject of study in the Sanskrit College which Your Excellency's Government propose to establish.

२१।७।१४
इलाहाबाद

Your Excellency's most obedient servants.
(Sd.) MAJR B. D. BASU, I. M. S.
(Sd.) JAGANNATH PRASAD SHUKLA
Vaidya
(Sd.) LAKSHMI KANT SHARAM,
Vaidya
L. M. P.

यही नहीं बल्कि अन्य मार्गोंसे भी बम्बईकी सरकारके पास इस विषयके निवेदनपत्र भेजे गये हैं। गत ज्येष्ठ महीनेमें सातारा स्थानमें बम्बई प्रान्तकी प्रान्तिक राजनैतिक परिषद हुई थी, उसमें पूनेके प्रतिनिधियोंके उद्योगसे इस विषयका प्रस्ताव स्वीकृत हुआ कि बम्बई सरकारसे आग्रह पूर्वक जोरदार प्रार्थना की जाय कि पूनेमें संस्कृतकी शिक्षाके लिये जो कालेज खोला जायगा, उसमें आयुर्वेदकी सप्रयोग साङ्गोपाङ्ग शिक्षा दी जानेका प्रबन्ध किया जाय। इस प्रस्तावको पूनेके प्राणाचार्य पण्डित बाल शास्त्री लागवणकर महोदयने उपस्थित किया और समयोचित उत्तम वक्तृता दी। साताराके डाक्टर भिड़ेने इसका अनुमोदन और पूनेके वैद्यपञ्चानन पण्डित कृष्ण शास्त्री कवड़े बी० ए० ने जोरदार शब्दोंमें समर्थन किया। बम्बई प्रान्तवासियोंकी इच्छा है और वह उचित इच्छा है कि संस्कृत कालेजोंमें जो, आयुर्वेदकी शिक्षा दी जाय वह केवल पुस्तकी विद्या न हो बल्कि दृष्टकर्मा वैद्य बनानेके लिये विद्यालयके साथ आयुर्वेदीय रुग्णालय, वनस्पति उद्यान, हर्बेरियम, रसशाला, आदि की व्यवस्था हो और उनके द्वारा सप्रयोग और साक्षात् वस्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाकर शिक्षा दी जाय। नहीं कह सकते बम्बई प्रान्तवासियोंकी यह इच्छा कब पूरी होगी और आयुर्वेदकी शिक्षाप्रणालीके साथ न्याय करनेके लिये बम्बई की सरकारको धन्यवाद देनेका अवसर हमें कब मिलेगा। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि विहार और उड़ीसासे बम्बई प्रान्तमें आयुर्वेद शिक्षाको उत्तेजन देनेकी कम आवश्यकता नहीं है। यदि बम्बई की सरकार विहारकी सरकारका अनुकरण करे तो प्रजाकी आकांक्षा पूरी करनेके लिये समस्त भरतकी प्रजा उसकी उपकृत होगी। बिना आवश्यकता चारोंओरसे पुकार नहीं उठती और विहारकी सरकारने अपनी उदारतासे इसका उदाहरण दिखा दिया है; इसलिये आशा है बम्बई सरकार शीघ्र ही इस विषयमें अनुकूल आज्ञा प्रचारित करेगी।

आसव अरिष्ट पर अरिष्ट।

अभी तक संस्कृत कालेजमें आयुर्वेदकी शिक्षा रखनेके विषयमें बम्बई सरकारको धन्यवाद देनेका अवसर तो नहीं आया; परन्तु एक विषयमें अवश्य ही उसने वैद्योंसे धन्यवाद पानेका काम किया है। बम्बई प्रान्तमें एक दो बार पहले भी इस विषयकी चर्चा उठी थी कि वैद्य लोग आसव और अरिष्ट नामक पद्धतिसे जो औषधि तैयार करते हैं उसकी गणना शराबमें की जाय और वैद्य लोग इन्हें तैयार करनेके अधिकारी न समझे जायँ। जो मनुष्य शराब सम्बन्धी कानूनके अनुसार आसव अरिष्ट तैयार करनेका लैसंस लेवें वे ही तैयार करने पावें और हौलीके कलवारोंकी तरह उनपर भी आबकारीके अफसरोंकी सदा शनि दृष्टि बनी रहे। गत वर्ष इस आन्दोलनको फिर उत्तेजन मिला। नहीं कहे सकते यह उत्तेजन मेडिकल कौंसिलके डाक्टरोंके दिमागकी खोजके फलसे उत्पन्न हुआ था; अथवा आबकारी विभागके कर्मचारियोंकी करतूतकी करामात थी; परन्तु बम्बईके कितनेही वैद्योंकी दूकानोंसे आबकारीके अफसर कई प्रकारके आसव अरिष्टोंके नमूने उठा ले गये थे। कहते हैं उनकी रासायनिक जांचसे विदित हुआ कि द्राक्षासव तथा अन्य किसी किसी आसवमें बीससे अधिक बाईस अंश तक आलकोहाल अथवा प्रूफ स्पिरिटका अंश मिला। इसलिये इस विषयकी चर्चा जोर पकड़ने लगी कि आसव अरिष्टों पर लैसंस लगाया जाय। आयुर्वेदमहामण्डलको इसबातकी खबर लगी। अतएव उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्येष्ठ शुक्ल १३ के अधिवेशनमें इस विषयपर विचार हुआ। प्रस्ताव पास किया गया कि आसव अरिष्ट पर लैसंस लगाना अनुपयुक्त है। इससे वैद्योंको बहुत अड़चन भोगनी पड़ेगी। इसके सिवाय आसव-अरिष्ट और शराबमें अन्तर भी बहुत है। इनमें आलकोहालका कुछ अंश रहे भी तो वह इस श्रेणीका नहीं होता कि उन्हें पीकर कोई उन्मत्त हो सके। इसके सिवाय आसव अरिष्टकी विक्री सर्व-साधारणमें नहीं होती वे केवल रोगियोंको रोग निवारण करनेके लिये दिये जाते हैं। इसलिये शराबका आईन इनमें चलाना ठीक नहीं है। जो चीज़ नशेके लिये है ही नहीं उसके लिये नशेका आईन कैसा? अतएव बम्बई सरकारसे नम्र निवेदन किया जाय कि वह अपने इस विचारको परित्याग कर दे। इसके लिये मन्त्रीको अधिकार दिया जाता है कि वे हर एक प्रान्तके कुछ सभासदोंकी एक उपसमिति बनाकर बम्बई सरकारके पास एक मेमोरियल भेजें और ऐसा प्रयत्न करें कि सर्वसाधारण तथा समाचार पत्रोंमें भी इसका आन्दोलन हो। मेमोरियल बनानेके लिये सभी प्रान्तोंके कुछ निश्चत सभासदोंकी एक उपसमिति संगठित करनेका प्रयत्न होने लगा और उसके लिये बम्बई प्रान्तसे आवश्यक साहित्य जुटाने-का भी उद्योग हुआ। इसी बीचमें सोचा गया कि बम्बईके कुछ वैद्य आबकारी विभागके अफसरोंसे मिलें और उनसे बातचीत कर इस चर्चाका स्वरूप समझें तथा इस बातका प्रयत्न करें कि यदि यह मामला बीचमें ही तय हो जाय तो सरकार तक जानेकी आवश्यकता ही क्या है? तदनुसार डाक्टर पोपट प्रभुराम एल. एम. एस., श्री-युक्त त्र्यम्बकलाल मुनि, पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्य प्रभृति पांच सज्जनोंका एक डेपुटेशन पहले आबकारीके कलेक्टरके पास और फिर असिस्टेण्ट कलेक्टर मिस्टर स्मिथ साहबके पास गया। वह विषय तब तक आपके ही विचार और जांचमें था। उन्होंने कहा कि कई द्राक्षासवके नमूनोंमें आठ अंशसे लेकर २२ फी सैकड़ा प्रूफ स्पिरिटका अंश मिलता है और इस प्रकारका पदार्थ बेचना और बनाना आईनसे अपराध है। इस पर वैद्योंने वही उत्तर दिया जो आयुर्वेदमहामण्डलके अभिप्रायमें ऊपर लिख चुके हैं। अन्तमें स्मिथ सहबने वचन दिया कि मैं सरकारको लैसंस न लगाने के विषयमें परामर्श देऊंगा; किन्तु आप लोग आसवअरिष्ट तैयार करते समय इस बातको स्मरण रखें कि उनमें २० फी सैकड़े-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अधिक प्रूफ स्पिरिटका अंश न आने पावे। वर्तमान स्थितिमें ऐसी बात स्वीकार करनेके सिवाय वहांके वैद्योंके लिये और कोई उपाय नहीं था और एक प्रकारसे विना झंझटके यह मामला निपट गया सो अच्छा ही हुआ। इससे आयुर्वेद-महामण्डल स्मिथ साहब और बम्बई की सरकारको धन्यवाद देता है। बीस अंशसे अधिक प्रूफ स्पिरिट न होने पावे इसके लिये वैद्य लोग चाहें तो एक यन्त्र रखें अथवा आसव अरिष्टको गाड़ रखनेमें जो ३० या ४० दिनकी मर्यादा हो उससे अधिक न गाड़ रखें; बल्कि एक दो दिन पहले ही उन्हें उखाड़ लें, ऐसा करनेसे सम्भवतः स्पिरिटका अंश नहीं बढ़ेगा। यह सम्भव है कि इस विषयमें कुछ लोगोंकी यह सम्मति हो कि लैसंस लगना तो अच्छा ही है; वैद्योंका सब झंझटोंसे छुटकारा हो जायगा और कभी कभी इस आईनके अनुसार किसी किसी वैद्यको जो सजा हो जाया करती है उसकी सम्भावना मिट जायगी। हां इस बातका प्रयत्न हो सकता है कि वैद्योंको पृथक रूपसे सुलभ लैसंस मिले। परन्तु बम्बई प्रान्तके वैद्योंकी सम्मति इसके विपरीत है। प्रथम तो उन्हीं वैद्योंको सजा होती होगी जो आसव-अरिष्टोंको मद्यकी विधिसे भपकेके द्वारा उतारते होंगे; अतएव वैद्योंको ऐसा करनेसे एकदम बाज आना चाहिये। दूसरे आसव अरिष्ट पर लैसंस लेना मानों इस बातको स्वीकार करना है कि आसव-अरिष्ट सचमुच मद्य है। ऐसी दशामें जो जैनी तथा वैष्णव आदि धार्मिक लोग केवल इसलिये विदेशी औषधि नहीं खाते कि उनमें मद्यका संश्रय रहता है, वे लोग आयुर्वैदिक औषधि लेनेमें भी हिचकने लगेंगे। इसके सिवाय सम्पूर्ण भारतमें विशेष कर दक्षिण और महाराष्ट्र गुजरातमें वैद्यककी व्यवसाय करनेवाले प्रायः ब्राह्मण हैं, कभी सम्भव नहीं कि वे लोग कलवारोंकी भांति लैसंस लेकर आसव-अरिष्ट तैयार करना अपने लिये प्रतिष्ठाजनक समझेंगे। फिर लैसंस लेनेपर आबकारीके अफसरोंको बतलानेके लिये इस बातका नित्य हिसाब लिखकर रखना पड़ेगा कि कितना आसव-अरिष्ट तैयार हुआ, कितना बेंचा, कितना बचा इत्यादि झगड़ा करना भी बहुतोंको पसन्द नहीं आवेगा। इसलिये बम्बईके वैद्योंने जो निपटारा कराया वह ठीक है और इसके लिये आयुर्वेद-महामण्डल उन्हें बधाई देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्लेग-मलेरिया कमीशन।

चतुर्थ वैद्यसम्मेलन (कानपुर) के पन्द्रहवें प्रस्तावमें स्वीकृत किया गया था कि "प्लेग, मलेरिया, हैज़ा, क्षय आदि रोगोंसे गत शताब्दियोंमें असंख्य मनुष्योंकी मृत्यु हुई है, और अब भी हो रही है, अतएव इन रोगोंके प्रादुर्भावका कारण अनुसन्धान कर आयुर्वेदोक्त चिकित्सा बतानेके लिये आयुर्वेदमहामण्डल २५-३० सज्जनोंका एक कमीशन नियुक्त करे। ये सज्जन आयुर्वेदमहामण्डलकी सहायतासे एक प्रश्नावली तैयार कर अन्य स्थानोंके वैद्य डाक्टरों और अनुभवी सज्जनोंके अभिप्रायोंका संग्रह कर आगामी सम्मेलनमें अपनी रिपोर्ट उपस्थित करें।" तदनुसार आश्विन शुक्ल १३ संवत १९७० को एक कमिटी सङ्गठित की गयी। कमिटीके सदस्योंके नाम गत वर्षकी रिपोर्टमें छापे जा चुके हैं। उत्तम होता कि इस कमिटीके संयोजक अर्थात् कार्यसञ्चालक कोई पृथक् सज्जन होते और वे अपने ही विषयकी पूर्तिके लिये सदा प्रयत्न करते रहते; परन्तु वैसा नहीं हुआ और इस कार्यकी भी पूर्तिका भार मन्त्री पर ही आ पड़ा। "पीर बवर्ची भिश्ती खर" की दशामें रहनेके कारण अवश्य उससे जैसी चाहिये वैसी शीघ्रता नहीं हो सकी; तथापि गतवर्ष कई बार पत्र व्यवहार कर सदस्योंसे एक ऐसी प्रश्नावली तैयार करनेका अनुरोध किया जो इस कार्यमें सहायक हो। जिन सज्जनोंके उच्चज्ञान और अनुभवसे हमें इस कार्यमें अधिक सहायताकी आशा थी उनमेंसे कई सज्जनोंने तो बिलकुल पत्रोंका उत्तर ही न दिया; तथापि पण्डित यादव जी त्रीकम जी आचार्य, पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी, लखनऊकी वैद्यसभा आदिका इधर ध्यान आकर्षित हुआ। जैसे तैसे पहले प्लेग, मलेरिया और विशूचिकाके सम्बन्धमें एक कच्ची प्रश्नावली तैयार की गयी और वह केवल समितिके सभासदोंके ही पास नहीं बल्कि आयुर्वेदमहामण्डल और आयुर्वेदविद्यापीठके समस्त सभासदोंके पास भी भेजी गयी; और भी मन्त्रीको जिन लोगोंसे कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी उनके पास भी उसने यह प्रश्नावली भेजी। फिर भी उस प्रश्नावली पर गहन विचार बहुत कम लोगोंने किया और प्रश्नावली तैयार करनेका क्रम तो किसीने भी न बतलाया। फिर भी इस विषयमें जो पत्र व्यवहार हुआ था वह श्रावण शुक्ल ४ सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९७१ के आयुर्वेदमहामण्डल और अनुसन्धान समिति दोनोंके संयुक्त अधिवेशनमें उपस्थित किया गया। उक्त अधिवेशनने जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, मेजर बी० डो० वसु, बाबू जयकुमार, बाबू सोहनलाल और डाक्टर लक्ष्मीकान्तको मिलकर और सब पत्र व्यवहार पर विचार कर पक्की प्रश्नावली तैयार करनेकी आज्ञा दी। एक दो बार इस विषयकी सूचना दी गयी; परन्तु यह उलझन न सुलझी। अन्तमें मन्त्रीने इसे फिर अपने हाथमें लिया और प्रश्नावलीको चार भागोंमें विभक्त कर प्रश्नमालिका तैयार की। पहले खण्डमें ऐतिहासिक प्रश्न, दूसरे खण्डमें निदान और रोग परिचय सम्बन्धी प्रश्न, तीसरेमें प्रतिबन्धक उपाय सम्बन्धी प्रश्न और चौथे खण्डमें औषधियोजना पथ्यापथ्य और सुश्रूषा सम्बन्धी प्रश्न संगृहीत हुए हैं। यह प्रश्नावली मेजर वामनदास वसु आई० एम० एस०, पंडित ठाकुरप्रसाद शर्म्मा उपसभापति, डाक्टर लक्ष्मीकान्त शर्म्मा एल० एम० पी०, बाबू महाबीरप्रसाद अग्रवाल, बाबू जयकुमार जैनी प्रभृतिसे अनुमोदित हो चुकी है और छपाकर वितरित की जा रही है। यदि अब भी इसमें किसीको कुछ त्रुटि समझ पड़े तो उसके लिये अन्तमें सूचना दे दी गयी है कि वे अपने मनोनीत कुछ विशेष प्रश्नोंका उत्तर भी उपसंहारमें लिख दें। जो सज्जन चाहें इस प्रश्नावलीको मँगाकर उसका उत्तर भेजें। उत्तर भेजनेवाले सज्जनोंका नाम पता कमीशनकी रिपोर्टकी पुस्तकमें छापा जायगा। यहाँ पर इतना कह देना चाहिये कि अभी केवल प्लेगका विषय हाथमें लिया गया है; क्योंकि इसीके प्रश्न लगभग ५० हो गये हैं। इसका शान्तिके साथ विचार होनेके पश्चात् दूसरे विषय भी हाथमें लिये जा सकेंगे।

अब इसके विषयमें यथार्थ काम करनेका समय आया है। प्रत्येक वैद्यका और आयुर्वेदमहामण्डल तथा आयुर्वेद विद्यापीठके सभासदोंका कर्तव्य है कि वे स्वयं परिश्रमके साथ इसका उत्तर दें और जिन सज्जनोंसे इस कार्यमें सहायता अथवा जानकारी मिलनेकी सम्भावना हो उन्हें भी इसमें संयुक्त करें, अथवा उनकी सहायता प्राप्त करें। आयुर्वेदमहामण्डल यह उचित समझता है कि प्रत्येक प्रान्तके मन्त्रीके अधीन इस विषयकी एक एक उपसमिति बना दी जाय। वह समिति चाहे तो अपनी प्रान्तिक भाषामें भी प्रश्नावलीका अनुवाद छपा कर वैद्योंमें वितरण करे और उनसे उत्तर माँगे फिर प्रत्येक भाषाकी प्रश्नावलियोंके अनुसार आये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए उत्तरोंका सम्पादन पृथक किया जाय। अन्तमें सब सम्पादित पुस्तकों परसे एक अलग पुस्तक सम्पादित की जाय। आयुर्वेद-महामण्डलकी यह भी सम्मति है कि लोगोंके पाससे आये हुए उत्तरोंके अतिरिक्त कुछ विशेष विशेष शहरोंमें कमीशनके कमिश्नर स्वयं जावें और कुछ विशिष्ट सज्जनोंसे जिरहके ढङ्ग पर उनके उत्तरोंकी पुष्टि करावें। अवश्य ही इस कार्यमें समय और धनका व्यय होगा; परन्तु महामण्डलके सभ्योंके इस परोपकारी और शास्त्र सहायक कार्यमें अपना समय देनेमें कुण्ठित नहीं होना चाहिये और न आयुर्वेदमहामण्डलको अर्थ व्यय करनेमें पीछे हटना चाहिये। अभी हिन्दी और संस्कृतमें प्रश्नावलियां तैयार हैं, जो सज्जन चाहें मंगा लें। अगले वर्षमें इसकी व्यवस्थित उपसमितियाँ बनायी जायँगी। आशा है इससे प्लेगके विषयमें एक व्यवस्थित और विश्वास योग्य जानकारी संगृहीत हो सकेगी और उसके द्वारा वैद्योंको अपने काममें और सर्वसाधारणको अपनी जानकी रक्षामें बहुत सहायता मिल सकेगी। प्रश्नावलीका नमूना यह है :—

निखिलभारतवर्षीय आयुर्वेदमहामण्डलसे नियुक्त

आयुर्वैदिक अनुसन्धान-समिति

प्लेग विषयक प्रश्नावली।

निखिल भारतवर्षीय चतुर्थ वैद्यसम्मेलनके १५वें प्रस्तावमें प्लेग तथा अन्य कुछ रोगोंके सम्बन्धमें विशेष अनुसन्धान करनेके लिये एक अनुसन्धान समिति (कमीशन) गठित करना निश्चित हुआ था। तदनुसार उसके कार्यमें उपयोगी पड़नेके लिये वैद्यसम्मेलनकी स्थायीसमितिने (आयुर्वेदमहामण्डलने) अपने समस्त भारतवर्षीय सभासदों तथा अन्य वैद्यराजोंकी अनेक बार सम्मति ग्रहण कर यह प्रश्नावली तैयार की है। निवेदन है कि इसके अनुसार उचित, सशास्त्र, अनुभूत और प्रमाण सहित उत्तर देकर अनुगृहीत करें। किसी भी प्रश्नका उत्तर लिखते समय प्रश्नके अनुसार उसका नम्बर भी अवश्य लिख दिया करें। आशा है इससे प्लेगके सम्बन्धमें एक विश्वास योग्य और अधिकारयुक्त जानकारी हो सकेगी। जिससे वैद्यवर्ग और सर्वसाधारणका विशेष उपकार साधित हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रश्नावलीका उत्तर कार्यालयमें इसके मिलनेके एक महीनेके भीतर आ जानेसे कार्यमें सुविधा होगी।

१—ऐतिहासिक।

(१) प्लेगव्याधि प्राचीन है या अर्वाचीन ? यदि प्राचीन है तो उसका, अब तकका इतिहास प्रमाण सहित वर्णन कीजिये। अर्थात् यह रोग कब कब, कहां कहां और किस किस रूपसे हुआ और कितने समय पर्यन्त ठहरा।

(२) इसकी प्राचीनताके सम्बन्धमें कहां कहां और किस किस प्रकारसे वर्णन आया है।

(३) यदि यह व्याधि अर्वाचीन है तो लिखिये कि प्रकृतिमें किन परिवर्तनोंके कारणसे इसकी नूतन सृष्टि होना सम्भव हुआ; यदि प्राचीन है तो सैकड़ों वर्षोंसे क्यों नहीं हुआ और अब सैकड़ों वर्षके पश्चात् किन कारणोंसे इसका पुनरुद्भव हुआ ? यह भी लिखिये कि अर्वाचीन कालमें इसकी उत्पत्ति पहले कहाँ और किस प्रकार हुई और भारतमें इसका आगमन पहले कहाँ और कैसे हुआ और फिर किस क्रमसे वृद्धि पाकर यह व्याधि भारतव्यापी हुई।

(४) प्लेग नामकी व्युत्पत्ति क्या है, क्या विदेशी शब्द होने पर भी आयुर्वेदके मतानुसार यह नाम ठीक हो सकता है और आयुर्वेदमें भी यह नाम ग्रहण किया जा सकता है ? अथवा अपने आयुर्वेदमें इसके कौन कौन नाम लिखे हैं या आयुर्वेदके मतानुसार इसका क्या नाम रखना ठीक और सार्थक होगा ?

(५) चरकसंहिताके जनपदोध्वंसनीय अथवा प्रज्ञापराध अध्यायमें जो संक्रामक रोग अथवा महामारीका वर्णन मिलता है, प्लेगसे उसका कुछ ऐतिहासिक सम्बन्ध है अथवा नहीं, सकारण लिखिये।

२—निदान और रोगनिश्चय।

(६) प्लेग स्वतन्त्र व्याधि है अथवा परतन्त्र, कारण और प्रमाण सहित लिखिये। यह भी लिखिये कि आयुर्वेदमें यह कौनसा रोग माना गया है अथवा किस रोगके अंतर्गत इसके लक्षण मिलते हैं।

(७) इस रोगके कारण, पूर्वरूप, रूप, उपशय और सम्प्राप्ति जो आपके जाने हों पृथक् पृथक् प्रमाण सहित शास्त्रोक्त अथवा अनुभूत अथवा अन्य चिकित्साशास्त्र-वर्णित लिखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) इस रोगके उत्पन्न होनेके कौन कौन कारण हैं, यदि जलवायु अथवा भूमि दूषित होनेसे यह होता हो तो ये किस प्रकार दूषित होते हैं ?

(९) क्या जनसमुदायकी अधिकता और घनी बस्ती भी इस रोगका कारण है ? यदि है तो कैसे ?

(१०) क्या प्लेग संक्रामक रोग है, यदि है तो कैसें ? यह भी लिखिये कि चूहों, मच्छड़ों और पिस्सुओंसे इस व्याधिका कुछ सम्बन्ध है या नहीं ? यदि है तो किस प्रकार इनके द्वारा मनुष्योंमें बीमारी आती है ?

(११) यदि प्लेग संक्रामक रोग है तो क्या कारण है कि एक घरके कुछ मनुष्योंको यह होता है और कुछको नहीं। इसी प्रकार प्लेगरोगीकी सेवा करनेवालोंमें भी यह किसीको होता है किसीको नहीं सो क्यों ? क्या शरीरशक्ति अथवा वय पर इसके संक्रमणका प्रभाव अवलम्बित है ?

(१२) क्या इस बीमारीका कारण किसी जातिके कीटाणु अथवा उनका विष है ? क्या कीटाणुओंके बिना यह बीमारी हो ही नहीं सकती ? यदि कीटाणु ही इस रोगके मूल कारण हैं तो ये कीटाणु हैं क्या चीज और किस प्रकार तथा किन दोषोंके दूषित होनेसे उत्पन्न होते हैं ? इनके उत्पन्न होनेके कारणोंके विद्यमान रहते ये ही रोगके मूल कारण कैसे माने जा सकते हैं ?

(१३) यदि यह कीटाणुजन्य बीमारी है तो लिखिये कि ये कीटाणु वायुमण्डलमें रहते हैं अथवा भूमिमें अथवा दोनों जगह ? क्या भूमिमें ये कीटाणु बहुत गहरे तक रहते हैं ? चूहों अथवा घूसोंमें यह बीमारी भूमिके नीचे भूमि दोषसे होती है अथवा अन्य उपायसे उनमें उसका असर होता है ? यह भी लिखिये कि चूहोंसे मनुष्योंमें यह बीमारी किस प्रकार पहुँचती है ?

(१४) इन कीटाणुओंकी वृद्धि किस ऋतुमें विशेष होती है ? क्या अधिक गर्मीसे ये मर जाते हैं ? फिर गर्मीमें भी यह बीमारी क्यों होती है ? अथवा गर्मीमें कीटाणुओंके मरने पर फिर उनकी वृद्धि अथवा उत्पत्ति किस प्रकार होती है ?

(१५) क्या किसी जगह बीमारी होनेके पहले चूहोंका मरना अनिवार्य है ? सकारण लिखिये। क्या बिना चूहोंके भी अन्य कारणोंसे इसका असर मनुष्यों तक पहुंच सकता है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१६) मूषकोंसे इस रोगका घनिष्ट सम्बन्ध है तो अब तक मूषकों द्वारा यह क्यों नहीं होता था? इस रोगके असरवाले मूषक नवीन उत्पन्न होते हैं या कहींसे आते हैं? जहाँ ये चूहे सदैव रहते हैं वहाँ क्या प्लेग सदैव बना रहेगा?

(१७) इस बातके प्रथम जाननेका कुछ साधन है कि किसी स्थान विशेषमें अब प्लेग फैलनेवाला है अथवा उसके फैलनेकी आशङ्का है? विस्तार सहित लिखिये।

(१८) प्रायः देखा जाता है कि प्लेग किसी स्थान विशेषसे आरम्भ होता है और क्रमशः चलता हुआ बढ़ता है, क्या इसके जाननेकी आवश्यकता अथवा साधन है कि यह किस ओर बढ़ता जायगा और किस स्थानमें कब तक पहुँचेगा?

(१९) क्या कोई ऐसे भी पूर्वरूप हैं जिनसे मालूम पड़े कि कोई मनुष्य प्रत्यक्ष प्लेग ग्रसित न होने पर भी कुछ समयमें प्लेगयुक्त हो जायगा; अथवा वह जाना जा सके कि अमुक मनुष्यमें प्लेगका प्रभाव हो चुका है?

(२०) क्या आप इस बातको स्वीकार करते हैं कि जहां एक बार प्लेग हुआ है, वहां बारम्बार होनेकी सम्भावना है? अथवा क्या आपका यह विश्वास है कि जहां प्लेग कई बार हो चुका है वहांकी आवहवा उन स्थानोंके निवासियोंकी प्रकृतिके लिये सात्म्य हो गयी है और वहांवालोंको फिर बीमारीका प्रभाव कम होगा? अथवा क्या किसी जगह ज्यादा दिन बीमारी रहनेसे कीटाणुओंका हानिकारक प्रभाव कम हो जाता है अथवा वहां वालोंके लिये लिये सात्म्य हो जाता है?

(२१) चरकसंहिताके प्रज्ञापराधवाले अध्यायमें महामारियों-के जो कारण लिखे हैं वे प्लेगके विषयमें मानने योग्य हैं या नहीं सकारण लिखिये।

(२२) क्या प्लेगको ग्रन्थिक ज्वर अथवा ग्रन्थिक सन्निपात कह सकते हैं? यदि हां, तो वह तेरह अथवा ५२ सन्निपातोंके अन्तर्गत है अथवा उनसे भिन्न यह एक नया चौदहवां अथवा तिरपनवां सन्निपात है। यदि अन्तर्गत है तो नाम बताइये और यह भी लिखिये कि नामान्तरसे क्यों कहा जाता है?

(२३) सन्निपातज्वर पीड़ितोंके देखने भालनेमें कोई वैद्य अथवा डाक्टर हिचकता नहीं किन्तु प्लेगवाले स्थानमें जानेमें लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डरते हैं सो क्यों ? इसी तरह सन्निपातज्वर ज्वरके कुपित होनेसे होता है; परन्तु प्लेग इसके विपरीत क्यों होता है ?

(२४) सन्निपातज्वरके समान इसके होनेके पहले भी दोषों-का कोप होता है या नहीं ? इसी तरह बीमारीकी स्थितिमें दोषों-का कोप किस क्रमसे होता है अनुभूत लिखिये।

(२५) प्लेगरोगका प्रसार नगर और ग्रामोंमें समय विशेषसे भयङ्करतासे क्यों होता है ? क्या सन्निपातमें भी ऐसा होता है ? प्लेगरोग काल विशेषमें क्यों घटता अथवा बढ़ता है ?

(२६) क्या प्लेगरोगको अग्निरोहिणी अथवा विसर्प कह सकते हैं ? दोनोंका अलग अलग कारण सहित मिलान करते हुए उत्तर लिखिये। यदि अग्निरोहिणी अथवा विसर्प मानते हैं तो सम्प्राप्ति लिखते हुए पुष्टि कीजिये।

(२७) इस रोगके उपद्रव जो आपके जाने हुए अथवा अनुभूत हों लिखिये। यदि कहीं शास्त्रमें अथवा अन्यत्र इसके उपद्रव लिपि-बद्ध मिलते हों तो उन्हें भी लिखिये और यह भी बतलाइये कि किस किस अवस्थामें कौन कौनसे उपद्रव किस किस स्वरूपमें दिखाई पड़ते हैं।

(२८) क्या कारण है कि इसमें गिलटियां प्रायः जंघा, कांख अथवा गलेकी सन्धिमें ही एक अथवा अनेक स्थानमें निकलती हैं ? यह भी बतलाइये कि गिल्टी कभी ज्वरके पूर्व, कभी ज्वरके मध्यमें और कभी अन्तिम अवस्थामें निकलती है इसका कारण क्या है ? यह भी बतलाये कि क्या इससे इस रोगके साध्यासाध्यत्व जाननेमें कुछ सुविधा अथवा सहायता मिल सकती है, विस्तार सहित लिखिये।

(२९) क्या इस रोगमें गिल्टीका निकलना अनिवार्य है ? अथवा बिना गिल्टीके भी यह रोग हो सकता है, अथवा होता है ? यदि बिना गिल्टीके भी यह होता हो तो ग्रन्थिक सन्निपात (ब्युबोनिक प्लेग) नाम सार्थक कैसे हो सकेगा ? अथवा जब गिल्टी न हो तब किन लक्षणोंसे निश्चय किया जाय कि यह प्लेग ही है ?

(३०) कारण और लक्षण भेदसे प्लेग कितने प्रकारका है अथवा कितने प्रकारका हो सकता है हर एकके कारण और लक्षण अलग अलग लिखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३१) किन कारणों और लक्षणोंसे इसे साध्य, कष्टसाध्य अथवा असाध्य समझ सकते हैं। इसके कौन कौन भेद साध्य, कष्टसाध्य अथवा असाध्य हैं।

३—प्रतिबन्धक उपाय।

(३०) किसी वस्तीमें प्लेगकी बीमारी न आने पावे इसके लिये क्या क्या कार्य करने आवश्यक हैं ?

(३३) जिन दिनों आसपासके नगरोंमें बीमारी फैली हो उस समय प्रत्येक मनुष्यको कैसा आहार विहार और चर्या रखनी चाहिये जिससे अपनी वस्तीमें प्लेगके आनेसे भी वे उसके हमलेसे बचे रहें।

(३४) सरकारी जांचसे डाक्टरी सिद्धान्त प्रकट हुआ है कि प्लेगका टीका (इनाक्युलेशन) लगवानेसे उस मनुष्यपर प्लेगका आक्रमण नहीं होता और यदि होवे भी तो विशेष भयङ्कर नहीं होता ! आपके सिद्धान्तमें यह बात कहां तक सत्य हो सकती है।

(३५) क्या टीका लगवानेसे कोई शारीरिक हानि भी होती है अथवा प्रकृति पर उसका कुछ अनिष्ट परिणाम घटित होता है, यदि होता है तो क्या और क्यों ?

(३६) टीकासे उत्तम अथवा उसके समान उसके बदले कोई प्लेग प्रतिबन्धक उपाय आपको मालूम हो तो लिखिये। वह उपाय ऐसा हो कि निश्चय पूर्वक प्लेग प्रतिरोधक हो।

(३७) क्या घरमें चूहों का आगमन और निवास रोकनेसे प्लेगके फैलनेमें कुछ रुकावट पहुंचेगी ? कोई ऐसे भी उपाय हैं कि चूहोंको मारना भी न पड़े और घरमें उनका निवास भी बन्द हो जाय ?

(३८) प्लेगसे बचे रहनेके लिये स्थान परिवर्तन करना कहां तक लाभदायक है ? यह कार्य किस समय करना उत्तम है। परिवर्तित स्थान कैसा, कहां पर और प्लेग दूषित स्थानसे कितनी दूरी पर होना चाहिये।

(३९) जिन लोगोंके लिये स्थान परिवर्तन करना सुविधाजनक नहीं है; उहें प्लेग दूषित वस्तीमें रहते हुए भी उससे सुरक्षित रहनेके लिये क्या क्या उपाय करने चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४०) घरमें प्लेगका असर न हो इसके लिये कीटाणु नाशक विषजन्य पदार्थोंसे मकान धुलवाना, अथवा लिपवाना पोतवाना कहां तक लाभदायक है ? अथवा एक बार प्लेग होने पर फिर उसका प्रादुर्भाव न होनेदेनेके लिये यह उपाय कहाँ तक लाभदायक है?

(४१) जिस घरमें एक बार प्लेगका आक्रमण हो चुका है वहां फिर उसका आक्रमण न हो अथवा उस घरसे बाहर उसका असर न जाने पावे इसके लिये क्या क्या उपाय करने चाहिये ?

(४२) सफाई और प्लेगका सम्बन्ध कैसा है ? प्लेगके आक्रमणसे बचते रहनेके लिये सफ़ाई कहां तक आवश्यक है ।

४—औषधोपचार ।

(४३) प्लेगरोगीकी चिकित्सा किस प्रकार करनी चाहिये । इस विषयकी अनुभूत पद्धति चाहे वह किसी वैद्यकविज्ञानकी हो लिखिये ।

(४४) आयुर्वेद, यूनानी तथा पश्चिमी वैद्यकविज्ञानकी कौन कौन सी औषधियां प्लेगरोगकी किस किस अवस्थामें किस किस अनुपान और क्रमसे देनेमें लाभदायक होती है ; अनुभूत अथवा शास्त्रोक्त विधिसे लिखिये ।

(४५) प्लेगरोगसे पीड़ित मनुष्यके लिये कौन कौन आहार विहार उपयुक्त हैं ? और उसके लिये किस प्रकारके पथ्यापथ्य पर ध्यान देना चाहिये ।

(४६) प्लेगरोगकी सुश्रूषा करनेवालोंको रोगीके हितके लिये, स्वयं अपने हितके लिये और सर्वसाधारणके हितके लिये तथा रोगका प्रसार न होने देनेके लिये किन किन बातों और नियमों पर ध्यान रख वर्ताव करना चाहिये ?

(४७) किसी प्लेगरोगीके मर जाने पर उस कुटुम्बके हितके लिये और सार्वजनिकलाभके लिये क्या क्या कार्य करना आवश्यक है ?

(४८) प्लेगरोगके पञ्जेसे छूट कर क्रमशः आरोग्य होनेवाले रोगीको किन किन बातों पर ध्यान देना चाहिये और उसके आहार विहार, रहनसहन और पथ्यापथ्यका किस प्रकार परिवर्तन करते रहना चाहिये ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष ।

इनमें सब प्रश्नोंका उत्तर अथवा इनमेंसे जिनका उत्तर आप अच्छी तरह सुविधाके साथ दे सकते हों, उनका उत्तर कृपया लिखकर भेजदें । यदि आप कुछ ऐसी बातोंकी भी जानकारी दे सकते हों जो इसमें नहीं पूछी गयीं; किन्तु वे इससे सम्बन्ध रखती हैं और उनसे प्लेगके विषयमें विचार करनेमें सुविधा होगी तो उन्हें भी आप अन्तमें उपसंहार स्वरूप लिखदें । इसी प्रकार यदि इस प्रश्नावलीमें कोई बात पूछनेमें रह गयी हो और आपको वह स्मरण आवे तो उसका भी उत्तर उपसंहारमें लिख दें । उत्तर भेजने वालोंके पूरे नाम पते सहित इस समितिकी निर्णय सिद्धान्त पुस्तिकामें छापे जावेंगे । इसलिये आप अपना पूरा नाम पता कृपया लिख दें । उत्तर किसी भी भाषामें आप भेज सकते हैं ।

भवदीय उत्तराभिलाषी—

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, मंत्री

दारागञ्ज-प्रयाग ।

म्युनिसिपलिटियोंमें वैद्य ।

इस विषयकी आवश्यकता तो बहुत जबरदस्त है; परन्तु यह कहनेमें जितना सहज, करनेमें उतना ही कठिन है । कठिनाईका मुख्य कारण यह है कि इसकी पूर्तिका साधन अथवा आधार स्थायी समिति–कार्यालयके हाथ नहीं किन्तु समस्त भारतवर्षमें फैले हुए उसके सभासदोंके हाथ है और उसका कार्यक्षेत्र भी उन्हींका ज़िला अथवा नगर है । चतुर्थ वैद्यसम्मेलनने इस विषयमें इस प्रकारका प्रस्ताव पास किया था:—

"पूना, अजमेर, ब्यावर, हाँसी, हरदोई, भिवानी, मुरादाबाद, और प्रतापगढ़ आदि भारतके कई स्थानों तथा ज़िलोंमें म्युनिसिपलिटीकी ओरसे वैद्य या हकीम अथवा दोनों नियुक्त हैं और वे अपना काम योग्यता और सफलताके साथ कर रहे हैं । इसलिये यह सम्मेलन सरकारसे प्रार्थना करनेकी आवश्यकता समझता है कि इन स्थानोंके समान भारतके अन्य स्थानोंकी हर एक म्युनिसिपलिटी और अस्पतालोंके अधीन कमसे कम एक एक वैद्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियुक्त करनेकी व्यवस्था की जाय।" परन्तु अनुभवसे विदित हुआ कि अभी यह प्रस्ताव व्यावहारिक स्वरूपको प्राप्त नहीं हुआ है। क्योंकि ऐसा कोई सरकारी कायदा नहीं है कि कोई म्युनिसिपलिटी अपने अधीन वैद्य नियुक्त न करे। यदि कोई म्युनिसिपलिटी अपने यहाँ वैद्य नियुक्त करे तो सम्भवतः सरकार रोकेगी भी नहीं। ऐसी दशामें क्या आवश्यक है कि जो कार्य म्युनिसिपलिटीके भीतर ही हो सकता है उसके लिये सरकारके पास दौड़े जावें। यह ठीक है कि यदि सरकार म्युनिसिपलिटियोंको आज्ञा दे दे तो म्युनिसिपलिटियोंको लाचार होकर अपने यहाँ वैद्य नियुक्त करने पड़ें; परन्तु क्या सरकारसे इस प्रकारकी आज्ञा दिलाना सहज काम है? बल्कि यदि आयुर्वेदमहामण्डलके सभासद चाहें तो अपने नगरके निवासियोंके हस्ताक्षर कराकर और बड़े बड़े रईसों, मुखियों और प्रभावशाली पुरुषोंको आगे कर किसी म्युनिसिपल मेम्बरके द्वारा म्युनिसिपलिटियोंमें इसका प्रस्ताव उपस्थित करा सकते हैं और यदि वह जोर इतना जबरदस्त हो कि म्युनिसिपलिटीके अधिकांश मेम्बर उसे स्वीकार करें तो सम्भवतः वहाँ वैद्यकी नियुक्ती निश्चय हो जाय। हां यह भी आवश्यक है कि यदि ऐसा प्रश्न उठे तो सरकारकी ओरसे यथा सम्भव उसका विरोध न हो इसलिये चतुर्थ वैद्यसम्मेलनके प्रस्तावके अनुसार सरकारसे भी अनुरोध करते रहना चाहिये और उसे सर्वसाधारणकी आवश्यकताका स्मरण कराते रहना चाहिये और साथ ही म्युनिसिपलिटियोमें भी अपना उद्योग जारी रखना चाहिये। इसलिये पञ्चम वैद्यसम्मेलनने इस प्रस्तावके दो भाग किये पहलेमें उसने सरकारसे प्रार्थना की और दूसरेमें निम्न लिखित शब्दोंमें वैद्योंसे अनुरोध किया :—

"यह सम्मेलन सम्पूर्ण वैद्योंसे अनुरोध करता है कि वे अपने नगरोंकी म्युनिसिपलिटियोंमें इस बातका आन्दोलन और प्रयत्न करें कि उनके नगरकी म्युनिसिपलिटीके अधीन कमसे कम एक एक वैद्य नियुक्त करनेकी व्यवस्था की जाय।"

आयुर्वेदमहामण्डलने अपने सभासदोंसे इस विषयमें सम्मति माँगी कि यह कार्य किस प्रकार सफल हो सकेगा। अतएव श्रावण शुक्ल ५ सं० १९७१ के तीसरे अधिवेशनमें सभासदोंकी सम्मतियों पर विचार कर आयुर्वेदमहामण्डलने वैद्योंसे निम्न लिखित अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोध करनेका निश्चय किया। (१) वैद्य लोग अपने यहाँ बीमारोंका रजिस्टर रखा करें और समय समय पर वे स्वयं अथवा आयुर्वेद-महामण्डल इसकी रिपोर्ट अधिकारियोंके पास भेजा करे ऐसे रजिस्टरोंसे समय पर ऐसे आन्दोलनमें इस बातका प्रमाण उपस्थित किया जा सकेगा कि वैद्योंके पास कितने और किस किस ढङ्गके रोगी आते हैं। (२) जहाँ तक सम्भव हो म्युनिसिपल अधिकारियों और म्युनिसिपल मेम्बरोंसे मिल कर और उन्हें इस विषयकी आवश्यकता बतला कर म्युनिसिपल कमिटियोंमें इस विषयका आन्दोलन करनेका प्रयत्न करना। (३) जहाँ तक सम्भव हो वैद्य लोग म्युनिसिपल कमिश्नर बनाये जायं। इसके लिये सब वैद्योंको प्रयत्न करना चाहिये उनका कोई भाई ऐसे कार्यमें सफल हो। (४) सर्वसाधारण प्रभावशाली लोगोंके हस्ताक्षर करा कर म्युनिसिपलिटियोंमें इस विषयकी पूर्तिके लिये दरखास्त कराना। आशा है सर्वत्र के लोग इन उपायोंसे अथवा अन्य उपायोंसे इस कामके लिये प्रयत्नशील होंगे। कोई यह न समझे कि इससे वैद्योंका कोई महदुपकार हो जायगा अथवा इससे उनका कोई विशेष लाभ है। परन्तु यह अधिकारोंका प्रश्न है। क्या कारण है कि सर्वसाधारणके चन्देसे चलनेवाले म्युनिसिपल अथवा डिस्ट्रिक्ट बोर्डके अस्पतालोंमें केवल एलोपैथी चिकित्सा करनेवाले डाक्टर नियुक्त किये जायँ; किन्तु अपने देशकी, अपने स्वभावके अनुकूल चिकित्सा करनेवाले वैद्योंकी चिकित्सासे सर्वसाधारण वञ्चित रहें। जब ऐसे अस्पतालोंमें सर्वसाधारणका पैसा लगा है तब क्यों न सर्वसाधारण लोग वहाँ अपनी प्रकृतिके अनुकूल चिकित्साका लाभ उठाने पावें। क्या अपने डाक्टर बन्धुओंके समान वैद्योंको अधिकार नहीं है कि उनके साथ ही वे भी सर्वसाधारणके नियुक्त अस्पतालोंमें सर्वसाधारणकी सेवा कर सकें। बस इसी दृष्टिसे इस विषयको महत्त्व दिया जाता है।

वैद्योंको अभिवचन।

पञ्चम वैद्यसम्मेलनके दूसरे प्रस्तावमें स्वीकृत हुआ था कि -'(क) भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें जो मेडिकल रजिस्ट्रेशन एक्ट पास हो रहे हैं, उनमें यद्यपि वैद्योंके हकोंके विषयमें उल्लेख है, तथापि भारतीय सरकारके होमडिपार्टमेण्टके सितम्बर १६१३ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्कूलरसे—जो कि प्रान्तिक सरकारोंके पास सम्मतिके लिये भेजा गया है—उसके निम्न लिखित शब्दोंसे भविष्यके लिये भयकी आशङ्का होती है:—

"In the second place, the Government of India have at present no intention of legisleting to prevent Ayurvedic Colleges and similar institutions from conferring degrees nor to penalise Kabirajas, Hakims and such practitioners in the exercise of their profession"

अर्थात् "भारत सरकारका "अभी" यह इरादा नहीं है कि आयुर्वैदिक और इसी प्रकारके कालेजोंको डिगरियाँ देनेसे कानून द्वारा रोका जाय या कविराजों, वैद्यों और हकीमोंको चिकित्सा करनेसे रोका जाय।"

इसलिये सरकारसे सम्मेलन सविनय प्रार्थना करता है कि ऐसे भयको दूर करनेके लिये वैद्यों और हकीमोंको स्पष्ट अभि-वचन दिया जाय।

(ख) उक्त पत्रके निम्न लिखित शब्दोंका सम्मेलन विनीत भावसे विरोध करता है:—

"In their judgement it is hopeless to attempt to protect the Credulous and the uneducated employing whom so ever they choose."

अर्थात् "भारत सरकारकी सम्मति है कि अशिक्षित और अन्धविश्वासी लोगोंको अपनी इच्छाके अनुसार इलाज करानेसे रोकनेका उद्योग सर्वथा व्यर्थ है।"

"क्योंकि वैद्यक और यूनानीका इलाज करानेवाले केवल अपढ़ और भ्रान्तविश्वासी ही नहीं हैं; किन्तु उच्चश्रेणीके सुशिक्षित, हाई-कोर्टके जज, कौंसिलके मेम्बर, डाक्टर आदि सब श्रेणीके लोग देशी चिकित्सासे बहुत लाभ उठाया करते हैं और इस समय कमसे कम भारतकी तीन चतुर्थांश प्रजा देशी चिकित्सासे ही रोगमुक्त होती है।" तदनुसार इस प्रस्तावका अनुवाद सभापति लेफ़्टिनेण्ट कर्नल डाक्टर कीर्तिकर आई० एम० एस०, एफ० एल० एस० महोदयके द्वारा भारत सरकारके पास भेज दिया गया था और सरकारके पाससे उसकी प्राप्ति स्वीकार भी आ गयी है। परन्तु अब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदमहामण्डलको सरकारकी ओरसे किसी प्रकारका आश्वासन नहीं दिया गया है। आशा है सरकार कोई कार्यवाही करते समय इस बातका ध्यान रखेगी कि उसके किसी कामसे आयुर्वेद-चिकित्सा करानेवाले और आयुर्वैदिक चिकित्सा करनेवालोंकी किसी प्रकारकी हानि अथवा मर्यादामें बाधा उपस्थित होनेका कारण न होने पावे। आयुर्वेदकी परीक्षाओं और डिगरियोंके सम्बन्धमें सरकारको तब तक किसी प्रकारका अंकुश नहीं रखना चाहिये जब तक प्राचीन ऋषिप्रणालीसे किन्तु नये उपकरणोंके साथ सर्वमान्य और आयुर्वैदिक विद्वानोंके तन्त्रसे यथेष्ट आयुर्वैदिक विद्यालय न खुल जावें और देशमें यथेष्ट आयुर्वैदिक वैद्योंकी संख्या सरकारकी ओरसे पूर्ण करनेका प्रबन्ध न हो जावे। सरकार ज्यों ज्यों इस विषयमें प्रजाके हितकी दृष्टिसे सूक्ष्म और न्याय पूर्ण विचार करेगी त्यों त्यों उसे उक्त प्रस्तावके कथनानुसार सचाई विदित होगी और इस विषयकी आवश्यकता प्रकट होगी कि वह आयुर्वैदिक संसारको पूर्ण रूपसे अभयवचन दे दे।

विषोपविषसमस्या।

गत वर्ष ही निवेदन किया गया था कि औषधोपयोगी विषोपविष वैद्योंको आवश्यकतानुसार यथेष्ट प्राप्त हों इस विषयका उपायनिर्धारण करने और कार्यवाही करनेके लिये एक समिति बना दी गयी है और उसमें भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तके १५ सभासद हैं और उसके संयोजक अथवा सञ्चालक श्रीयुक्त बाबू जय कुमारजी जैनी वैद्य नियुक्त किये गये हैं। गत वर्ष इस कमिटीका काम सन्तोषजनक नहीं हुआ और आयुर्वेदमहामण्डलको शोक है कि इस वर्ष भी कोई उल्लेख योग्य कार्यवाही नहीं हुई। यद्यपि संयोजक महोदयको कार्यालयसे दो एक बार स्मरणार्थ पत्र भेजे भी गये हैं परन्तु आयुर्वेदमहामण्डलको सन्देह है कि कमिटीके सभासदोंसे संयोजक महाशयने एक बार भी सम्मति ग्रहण आदि किसी भी विषयमें पत्र व्यवहार तक किया हो! तब इसके अन्तमें उनकी सम्मिलित रिपोर्टसे मालूम होगा कि संयोजक महाशयने इस विषयके आईनका कुछ संग्रह कर लिया है और उसे पढ़ कर वे कर्तव्य निर्धारणके विषयमें कुछ विचार करना चाहते हैं। जो हो, परन्तु मालूम पड़ता है कि वर्तमान संयोजक महाशय इस कार्यको लिये अवकाश नहीं निकाल सकते और ऐसी दीर्घसूत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालसे कमिटी न जानें कितने वर्षोंमें कार्यनिर्धारण करनेमें समर्थ होगी और न जानें कितने वर्षों तक वैद्योंको विषोपविषकी प्राप्तिके लिये अड़चन भोगनी पड़ेगी। संयोजक महाशय आगामी वर्ष इस कार्यमें अधिक परिश्रम करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं; किन्तु यदि वैद्यसम्मेलन इस कार्यमें किसी दूसरे ही सज्जनकी नियुक्ति करना चाहता हो तो वह भी हो सकता है। यह कोई आवश्यक नहीं कि ऐसे संयोजक महाशय प्रयाग अथवा स्थायी समितिके कार्यालयवाले नगरके ही हों, किसी भी नगरके कोई उद्योगी सज्जन इस कार्यको अपने हाथमें ले सकते हैं। यह नहीं कि श्रीयुक्त जयकुमार जीने जानबूझ कर इस कार्यमें ढील की हो; परन्तु आपको सचमुच अवकाश भी बहुत कम है। अपने अवकाशका कुछ समय वे आयुर्वेदमहामण्डलके अन्य कार्योंमें लगाया ही करते हैं; अतएव अन्य किसी सज्जनके हाथ जानेसे यदि इस कार्योंमें शीघ्रता होती हो तो उन्हें भी आनन्द ही होगा। गतवर्ष भी वैद्यसम्मेलनने इस विषयके प्रस्तावको पास किया था और उसकी नकल भारत सरकारके पास भेजी थी। यद्यपि भारतसरकारने अयुर्वेदमहामण्डलको कोई ऐसी सूचना नहीं दी जिससे प्रकट हो कि सरकारी आज्ञासे इस विषयकी कड़ाईमें कुछ कमी की गयी है, तथापि मालूम पड़ता है कि सरकारके पास प्रार्थना करनेका कुछ फल अवश्य हुआ है। इसके सिवाय ऐसी वस्तुओंका दाम बहुत ही चढ़ाबढ़ा और प्रायः लैसंसदारके मन मुताबिक देना पड़ता है। ? सेरोंका दाम छटांकोंमें ही भरना पड़ता है। अतएव जबतक गांजे और भांगके समान विषोपविष सम्बन्धी वस्तुओंका भी एक सरकारी निर्खनामा न रहे और वह अङ्गरेजी, हिन्दी तथा अन्यप्रान्तिक भाषाओंमें दूकानमें लटकाया न रहे, तबतक इस विषयकी अड़चन दूर होना कठिन है। इसके सिवाय लैसंसदारके दूकान खोलने और बन्द करनेके सम्बन्धमें भी कोई नियम निश्चित रहना चाहिये। प्रयागमें तो किसी दवाकी आज आवश्यकता हो तो पांच सात दिनोंतक चक्कर काटे बिना लैसंसदार भगवानके दर्शन ही नहीं हो सकते। अन्यत्र भी जहां ऐसी अड़चन हो उसे दूर करनेके लिये दूकान खोलनेबन्द करनेका समय निश्चित कराना ही एक मात्र उपाय है। इस कमिटीके संयोजक बाबूजयकुमार जीकी इस विषयकी रिपोर्ट नीचे दी जाती है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषोपविष-औषधियोंकी सुलभप्राप्ति।

चतुर्थ वैद्य सम्मेलनमें उपस्थित चतुर्थ प्रस्तावानुसार विषोपविषोंकी प्राप्तिमें असुविधाओंको दूर करनेके लिये १५ सज्जनोंकी एक समिति बनायी गयी थी। गतवर्ष इसके सम्बन्धमें कोई उल्लेखनीय बातें नहीं हो सकीं। इसवर्ष जो कुछ थोड़ासा कार्य किया गया है उसका वर्णन आप लोगोंके समक्ष उपस्थित किया जाता है।

इसके प्रथम कि मैं अपनी कोई निजीराय उपस्थित करूं, यह आवश्यक है कि सरकारने इसके सम्बन्धमें क्या कानून बनाये हैं उससे अवगत करादिया जाय।

भारत सरकारने (Government of India) विषोपविषके सम्बन्धमें जो कानून बनाये हैं उसे एक्ट नम्बर वन आफ १९०४ (Act No: 1 of 1904) या प्वायजंस ऐक्ट कहते हैं। इस ऐक्टका विस्तार निखिल भारत वर्षके लिये है। भारत सरकारने इस ऐक्टके नियम २ धारा (१) के अनुसार प्रान्तिक सरकारोंको अपनी अपनी म्युनिसिपेलिटी या कनटूनमेण्टकी सीमाके भीतर थोक या फुटकर (खुदरा) विक्रियार्थ रखनेके लिये और उन्हें विक्रय करनेके लिये अपने निश्चित किये हुए विषोंके सम्बन्धमें अपने अपने प्रान्तमें कानून बनानेका अधिकार दिया है।

भारत सरकारने केवल सफेद संखिया हीके सम्बन्धमें वर्णन किया है; किन्तु उसने प्रान्तिक सरकारोंको यह अधिकार दे दिया है कि वे संखियाके अतिरिक्त अन्य विषोपविषोंको भी, जिन्हें प्रान्तिक सरकार समुचित समझें इनकी गणना में लासकती है।

इसके सम्बन्धमें बङ्गाल, बम्बे, मदरास, पञ्जाब, संयुक्त प्रान्त, बर्मा, कुर्ग, मध्यप्रान्त, आदि की सरकारोंने अपने अपने प्रान्तोंके लिये भिन्न भिन्न नियम बनाये हैं।

मुझे इसबातके प्रकट करने में भी लज्जा मालूम होती है कि संयुक्त प्रान्तको छोड कर अन्य प्रान्तोंके नियम अबतक एकत्रित नहीं हो सके हैं; किन्तु आशा की जाती है कि आगामी वर्ष इसके एकत्रित करनेमें यथाशक्य प्रयत्न किया जायगा। इन सब प्रान्तोंके नियमोंको एकत्रित करनेका यही कारण है कि भारतवर्षके सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तोंके सरकारी नियमोंकी जानकारी प्राप्त कर सब असुविधाओं को दूर करनेके लिये भारतसरकारसे प्रार्थना कीजायं ।

संयुक्तप्रान्तीय सरकारने अद्यावधि निम्न लिखित वस्तु विषोपविषोंमें गणना की हैः—

मैनसिल, हरताल, काला संखिया, सफेद संखिया, गुलाबी संखिया, भूरी संखिया, हिरवा (?) सींगिया, रस कपूर, कुचला, धतूरा और साईनाइड आफ पोटास।

जी. ओ. न. २६२६-२६३० VI—६६० सो-ता० ६-७-१९०७ के नियन ६ या मैनुअल आफ गवर्नमेण्ट आर्डर्स के पैरा १०७५ में यह उल्लेख है कि "लैसन्सदार सफेद संखिया या अन्यविष किसी एक मनुष्य के हाथ एक समयमें एक आउंस से ज्यादा न बेचे। किन्तु उपरोक्त नं. के नियम १५ या मैनुअल के पैरा १०८१ में यह भी उल्लेख है कि "जबकि लैसन्सदार सफेद संखिया या अन्य विष को थोक भी बेचता है तो वह उस स्टाकको, जैसाकि इन नियमोंमें कहा गया है (अर्थात् एक आउंस बेचनेके स्टाकको) थोक बेचने वाले स्टाकसे बिलकुल ही पृथक् रखे'॥

इन उपरोक्त दोनों नियमों से यह प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि लैसन्सदार थोक और फुट कर दोनों प्रकारसे बेच सकता है।

किन्तु यहां एक विषम समस्या उपस्थित होती है भिन्न भिन्न जिलों में भिन्न प्रकार के लैसंसदार मालूम होते हैं। प्रयागमें एक आउन्स (आधीछटांक) से विशेष विष लैसन्सदार एक समयमें किसी एक मनुष्य को नहीं देता है, किन्तु बनारस के लैसंसदार के यहां से आवश्यक्तानुसार प्राप्त हो सकता है। प्रयाग में कुछ थोड़ा ही समय बीता होगा कि लैसंसदारको एक आउन्ससे ज्यादा बेचने पर ५०) जुर्माना होगया था। कानपुरमें भी यही होता है।

क्या भिन्न भिन्न ज़िलोंके लिये भिन्न भिन्न नियम हैं? प्रान्तिक सरकारके नियमोंमें कोई ऐसा उल्लेख नहीं मालूम होता। कदाचित् बात यह हो कि ज़िला मजिस्ट्रेटको यह अधिकार हो कि चाहे वह लैसन्सदारको थोक बेचने या फुटकर बेचने या दोनों प्रकारसे बेचनेकी आज्ञा दें। ऐसी अवस्थामें जबकि एक ही प्रान्तके भिन्न भिन्न जिलों में भिन्न भिन्न बातें दृष्टिगोचर होती हैं तब समस्त भारतमें क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा ? इसलिये यह आवश्यक है कि सब स्थानोंके लिये एकहीसे नियम हों।

हां एक बात और है कि श्वेत गुञ्जाका नाम सरकारी नियममें नहीं दृष्टिगोचर होता है; किन्तु इसपर भी लैसंस है।

अन्य अन्य प्रान्तोंके नियमोंके प्राप्त हो जाने पर यह ज्ञात हो जायगा कि उन उन प्रान्तोंकी सरकारने किन किन वस्तुओंकी गणना विषोपविषोंमें की है।

संयुक्तप्रान्तीय सरकारने कृपापूर्वक मेडिकल प्रेकटिशनरोंको नियमितरूपसे ही विष रखनेके लिये बाध्य नहीं किया, यदि वे केवल नुसखेके कार्यमें लावे-बेचनेके लिये नहीं। इससे यदि वैद्योंके पास केवल योगोंके लिये ही विशेष विष भी हो तो कोई हानि नहीं होनी चाहिये। उन लोगोंको लैसन्स लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। जो सुविधा सरकारने मेडिकल प्रैक्टिशनर्स (शायद डाक्टर) लोगोंके लिये रखी है, वही वैद्योंके लिये भी रखनी चाहिये। किन्तु गत वर्षके राजपूताना प्रान्तीय मन्त्रीकी रिपोर्टसे यह प्रत्यक्ष है कि वहांके वैद्यगण बिना लैसंसके कोई भी विष अपने पास नहीं रख सकते हैं। यद्यपि वहांकी सरकारने कुछ प्रसिद्ध प्रसिद्धवैद्योंको सर्टिफ़िकेट देकर उन्हें इस क़ायदेसे बरी कर दिया है।

संयुक्तप्रान्तीय सरकारने जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अफसरों जो सब-इन्सपेक्टर या और उच्च पदाधिकारी हो—रेवेन्यू अफसरों—जो नायब तहसीलदार या और उच्च पदाधिकारी हो—मेडिकल अफसरोंको—जो सब-असिस्टेन्ट सर्जन या और उच्च पदाधिकारी हो—अधिकार दिया है कि वे लैसन्सदारकी दूकानका निरीक्षण कर सकें। किन्तु वैद्योंके लिये, ऐसा कोई अधिकार नहीं है चाहे वे कितने ही धुरंधर हों।

नूतनपुस्तकोंका निर्माण।

गतवर्षके वैद्यसम्मेलनने १ रोगी परिचर्या, २ अगदतन्त्र, ३ कौमारभृत्य, ४ व्यवहार आयुर्वेद, ५ प्रसूतितन्त्र, ६ स्वास्थ्य विज्ञान और ७ आयुर्वेदका क्रमबद्ध इतिहास, इन सात विषयोंपर पुस्तकें लिखी जानेकी आवश्यकता स्वीकार की थी; जिससे आयुर्वेद-विद्यापीठके पाठ्यक्रमकी पूर्ति हो सके। रोगीपरिचर्या विषयकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पुस्तक झालरापाटनके श्रीयुक्त पण्डित गिरिधर शर्मा नवरत्न जीने लिखी है और वह छप कर प्रकाशित भी हो गयी है। यद्यपि यह पुस्तक श्रीयुक्त डाक्टर तांबेकी पुस्तकका अनुवाद है और पश्चिमी रोगीपरिचर्या विषयको आयुर्वेदोयपद्धतिसे मिलाकर तैयार करने पर जो पुस्तक तैयार होगी उससे इससे बहुत अन्तर होगा, तौभी जबतक इस विषयकी और भी कोई उत्तम पुस्तक न तैयार हो तबतक इससे काम लिया जा सकता है। अगदतन्त्रकी पुस्तक गोहाणा जिला रोहतक निवासी श्रीयुक्त पण्डित गौरीशङ्कर शर्मा राज्यवैद्यजी लिख रहे हैं। गोकुल जिला मथुराके चिकित्सक चूड़ामणि पण्डित रामचन्द्र शर्मा वैद्यशास्त्री कौमारभृत्य विषय पर पुस्तक लिख रहे हैं और उसका बहुत कुछ हिस्सा आपने लिख भी डाला है। कानपुरके डाक्टर प्रसादीलाल झा एल. एम. एस. महाशय कौमारभृत्य और व्यवहार आयुर्वेद विषयपर पुस्तक लिख रहे हैं। प्रसूतितन्त्रपर अहमदाबादके श्रीयुक्त पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी पुस्तक तैयार कर रहे हैं। स्वास्थ्यविज्ञानकी तैयारीका जिम्मा जगन्नाथप्रसाद शुक्लने लिया है और आयुर्वेदका क्रमबद्ध इतिहास लाहौरके श्रीयुक्त पण्डित हेमराज विशारद लिख रहे हैं और उसे उन्होंने बहुत कुछ लिख भी डाला है। आशा है सब सज्जन अपनी अपनी पुस्तकें शीघ्रताके साथ तैयार करेंगे और उन्हें ऐसी बनानेका प्रयत्न करेंगे जिससे इन विषयोंके पाठ्यक्रमकी पुस्तकोंकी अच्छी पूर्ति हो जाय।

प्राचीनपुस्तकोंकी खोज ।

हमारे वैद्यकसाहित्यका बहुत सा प्राचीन और मध्यकालीन जो साहित्य नष्ट हो चुका, उसके लिये तो अब कोई उपाय ही नहीं; परन्तु अभी ऐसा बहुत सा साहित्य है जो इधर उधर छिपा हुआ अप्रकाशित पड़ा हुआ है और जिसे लोग अप्रकाशित ही रहने देना चाहते हैं। यदि ऐसे साहित्यका किसी तरह उद्धार किया जा सके तो सचमुच आयुर्वेदके महत्वकी बहुत सी बातें ही नहीं प्रकट होंगी बल्कि उससे वैद्योंका बहुत कुछ उपकार भी होगा। श्रीयुक्त त्र्यम्बकगुरुनाथ काले महोदयके स्वर्गवाससे रसायनसम्बन्धी ग्रन्थों-की खोजके कामको बहुत धक्का लगा है तथापि बम्बईके आयुर्वेद-मार्तण्ड श्रीयुक्त पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्य इस कार्यको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योंका त्यों कर रहे हैं। उधर दक्षिणमें त्रिचूरकी मङ्गलोदय कम्पनी (पं० रुद्रपार्शव शास्त्री) इस विषयमें बहुत कुछ कार्य कर रहे हैं किन्तु शोक है कि उक्त कार्यालयका ऐसा कोई भी ग्रन्थ लिखने पर भी आयुर्वेदमहामण्डल कार्यालयको प्राप्त नहीं हुआ है। लखनऊके वैद्यराज श्रीयुक्त पण्डित रामनाथजी शास्त्री महोदयने आयुर्वेदमहामण्डल कार्यालयमें "योगसुधानिधि" नामक प्राचीन पुस्तक भेजी है। इसके रचयिता श्री बन्दीदीन मिश्र हैं। मालूम पड़ता है ये वेही बन्दीदीन हैं जिनकी कविता बहुत प्रसिद्ध है। इस पुस्तकी संस्कृत कविता भी अच्छी है। यह संगृहीत ग्रन्थ १६ कलाओंमें विभक्त है। इसमें स्त्रीरोग और बाल रोगोंकी चिकित्सा अच्छे ढङ्गसे वर्णन की गयी है। यन्त्र मन्त्रादि भी बहुतसे दिये हैं। इसके अक्षर स्पष्ट हैं; परन्तु भाषा कहीं कहीं अशुद्ध है। उक्त शास्त्रीजीको और भी प्राचीन पुस्तकोंके मिलनेकी आशा है आप इसके लिये उद्योग कर रहे हैं। सुधानिधि कार्यालयको श्रीयुक्त पं० रघुनाथ राव हर्षे नामक महाराष्ट्र सज्जनसे "अनङ्गरङ्ग" नामकी एक पुस्तक प्राप्त हुई है; किन्तु पुस्तकका एक तेरहवां पत्रा प्राप्त नहीं हुआ है। इससे करीब ३० श्लोक लापता हो गये हैं। यदि किसी सज्जनके पास इसकी पूरी पुस्तक हो तो दोनोंको मिलाकर पाठ आदि ठीक कर पुस्तक छापने योग्य हो सकती है। इस पुस्तकमें कुल दश छल हैं; प्रत्येक छलमें काम शास्त्र सम्बन्धी एक एक विषयका वर्णन किया गया है। श्लोक बहुत ही मधुर हैं। जिस समय हिन्दुस्थानमें लोदीवंशके मुसलमानोंका राज्य था उस समय बादशाह अलाउद्दीनखांलोदीके प्रीत्यर्थ "राजर्षि महाकवि कल्याण मल्लने" इसकी रचना की थी। जिन जिन सज्जनोंके पास प्राचीन पुस्तकें हों वे यदि आयुर्वेदमहामण्डलको उसकी नकल देने की कृपा करें तो इससे बहुत लोकोपकार हो सकता है। इसी तरह जिन सज्जनोंको ऐसी पुस्तकें मिलें वे भी यदि ०मण्डलको उसकी सूचना देते रहें तो मण्डल उनकी सूचना भी सहर्ष छापनेके लिये प्रस्तुत है।

बीमारोंका रजिस्टर।

वैद्योंको इस बातकी आवश्यकता मालूम पड़ने लगी है, कि हम भी अपने औषधालयका उसी प्रकार रजिस्टर रखें जैसे अस्पतालोंमें रखा जाता है। प्रथम तो इसमें कर्मचारियोंकी कमी बाधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है, दूसरे पुराने ढङ्गके वैद्योंको यह नया काम कुछ झंझटदार भी मालूम पड़ता है। तथापि बहुतसे वैद्योंने अपने वहाँ रजिस्टर रखना आरम्भ कर दिया है और आयुर्वेदमहामण्डलके पास जब तब ऐसी मांग आ जाया करती है कि यदि ऐसे रजिस्टर मण्डलने छपवाये हों तो हमें भेज दिये जायँ। अतएव यदि आयुर्वेदमहा-मण्डल ऐसे रजिस्टर छपवावे अथवा कोई रोजगारी मनुष्य ही अपने यहाँ छपवाकर रखे तो सम्भवतः अच्छी बिक्री होगी। ऐसा होनेसे वैद्य लोग बीमारोंका नित्यका हाल लिखते रहेंगे और किसी बीमारीके घटने बढ़नेके क्रमका अनुभव बहुत अच्छी तरह बतलाया जा सकेगा। उन पर अपने अनुभव छिपानेका दोष भी नहीं लगा-या जा सकेगा।

आयुर्वेद निधि।

वैद्य सम्मेलनके उद्देश्योंकी सिद्धिके लिये "आयुर्वेद निधि" का कोष बढ़ाना बहुत आवश्यक है। इसीलिये पञ्चम वैद्यसम्मेलनने अभिप्राय प्रकट किया था कि वैद्योंको प्रत्येक बड़े स्थानमें इसके लिये कमिटी नियुक्त करनेका प्रयत्न करना चाहिये। इस कोषकी वृद्धिके लिये विशेष कर उसने दो उपाय बतलाये थे:—

१ प्रत्येक वैद्यके यहाँ एक एक सन्दूक रखी जाय और प्रत्येक रोगीसे उसमें यथाशक्ति धन्वन्तरीय भाग डालनेका अनुरोध किया जाय।

२ आयुर्वेदमहामण्डल कुछ रसीद बहियाँ छपाकर अपने और आयुर्वेद विद्यापीठके सभासदोंके पास भेजे और वे उत्साही आयु-र्वेद प्रेमियोंसे समय समय पर सहायता लेकर प्रधान कार्यालयमें भेजा करें। उपाय दोनों अच्छे हैं; परन्तु खास कर इसी कामके लिये प्रत्येक स्थानमें कमिटियोंका बनना आयुर्वेद-महामण्डलको कुछ कठिन मालूम पड़ता है। जिस समाजकी यह स्थिति है कि अनेक स्थानोंमें वैद्य सभाएँ स्थापित हैं; किन्तु बहुत थोड़ी सभाएं आयुर्वेदमहामण्डलसे सम्बद्ध हैं उस समाजमें खाली पैसे इकट्ठा करनेके लिये वैद्य लोग कमिटी बनावेंगे यह समझमें नहीं आता। परन्तु इस कार्यकी आवश्यकता है अवश्य, जो हो, अब तक किसी भी स्थानके किसी भी सज्जनने ऐसी कमिटी बनानेकी इच्छा प्रकट नहीं की है। मेरी समझमें जब तक खासकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी कामके लिये कमिटियाँ बनानेका समय नहीं आता तबतक आयुर्वेदमहामण्डल और आयुर्वेदविद्यापीठके सभासदोंसे ही इस विषयमें अनुरोध करना चाहिये। अभी तक सन्दूकें बनानेका प्रयत्न नहीं हो सका है और सुना गया है कि कलकत्तेमें ऐसी सन्दूकें अच्छी बनती हैं। परन्तु मण्डलके आदेशानुसार वैसी रसीद बहियां छपवा ली गयी हैं। ये बहियाँ तीन प्रकारकी हैं। एकमें पाँच पाँच रुपयेकी रकम पावतीके लिये छपी हुई है। अर्थात् जो सज्जन एक दम पाँच रुपये दान करेंगे उन्हें यह रसीद दी जायगी। दूसरी बहियाँ एक एक रुपयेवाली हैं। तीसरी बहियोंमें कोई रकम छपी हुई नहीं है। जो सज्जन चार आनेसे लेकर एक रुपयेके भीतर दाम देंगे। उन्हें यह रसीद दी जायगी इसी तरह जो सज्जन एक रुपया और पाँच रुपयेसे भिन्न कोई रकम देंगे उन्हेंभी यह दी जा सकेगी। अब एक रुपयेसे अधिक और पाँचसे कम देनेवालोंको एक एक रुपयेकी कई रसीदें दी जा सकेंगी। जो सज्जन इस कार्यको करना चाहें वे ऐसी रसीदें कार्यालयसे मँगालें।

वैद्योंमें प्रेम और संघशक्ति।

गत पञ्चम वैद्यसम्मेलनमें एक प्रस्ताव पास हुआ था कि "इस सम्मेलनकी सम्मतिमें वैद्योंको चिकित्साके विषयमें परस्पर सलाह लेनेकी प्रथा प्रचलित करनी चाहिये।" नहीं कहा जा सकता वैद्योंने इस प्रस्तावके अनुसार कितना कार्य किया। ऐसे कामोंके लिये परस्पर सहानुभूति प्रेम और मिल कर चलनेकी शक्ति होनी आवश्यक होती है। हम देखते हैं कि अधिकांश वैद्योंमें इन तीनोंका अभाव है। एक वैद्य दूसरेसे मिलकर कुछ पूछनेमें यह सङ्कोच करता है कि इससे हमारा महत्व बढ़ जायगा और इस बातको वह जान जायगा कि यह मुझसे कम जानता है। अतएव मेरा महत्व घट जायगा। उसको इस प्रकार समझना भी नितान्त निर्मूल नहीं होता; क्योंकि पापरूपी चोर दोनों ओर बैठा रहता है। जिससे पहला वैद्य सलाह लेने जायगा, वह सबसे कहता फिरेगा, अजी उसे आता हो क्या है, जब कोई मार्केका मामला आ पड़ता है तबतो वह हमारे पास पूछने दौड़ता है, उसकी भी क्या दवा कराने योग्य है? जिसे अपना प्राण प्रिय न हो वह उसके पास जाय। यही नहीं यों प्रायः सभी एक दूसरेकी निन्दा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते पाये जावेंगे। अन्तमें फल यह होता है कि साधारण लोग समझने लगते हैं कि भाई यहाँ तो सभी एक दूसरेको अबोध कहते हैं; अतएव यह निश्चय कैसे हो कि अच्छा कौन है। चलो इनकी तरफ न जाना ही अच्छा किसी हकीम या डाक्टरके पास क्यों न चलें। यदि वैद्य लोग यह समझने लगें कि पबलिक स्वयं खरे खोटेकी परीक्षा कर लेती है, हम अपना मुख दूषित क्यों करें तो अवश्य ही दोनोंका लाभ है। यह समझ रखना चाहिये कि अपने भाईकी प्रतिष्ठा बढ़ानेसे स्वयं हमारी प्रतिष्ठा बढ़ती है; और भाईकी नीचता प्रकट होनेसे लोग यह समझ सकते हैं कि यह भी तो उसी समुदायका है। इसके सिवाय परस्पर प्रेम, विश्वास और सहानुभूति न होनेसे आयुर्वेदकी उन्नतिके बहुतसे काम आरम्भ ही नहीं हो सकते। उदाहरणार्थ देखिये इस बातकी बड़ी आवश्यकता है कि वैद्य लोग सङ्घशक्तिसे ऐसी कम्पनी खड़ी करें जो जङ्गलों पहाड़ोंसे दुष्प्राप्य और वैद्योपयोगी आवश्यक वस्तुएँ ला ला कर संगृहीत रखें और सम्पूर्ण वैद्योंको पहुँचाया करें। अभी पंसारीके यहांसे सड़ी घुनी, पुरानी औषधियां लेनेसे लाभ नहीं होता और वैद्यके स्वयं न जाननेसे पंसारी औरको और ही वस्तु दे देता है। यदि ऐसी कम्पनी हो तो वैद्योंको यथेष्ट औषधि मिलें और औषधिभी अच्छी गुणदायक बनें; परन्तु विश्वास हुए बिना कब ऐसी कम्पनियां खड़ी हो सकती हैं। ऐसी कम्पनी-की आवश्यकता इस समय एक सिरेसे दूसरे सिरे तक क्या सर्व-साधारण आयुर्वेदप्रेमी और क्या वैद्य सभीको प्रतीत हो रही है। केवल आयुर्वेदमहामण्डलके नाते ही नहीं एक वैद्यके नाते, एक वैद्यकपत्रके सम्पादकके नाते भी इस विषयके बहुतसे पत्र हमारे पास आया करते हैं। अधिक नहीं केवल दो एक पत्रका उल्लेख हम यहां करते हैं। बम्बईमें चैनीराम जेसराजजीकी एक प्रतिष्ठित कोठी है उसके एक मालिक उत्साही युवक बाबू सीताराम पोत-दार बड़े आयुर्वेदप्रेमी और आयुर्वेदविद्यापीठके सभासद हैं। आप चाहते हैं कि जो विशेष उपयोगी और चमत्कारिक औषधियां हैं उन्हें वैद्य लोग छिपावें नहीं। सर्वसाधारणको न सही; परन्तु वैद्यों-को बतला दें और ऐसी औषधियोंके लिये योग्य स्थानोंमें संग्रहा-लय रहें। अलीपुर मुज़फ़्फ़रगढ़के वैद्य वासुदेवजी गुप्त लिखते हैं कि दशमूल आदि औषधियोंके वेचनेवाले किसी स्टोरको क्या आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बता सकते हैं? सतारा जिलेके कालगांव निवासी श्रीयुक्त गोपालाचार्य इनामदार लिखते हैं, जो औषधियां हमारे दक्षिण प्रान्तमें नहीं मिलतीं उन्हें उत्तर-भारतके किसी नगरसे सुविधाके साथ मँगानेके लिये क्या कोई साधन आप बता सकते हैं? अजमेरके वैद्यराज पण्डित रामदयालजी शर्मा और वैद्यराज कल्याणसिंह जी लिखते हैं "अलभ्य" औषधियोंकी खोजके लिये प्रत्येक प्रान्तसे एक एक वैद्य चुन कर एक कमिटी बनायी जाय; जो अपने अपने प्रान्तमें पर्वतादिकोंमें बूटियां तलाश करें और वर्षान्तमें अपनी रिपोर्टसम्मेलनमें पेश किया करें। ऐसा करनेसे बहुत सी अलभ्य बूटियोंकी खोज हो सकती है। एवं एक रसायनशाला ऐसी तैयार की जाय जिसमें रस, धातु, आदि उचित मूल्य पर बहुत अच्छे बने हुए तैयार मिल सकें।" ऐसे सब काम क्या बिना परस्पर प्रेमके हो सकते हैं, बिना किसी अच्छी कल्पनाके और बिना लाभके विचारके क्या केवल सम्मेलनको बनायी हुई कमिटी इसे कर सकती है? दिल्लीके वैद्य श्रीयुक्त चतुरसेन वर्मा आयुर्वेदविशारद और बावियाल अम्बालाके वैद्य श्रीयुक्त हीरालाल जी ऐसी दूकान अथवा कम्पनी खोलनेका उद्योग कर रहे हैं। यदि सर्वसाधारणकी यथेष्ट सहानुभूति प्राप्त होतो सम्भवतः आप लोग इस कार्यको विस्तृत स्वरूपमें सिद्ध करनेका प्रयत्न कर सकते हैं। जब तक स्वच्छ हृदयसे हम लोगोंमें कर्तव्यके लिये काम करनेका उत्साह नहीं होगा तब तक दोष दर्शन करते रहनेसे कुछ नहीं होगा। जैसे धार्मिकोंका परमध्येय मोक्ष है; उसी प्रकार जो लोग वैद्यसम्मेलनमें सम्मिलित रहनेका परमध्येय उपाधिपाना समझते हैं उनका भी किया कुछ नहीं होनेका। जिनका उत्साह पदवीके पीछे पीछे चलता है और जितनी जल्दी वे चाहते हैं उतनी जल्दी न मिलनेसे ही जिनके उत्साहकी कली मुरझा जा सकती है, उनसे आयुर्वेदके अभ्युदयकी क्या आशा की जा सकती है? अमुकको उपाधि क्यों दी गयी, अमुकको प्रशंसापत्र क्यों मिला, इसीकी उधेड़ बुनमें जो जलते तेलके बैंगन हो जाते हैं उनसे आयुर्वेदके उद्धारका महान् कार्य हो चुका। जो लोग केवल अपने ही मनसे अपनी योग्यता और अपनी आयुर्वेदसेवाकी नाप कर बड़ी बड़ी महत्वाकांक्षा रखते हैं और सम्मेलनसे उसकी पूर्ति कराना चाहते हैं, वैद्यसम्मेलन सब समय वैसा करनेमें समर्थ नहीं हो सकता क्योंकि वैद्यसम्मेलनसे दी जानेवाली पदवियां अथवा उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा मिलनेवाले प्रशंसापत्र अवश्य ही योग्यताके निदर्शक और आयुर्वेदको सेवाके साक्षी हैं; किन्तु उसका निर्णय करना सर्वस्व उनके स्वयंके अधीन नहीं किन्तु नियमबद्ध रूपसे बँधे हुए उसके अनेक व्यक्तियोंके ऊपर भी निर्भर रहता है। इसके सम्बन्धमें वैद्य-सम्मेलनके नियम बहुत साफ़, व्यापक और यथासम्भव निर्दोष हैं। वे नियम केवल काम चाहते हैं और वह काम भी ऐसा जो सर्व विदित हो और जिस पर किसीको किन्तु लगानेका अवसर न मिले।

कुछ ऐसे भी सज्जन हैं, जो अपनो किसी इच्छाको पूर्ति न होनेसे अथवा किसो व्यक्ति विशेषसे अप्रसन्न हो जानेसे उस संस्थाकी ही जड़ काटने पर उतारू हो जाते हैं, उसको निन्दा फैलाने पर ही कमर कस लेते हैं। मथुरा-सम्मेलनके पश्चात् हमें काशी रसायनशालाके श्रीयुक्त पण्डित श्यामसुन्दराचार्य जी वैश्यका पत्र मिला, जिसमें आपने लिखा था "कुछ लोग इधर लौटते हुए आये और कहने लगे कि हम सम्मेलनके प्रबन्धके विरुद्ध हैं हमने अमुकको खूब झाड़ा, अमुककी बोलतो बन्द की।" आचार्य जी लिखते हैं कि उनसे मैंने कहा कि "आपको उस कार्यमें सहायता करके बहादुरी दिखानी थी न कि दोष निकाल कर। यह तो भारतवर्षीय वैद्योंका सम्मेलन है, जिस किसो कार्यमें त्रुटि देखी जाय उसमें किसीका मुँह न देख स्वयं पूर्णतामें लग जाना चाहिये।" अन्तमें पहाड़ खोदते चूहा निकला आपकी भयङ्कर नाराजीका कारण मालूम हुआ कि **आपकी बात नहीं मानी गयी थी**। सभाओंमें बहुमतसे काम होता है, बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनमें दो मत हो जानेसे वोट लेने पड़ते हैं; जिधर अधिक राय होती है उधरको बात मानी जाती है, दूसरेका पक्ष गिर जाता है। यदि इस ढङ्गके सम्पूर्ण मनुष्य उस सभाको निन्दा प्रचलित करने लगें तो कोई सभा कभी अपने काममें सफल नहीं हो सकती।

एक और गुलखिला—ऊपर जिस ढङ्गके मनुष्योंका वर्णन हुआ है। मालूम पड़ता है उसी ढङ्गके कुछ लोगोंके कथनके आधार पर लाहौरके देशोपकारक सम्पादकने मथुरा सम्मेलनके पश्चात १ मार्चके देशोपकारकमें "एक और गुलखिला" शीर्षक लेख लिखा था। उसमें कुछ बातें ऐसी थीं जो कभी न तो वैद्यसम्मेलन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सामने उपस्थित की गयों और न आयुर्वेदमहामण्डलको ही उनको कुछ खबर है। उसमें पहली बात यह है "जो हालात मैंने देखे हैं, वह सन्तोष जनक नहीं हैं, एक पार्टीकी पार्टी विरुद्ध थी और कई कहते थे इसका हेडक्वार्टर दूसरी जगह बनाया जावे। यदि यह न मानें तो दूसरी कानफरेंस बनायी जावे। इनका कुछ ठेका नहीं है।" दूसरी बात यह थी "पं० रामचन्द्रजीको कई मनुष्य सम्मति देते थे कि आप स्वागतकारिणीके रुपयोंमेंसे कानफरेंसको कुछ न देना। आप क्यों पण्डित जगन्नाथ शुक्लका ख्याल करते हैं। आपने स्वयं अपनी हिम्मतसे कानफरेंस बनायी है।" सम्मेलनके कार्यालयके सम्बन्धमें स्वयं सम्पादक महाशयने भी अपनी सम्मति प्रकट की थी और दो तीन बार अपने सत्यान्वेषणके लिये पाठकोंको भी सम्मति देने के लिये आह्वान किया था; परन्तु इस सम्मेलनके एक सप्ताह पहले केवल एक सज्जनकी सम्मति प्रकाशित हुई! इसके सिवाय किसीकी सम्मति न छपी और न वे ही लोग सामने आये जिनको पार्टीकी पार्टी मथुरामें नजर आती थी और जो पण्डित रामचन्द्र जी शर्म्माको सम्मेलनके नियमका उल्लंघन करनेकी सम्मति देते थे। इससे इस विषयमें जैसा चाहिये वैसा प्रकाश न पड़ सका। स्वयं पण्डित रामचन्द्र जीसे जब कार्यालयकी ओरसे पूछा गया तब उन्होंने कहा "यदि रुपये न देनेके सम्बन्धमें किसीने कुछ कहा होगा तो नियमरूप नहीं स्वागतकारिणीके पास रुपयोंकी कमी होनेके कारण कहा होगा।" सम्पादक महाशय चाहते तो नियमावलीके आधार पर स्वयं ऐसी ऊटपटांग बातोंका खण्डन कर देते। परन्तु उन्हें उस समय नियमावली देखनेका अवकाश नहीं मिला। इसलिये जगन्नाथप्रसाद शुक्लने लोगोंको भ्रम न होने देनेके लिये और अपने व्यक्तिगत आक्षेपका उत्तर देनेके लिये देशोपकारकमें "मुरझाया हुआ गुल" शीर्षक एक पत्र छपनेको भेजा। जिसका सारांश यह था कि जो पार्टी विरुद्ध थी उसकी विरुद्धताका कोई कारण मालूम पड़े तो इस विषयमें विशेष सरलतासे विचार हो सकता है। क्या हेडक्वार्टर दूसरी जगह बनानेके विषयमें कभी प्रस्ताव हुआ है और उसे कुछ ठेकेदारोंने नहीं माना? जब तक यह बात नहीं है तब तक ऐसी बात कहनेवालोंको अपने शब्दोंके लिये लज्जित होना चाहिये था। दूसरी कानफरेंस बना लेना सहज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है; परन्तु उसका कारण बताते हुए पबलिकका समाधान करना सहज नहीं है। वैद्यसम्मेलनकी नियमावलीके १३वें नियममें स्पष्ट लिखा है "कि सम्मेलनकी स्थायी समिति और उसकी अन्तर्गत संस्थाओंका प्रधान कार्यालय उसी स्थानमें रहेगा जहां पूर्व सम्मेलनमें निश्चत हुआ हो" इससे तो यही मालूम होता है कि यदि आवृश्यकता हो तो हरसाल उसका हेडक्वार्टर बदला जा सकता है। इसके सिवाय कार्यालयका स्थान परिवर्तन करनेका ऐसा सुन्दर और निष्पक्ष नियम वैद्यसम्मेलनमें है कि उसके रहते एक व्यक्ति या दलपर भार आही नहीं सकता। पन्द्रहवें नियमके चौथे उपनियममें लिखा है कि "यदि स्थायी समितिके प्रधान कार्यालयके स्थानका परिवर्तन करनेका प्रस्ताव हो तो उसके लिये आवश्यक होगा कि जहां सम्मेलनका कार्यालय हो उस नगरके और जहां प्रधान कार्यालय ले जाना हो उस स्थानके रहनेवाले प्रतिनिधियोंको छोड़कर शेष सम्मेलनके उपस्थित प्रतिनिधियोंमेंसे दो तृतीयांश प्रतिनिधियोंकी सम्मति स्थान परिवर्तनके अनुकुल हो तभी प्रस्ताव परिगृहीत होगा अन्यथा नहीं।" ऐसी दशामें हेडक्वार्टर किसी स्थानमें रखना सर्वसाधारणकी इच्छा पर ही निर्भर है, ठेकेदारोंकी इच्छा पर नहीं। आयुर्वेदमहामण्डल किसी विशेष स्थानकी संस्था नहीं है। भारतवर्षके सम्पूर्ण प्रान्तोंके सौ सवासौ सभासदोंसे बनी हुई भारतव्यापिनी संस्था है। हर एक प्रान्तमें उसके प्रान्तिक कार्यालय हैं। जब कोई काम किया जाता है तब सबकी सलाह ली जाती है। नियमावली भी सबकी सम्मतिके अनुकूल पास हुई है। अतएव जो लोग केवल जगन्नाथ शुक्लका ख्याल न करनेके लिये पं० रामचन्द्र जी को यह सलाह देते थे कि आप मथुरा सम्मेलनके प्रतिनिधियोंकी आधी फीस प्रधान कार्यालयको न दें, वे नियमावलीके आठवें नियमके तीसरे उपनियमका उल्लंघन करनेकी सलाह देते थे और इस प्रकार अखिल भारतवर्षीय वैद्योंका अपमान करनेके लिये उभाड़ते थे। यह और बात है कि नियमावलीमें संशोधनकी आवश्यकता हो तो उसे नियमके अनुसार प्रस्ताव कर संशोधन कराया जाय। इसके लिये सम्मेलन कार्यालय सदा तैयार है। वैद्यसम्मेलन जगन्नाथ शुक्लकी बपौती नहीं है और न उसके धनसे जगन्नाथ शुक्लके बापका श्राद्ध होना है। जो धन सम्मेलन कार्यालयमें आवेगा वह सम्मेलनके उद्देश्योंके सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेमें ही लगेगा। यदि उस धनके आगमनमें कोई भांजी मारेगा तो अवश्य ही वह सम्मेलनकी शत्रुता करनेवाला माना जावेगा। वैद्यसम्मेलनमें ऐसा कोई नियम नहीं है कि केवल थोड़ेसे मनुष्योंमें उसके उच्चपद रहें। उसका सभापति तो हर साल बदला ही करता है। कोई खास आदमी सब दिन स्थायीसमितिका सभापति नहीं रहता; बल्कि जो सम्मेलनका सभापति होता है वही सालभर स्थायी समितिका सभापति रहता है। जिससे अपने सभापतित्वमें पास हुए प्रास्तावोंकी पूर्तिका वह आस्थाके साथ प्रयत्न करे। अन्य कर्मचारियोंमें भी आवश्यक परिवर्तन होता है। मेरे दुर्भाग्य-वश केवल मन्त्रीका पद अबतक नहीं बदला गया। यद्यपि पहले स्वर्गवासी शङ्करदाजी शास्त्री पदे सम्मेलनके स्थायी मन्त्री थे; परन्तु अपने मन्त्रित्वमें मैंने उस नियमको हटवा दिया है। स्वर्ग-वासी शास्त्री जीके परलोक वासके पश्चात जब दो वर्षका सन्नाटा रहा, तब कुछ आयुर्वेदप्रेमियोंकी सलाहसे मैंने वैद्यसम्मेलनके अधिवेशन फिर आरम्भ करनेका प्रयत्न किया। इसलिये तृतीय-सम्मेलनने सालभर तक मुझे सम्मेलनका कार्य करनेका आदेश किया। उस समय मैंने भी यह समझ कर मन्त्रिपद स्वीकार किया कि जिसके लिये मैंने प्रयत्न किया है, यदि उसकी कुछ जड़ जम सकती हो तो जम जाय। इसके पश्चात कानपुरके चतुर्थ वैद्य-सम्मेलनमें जब फिर मुझे मन्त्रिपद दिया जाने लगा, तब मैंने बराबर भरे सम्मेलनमें प्रार्थना की कि अब यह पद दूसरेको दिया जाय। मैं तो सेवाके लिये उपस्थित रहूँगा ही। परन्तु सम्मेलनके आग्रहवश मुझे फिर भी स्वीकार करना पड़ा। यही हाल मथुरामें हुआ; मैं प्रार्थना करता ही रहा कि मुझे मन्त्री न बनाया जाय, परन्तु फिर भी सम्मेलनमें उपस्थित सज्जनों और कविराज गणनाथ सेन, महात्मा लक्ष्मीराम स्वामी जैसे गुरुजनोंकी आज्ञा पालन करनेमें तत्पर होना ही पड़ा। इसके सिवाय उस समयके आयुर्वेदमहा-मण्डलके सहकारी मन्त्री पण्डित श्रीनिवासाचार्य शास्त्री महोदयने भी एक पत्र छपाया था जिसमें बारम्बार स्थान परिवर्तन न करनेकी सम्मति दी थी, जो हो, ऐसी सम्मतियोंमें कोई जान न हो तौ भी इनसे यह तो पता चलता है कि वैद्य लोग हृदयको स्वच्छ रख अभी किसी संस्थामें काम करना नहीं जानते। यदि आप समझते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्योंका प्रभाव बढ़े, आयुर्वेदकी उन्नति हो तो लोगोंके हृदयकी मलिनता, ईर्षा, द्वेष, मिथ्या महत्वाभिलाष आदिकी जड़ खोदनेका प्रयत्न करें, हमारे भाइयोंसे ये दोष दूर हों इसके लिये सदाप्रयत्न शील रहें। लोगोंमें यह भाव जागृत करते रहें कि निष्काम कर्मका बड़ा महत्व है; काम करनेके ही लिये काम करना अपना उद्देश्य रखना चाहिये। तथापि कामुक कर्तव्यशीलोंके लिये भी अवसर रहे और सम्मेलनको उचित है कि उसकी नियमावली इस ढंगकी कर दे कि 'देशोपकारक' सम्पादकके शब्दोंमें किसीके लिये "नेकी कर कुवेंमें डाल की" कहावतका आधार भी न लेना पड़े।

इसी प्रकार बम्बईसे एक ऐसे सज्जनका पत्र मिला है जिनका वैद्यसम्मेलनके जन्मदातासे घनिष्ट सम्बन्ध है। उनका कहना है कि यहांके कुछ वैद्य वैद्यसम्मेलनसे इसलिये रुष्ट हैं कि जब उसके नामके पूर्व "निखिल भारतवर्षीय" शब्द है तब महाराष्ट्रमें दो सम्मेलन होनेके पश्चात उत्तर भारतमें ही उसके अब तकके सम्मेलन क्यों हुए? यह रुष्ठताका कारण विचित्र है। ऐसे वैद्योंको जहाँ अपने ही ऊपर रुष्ट होना चाहिये था तहां वे सम्मेलन पर नाहक रुष्ट हुए हैं। सम्मेलनको निमन्त्रण देकर बुलाना सम्मेलनके हाथ नहीं; परन्तु जहाँके लोग अपने प्रान्त अथवा स्थानमें वैद्यसम्मेलन करनेके इच्छुक होते हैं वहाँके प्रतिनिधियोंके हाथ रहता है। सम्मेलनके हितैषियोंका तो यह सदा उद्देश्य और प्रयत्न रहता है कि जहाँ तक सम्भव हो उसके अधिवेशन भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें होते रहें जिससे सभी प्रान्तोंमें उसका परिचय बढ़े। इस सिद्धान्तके अनुसार बराबर प्रयत्न होता रहा है कि जहाँ तक हो सके उत्तर भारतसे भिन्न स्थानकेलोग उसे निमन्त्रित करें। दक्षिण भारतके जो महाशय इस कारण सम्मेलनसे रुष्ट होना चाहते हैं उन्होंने अपने प्रान्तके प्रतिनिधियोंको चलते समय क्यों नहीं आदेश कर दिया कि आगामी वर्षके लिये यहांके लिये सम्मेलनको निमन्त्रित करना। अथवा ऐसा उत्साह रखनेवाले सज्जनोंने स्वयं पधारकर क्यों निमन्त्रण नहीं दिया? जिस समय आयुर्वेदमहामण्डलको मालूम हुआ था कि बम्बईके वैद्य अपना स्वतन्त्र सम्मेलन कर रहे हैं उस समय भी आयुर्वेदमहामण्डलकी ओरसे इस बातका प्रयत्न किया गया था कि बम्बईके वैद्य यदि चाहें तो कानपुरमें उपस्थित होकर अपने प्रान्तके लिये वैद्यसम्मेलनको निमन्त्रित करें; अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समितिको लिखें तो सम्भवतः बीचमें ही वहाँके लिये प्रबन्ध हो सकेगा। यही नहीं यदि वहांके वैद्योंकी यह महत्वाभिलाषा हो तो वे स्थायीसमितिका स्थान बम्बईमें करनेका भी प्रस्ताव उपस्थित कर सकते हैं। इस प्रयत्नके साक्षी बम्बई प्रान्तके कितने ही वैद्य हैं। अतएव कमसे कम बम्बई प्रान्तके वैद्योंको तो इस कारणसे रुष्ट होनेका कारण नहीं हैं। इसके सिवाय बम्बई प्रान्तमें दो सम्मेलन हो भी तो चुके हैं। जिन प्रान्तोंमें अभी तक सम्मेलन गया ही नहीं सबसे पहले वहां वालोंको ही निमन्त्रण करनेका स्वत्व है। अतएव केवल इसलिये हृदयसे सहानुभूतिको घटाना तो हमारी समझमें पाप है।

कुछ आयुर्वेदके उत्कटप्रेमी और स्वावलम्बनप्रिय करारे वैद्य ऐसे हैं जो वैद्यसम्मेलनसे इसलिये किंचित रुष्ट हैं कि उसके किसी काममें किसी डाक्टरकी सहायता क्यों ली जाती है? उनमेंसे हमारे बम्बईके एक मित्र का वक्तव्य यों है "आप वैद्यककी उन्नतिके लिये सब कुछ कीजिये; परन्तु उसमें पाश्चात्य शास्त्र पढ़े हुए डाक्टर न होने चाहिये यह अपना मत हम आपको फिर लिखते हैं.........
......इससे यह सिद्ध होता है कि हम वैद्योंको अपना काम करनेमें डाक्टरकी सहायता अवश्य लगती है। इसी तरह आप मलेरिया और प्लेगके लिये कमेटी चाहते हैं। यह अनावश्यक है और यह नाम भी उनका हैं। वैद्य कैसे जानेंगे, इसका उपाय डाक्टर ही करें। वैद्यककी उन्नतिके लिये जो काम हो उसमें हम योग्यतानुसार मदद करेंगे परन्तु तत्व यह है कि उसमें डाक्टर या हकीम नहीं होना चाहिये। यदि आपकी सभाको यह तत्व मान्य हो तो आगे हमसे पत्रव्यवहार करना नहीं तो समझ लीजिये कि हम आपकी सभाके लिये अयोग्य हैं।" इस सम्मतिके ठीक विरुद्ध देशोपकारक सम्पादक पण्डित ठाकुरदत्तजी की सम्मति है। आपने मथुराके सम्मेलनके पश्चात अपने पत्रमें छापा था 'मथुरा जानेसे प्रथम भी सुन रहे थे कि मथुरावालोंने भूल की है जो कि एक डाक्टरको सभापति चुना है, मगर उत्सव देखनेके पश्चात् मेरी तो यह सम्मति हुई कि सदैव ही डाक्टर चुनने चाहिये। लेफ़्टिनेण्ट कर्नल के. आर. कीर्तिकर जैसे माननीय पुरुषने, जिसने डाक्टरोंमें सबसे उच्चमान पाया हो, यदि वैद्यक को उत्तम चिकित्सा विधि समझता है और फिर जाता हुआ यह भाव साथ ले जाता है कि वास्तविक सब डाक्टरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मैने पढ़ी आयुर्वेदसे निकली है तो यह थोड़ी बात नहीं है। डाक्टर कीर्तिकरके ये शब्द स्वर्णाक्षरोंमें लिखे जानेके योग्य हैं।" बड़े ही सङ्कटका समय है, निर्णय क्या किया जाय ; परन्तु विचार कर देखा जाय तो अत्युक्ति दोनों ओर है। पश्चिमी वैद्यक पढ़े हुए किसी डाक्टरसे कोई सम्पर्क ही न रखा जाय यह एक तरहकी-जबरदस्ती है। आर्यवैद्यक और वैद्यसम्मेलनके प्रति सम्पूर्ण भारत-वासियोंकी सहानुभूति प्राप्त करना हमारा कर्तव्य है। फिर क्या डाक्टर हकीम भारतवासी नहीं हैं ? यदि वैद्यसम्मेलनके उद्देश्योंके साथ उसकी सहानुभूति है, डाक्टर होने पर भी वह चाहता है कि भारतीय वैद्यककी उन्नति होवे; यदि वह शुद्ध हृदयसे वैद्योंके साथ मिल कर एक भारतीयके नाते, एक भारतमाताके पुत्रके नाते, एक भारतीय साहित्यकी उन्नतिका अभिलाषी है तो क्या कारण है कि हम उसे अपने पास तक फटकने न दें ? हमें अपने मित्र बढ़ानेकी आवश्यकता है, अपने साथ सहानुभूति दर्शानेवालोंकी संख्या बढ़ानेकी आवश्यकता है, फिर डाक्टर होनेसे ही तो किसी की भारत और भारतीय मात्रसे शत्रुता नहीं हो सकती। हो सकता है कि कुछ डाक्टर अपनी विद्वत्ताका उपयोग आयुर्वेद पर कुठार चलानेमें कर रहे हों; किन्तु इससे डाक्टर मात्र पर तो कोप नहीं होना चाहिये बल्कि हमारा तो यह उद्योग होना चाहिये कि हमारे द्वेषियोंकी संख्या घटे। यह तभी हो सकता है जब हम उनका व्यूहभेद करेंगे। हम ऐसे कच्चे तो नहीं हैं कि डाक्टरोंका संसर्ग होते ही हम मिल जाँय अथवा हमारा अस्तित्व नष्ट हो जाय। इसी तरह जो लोग चाहते हैं कि सदा डाक्टरोंके ही सिर वैद्यसम्मेलनका सेहरा बांधा जाय वह भी ठीक नहीं है। हम अपनी सुविधाके लिये जब जिस प्रकार के सहयोगकी आवश्यकता समझेंगे तब उस प्रकार ग्रहण करेंगे। इसी तरह प्लेग, मलेरिया कमीशनका यह अर्थ नहीं कि डाक्टरोंके कामको हम अपने सिर ले रहे हैं। बल्कि उसमें हमारा यह उद्देश्य है कि जिसे डाक्टर प्लेग या मलेरिया कहते हैं अथवा इस नामसे आज कल जिन रोगोंका बोध होता है उस लक्षणके रोगका नाम आयुर्वेदके मतानुसार क्या है और उसकी। चिकित्सा किस प्रकार सफलतासे हो सकती है । प्लेग मलेरिया नाम हमारे आयुर्वेदके लिये स्थायी रूपसे ग्रहण नहीं किये जा रहे हैं। निर्णय न होने तक ही सुविधाके लिये यह नामाभिधान स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया है। डाक्टर अपने मतानुसार इन रोगोंके लिये अपना काम करें हमें अपने मतानुसार इनका निर्णय करना चाहिये। ऐसी दशामें यह काम अनावश्यक कैसे कहा जा सकता है?

सरकारी परीक्षाओंमें आयुर्वेद।

काशी, लाहौर और कलकत्तेके संस्कृत परोक्षा बोर्डोंके द्वारा प्रतिवर्ष न्याय, मीमांसा, ज्योतिष, काव्य, व्याकरण, वेदान्त आदि-की परीक्षा ली जाती है और प्रतिवर्ष सैकड़ों छात्र इन विषयोंमें उत्तीर्ण होते हैं। आयुर्वेद भी संस्कृत भाषाका एक सर्वजनोपयोगी और ज्ञानवर्धक शास्त्र है। परन्तु न जानें अब तक उक्त तीनों परीक्षा-के बोर्डोंमें आयुर्वेदकी परीक्षा लेनेंका क्रम क्यों आरम्भ नहीं किया गया है। काव्य, कोष, व्याकरण आदि विषयोंके उत्तीर्ण पण्डितों-को रोजी ढूंढ़नेमें दिक्कत पड़ सकती है, उन्हें संसारमें प्रविष्ट होने पर गृहस्थीका भार संभालना कठिन हो सकता है; परन्तु ज्योतिष और वैद्यक जानने वालोंको किसीको रोजी बताना नहीं पड़ता और यही दोनों प्रत्यक्ष शास्त्र हैं। अन्य विषय ज्ञान बढ़ानेके लिये और केवल मनोरञ्जनके लिये होते हैं; परन्तु ज्योतिष और वैद्यक प्रत्यक्ष-शास्त्र हैं। कदम कदम पर इनकी सच्चाईका अनुभव मिलता है। तिस पर भी ज्योतिषसे वैद्यकका दर्जा अधिक बढ़ा हुआ है। उससे इसकी उपकारिता और भी कहीं ऊंचे दर्जेकी है। लोगोंके जीवन-मरणसे इसका सम्बन्ध है। परन्तु शोक है कि सरकारकी ओरसे स्थापित इन संस्कृत परीक्षाबोर्डोंमें ज्योतिष आदिके समान आयुर्वेद-के साथ न्याय नहीं किया जाता, उसकी शिक्षा और परीक्षाकी ओर अब तक कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। अब तो विहार सर-कारने आयुर्वेदकी शिक्षा और परीक्षाका होना स्वीकार कर लिया है क्या ये परीक्षाबोर्ड विहार सरकारके अनुकरण पर इस विषयकी व्यवस्था शीघ्र नहीं कर सकते? यदि सरकार ऐसी परीक्षा आरम्भ कर दे तो देहातोंमें पढ़े लिखे वैद्योंकी संख्या बढ़ जायगी और सर-कार देहातोंके सुधार और स्वास्थ्यके लिये जो चिन्तित रहती है उसमें सरकारको बहुत मदद मिले और देहातमें जो उसे घूमते अस्पतालोंकी व्यवस्था करनी पड़ती है, उसकी भी आवश्यकता न रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेपुटेशन और उद्देश्य प्रचार।

गत वर्ष इस विषयका एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया था कि "आयुर्वेदमहामण्डल इस बातकी व्यवस्था करे कि समय समय पर भारतवर्षके प्रधान प्रधान नगरोंमें प्रतिनिधि दल घूम कर शास्त्रीय विषयों पर और आयुर्वेदकी उन्नतिके साधनों पर व्याख्यान दे। इस कार्यमें विद्वान और उत्साही सज्जन तथा व्याख्याता संयुक्त रहें।" इस वर्ष भी आयुर्वेदमहामण्डलके पास इतना द्रव्य नहीं था कि वह ऐसे प्रवासके एक चक्करका भी खर्च सँभाल सके। ऐसी दशामें प्रस्तावका पालन किस तरह हो? जो सज्जन इस विषयमें अपनी टीकायुक्त आलोचना द्वारा आयुर्वेदमहामण्डल पर इस विषयमें दोषारोपण करते हैं वे यदि इस कठिनाईको समझ कर इसे दूर करनेके उपाय बतलावें, वैद्यों और सर्वसाधारणमें इसके लिये उदारता और कर्तव्यजागृतिका मन्त्र फूंकते रहें तो कहीं अधिक लाभ हो। आयुर्वेदमहामण्डल साधन रहते कभी चुप नहीं बैठ सकता, अकर्मण्यता नहीं दिखा सकता, इसका वे विश्वास रखें। जो हो, इस कार्यके लिये कुछ लोगोंमें उत्साह भी था। झालरापाटनके नवरत्न पण्डित गिरिधर शर्माने हमें इस विषयकी कई बार याद दिलायी है, एक सन्यासी स्वामी गणेशानन्दजी भारती हमारा साथ देने को तैयार थे और भी कई सज्जन इसमें योग देते। सोचा गया था कि यदि केवल उद्देश्य प्रचारके लिये ऐसा डेपुटेशन हम नहीं निकाल सकते तो आयुर्वेद विद्यालयके विषयमें इस ढङ्गका उद्योग किया जाय। उससे उद्देश्य प्रचार भी होगा और विद्यालयकी सम्भावनाके लिये कुछ द्रव्य संग्रहका भी प्रयत्न होगा। इसीलिये पहले अवधके नगरों और ताल्लुकदारियोंमें भ्रमण करनेका विचार था; परतु हमारे जिन मित्रोंने अवधमें ऐसे उद्योगके लिये सहायता देनेका वचन दिया था उनको सलाह नहीं हुई। उन्होंने कहा अभी हिन्दू विश्वविद्यालयके लिये चन्दा देनेके पश्चात लोगोंको एक भी अच्छी फसल काटनेका अवसर नहीं मिला, अभी तो दुर्भिक्षके दावानलसे ही लोग तप रहे हैं, ऐसे अवसरमें निकल कर क्या लाभ उठाइयेगा। मन्त्रीने सोचा कि चलो इधर नहीं तो मध्यप्रदेशकी ओर देखें कैसी स्थिति है। इसलिये मध्यप्रदेशके दो तीन नगरोंमें वे स्वयं गये भी; परन्तु प्रथम तो वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदकी चर्चा ही नाम मात्रको है तिस पर महँगीने वहाँ भी अपना प्रभाव जमा रखा था। यह सब हो ही रहा था और इधर कुछ फसल सुधरनेकी आशा हो रही थी कि यूरोपका महासंग्राम छिड़ गया। उस महाभारतमें हमारी ब्रिटिश सरकारको भी भाग लेना पड़ा ; इससे स्वाभाविक ही सम्पूर्ण भारतवासियोंका ध्यान उधर आकर्षित हुआ। सर्वसाधारण प्रजा सरकारको सहायता देने पर तत्पर हुई और राजा महाराजा तथा ताल्लुकेदारोंका तो अपनी राजभक्तिका परिचय देनेका उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ गया; लोगोंके चित्त डाँवांडोल हो गये। इस प्रकार जो काम सुख समृद्धि और शान्तिके हैं वे रुक गये। तथापि उद्देश्य प्रचारके सम्बन्धमें एक दम सन्नाटा नहीं रहा। बङ्गालमें वैद्यसम्मेलनके सम्बन्धमें आवश्यक आन्दोलन हो और वहाँ षष्ठ वैद्यसम्मेलनकी स्वागतकारिणी समिति सफलतासे अपना काम कर सके इसलिये श्रीमान् कविराज गणनाथ सेन महोदयने आयुर्वेद सम्बन्धी दो एक बार निबन्ध पाठ किये। जिनमें आपने भारतवर्षमें आयुर्वैदिक आन्दोलन और जागृतिका इतिहास बतलाया। मन्त्रीने अपने प्रवासमें नागपुर, रायपुर और बिलासपुरके लोगोंसे मिल वैद्यसम्मेलनके उद्देश्य सुनाये और कई आयुर्वेद प्रेमी सज्जनों, वकील, बारिस्टरोंसे इस विषयका वचन लिया कि विद्यालयका आन्दोलन उठने पर वे मदद देंगे। बिलासपुरमें स्वास्थ्य रक्षा विषयमें एक व्याख्यान हुआ जिसमें वैद्यसम्मेलनके उद्देश्य भी बतलाये गये। पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी महोदयने बम्बईकी वैद्यसभा, बड़ौदेकी आयुर्वेदप्रचारिणी सभा और अहमदाबादकी वैद्यसभाके समक्ष वैद्यसम्मेलनके कामोंका विस्तृतवर्णन सुनाया, उसकी उपयोगिता और कार्यशैलीका दिग्दर्शन कराया। पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्य महोदयने भी वैद्यसभाके समक्ष आयुर्वेदविद्यापीठके उपाधिदान विषय पर भाषण किया। मरवटिया बाज़ार, बांसी ज़िला बस्तीमें गत फाल्गुन मासमें एक हिन्दू धर्म प्रवर्धिनी सभा हुई। उसके समक्ष नासिरगञ्ज निवासी पण्डित धरणीधरजी झा महोदयने स्वास्थ्य रक्षा तथा गोपालन विषयमें व्याख्यान दिया। आयुर्वेदविद्यापीठके उद्देश्य सुन कर उसकेलिये दुरगवावासी भूमिहारवंश भूषण बाबू मोहरनाथ जोसे आयुर्वेदविद्यापीठके लिये कुछ सहायता भी प्राप्त की। सिकन्दराबाद वासी पण्डित चिरञ्जीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी वैद्यने खुर्जा, सिकन्दराबाद आदि स्थानोंमें जाकर आयुर्वेद-विद्यालयकी आवश्यकता पर लोगोंसे कथन किया और कई रईसोंसे काम पड़ने पर सहायता देनेका वचन लिया। गोकुल निवासी पण्डित रामचन्द्र शर्मा महोदयने भी अपने पञ्जाबके प्रवासमें वैद्य-सम्मेलनके उद्देश्योंका प्रचार किया और आयुर्वेद विद्यालयके सम्बन्धमें चर्चा की। पण्डित प्रतापसिंह शर्मा आयुर्वेद विशारदने अपने राजपूतानेके प्रवासमें कई स्थानोंमें आयुर्वेद, आरोग्य रक्षा आदि विषयों पर व्याख्यान दिये और कई रईसोंको आयुर्वेदकी सेवाके लिये सन्नद्ध किया। संयुक्त प्रान्तीय मन्त्री पण्डित सूर्यप्रसाद जी वाजपेयी दक्षिण हैदराबाद गये थे। वहाँ आपके कई व्याख्यान हुए। जिनमें वहाँके आयुर्वेद कालेजके अध्यक्ष पण्डित हरगोविन्दजी कविराजके प्रबन्धसे आपके आयुर्वेद सम्बन्धी भी कई व्याख्यान हुए। व्याख्यानोंमें आपने आयुर्वेदका महत्व, स्वास्थ्य-विज्ञानकी बातें और वैद्यसम्मेलनका परिचय अच्छी तरह कराया। वहाँके हकीम वैद्योंके सामने सरजरी विषय पर भी आपका व्याख्यान हुआ। अच्छा प्रभाव रहा। इसी तरह लखनऊ, हरैानी आदिमें भी आपने जाकर आयुर्वेदके सम्बन्धमें व्याख्यान दिये। स्वास्थ्य-विज्ञानके तत्व समझाये और वैद्यसम्मेलनकी उपयोगिता बतलायी आयुर्वेद सम्बन्धी कुछ व्याख्यान दिलानेके लिये यह आवश्यक समझा गया है कि पहले ऐसे व्याख्यानोंकी आदर्श कुछ छोटी पुस्तिकाएँ (ट्रैक्ट) तैयार करा ली जायँ। इस विषयमें राजपूताना प्रान्तीय मन्त्री पण्डित पूनमचन्द तनसुख व्यास महोदय प्रयत्न कर रहे हैं।

धूर्तताका प्रचार।

यों तो बहुतसे मनुष्य हैं जो वैद्य नाम धारण कर अनेक प्रकारकी धूर्ततासे लोगोंको फँसाते और पैसे ऐंठते हैं। किन्तु अवध रायबरैली ज़िलेके जायस स्थानके एक फ़क़ीरने धूर्ततामें सबके कान काटे। उसके स्वार्थ साधु चेलों और दलालोंने सर्वत्र यह प्रसिद्ध कर दिया कि शाह साहब अपुत्रियोंको पुत्र देते हैं, अन्धोंको आंख देते हैं, लङ्गड़े लूले लोगोंको सर्वाङ्गपूर्ण बनाते हैं, दुनियाके जितने रोग हैं सभीको आराम करते हैं। और दवा, सब रोगोंकी एक! जैसे अनेक पेटण्ट दवा बेचनेवालोंके विज्ञापनमें देखते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हज़ारों मर्ज़की बस एक ही दवा वही उनकी बनायी है। उसी तरह शाह साहबकी दवा उनका हाथसे घँघोला हुआ पानी था। यदि स्वयं धन्वन्तरि या मुसलमानोंके लुक्मान हकीम उतर आते तौ भी उनकी इतनी शीघ्रतासे ख्याति न होती जैसी इस धूर्त शाहकी हुई। चारों ओरसे रेलकी ट्रेनें लदी हुई उसके यहां जाने लगीं, छकड़े, इक्के और बैलगाड़ियोंका कुछ ठीक नहीं, हज़ारों आदमियोंका नित्य वहां मेला लगा रहता। कुछ दिनों तक खूब बाज़ार गरम रहा। कलकत्ते बम्बई तकके लोग पहुंचने लगे। भारतने अपनी भेड़िया-धसानीका अच्छी तरह परिचय दे दिया। अन्तमें "उघरहिं अन्त न होंहि निबाहू। कालनेमि जिमि रावण राहू।" के अनुसार लोगोंको ढोलके भीतर पोल दिखाई पड़ने लगा, बहुतसे हिन्दुओंके यह समझमें आने लगा कि हम बेधर्म भी हुए और कुछ आराम भी न हुए। न किसी औरतकी गोद भरा पूरी हुई और न किसी रोगीका रोग दूर हुआ। इसी बीच एक साधुने भी उसका भरम खोलना आरम्भ किया। शाहके आदमियोंने साधुको मारा पीटा भी; किन्तु वह दमक न रख सके। अब वहां न कोई भ्रष्ट होने जाता है और न उसपर श्रद्धाभक्ति लाता है। विज्ञापन सर्वस्व अपढ़ धूर्त वैद्योंको भी इससे उपदेश ग्रहण करना चाहिये और सर्वसाधारणको भी अपनी भेड़िया धसानी आदत छोड़नी चाहिये।

रसायनोंकी सत्यतापर सन्देह।

कुछ लोगोंको इस विषयपर सन्देह होने लगा है कि चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदिमें जो रसायन और कायाकल्पके प्रयोग हैं; उनसे एकदम नया शरीर हो जाने और सैकड़ों हज़ारों वर्षकी आयु बढ़ जानेकी बातें लिखी हैं। परन्तु ये बातें आज कलके लोगों-के लिये बुद्धिग्राह्य नहीं हो रही हैं; अतएव इनपर विश्वास किया जाय अथवा नहीं। ऐसे लोग चाहते हैं कि ये बातें यदि सच हैं तो आजकलके कोई विद्वान उन्हें प्रत्यक्ष प्रयोग द्वारा सत्य सिद्ध कर दिखावें और यदि सर्वसम्मतिसे यह निश्चित ठहरे कि ये बातें सत्य नहीं हैं तो ऐसी बातें उक्त ग्रन्थोंसे निकाल डाली जावें। इन्हीं लोगोंमेंसे एक मिश्रिख सीतापुरके रईस वैद्यराज शिवदयालु साह हकीम जी हैं। आपने गतवर्ष ही एक सार्वजनिक विज्ञापन निकाला था कि जो सज्जन ऐसा प्रयोग सिद्ध कर देंगे उन्हें हम ५००) देंगे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि असत्य सिद्ध हो तो वे क्यों न ग्रन्थोंसे निकाल डाले जायँ? हमें जहां तक हकीमजीका परिचय है तहां तक हम कह सकते हैं आपजैसे परोपकारी, दयालु और रोगियोंके बन्धु हैं, उदारता पूर्वक नित्य सैकड़ों लोगोंको मुफ़्त दवा दिया करते हैं और इसी कार्यके लिये अपनी सहायतामें एक सुयोग्य वैद्यको भी रखे हुए हैं, उससे यह नहीं कहा जा सकता कि आपका आयुर्वेदके साथ द्वेष है अतएव आयुर्वेद-की हीनता सिद्ध करनेके लिये आपने ऐसा किया होगा। हमारी समझमें इस तरह शास्त्रोंकी एक एक बात पर चर्चा और आलोचना प्रत्यालोचना करना अनुचित नहीं है; क्योंकि ऐसा होनेसे लोगोंमें उस विषयकी ओर विशेष आकर्षण उत्पन्न होता है; उसका मनन और प्रयोग आरम्भ हो जाता है। विषयकी यथार्थता प्रकट हो जाती है। जो बात सत्य है उसे क्या कोई कभी असत्य सिद्ध कर सकता है? सोना ज्यों ज्यों आगमें तपाया जाय त्यों त्यों उसकी कान्ति खुलेगी उसका मूल्य बढ़ेगा। अतएव ऐसी चर्चा से घबड़ा-नेकी कोई बात नहीं है। हम देखते हैं कि इस चर्चाके छिड़ते ही बहुतेरे वैद्योंको अपना क्रोध सँभालना कठिन पड़ गया है और उन्होंने हकीम जी पर कटुवाक्य और गालियोंकी बौछार उड़ाना आरम्भ कर दिया है। इतनी उत्तेजनाका कारण नहीं है। जो लोग विचार सकते हैं वे शान्तिसे इस विषयका विचार करें। अवश्य ही जो प्रयोग विकार रहित ऋषियोंको पूर्णफल देते थे वे आजकलके विकारग्रस्त पुरुषोंको वैसा फल नहीं दे सकते; परन्तु प्रयोग करके देखना चाहिये कि किस अंशमें वे कहां तक लाभदायक हैं। इस विषयमें लोगों को प्रयोग और अनुभवकर नोट करते जाना और सर्वसाधारणमें प्रकट करते जाना चाहिये। अवश्य ही हम यह नहीं चाहते कि वे प्रयोग संहिताओंसे निकाल दिये जायँ; परन्तु यदि उनपर ऐसे फुटनोट लगा दिये जायँ तो हानि नहीं कि इस समयके प्रयोगके अनुसार ऐसी ऐसी विधिसे ऐसी ऐसी दशामें ऐसा ऐसा लाभ होते देखा जाता है। सम्भव है खोज जारी रही तो इससे भी अधिक उनका फल दिखाई पड़े। इसके लिये हकीम जी को गाली नहीं धन्यवाद देना चाहिये कि उनके कारण इस विषयकी चर्चा तो गरम हुई। हम तो कहते हैं कि खाली रसायन प्रयोगोंके विषयमें ही नहीं बल्कि अन्य अच्छे अच्छे प्रयोगोंके विषयमें भी ऐसी जांच और निर्णय होना चाहिये कि वे किस अवस्थामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसा काम करते हैं। आशा है आयुर्वेदाभ्यासी सज्जन शान्तिके साथ ऐसे प्रयोगोंकी सत्यता सिद्ध करनेका प्रयत्न करेंगे। हमें आशा है आवश्यकता पड़ने पर हकीमजी इस काममें ५००) ही नहीं कुछ अधिक द्रव्य भी ऐसे लोगोंकी सहायताके लिये लगा सकेंगे।

देवीका टीका।

पाठक जानते हैं कि आज कल शीतला रोगकी रोकके लिये सबसे उत्तम उपाय गाय अथवा पड़ियाके स्तनभागके पास खरोंचा कर निकाली हुई लसीका टीका लगाना माना जाता है। सन् १७९६ ईस्वीमें विलायतमें डाक्टर जेनरने यह आविष्कार किया कि गायका दूध दुहनेवाले ग्वालोंको शीतलाकी बीमारी नहीं हुई अतएव दूध दुहते समय गायके स्तन के पास जो छोटी छोटी फुंसी होती हैं उन्हींकी लसी लग जानेका प्रभाव है कि वे शीतला रोगसे बचे रहे। चार वर्ष तक कई प्रयोग करनेके पश्चात् सन् १८०१ ईस्वीमें उन्होंने प्रकट किया कि एक बार गौशीतलाका टीका लेनेसे जन्म भर शीतला निकलनेकी आशङ्का नहीं रहती। उन्होंने तो यहां तक दावेके साथ कहा था कि इस जन्ममें दुबारा टीका लगानेकी बात कहना मानों मेरे आविष्कारकी आधी खूबी छीन लेना है। इस आविष्कारके लिये डाक्टर जेनरको साढ़े चार लाख रुपये इनाम मिले। सन १८५३ ईस्वीमें दो हज़ार डाक्टरोंने इङ्गलेण्डकी सरकारके पास प्रार्थना की कि यदि बालकोंके एक बार शीतलाका टीका जबरदस्ती लगाया जाय तो उन्हें कभी देवी नहीं निकलेगी। इसलिये लार्डोंकी सभामें लार्ड लिटलटनने जबरदस्ती टीका लगानेके कायदेका प्रस्ताव किया और वह पास भी हुआ। उस समय डाक्टरी खोजसे यह भी कहा गया कि यह टीका शीतला निवारक तो है ही; परन्तु निर्दोष भी है। अर्थात् इससे बालकोंके शरीरमें कोई हानि नहीं पहुँचती। सन् १८७१ ईस्वीमें इङ्गलेण्डकी साधारण सभा (कामंस पार्लिमेंट) ने इसकी जांचके लिये एक कमिटी नियुक्त की; उसने भी प्रस्ताव पास किया कि टीकासे आरोग्यताकी हानि होने अथवा नये रोगोंके उत्पन्न होनेका भय करना व्यर्थ है। यहां तक कि अभी सन् १९०६ ईस्वीमें कामंससभामें सरविलियम कोलिंस एम. डी., एम. पी. ने कहा कि इस समय जो डाक्टर सन् १८५३ के डाक्टरी प्रोफेशन और सन् १८७१ की सिलेक्टकमिटीके एकमतसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित किये हुए सिद्धान्तका अनुमोदन नहीं करेगा वह अपनी कीर्ति खोवेगा। इसलिये इङ्गलैण्डके पीछे पाछे सन् १८५४ ईस्वीसे हिन्दुस्थानमें भी इस प्रथाका आरम्भ हुआ ; और सरकारी कायदेके अनुसार प्रत्येक मनुष्यको अपने बच्चेके टीका लगवाना पड़ता है। जो मनुष्य टीका लगानेसे इनकार करता है, उसे सज़ा होती है, जिन लड़कोंके टीका नहीं लगा रहता वे स्कूलपाठशालाओंमें भरती नहीं होने पाते, बिना टीका लगे हुए पुरुष पुलिस-पलटन आदिमें भरती नहीं हो सकते। किन्तु देखते हैं कि समयने पलटा खाया है। जिस इङ्गलेण्डमें इस प्रथाका जन्म हुआ वहीं इसका अन्तकाल भी आ पहुँचा है। सन् १९०६ ईस्वीमें रायल कमीशनके सामने सरविलियम कोलिंसके उपर्युक्त वाक्यका किसीने पूर्णरूपसे समर्थन न किया बल्कि उल्टे प्रमाण दिये गये कि सन् १८५३ में जबरदस्ती शीतलाका टीका लगानेका आरम्भ होते ही बड़े भयानक वेगसे शीतलाकी बीमारी फूट निकली थी और पांच वर्षोंमें टीका लगे हुए आठ हजार बालक देवी निकलनेसे मृत्युको प्राप्त हुए थे। बम्बईमें सन् १८८१ से ९० के दशवर्षमें प्रतिवर्ष औसत ३०० और इसके बाद सन् १९०० तक दशवर्षमें प्रतिवर्ष औसत ७२५ फिर १९१० तकके दशवर्षमें प्रतिवर्ष औसत ८४९ मनुष्य मरे। यह संख्या १० लाखकी बस्तीकी है। सन् १९१० ईस्वीमें बम्बईमें ११३३ मनुष्य मरे। इससे मालूम पड़ता है कि मृत्युसंख्यामें बराबर वृद्धि हो ही रही है। इङ्गलेण्डमें जबसे यह टीका जबरदस्ती लगाया जाने लगा तबसे तीन बार वहां यह बीमारी खूब जोर शोरसे फूटी। सन् १८५७-५९ में १४२४३ मनुष्य मरे, सन् १८६३-६५ के प्रकोपमें २००५९ मनुष्य मरे। और सन् १८७१-७२ के प्रकोपमें ४४८४० मनुष्य मरे। विलायतका लेनसेट अख़बार लिखता है कि गतवर्ष इङ्गलेण्ड और वेल्समें इससे दश हजार मनुष्य मरे। खास लन्दनमें ५६४१ वर्षारम्भसे मरे। अस्पतालमें ९३९३ मेंसे ६८५४ मनुष्य ऐसे थे जिन्हें टीका लगा हुआ था। एक लाख बाईस हजार मनुष्य टीका लगे हुए चेचकसे बीमार हुए। इन सब बातोंसे वहांकी जनतामें टीका पर अविश्वास हो गया और इस बातका आन्दोलन मचा। अन्तमें टीका लगानेकी सख़्ती वहां बन्द हुई। अब जिनकी इच्छा हो वे टीका लगावें जिनकी इच्छा न हो वे न लगावें। परन्तु भारतवर्षमें अभी तक वही सख़्ती कायम है। अब इसके विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्दोलन भी आरम्भ हो गया है। पञ्जाबके एक वैद्यने तीन बार जेल जुर्माना भोगना पसन्द किया परन्तु अपने बच्चेके टीका लंगवाना पसन्द नहीं किया। सिन्धप्रान्तके हजारों लोगोंने सभाएं कर टीकाकी प्रथाका विरोध किया और सरकारके पास अपील की कि हमारा धर्म ऐसे टीकाके विरुद्ध है जिसकी लस किसी पशुको कष्ट देकर तैयार की जाती हो। बम्बईमें भी एक दल इस प्रथाके विरुद्ध प्रयत्न कर रहा है। वैद्यसम्मेलन चाहे तो इस विषय पर विचार करे और यदि टीकाकी प्रथा अनुपयुक्त हो तो प्रजाकी ओरसे वह भी सरकारसे कहे कि टीकाकी प्रथा लोगोंकी इच्छा पर रखी जाय। शोक है कि देशी पत्रोंने इस विषय पर अपनी लेखनी नहीं चलायी। केवल भारतमित्रने इस पर लेख लिखे हैं। ऐसे मामलोंकी चर्चा विशेष रूपसे होती रहना चाहिये। सर्वसाधारण पत्रों और विशेष कर वैद्यक पत्रोंको भी इस विषयपर अनुभव और प्रमाणके अनुसार अपनी सम्मति प्रकट करनी चाहिये।

निराश्रितफण्ड अथवा सहायककोष।

वैद्यसम्मेलनमें विचारके लिये जो प्रस्ताव उपस्थित किये जायँगे उनमें एक इस प्रस्तावका भी समावेश होना चाहिये। खाली समावेश ही नहीं होना चाहिये किन्तु इसे पूर्ण भी करना चाहिये। इस समय कुछ वैद्योंमें भी स्वदेशसेवाके भाव जागृत हो रहे हैं। ऐसे वहुतसे सज्जन हैं जो आयुर्वेदकी सेवा धनकी कौन कहे मन और तनसे करने को तैयार हैं। यही नहीं वे यहां तक चाहते हैं कि संसारके अन्यकार्य छोड़कर हम एक इसी काममें लग जाँय; परन्तु उनके सामने जब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि हम ऐसा तो करें परन्तु हमारे कुटुम्बका पालन पोषण कैसे होगा? तब उनके हृदयकी सब उमङ्ग दूर हो जाती है। ऐसे बहुतसे लोग हैं जो आजीवन कहिये तो प्राचीन पुस्तकोंकी खोज करते रहें, ऐसे भी मिलेंगे जो सब तज हरि भजके अनुसार नूतन पुस्तकोंके लिखनेका काम किया करेंगे। ऐसे भी आपको मिल जाँयगे तो नाना प्रकारके प्रयोग, रसायन चमत्कारकी खोज नयी नयी अथवा कष्ट साध्य औषधियोंका निर्माण करनेमें भिड़ जायँगे। ऐसे लोग भी खुशीसे मिलेंगे जो आजीवन जङ्गल पहाड़ोंकी खाक छानने और विविध वनौषधियों, खानिज द्रव्योंकी खोज करते रहेंगे; परन्तु कब? जब उनके सिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसे कुटुम्ब परिपालनका बोझा हलका कर दिया जायगा। यही नहीं इस तरहके कार्य करते जब किसीका अवसान हो जाय क्योंकि जो जन्मता है उसका मरना ध्रुव है—तो उसके पीछे उसके अबाध बालकोंकी पढ़ाईका काम रुक नहीं जाना चाहिये, उसकी प्राणप्रिया और उसके बच्चोंकी दुर्दशा नहीं होनी चाहिये, उनके भोजन वस्त्रकी सँभाल करनेका कुछ प्रयत्न होना चाहिये; यही क्यों बल्कि हमारा तो यहां तक उद्योग होना चाहिये कि हमारा कोई भी वैद्य भाई यदि ऐसी दशामें गत हो जाय कि उसके पश्चात उसके कुटुम्बकी सहायता करनी आवश्यक हो तो बड़ी प्रसन्नतासे हमारा अभयहस्त उसके परिवारके ऊपर पड़ना चाहिये। यह कोई नयी बात भी नहीं है। कई समुदायके ऐसे फण्ड और कोष हैं। स्वयं डाक्टरोंका भी ऐसा एक कोष है और हजारों रुपये प्रतिवर्ष उस कोष से मरे डाक्टरोंके परिवारकी सहायतामें लगाया जाता है। कान्यकुब्जोंका एक कोष है उससे असमर्थ कान्यकुब्जोंके बालक पढ़ाये जाते हैं। विलायतमें सम्पादकोंका एक फण्ड है जिसमें से विपन्न सम्पादकोंके परिवारकी रक्षा की जाती है। ऐसे विचारके उठनेका कारण यह हुआ कि स्वर्गवासी रसायनाचार्य पण्डित त्र्यम्बक गुरुनाथ काले महोदयने अर्थ संचयका कभी प्रयत्न नहीं किया; सदा दरिद्रताको गले लगाये हुए आपने विद्याव्यासङ्गमें विविधखोजोंमें अनेक ग्रन्थोंको ढूंढ़नेमें उन्होंने अपना समय व्यतीत किया! सरस्वतीकी आराधनामें मस्त रहनेके कारण लक्ष्मीकी ओर कभी आंख उठाकर भी नहीं देखा; यही कारण है कि लक्ष्मी भी उनसे सदारुष्ट ही रही। उनके जीवनकाल तक तो किसी तरह कुटुम्बका व्यय ठिलता चला गया; परन्तु नहीं कहा जा सकता कि उनके इसी वर्ष स्वर्गवासी होनेके कारण अब उनकी अनाथ स्त्री, एक विधवा और एक अनाथ कन्या और उनके एक पुत्रकी क्यां गति होगी। क्या हमारा कर्तव्य नहीं कि उनका चरितार्थ चलनेके लिये हम कुछ प्रयत्न करें। अभी दो तीन वर्ष पहले बड़े कष्टसे उन्होंने एक पुत्रीका विवाह किया था। भारतके अधःपतित समाजमें चारों वर्णके लोगोंमें अब वह योग्यता, उदारता और विचारशक्ति नहीं रही कि बिना किसी आडम्बरके केवल कुश द्वारा कन्यादान स्वीकार कर किसी योग्य किन्तु आर्थिक स्थितिमें असमर्थ ब्राह्मण-ब्राह्मण क्यों किसी भी अपनी जातिकी कन्याका पाणिग्रहण करनेको तैयार रहे। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काले महोदयको योग्य जामाता थोड़ा खर्च करने पर प्राप्त करनेके लिये बड़ा प्रयास करना पड़ा था। इस प्रयासमें उन्हें हमने सुदूर महाराष्ट्र प्रान्तसे प्रयाग तक आया हुआ और यहाँसे और भी अधिक पूर्व जाते देखा था। किन्तु शोक है कि वह कन्या भी साल ही दो साल पीछे विधवा हो गयी; और उसके भी पालन पोषणका भार उन्हीं पर पड़ गया। इस जामातृवियोगके कष्टसे ही उनका स्वास्थ्य बिगड़ा और आमातिसारने घर दबाया; जिससे ३६ वर्षकी आयुमें ही उनका अन्त हुआ। उनका अन्तिम पत्र मार्च महीनेकी ८ तारीखको आयुर्वेदमहामण्डल कार्यालयमें आया था; जिसमें उन्होंने उस प्रस्तावकी प्राप्ति स्वीकार की थी जो रसायन ग्रन्थोंकी खोजके कारण उन्हें धन्यवाद देनेके लिये स्वीकार हुआ था। उस पत्रसे ही मालूम पड़ेगा कि गृहस्थीकी चिन्तासे उन्हें कैसे दुःखित रहना पड़ता था। उसमें लिखा था "आपके कार्ड और प्रस्ताव ज्ञापित करनेका पत्र मिला। मैं जो कुछ कर रहा हूं उसे देख कर वैद्यक-सम्मेलनने कौतुक (प्रसन्नता प्रकट) किया इससे मैं उसका आभारी हूँ। प्रस्तुत मेरे ऊपर सङ्कट प्रणालिका आकर पड़ रही है। मेरा जांवई (जामाता) प्लेगसे स्वर्गस्थ हुआ! अभी लड़की मेरे ही पास है। इन सब लोगोंको ही पूरा पूरा खानेको नहीं मिलता तिस पर लड़कीको और भी एक लड़की हुई है!!! ईश्वरी इच्छा है!!! मेरा सम्मेलनमें आनेकाका इरादा था किन्तु.........न आ सका अस्तु। आयुर्वेदोद्धारार्थ आप जो कर रहे हैं वह देखकर धन्यता देता हूँ। ईश्वर करे यह कार्य त्वरित सिद्ध हो। मैं तो अपने हाथसे जितना होगा, करता ही रहूंगा।" इससे क्या आप यह नहीं समझते कि ऐसे कष्टमें भी जो आयुर्वेदकी सेवा करते रहनेका वचन देता रहा उसके निराश्रित कुटुम्बका बोझा हम पर है। न जानें ऐसे वैद्योंके कितने कुटुम्ब भारतमें दुःखी होंगे अवश्य हमारा कर्तव्य है कि कुछ तो उनका कष्ट निवारण करनेका प्रयत्न करें। काले महोदय-की घटनाने हमें इस कार्यके लिये प्रेरित किया है। अजमेरके वैद्यराज कल्याणसिंह जीकी प्रेरणासे यह प्रस्ताव आयुर्वेदमहामण्डलमें ही पहले उठानेका विचार था; परन्तु हठात् ठहरना पड़ा; क्योंकि अनुभूत प्रयोगकी भांति ही यह भी सिद्ध हुआ है कि वैद्योंकी गांठसे पैसा निकलना बड़ा कठिन काम है। इसलिये आयुर्वेदमहा-मण्डलकी अपीलका यथोचित परिणाम कदाचित न हो इससे ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्ताव वैद्यसम्मेलनमें ही उठाना ठीक होगा। जहां विविधस्थानोंके बहुतसे वैद्य एकत्रित रहते हैं और कुछ समयके लिये विचित्र उदारता और कर्तव्य बुद्धिका भाव भी उनमें जागृत रहता है। इसके सिवाय प्रस्ताव ऐसा होना चाहिये जो एक काले ही क्या किन्तु किसी भी विपन्न वैद्यके परिवारके लिये उपयोगी हो और जिसके द्वारा उस विषयका एक स्थायी कोष स्थापित हो जाय। आशा है इस निवेदन पर कुछ उपयोगी विचार अवश्य होगा।

आयुर्वेदिकफर्माकोपिया।

इस वर्ष आयुर्वेदमहामण्डलके सभासदोंने षष्ठ वैद्यसम्मेलनमें उपस्थित करनेके लिये प्रस्तावोंकी जो तालिका भेजी हैं, उन्हें देखनेसे मालूम पड़ता है कि सभासद अब वैद्यसम्मेलनसे ऐसे कार्य लेना चाहते हैं जो यथार्थ उद्योग और कर्तव्यके अनुकूल हैं। उनमेंसे एक प्रस्ताव आयुर्वैदिक फर्माकोपिया अर्थात् अनुभूत औषधिसंग्रह-का भी है। इस विषयमें यहां पर कुछ विचार करना अभीष्ट मालूम पड़ता है। ऐसी पुस्तकें पश्चिमके देशोमें भिन्न भिन्न राष्ट्रोंकी भिन्न भिन्न छपी हैं और उन्हींके आधारसे औषधियां तैयार करनेके लिये वहांके चिकित्सकोंको राजाज्ञा है। भारतवर्ष एक बृहत महाद्वीप अथवा खण्ड होने पर भी और उसके भिन्न भिन्न प्रान्त भाषा, प्रकृति आदि अनेक कारणोंसे भिन्न देश प्रतीत होने पर भी आयुर्वेदके सम्बन्धमें एकही देश है। कारण सभी भारतवर्ष संस्कृत भाषाके तन्त्रसे एकही भावमें भावापन्न है। संस्कृतके चरक, सुश्रुत, वाग्भट, प्रभृति ग्रन्थ जैसे काशी, काश्मीर और बङ्गालमें माने जाते हैं उसी तरह पुण्य पत्तन, काञ्ची और पुरीमें भी पूजनीय और पठनीय समझे जाते हैं। संस्कृतकी पठन पाठन शैली कम होनेके कारण अब देशकी बहुसंख्यक जनता संस्कृत समझनेमें समर्थ नहीं। इसलिये भारतकी जनसंख्याका तीन चतुर्थांश करीब बाईस करोड़ भारतीयोंकी जनसंख्या जिस हिन्दी भाषाको समझती है उसे भी संस्कृत के बाद राष्ट्रभाषाका मान दिया जाता है। इसलिये ऐसा सार्वदेशी-ग्रन्थ संस्कृत अथवा हिन्दीमें होनेसे वह समस्त भारतके लिये उपयोगी हो सकता है और आयुर्वेदका एकही संग्रह होनेसे वह देश-व्यापी हो सकता है। इसके सिवाय एक आदर्श फर्माकोपिया बन जानेसे मराठी, गुजराती, बङ्गाली, तामिल, तैलङ्गी, उड़िया आदिमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अनुवाद भी किये जा सकते हैं। अतएव इस बातकी आवश्यकता प्रतीत हो रही है कि कमसे कम एक ऐसा संग्रह ग्रन्थ अवश्य होना चाहिये जो कम्पेनियन टु दी ब्रिटिश फर्माकोपियाके ढङ्ग पर हो। ऐसी पुस्तकमें वनस्पतिजन्य, खानिज तथा प्राणिज औषधियोंका गुण दोष, मात्रा, शरीर पर उसके होनेवाले परिणाम, प्रत्येक औषधिसे जो जो दवाइयां बनतीं हैं उनका विवेचन, प्रत्येक दवाइयोंके प्रस्तुत करनेमें जैसी उष्णता पहुँचायी जाना चाहिये अथवा जैसी कुटाई होना चाहिये उसका वर्णन, दवा तैयार करते समय औषधियोंके मिलाने, कूटने आदिका क्रम, उसकी तैयारीकी प्रत्येक अवस्थाका लक्षण, किन किन रोगोंकी किन किन अवस्थाओंमें उसके देनेका कैसा परिणाम होता है इसका वर्णन, इसी तरह हीन मात्रा अथवा अतिमात्राके देनेसे हानेवाले परिणामका वर्णन और अतिमात्रा मात्रासे यदि कोई हानि होनेकी सम्भावना हो तो उसका उतार आदि बातोंका उसमें वर्णन आना आवश्यक है। ऐसा होनेसे अपनी औषधियां थोड़े खर्च और थोड़े झंझटसे अच्छी तथा शास्त्रोक्त बनने लगेंगी।

इसके लिये आवश्यक है कि प्रत्येक प्रान्तके कई अनुभवी वैद्योंको मिला कर एक बड़ी कमिटी बनायी जाय और उनसे पहले कार्यपद्धतिका निश्चय कर एक आधार मार्ग ठहरा लिया जाय और उन्हें अधिकार दिया जाय कि अपने प्रान्तके अन्य वैद्योंसे मिलकर, उनके अनुभवसे लाभ उठाकर निश्चित ढङ्गकी पूर्ति कर निश्चित कार्यालयमें उसे भेजें। यह कोई आवश्यक नहीं कि प्रधान कार्यालय पर ही सब बातोंका बोझा लादा जाय। जैसे, वैद्यडाइरेक्टरी तैयार करनेका भार कर्मवीर सभ्य पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदीने अपने जिम्मे ले लिया है, उसी तरह कोई सभासद इसका भार भी ले सकते हैं और सम्मेलनसे निश्चित कमिटीकी सहायतासे उसका सम्पादन कर सकते हैं। इस विवरणके लिखे जानेके पश्चात विदित हुआ कि लाहौरके पण्डित ठाकुरदत्त जी शर्मा अनुभूत प्रयोगोंकी एक पुस्तक तैयार कराना चाहते हैं। यदि वे उसे फार्माकोपियाके ढङ्गपर सम्मेलनकी सम्मतिसे तैयार करें तो आपका भी उद्देश्य सिद्ध हो और सर्वसम्मत एक कार्य भी सम्पन्न हो जाय। इससे कार्य अच्छा होता है और प्रधान कार्यालयकी चिन्ता और बोझा हलका पड़ जाता है। इस तरह संचालकके पास सब सभासदोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाससे उत्तर आने पर प्रधान पुस्तकका सम्पादन होना चाहिये। यदि सञ्चालकका बोझा और भी कम करना हो तो प्रत्येक प्रान्तमें एकएक उपसमिति (सब कमिटी) बना दी जाय और उसके कार्यकी अवधि बांध दी जाय कि अमुक समय तक वह समिति अपने प्रान्तके वैद्योंकी सम्मति संग्रह कर और उसे एकमें सम्पादन कर प्रधानसमितिके पास भेजे और वह सब प्रान्तकी सम्पादित पुस्तकों परसे एक वृहत संग्रह सम्पादन करे। इस प्रकार भिन्न भिन्न प्रान्तके संग्रह बन जाने से यह भी हो सकता है कि वे अपने अपने प्रान्तके लिये भिन्नरूपसे भी छाप दिये जायँ और सम्पूर्ण भारतव्यापी वह प्रधान संग्रह रहे। इसी प्रकार पांच पांच या दश दश वर्षमें उसका नवीनसंस्करण होता रहे और जब कभी नवीन संस्करण किया जाय तब फिर प्रधान वैद्योंकी सम्मति लेकर उसमें उचित सुधार किया जाय। यदि वैद्य लोग इस प्रकार मिलजुल कर ऐसे काम न कर सकें और केवल प्रस्ताव करनेके लिये ही हाथ बढ़ाया करें तो बहुतोंको यह अभीष्ट होगा कि ऐसे अकर्मण्य, स्वार्थी; वर्तमान संसारके लिये अयोग्य और घृणित समाजका सदाके लिये अन्त हो जाय और इतिहास सदा आयुर्वेदका स्मरण करता हुआ इस समयके वैद्योंपर शापके तप्त अश्रुविन्दु गिराया करे और इनके कल्पित मुँहपर कलङ्क कालिमा पोता करे। परन्तु हमें विश्वास है कि ऐसा नहीं होने पावेगा और वैद्योंके हृदयकी नयी जागती हुई ज्योति उन्हें प्रकाश दिखावेगी और उन्हें कार्यमें भी अग्रसर करेगी। इस विषयकी अन्य बहुतसी बातोंका विवेचन करनेका समय कार्य हाथमें लेनेपर आवेगा। अभी तो इसे सर्व सम्मतिसे ग्रहण करना आवश्यक है।

आयुर्वैदिक व्याख्यानमाला।

आयुर्वेदमहामण्डलके कुछ सभासदोंकी इच्छा है कि जैसे महाराष्ट्र प्रान्तमें सामाजिक, राजनैतिक प्रभृति विषयोंकी चर्चा करनेके लिये जाड़ेके दिनोंमें बम्बईमें "हेमन्त व्याख्यानमाला" और गर्मियोंमें पूनेमें "वसन्त व्याख्यानमाला" नामसे व्याख्यान होते और निबन्ध पढ़े जाते हैं, उसी तरह आयुर्वेद सम्बन्धी विविध विषयोंकी चर्चा और विचार जागृति करनेके लिये सालमें एक बार वैद्यों और आयुर्वेद प्रेमियों तथा सर्वसाधारणकी संगति जुड़ा करे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता तथा निश्चयके अनुसार एक सप्ताहसे बीस दिनों तक ऐसा समागम बना रहे । ऐसे लोगोंका कथन है कि वैद्यसम्मेलनके समय अनेक कार्योंकी भीड़के कारण जो निबन्ध आते हैं वे ठीक ठीक पढ़े नहीं जा सकते और न उनपर आयुर्वैदिक विद्वान कुछ विचार ही कर सकते हैं । इसलिये इसका प्रबन्ध अलग ही होना चाहिये । किन्तु कुछ लोगोंका यह विचार है कि वैद्यकी उपजीविका वाले पुरुषोंको इतना अधिक समय मिलना कठिन है कि वे पन्द्रह पन्द्रह बीस बीस दिनों तक एक स्थानमें ठहर सकें। इसके सिवाय अभी तो वैद्यसम्मेलनके लिये भी वह समय नहीं आया कि देशके लाखों वैद्य कहलानेवाले और करोड़ों आयुर्वेदके प्रेमियों और आयुर्वेदकी चिकित्साके सेवियोंमेंसे तीनसौसे अधिक प्रतिनिधि आ सकें फिर जब सालमें दो दो बार ऐसे उत्सव होंगे तब दोनोंमें अधिक लोग आ सकेंगे यह कैसे विश्वास किया जाय ? बलिक यह डर अवश्य है कि दोनोंकी श्रीमें धक्का लगे । इसलिये अभी कुछ दिनों तक इसके अनुभवके लिये इतना ही करना बहुत है कि जहां जहां वैद्यसम्मेलन हुआ करे वहां के लोगोंसे इस बातका प्रन्बध कराया जाय कि वे सम्मेलनके समयकी ऐसी व्यवस्था करें कि उसके एक हिस्सेमें निबन्धवाचन, व्याख्यान और विविध विषयोंकी चर्चा तथा अनुभूत प्रयोग कथन हो और एक हिस्सेमें सम्मेलन सम्बन्धी अन्य कार्यवाही हो । इसके लिये सम्मेलनका समय दो हिस्सोंमें भी बांटा जा सकता है । चाहें ८ से ११ तक निबन्ध आदिका समय और फिर २ से ५ तक सम्मेलनका समय रखा जाय और बीचके समय भोजन आदिकी व्यवस्था हो । अथवा सबेरे ही लोग भोजन पानसे निवृत हो कर १० बजे इकट्ठे हों और १० से १ बजे तक तीन घण्टे निवन्धादिका काम किया जाय। इसके बाद एक घण्टेका विश्राम किया जाय और फिर २ से ५ बजे तक सम्मेलनका काम हो। इस प्रकार अनुभूत कथन आदिका जो विषय बच रहे वह सम्मेलनके अन्तिम दिन रातको पूर्ण किया जाय। क्योंकि अन्य दिनों रातको विषय, निर्वाचनसमितिके अधिवेशन होते रहनेसे अन्यविषयोंका विचार नहीं हो सकता । आयुर्वेदमहा-मण्डलकी दृष्टिमें अभी यही उपाय ठीक जंचता है और अपने चतुर्थ अधिवेशनमें उसने यही मन्तव्य स्थिर भी किया है । आशा है इस वर्षका सम्मेलन इसके लिये उचित व्यवस्था करेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वैदिक शारीरके नकशे।

आयुर्वेद महामण्डलके कुछ सभासदोंकी इच्छा है कि जैसे पश्चिमी विज्ञानके अनुसार शारीरदर्शक तथा भिन्न भिन्न शारीरिक अङ्गों और आशयोंके चित्र नकशेके रूपमें मिलते हैं उसी प्रकारके चित्र अपने आयुर्वेदमतानुसार प्रकाशित होने चाहिये। यद्यपि पूनेमें चित्रशाला प्रेसने दो तीन प्रकारके नकशे प्रकाशित किये हैं; परन्तु उनके नाम आयुर्वैदिकमतानुसार ठीक ठीक नहीं हैं। इसलिये आयुर्वेद महामण्डलने निश्चय किया है कि श्रीमान् कविराज गणनाथ सेनसे इस विषयका अनुरोध किया जाय कि वे उन नकशोंके अङ्गके नाम ठीक कर दें और अन्य आवश्यक आशयोंके नकशे बनानेके लिये भी उचित सूचना दें। इस कार्यको कोई भी व्यवसायी कार्यमें ला सकते हैं। आशा है ऐसा हो जानेसे शारीर सम्बन्धी विषयोंको स्थूलरूपसे समझनेमें और विशेषकर विद्यार्थियोंको पढ़ानेमें बहुत सहायता और सुविधा प्राप्त होगी।

उपाधिधारियोंके लिये विशेष चिन्ह।

ब्यावरके पण्डित पूनमचन्द तनसुख व्यासके प्रस्तावके अनुसार आयुर्वेदमहामण्डलके अधिवेशनमें दो तीन बार इस विषय पर विचार हुआ। आपका प्रस्ताव इस रूपमें था कि आयुर्वेदविद्यापीठसे मिलनेवाली उपाधियोंके कोई चिन्ह नहीं हैं; इससे वैद्यसम्मेलनसे सम्मानित वैद्योंकी पहचानका कोई साधन नहीं है। इसलिये युनिवर्सिटीकी तरह झब्बे, चोगाआदि निश्चित किये जावें। क्योंकि जिन्हें उपाधि मिलती है वे उस छपे उपाधिपत्रको सर्वसाधारणमें दिखाते नहीं फिर सकते और न लोगोंके मनमें सम्मेलनके प्रति कुछ सम्मान तथा प्रभाव बैठ सकता है और न यही मालूम हो सकता कि किन्हें पदवी मिल चुकी हैं। अतः जानकारीके लिये झब्बा, पगड़ी, मेडल और उपाधि पत्रकी आवश्यकता है। झब्बेका रङ्ग पदवियोंके अनुसार भिन्न भिन्न हो। यदि उन पर उपाधि भी लिखी रहे तो और अच्छा; किन्तु सम्मेलनका कोई चिन्ह अवश्य होना चाहिये। पगड़ी बंगाली ढङ्गकी अच्छी होगी पर रङ्ग उसका पीला रहे। मेडल कांसे, रूपे और सोनेके हों, प्रत्येक उपाधि प्राप्तको ये चारों चीजें प्रदानकी जावें। इनका मूल्य उपाधिप्राप्तसे वसूल किया जावे। मूल्य लागतसे दुना लिया जावे; और वह सम्मेलनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यमें लगाया जावे। इससे उपाधिधारियोंकी पहचान होगी और उनका प्रभाव बढ़ेगा। सम्मेलनमें केवल उपाधिधारियोंकी घोषणा की जाय; परन्तु उनके चिन्ह, झब्बे वगैरह कुछ दिन पश्चात जिस प्रान्तका वह निवासी हो उस प्रान्तमें एक आयुर्वेद सम्बन्धी उत्सव कर सर्वसाधारणके सामने प्रदान किये जावें। कुछ पदवियोंके चिन्ह प्रधान मन्त्री जाकर प्रदान करें और कुछ पदवियोंके चिन्ह अवसर मिलने पर स्वयं सभापति पधार कर प्रदान करें। इससे अन्य वैद्योंमें भी उत्साह उत्पन्न होगा और वे सम्मेलनकी सेवा करने और योग्य बननेके लिये उत्साहित होंगे। उपाधिवितरणका प्रस्ताव आयुर्वेदविद्यापीठकी कार्यकारिणी समितिमें होना चाहिये। विषय निर्वाचन समितिमें अधिक भीड़ और अनेक रुचिके लोग होनेसे ठीक विचार नहीं हो सकेगा। कार्य कर्ताओंको केवल प्रशंसापत्र दिये जावें। स्वेच्छा सेवकोंको रौप्यपदक अवश्य दिये जावें और इसका खर्च स्वागत कारिणी पर रहे।"

आयुर्वेदमहामण्डलके दो तीन अधिवेशनोंमें इस पर विचार हुआ; किन्तु कुछ ठीक निश्चय नहीं हो सका। मण्डलकी इच्छा है कि उपाधिधारियों और परीक्षोत्तीर्ण वैद्योंके लिये अलग अलग कोई चिन्ह अवश्य रहना चाहिये। चाहे पूरी पोशाक हो और चाहे कोई चिन्ह विशेष ही हो। परन्तु आयुर्वेदमहामण्डल इसका निर्णय करनेका भार नहीं लेता। इस विषय पर वैद्यसम्मेलनमें विशेष चर्चा कर तब इसका निर्णय होना चाहिये। तब आयुर्वेदमहामण्डलकी सम्मति है कि कार्यकर्ताओंको प्रशंसापत्र दिये जावें और स्वेच्छा-सेवकोंको पुरस्कार देनेका विचार स्वागतकारिणीसभा अपनी आर्थिक स्थितिके अनुसार कर सकती है। आशा है सम्मेलन इन विषयोंपर विचार कर उचित मीमांसा करेगा।

स्वागतकारिणी सभा।

गतवर्ष भविष्य स्वागतकारिणी सभाओंके सम्बन्धमें कुछ विचार प्रकट किये गये थे। उद्देश्य यही था कि स्वागतकारिणी सभाएँ इस बातको विचार कर कार्य करें कि अब देशमें एक प्रकारकी जो नूतन जागृति जाग रही है वह यह बात नहीं देख सकती कि आप लक्ष्यका ध्यान न रख लबड़धौंधों करते रहें अथवा इस बात को विचार न करें कि हमारे इस कार्यका परिणाम हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्थाके लिये कैसा होगा। परन्तु दुर्भाग्यसे अभी वह समय आया हुआ नहीं दिखाई पड़ता जब आयुर्वेदसेवियोंके सभी अङ्ग एक उद्देश्य, एक भाव, एक उत्साह, एक विचारसे प्रेरित हो कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हों। इस वर्ष भूतपूर्व स्वागतकारिणियोंके सम्बन्धमें भी कुछ लिखनेकी आवश्यकता प्रतीत हो रही है। कानपुरके सम्मेलनकी रिपोर्ट एक वर्ष हुए प्रकाशित हो चुकी है। परन्तु अनेक बार पत्र लिखकर मांगने पर भी वह प्रधानकार्यालयमें नहीं आयी। गतवर्ष मन्त्री स्वयं मथुरासे लौटते समय कुछ प्रतियां लेते आये थे, उसके पश्चात फिर उसको प्रतियां न मिलीं, रुपये पैसेके हिसाबके लिये अनेक बार लिखने पर भी कुछ ध्यान ही नहीं दिया जाता। वहांकी स्वागतकारिणी सभाके सहकारी मन्त्रीजीको लिखा जाय तो वे लिखते हैं कि मन्त्रीको लिखकर मांगिये और मन्त्रीजीको लिखा जाता है तो वे जवाब ही नहीं देते! यह स्थिति हमारी संस्थाओं-की विश्रृङ्खलताका कैसा दुर्दशा ग्रस्त उदाहरण है! मथुराकी स्वागतकारिणीका विचार करते हैं तब तीन लोकसे मथुरा न्यारीकी कहावत चरितार्थ होती है। पहले तो वहांकी स्वागतकारिणीको बाजारका कुछ देना था, उसके लिये मन्त्रीजीका नाकों दम था; परन्तु स्वागतकारिणी सभाके सभापतितत्वविद् भूषण रायबहादुर पण्डित राधाकृष्ण जीकी उदारतासे वह चुका और मई महीनेमें रिपोर्ट प्रेसमें छपनेको गयी; परन्तु अभी तक उसके दर्शन न हुए! रिपोर्टके सम्बन्धमें स्वागतकारिणी सभाओंको पहलेसे ही ऐसा प्रबन्ध कर रखना चाहिये कि पीछे उसके लिखने और संकलन करनेमें कुछ भी अड़चन न हो। अपने बम्बईके हितैषी पण्डित अमृतलाल जटाशंकर चांदलियाकी सम्मतिके अनुसार मथुराकी स्वागतकारिणी सभाको पहले ही सुझाया गया था कि रिपोर्ट लेनेवालोंका प्रबन्ध बहुत ठीक रहना चाहिये। प्रबन्ध सम्बन्धी कुछ त्रुटियोंको छोड़कर मथुराका सम्मेलन इतने ठाठ, इतनी धूमधाम और इतनी सफलतासे हुआ कि उसका समाचार बहुत शीघ्र समाचार पत्रोंमें छप जाना चाहिये था; परन्तु महीनों किसीको रिपोर्ट ही न मिली। यहाँ तक कि लोगोंका कौतूहल निवृत्त करनेके लिये किसी सज्जनने कुछ प्रोग्रामके कागज़ोंके आधार पर उसकी एक कल्पित और विकृत रिपोर्ट बम्बईके हिन्दी पत्रमें छपायी। भला हिन्दीके पाठकोंको तो भारतमित्र, सुधानिधि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा अन्य कई पत्रोंके आधार पर कुछ समाचार मिल भी गये; परन्तु मराठी, गुजराती, तामिली और बङ्गाली भाषा जाननेवालोंकी जिज्ञासा तृप्त करनेके लिये शीघ्र ही कुछ भी प्रबन्ध न हो सका। यहाँ तक कि मद्रासमे समाचार जाननेके लिये तार तक आये। कलकत्तेके कई बङ्गाली मित्रोंके भी कई उलाहने मिले। अन्तमें स्थायी समिति जितने समाचार संग्रह कर सकी थी उनके आधारसे अँग्रेज़ी तथा कुछ भिन्न प्रान्तके पत्रोंको समाचार भेजा। गुजराती पत्रोंमें श्रीयुक्त अमृतलाल चाँदलिया महोदयने समाचार छपवाये। परन्तु देरीसे जानेके कारण बहुत कम पत्रोंमें वे समाचार छप सके। इतना लिखनेका यह उद्देश्य नहीं कि मथुराकी स्वागतकारिणीका किसी प्रकार दोष दिखलाया जाता हो; परन्तु उद्देश्य केवल यही है कि आगेकी स्वागतकारिणी सभाएँ रिपोर्ट लेनेका बहुत अच्छा प्रबन्ध रखें। नित्यकी कार्यवाहीके संक्षिप्त समाचार देश भरके दैनिक पत्रोंमें इस ढङ्गसे भेजना चाहिये कि उनका संवाद सभी भाषाओंके पत्रों या लोगोंमें प्रकट हो सके। इसके पश्चात यह भी स्मरण रखने योग्य है कि कुछ रिपोर्ट लेनेवाले ऐसे भी चाहिये जो छोटी मोटी सभी बातोंका विवरण रखें और उनके आधार पर रिपोर्ट पूर्णाङ्ग तैयार की जा सके। जहाँ तक हो सके सम्मेलनके विवरण खण्डकी रिपोर्ट सम्मेलन होनेके पश्चात् यथा सम्भव शीघ्र प्रकाशित कर दी जाय। कानपुरके समान मथुराके सम्मेलनका हिसाब भी अभी तक कार्यालयमें नहीं पहुँचा। इससे प्रधान कार्यालयको कई कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ता है। कुछ लोग तो तरह तरहसे विद्रूप करते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह कि आगेकी स्वागतकारिणी सभाएँ अपने खर्चका लेखा अन्दाजनेके लिये जब प्रधान कार्यालयसे परामर्श करता हैं तब पिछले जमा खर्चका अनुभव न होनेके कारण प्रधान कार्यालयको बड़ी कठिनाई भोगनी पड़ती है। जितने शीघ्र सम्मेलनका हिसाब सर्वसाधारणके सामने रखा जा सके उतना ही अच्छा है।

मथुराकी आयुर्वेदिक प्रदर्शिनीके लिये वहाँकी स्वागतकारिणी सभा और उसके सभासदों तथा विशेषकर उसके प्रबन्धकर्ता पुरुषोंकी जितनी प्रशंसा की जा सके उतनी थोड़ी है; परन्तु दुःख है कि उसकी रिपोर्ट लोगोंके हाथोंमें अभी कलकत्तेके सम्मेलनके अवसरमें ही आयी है। उसके पिछले प्रबन्धके सम्बन्धमें भी कुछ शिका-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत सुननेमें आयी है। स्वागतकारिणी सभाओंको इस विषयका स्मरण रखना चाहिये कि उनके व्यवहारका परिणाम अगली स्वागतकारिणी सभाओंको भोगना पड़ेगा और उनके कर्तव्य पर अगले सम्मेलनोंकी सफलता अवलम्बित रहेगी। कई लोगोंको अपनी भेजी वस्तुएं वापस न मिलनेकी शिकायत है। उनमेंसे एक महाशय तो इतने बिगड़े हुए थे कि उन्होंने स्वागतकारिणी पर नालिश करनेके सम्बन्धमें स्थायीसमितिको सूचना दी थी। एक बात और है; भेजे हुए पदार्थोंकी परीक्षा करनेके लिये जो उपसमिति बनायी जाय उसके परामर्शके अनुसार जिन लोगोंको जो पुरस्कार देनेका निश्चय हो उनमें से जितना स्वागतकारिणी सभा दे सकती हो उतनेकी ही सर्वसाधारणमें घोषणा करे। कितने ही लोगोंकी यह शिकायत है कि उन्हें पदक देनेकी सूचना मिली है; परन्तु पदक अबतक नहीं मिला। ऐसी शिकायत हिन्दी और मराठीके पत्रोंमें भी देखनेमें आयी है। पदार्थोंकी जांचके लिये जो कमिटी बनती है, उसके सभासदोंका भी यह कर्तव्य है कि वे निर्विकार होकर और आलस्य को त्याग कर वस्तुओंको ठीक जांचकर तब किसी प्रकारका पुरस्कार देने न देनेके सम्बन्धमें परामर्श दिया करें। समाचार पत्रोंमें यह भी देखनेको मिला कि कुछ लोगोंका कहना है कि हमारी वस्तु खोलकर देखी भी नहीं गयी परन्तु उसमें पदक दे दिया गया! एक महाशयने लिखा था कि दिल्लगीके लिये किसीने कोई चीज़ कूटपीसकर भेजी थी; परन्तु ठीक जांच न होनेके कारण उसपर उसे प्रथम नम्बरका प्रशंसापत्र मिला। वैद्यसम्मेलन जैसी सार्वजनिक सभाके लिये ऐसी घटनाएं हानिकारक होती हैं। इसलिये बहुत दुःख और सङ्कोचके साथ इस विषय पर इतना कहना पड़ा।

गतवर्षकी स्वागतकारिणी सभाके प्रबन्धके सम्बन्धमें पत्रोंमें बहुत कुछ आलोचना प्रत्यालोचना हुई है। यहां तक कि गत सप्ताह तक उसकी चर्चा दो एक वैद्यक पत्रमें देखनेमें आयी है। मथुरा सम्मेलनके समय भी बहुतोंसे हाथ पांव जोड़ कर क्षमा मांगनी पड़ी और उन्हें मनाना पड़ा था। निस्सन्देह स्वागतकारिणी सभाओंका यह कर्तव्य है कि वे प्रबन्ध बहुत अच्छा रखें और अपने व्यवहार तथा बर्तावसे सबको प्रसन्न रखने, सबकी आवश्यकताएं पूर्ण करनेका प्रयत्न और प्रबन्ध रखें; परन्तु जहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागतकारिणी सभाओं का यह आवश्यक और कठिन कर्तव्य है तहां सम्मेलनमें पधारनेवाले प्रतिनिधियोंका भी कुछ कर्तव्य है। उन्हें अपने हृदयमें इतनी उदारता रखनी चाहिये कि हम सम्मेलनमें आयुर्वेदकी उद्धारकामनासे आये हैं, वैद्योंकी उन्नतिकामनासे आये हैं, अतएव मानापमानका विचार न रखकर हमें भी वर्ताव रखना चाहिये। वैद्यसमाजके संस्कारकी आवश्यकता है तभी तो आप लोगोंका यह उद्योग है। जिसमें संस्कारकी आवश्यकता है उससे भूलोंका होना तो स्वाभाविक ही है। इसके लिये रोष क्यों होना चाहिये। आप तो संस्कार करना चाहते हैं, ऐसा उद्योग कीजिये, उन्हें ऐसी मदद दीजिये, उन्हें इसप्रकार समझाइये कि उनका दोष भी दूर हो और मन भी दुःखित न हो। जहां बहुतसे लोग आते हैं और जहाँ भिन्न भिन्न प्रकृति और बुद्धिके लोग प्रबन्ध करनेवाले होते हैं तहां ऐसे बहुतसे काम हो जाते हैं जो बहुतों को अच्छे नहीं मालूम होते; परन्तु प्रेमपूर्वक उसके लिये चितावनी देकर उसके दूर करने-का प्रयत्न करना चाहिये। रोष करनेसे आपका भी चित्त दुःखी होता है और प्रबन्ध करनेवाले भी दुःखी होते हैं कि हम तो काम करते करते मरे जा रहे हैं; परन्तु यहां किसीका सन्तोष ही नहीं होता। जैसे आप आयुर्वेदके उद्धारके लिये अनेक कष्ट सहकर इतनी दूरसे आये हैं, उसी प्रकार स्वागतकारिणीवाले भी आयुर्वेदके उद्धारके लिये विना कुछ स्वार्थके, विना किसी प्रकारके वेतनके रातदिन आपकी सेवा प्रबन्धमें लगे रहते हैं। यदि आपकी प्रतिष्ठा और आपके दर्जेके अनुसार उनसे कोई काम न बना हो तो या तो आप उधर ध्यान ही न देकर उसके संशोधन का स्वयं प्रयत्न करें या उन्हें प्रेमपूर्वक उसकी सूचना दे दें। हम सबोंका उद्देश्य एक है। स्वागतकारिणीका भी प्रत्येक मनुष्य यही चाहता है कि मेरे प्रबन्धसे लोग संतुष्ट हों। फिर भी उनसे कुछ अनुचित हो जाय तो समझना चाहिये कि यह बुद्धिपुरस्सर नहीं हुआ, उनकी इच्छासे नहीं हुआ, अज्ञानवश अथवा प्रमादसे हुआ है। अतएव आप अवश्य ही उसे क्षमा योग्य समझें। ऐसा लिखनेका एक कारण और है; आयुर्वेद क्षेत्रमें सुचारु रूपसे काम करनेवालोंकी संख्या बहुत कम, नहीं के समान है। हरएक स्थानमें काम करने-वालोंका अभाव दुःखदायी हो रहा है। ऐसी अवस्थामें प्रबन्धमें गड़बड़ी होना हो स्वाभाविक है। यदि प्रबन्ध गड़बड़ न हो तभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौतूहल और आश्चर्य मानना चाहिये । इस वर्षके साहित्यसम्मेलन-का एक ताज़ा उदाहरण आपके सामने उपस्थित करना अनुचित न होगा। लखनऊमें श्रीवेङ्कटेश्वर समाचारके सम्पादक पण्डित अमृतलाल चक्रवर्ती रातको बारह बजे पहुंचे। वालण्टियरोंमें से कोई भी उन्हें पहचानता नहीं था और दिन भरके कामसे थके हुए प्रत्येककी इच्छा कुछ विशेष परिश्रम करनेकी नहीं होती थी। इसलिये किसी वालण्टियरने कहा कि अब रातको चारपाई आदि का कुछ प्रबन्ध नहीं हो सकता, आप जमीनपर ही सोवें, दूसरा होता तो बिगड़ उठता; परन्तु चक्रवर्तीजीको रोष नहीं हुआ। आपने कहा बच्चो, जानते नहीं मेरा नाम अमृतलाल चक्रवर्ती है. इस धँसी हुई उमरमें मैं ज़मीनपर लेटकर आराम पा सकता हूँ ? और कल फिर अपने पत्रके लिये रिपोर्ट भेजनेका कर्तव्य पूरा कर सकता हूँ ? इतना सुनना था कि वालण्टियरोंने थके मांदे होनेपर भी बड़े उत्साहसे प्रबन्ध कर दिया। सारांश यह कि हम जो काम कराना चाहते हैं उसे रोष नहीं ; किन्तु प्रेमपूर्वक सूचित कर पूर्ण करनेका उद्योग करें। ऐसा होनेसे स्वागतकारिणी सभाको हरएक प्रति-निधिकी बहुमूल्य सहायता प्राप्त होगी और प्रबन्धकोंको प्रबन्धमें विशेष अड़चन नहीं उठानी पड़ेगी। अपने प्यारे आयुर्वेदकी भलाई-के लिये आपको चार दिनका कष्ट हो, घरकीसी मानप्रतिष्ठा और आराम न मिल सके तौ भी कोई बड़ी बात नहीं।

इतना होने पर भी भविष्यकी स्वागतकारिणीसभाओंको व्यतीत स्वागतकारिणियोंके अनुभवसे अवश्य लाभ उठाना चाहिये। सबसे अधिक आवश्यक बात स्वागतकारिणीसभाके स्थापन करनेमें शीघ्रता करनेकी है। यदि आगामी सम्मेलनके प्रबन्धके लिये व्यतीत सम्मेलनसे तीन महीनेके भीतर स्वागतकारिणी सभा स्थापित हो जाय तो धीरे धीरे प्रबन्ध करनेके लिये उसे नौ दश महीनेका समय मिले और समयपर हड़बड़ी और घबड़ाहटसे काम करनेका अवसर न आवे। हमें मालूम है कि भागलपुरके हिन्दी साहित्यसम्मेलनके पश्चात् लखनऊमें शीघ्रही स्वागतकारिणीसभा स्थापित हो गयी और परस्पर दलबन्दी होने पर भी वह सम्मेलनके लिये सालभर तक तैयारी करती रही। उसका फल यह हुआ कि हर एक बातमें वहांका हिन्दी-साहित्यसम्मेलन अभूतपूर्व हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि वैद्यसंसारमें काम करनेवालोंकी विलक्षण और खेदजनक कमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है; तथापि यथा सम्भव कर्मी पुरुषोंकी सूची तैयार कर योग्य पुरुषोंमें कार्य क्षेत्र विभाजित कर देना चाहिये। उसके कई विभाग बना देनेसे अड़चन नहीं होती और कई पुरुषोंसे प्रधान कर्मी पुरुषको आवश्यक सहायता मिलती रहती है। कई विभागोंमें एक प्रदर्शन विभाग रहे; दूसरा स्वागतविभाग हो जिसके अधीन स्वेच्छासेवकोंसे काम कराने, स्टेशनों पर प्रतिनिधियोंको उतारने, उन्हें सवारीका प्रबन्ध कर ठहरानेके स्थान तक लाने, ठहरनेके स्थानोंका प्रबन्ध करने, भोजन पानका प्रबन्ध करने और आवश्यक भृत्य संग्रहका काम हो। तीसरा मण्डप विभाग रहे; जिस स्थानमें सम्मेलन होना हो वहांका सारा प्रबन्ध करने, बनाने, सजाने, प्रतिनिधियोंको बैठाने आदिका प्रबन्ध इस विभागके अधीन रहे। चौथा अन्वेषक विभाग अथवा इनक्वायरीका विभाग हो, जिसके द्वारा लोगोंको यह मालूम हो सके कि कौन सज्जन कहां मिलेंगे, किसके द्वारा कौन काम होगा तथा किसीकी वस्तु खोजाय तो उसके लिये प्रबन्ध करने आदि काम इस विभागके हों। पांचवा विभाग आन्दोलन विभाग हो। सम्मेलन सम्बन्धी सारी जानकारी इकट्ठा कर समाचार पत्रों द्वारा उसे सर्वसाधारणपर प्रकट करना, सम्मेलनकी सफलताके लिये आवश्यक लिखापढ़ी करना, उपदेशकोंको भेजना, भिन्नभिन्न स्थानोंमें सम्मेलन सम्बन्धी आन्दोलन मचाना और सम्मेलनके समय समाचार पत्रोंमें रिपोर्ट भेजना और अन्तमें सम्मेलनकी रिपोर्ट तैयार कराना इसका काम हो। छठा विभाग पत्र व्यवहारके लिये हो। निबन्ध लिखाने, उपयुक्त सज्जनोंसे उपयुक्तप्रस्तावोंके सम्बन्धमें तैयार रहनेको कहने, निमन्त्रणपत्र भेजने तथा अन्य पत्रव्यवहार सम्बन्धी काम इसीके होना चाहिये। इस प्रकार विभाग कर प्रत्येक के लिये अलग अलग नियम बांध दिये जायँ, जिनके अनुसार वे अपना कार्य करते रहें।

अभी देशके दुर्भाग्यसे जहाँ कोई कार्य होता है वहाँ उसके विरोधी भी खड़े हो जाते हैं। वैद्यसम्मेलनका भी यह कई वर्षका अनुभव है। परन्तु भविष्यकी स्वागतकारिणी सभाओंको विरोधसे विचलित न होकर अपने उद्योगमें लगे ही रहना चाहिये। यदि वह विरोध भ्रम अथवा प्रमादवश हुआ है तो उसके दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिये, कार्यके प्रधान अगुवाओंको पहले ही विचार लेना चाहिये कि जिस ढङ्गसे कार्य बने उसीका अवलम्बन किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय। जिन लोगोंके हाथ जो कार्य देनेसे कार्यमें सुविधा और सरलता हो उन्हें कार्य भार देकर प्रधान कर्मी पुरुष निर्लिप्तभावसे भी काम करें तो कोई हानि नहीं। स्वागतकारिणीसभाओंको यह भी उचित है कि अपने नगर और प्रान्तके उत्साही और प्रभाव-शाली लोगोंको अपने कार्यमें सम्मिलित करें और उनकी सहानु-भूतिसे कार्य आगे बढ़ावें; मथुरा और कलकत्तेके अनुभवसे यह श्रेष्ठ उपाय सिद्ध हुआ है। इस बातकी डींग अथवा महत्वाभिलाष रखना निष्प्रयोगी है कि जो काम करें हम वैद्य ही करें, अवैद्योंके हाथमें कार्य सूत्रका छुआव भी न रहे। यह ठीक है कि यह वैद्योंका प्रधान कर्तव्य है; परन्तु भारतवासी मात्रका भी यह कर्तव्य है कि अपने प्राचीन और गौरव पूर्ण आयुर्वेदकी सेवा और उद्धारके कार्यमें भाग लें। हमें कोई अधिकार नहीं कि उन्हें वैसा कर्तव्य करनेसे वञ्चित रखें। स्वागतकारिणासभा जिन प्रस्तावोंको सम्मे-लनमें उपस्थित करना चाहती है, उन्हें जहाँ तक हो सके सम्मेलनसे एक महीने पहले सर्वसाधारण पर प्रकट कर दे जिससे उन पर सब लोगोंको विचार करनेका अवसर मिल सके। यही नहीं बल्कि लिखा पढ़ी कर स्वागतकारिणीसभा प्रत्येक प्रस्तावके सम्बन्धमें एक एक या दो दो ऐसे सज्जनोंको पहलेसे तैयार रखे जो उस विषय पर अच्छी तरह कह सकते हों; वे चाहें तो अपने विषयको लिख कर भी रखें। इससे यह लाभ होगा कि सम्मेलनके सामने जो प्रस्ताव उपस्थित किया जायगा वह प्रतिनिधियोंको अच्छी तरह दरशाया जा सकेगा। बिना पहलेसे विचार किये जो लोग खड़े किये जाते हैं वे कभी कभी विषयसे बाहर चले जाते हैं और अपने विषयको अच्छी तरह नहीं समझा सकते। निबन्धोंकी सूची तो कमसे कम तीन महीने पहले प्रकाशित कर देनी चाहिये और अच्छे अच्छे लेखकोंसे उन पर लेख लिखनेके लिये पत्र व्यवहार करना चाहिये। इसीसे लेखक लोग विचार पूर्ण लेख लिखनेका अवसर पावेंगे और उसके लिये यथेष्ठ परिश्रम कर सकेंगे। इसी तरह कमसे कम एक महीने पहले सभापतिका निर्वाचन कर सम्मेलनकी तिथियाँ भी निश्चित कर लिया करें। जिससे निदान १५ दिन पहले देशके क्या देहात और क्या नगर निवासी वैद्योंके पास निमन्त्रण पत्र पहुँच जाय और किसीको अपनी तैयारी न कर पानेकी शिकायत न रहे। सम्मेलनकी निश्चित तिथि शीघ्रताके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ कभी बदली न जाय और विशेष तथा अनिवार्य आवश्यकता होने पर आयुर्वेदमहामण्डलकी सम्मतिसे ऐसा किया जाय और उसकी सूचना सर्वत्र कर दी जाय। तिथि परिवर्तनसे बहुतोंको असुविधा भोगनी पड़ती है। समय पर काम न करनेके लिये हमारी देशी संस्थाएँ बहुत बदनाम हैं। गतवर्ष समय पर काम न करनेके लिये स्वागतकारिणी पर बहुत आलोचना और टीकाओंकी बौछार हुई थी। अतएव भविष्यकी स्वागतकारिणियोंको इस कलंकको हटानेका प्रबन्ध करना चाहिये। इस वर्षकी स्वागतकारिणीको बहुत थोड़े समयमें और विकट परिस्थितिमें काम करना पड़ा है। विशेषता यह कि यथार्थ काम करनेवाले सज्जन स्वागतकारिणीके पास नहींके समान थे; तथापि उसने जो कार्य सम्पादन किया है वह हमारे लिये आनन्द वर्धक है और उसके कर्मी पुरुषोंको हमसे धन्यवाद दिला रहा है। इसके लिये व्यक्तिगत किसकी प्रशंसा की जाय; स्वागतकारिणीके सभी सदस्य धन्यवादके पात्र हैं; किन्तु जिन अड़चनोंमें वर्तमान स्वागतकारिणीको कार्य करना पड़ा है उनसे बचते रहनेके लिये भविष्यकी स्वागतकारिणी सभाओंको सचेष्ट रहना चाहिये। एक बात और है, स्वागतकारिणी सभाओंको अपने प्रत्येक कार्यकी सूचना स्थायी समिति और उसके प्रान्तिक मन्त्रियोंको समय समय पर अवश्य देते रहना चाहिये; जिससे उसकी विज्ञप्ति बराबर होती रहे।

आयुर्वैदिकबाँट।

आयुर्वैदिक औषधियोंके तौलनेके लिये तौलमापके सम्बधमें राई, चावल, रत्ती आदिका उपयोग किया जाता है; परन्तु यदि वे छोटे बड़े हुए तो हिसाब गड़बड़ हो जाता और खास कर विषैली औषधि अधिक हो जानेसे हानि पहुंचनेकी सम्भावना रहती है। रत्तीके ऊपर माशे तोले छटाक आदिकी तौल है; परन्तु उसके लिये भी कोई बांट आयुर्वैदिक मानके अनुसार नहीं होते। इसी तरह द्रवपदार्थोंका अन्दाज जाननेके लिये कोई साधन नहीं रहता। सूखी चीज़ तौलनेकी अपेक्षा द्रवचीज़की तौलमें अधिक अड़चन होती है। इसलिये इस बातकी आवश्यकता है कि आयुर्वैदिक औषधियोंको तौलनेके लिये तौलके बटखरे तैयार कराये जावें और पतली चीजोंको नापनेके लिये कांचके गिलास वैसे ही बनवाये जावें जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगरेजी दवाईयोंको नापनेके लिये बूंदोंसे लेकर औंसोंतकके चिन्ह युक्त बनाये जाते हैं। अंगरेज़ी ढङ्गके गिलासोंको काममें लाना अधिक सुविधाजनक नहीं है; क्योंकि उनका परिमाण बूंदोंसे ड्राम औंस आदिपर होता है। किन्तु हमें बूंद, रत्ती, माशे, तोले, छटांकके ढङ्गके बने हुए पात्र चाहिये। कुछ लोगोंकी सम्मति है कि आयुर्वेद महामण्डल स्वयं ऐसे पात्र बनवावे; परन्तु कठिनाई यह है कि आयुर्वेदमहामण्डल व्यवसायी मण्डली नहीं है। वह केवल विचार सुझाने और पूर्तिके उपाय बतानेका काम कर सकता है। हां, कोई व्यवसायी ऐसा साहस करे, तो आयुर्वेदमहामण्डल इस बातका प्रयत्न कर सकता है कि वैद्योंमें वैसे पात्रोंका प्रचार बढ़े। वैद्य-सम्मेलन इस विचारपर कुछ अधिक प्रकाश डाले तो आगामी वर्ष आयुर्वेदमहामण्डल इस विषयका उद्योग कर सकता है।

आयुर्वेदविद्यापीठ।

सं० १९६३ से आयुर्वेद विद्यापीठकी स्थापना हुई; परन्तु यथार्थ काम इसका कानपुरके सम्मेलनसे अर्थात् सं० १९६९ से आरम्भ हुआ। उसी वर्ष वैद्यसम्मेलनकी संशोधित नियमावाली बनी और एक परीक्षार्थीने परीक्षा दी और वह प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुआ। इस विद्यापीठके प्रथम उत्तीर्णवैद्य श्रीयुक्त चतुरसेन शर्मा आयुर्वेद-विशारद हैं। इसके पश्चात् कानपुरके सम्मेलनमें आयुर्वेदविद्यापीठके कार्यकर्ताओंका प्रथक चुनाव हुआ; परन्तु उसकी कोई कार्यकारिणी समिति सङ्गठित नहीं हुई। तथापि आयुर्वेदमहामण्डलने उसकी कार्यकारिणी समितिका कार्य किया और १७ परीक्षार्थियोंने परीक्षा दी। इसी वर्षमें आयुर्वेद महामण्डलने देशी भाषा जानने वालोंके लिये भी वैद्यककी एक परीक्षा नियुक्तकी और उसका नाम प्राकृत वैद्यपरीक्षा रखा। इस नयी परीक्षामें भी कुछ छात्रोंने परीक्षा दी। मथुराके वैद्यसम्मेलनके पश्चात् आयुर्वेदमहामण्डलको यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि आयुर्वेदविद्यापीठका स्वतन्त्र रूपसे काम करनेके लिये एक स्वतन्त्र कार्यकारिणी समिति बना दी जाय; जिससे वह उसके आवश्यक कार्योंका विचार कर उन्हें पूर्ण किया करे। इस लिये श्रावण शुक्लके अधिवेशनमें निम्न लिखित सज्जन उसकी कार्य-कारिणी सम्मतिके सदस्य बनाये गये। कार्यकर्ताओंका नाम गत-वर्षकी रिपोर्टमें लोगोंके जाननेके लिये प्रकाशित कर दिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ पण्डित कृष्णशास्त्री कवड़े बी० ए० पूना।
२ पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्य बम्बई।
३ पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी अहमदाबाद।
४ पण्डित गोविन्द प्रसाद शास्त्री जबलपुर।
५ पण्डित मनोहरलालशर्मा दिल्ली।
६ पण्डित रामदयालु शर्मा अजमेर।
७ पण्डित रामावतार शर्मा दानापुर।
८ कविराज योगीन्द्रनाथ सेन कलकत्ता।
९ पण्डित रामस्वरूप शर्मा पीलीभीत।
१० बाबू जयकुमार जैनी वैद्य प्रयाग।
११ बाबू महाबीर प्रसाद अग्रवाल प्रयाग।
१२ पण्डित ठाकुर प्रसाद शर्मा प्रयाग।
१३ बाबू सोहन लाल जैन वैद्य प्रयाग।

यह भी निश्चय हुआ कि आयुर्वेद महामण्डलके कार्यकर्ता और उसकी संयुक्त सभाओंके मन्त्री तथा प्रान्तिक मन्त्रियोंको भी सदस्योंके अधिकार होंगे।

इसके पहले ही आयुर्वेद महामण्डलने इसका बहुतकुछ मार्ग साफ कर रखा था, इससे इसे अपना कार्य अग्रसर करनेमें कोई अड़चन नहीं पड़ी। मथुराके सम्मेलनमें क्या परीक्षार्थियोंको और क्या निरीक्षक तथा प्रबन्ध कर्ताओंको इस बातका अनुभव हुआ था कि सम्मेलनके समय कामोंकी भीड़ रहनेके कारण परीक्षाका समुचित प्रबन्ध नहीं हो सकता और न शान्तचित्तसे परीक्षाका कार्य हो सकता है। इसलिये निश्चय हुआ कि आयुर्वेदविद्यापीठकी परीक्षाएँ वैद्यसम्मेलनके पहले ही हो जाया करें और वैद्यसम्मेलनमें उनका फल सुनाकर उत्तीर्ण वैद्योंको प्रमाणपत्र आदि दिये जाया करें। इसलिये आयुर्वेद विद्यापीठने इस वर्ष परीक्षा सम्मेलनके पहले लेनेका प्रबन्ध किया। आयुर्वेद महामण्डलने यह भी निश्चय किया था कि जो परीक्षार्थी गतवर्षकी किसी विषयकी परीक्षामें ४० से अधिक नम्बर पाकर पास हुए हैं। किन्तु सम्पूर्ण विषयोंमें पास न होनेके कारण उत्तीर्ण नहीं हो सके वे उत्तीर्ण विषयोंकी परीक्षासे मुक्त किये जावें। किन्तु अनेक सभासदोंका प्रस्ताव हुआ कि अभी ये परीक्षाएं नयी हैं। बहुतेरे परीक्षार्थियोंको इस ढङ्गसे परीक्षा देनेका क्रम विदित नहीं है; इसके सिवाय उनके शिक्षकोंके लिये भी यह ढङ्ग नया है; इसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रायः जानने पर भी बहुतसी बातें इस नये ढङ्गसे वे नहीं लिख सकते। इसके सिवाय अभी यह बहुत आवश्यक है कि गुरुओंके पास अथवा स्वयं आयुर्वेदका अभ्यास करने वाले छात्रोंको परीक्षा देनेके लिये आकर्षण किया जावे। इस लिये आयुर्वेद महामण्डलने अपने चतुर्थ अधिवेशनमें निश्चय किया कि अभी चालीस सैकड़ा नम्बरकी पख लगाना ठीक नहीं है। जो परीक्षार्थी नियमानुसार किसी विषयमें तिहाई नम्बर पाकर भी उत्तीर्ण हुआ हो वह भी अभी उस विषयकी परीक्षासे मुक्त समझा जावे। तदनुसार इस वर्षके परीक्षार्थियोंको इस विषयकी सूचना दे दी गयी।

गतवर्षकी परीक्षा—गतवर्ष मथुरामें जो परीक्षा हुई थी उसमें एक परीक्षार्थी आचार्य परीक्षा का और १५ आयुर्वेद विशारद परीक्षाके थे। इनके सिवाय तीन परीक्षार्थी प्राकृत वैद्य परीक्षाके थे। इनमेंसे आचार्य और प्राकृत परीक्षामें कोई परीक्षार्थी सम्यक् रूपसे उत्तीर्ण नहीं हुआ। आयुर्वेदविशारद परीक्षामें निम्न लिखित परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए।

१ पण्डित प्रताप सिंह शर्मा उदयपुर प्रथमश्रेणी।
२ श्रीयुक्त हरदयालु गुप्त लाहोर।
३ पण्डित देवकीनन्दन शर्मा गुलावटी मेरठ।
४ श्रीयुक्त तेजसिंह शर्मा इसलामपुर मथुरा।
५ पण्डित रामप्रसाद दीक्षित नोहर बीकानेर।

इसवर्षकी परीक्षा—आयुर्वेद विद्यापीठकी कार्यकारिणी समितिने अपने भाद्रकृष्णाके अधिवेशनमें निश्चय किया कि आयुर्वेद विद्यापीठकी परीक्षाएँ केवल एक स्थानमें ही न ली जायँ; क्योंकि ऐसा करने से दूर दूरके लोग नहीं आ सकते। इसलिये इसवर्ष भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें उसके परीक्षाकेन्द्र निश्चित किये गये। इसके सिवाय पाठ्यक्रमकी पुस्तकोंमें जहां कहीं परीक्षार्थियोंको सन्देह हो सकता था अथवा जहां कहीं पुस्तकाभावसे पढ़नेमें अड़चन हो सकती थी, उसकी निवृत्तिके लिये उसका खुलासा समझा दिया और परीक्षार्थियोंके पास भेजनेके अतिरिक्त सर्वसाधारणकी सूचनाके लिये उसे पत्रोंमें भी प्रकाशित करा दिया। वह सूचना यह है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्षके परीक्षार्थियोंके लिये आवश्यक सूचना।

समय।

आयुर्वेदविद्यापीठकी प्राकृत-वैद्य-परीक्षा, आयुर्वेदविशारद परीक्षा और आयुर्वेदाचार्य-परीक्षा आगामी कार्तिक शुक्ल १३, १४ और पूर्णिमा अर्थात् शनिवार, रविवार और सोमवार तारीख ३१ अक्टूबर और १ तथा २ नवम्बर सन् १९१४ को होगी।

परीक्षा स्थान।

इस वर्ष परीक्षाके केन्द्र प्रयाग, कलकत्ता, लखनऊ, जबलपुर, अजमेर, बम्बई, पूना; लाहौर और दिल्लीमें नियुक्त हुए हैं। जिन परीक्षार्थियोंको जहां परीक्षाके लिये जाना सुविधाजनक हो, वे वहांके लिए आवेदन पत्र लिख भेजें। जिन्हें आवश्यक हो मुझसे आवेदन पत्र मँगा लें। जिन्होंने आवेदनपत्र इसके पहले लिख भेजा है वे एक कार्ड द्वारा अपने अनुकूल परीक्षास्थानकी सूचना दें। आयुर्वेदाचार्यकी परीक्षा केवल प्रयाग और कलकत्तेके केन्द्रमें ही होगी अतः आयुर्वेदाचार्यकी परीक्षा देनेवालोंको इन्हीं दोमेंसे किसी स्थानमें आना चाहिये।

विषय और प्रश्नपत्र।

इस वर्ष निम्नलिखित विषयों पर पांच प्रश्नपत्र दिये जांयगे और छठे विषयकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध परीक्षास्थानके व्यवस्थापक वहीं परपरीक्षास्थानमें अथवा किसी औषधालयमें प्रत्यक्ष रोगी और भेषजदिखा कर करेंगे। (१) स्वास्थ्यविज्ञान (जिसमें सूत्रस्थान भी सम्मिलित होगा), (२) निदान और रोगपरीक्षा (३) शारीरविज्ञान, (४) निघण्टु (५) चिकित्सा और रसविद्या (६) प्रत्यक्ष रोगनिदान और भेषज परिचय।

परीक्षाका क्रम।

पहले दिन कार्तिक शुक्ल १३ शनिवारको १० बजेसे एक बजे तक स्वास्थ्यविज्ञान और सूत्रस्थान और दो बजेसे पाँच बजे तक शारीरविज्ञानकी परीक्षा होगी। दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल १४ रविवारको १० से २ बजे तक निदान और रोगपरीक्षा तथा दो बजेसे पाँच बजे तक निघण्टुकी परीक्षा होगी। तीसरे दिन सातसे १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे तक प्रत्यक्ष रोग निदान और भेषज परिचय तथा दो बजेसे पाँच तक चिकित्सा और रसायनकी परीक्षा होगी।

पाठ्यक्रमका खुलासा।

प्रत्येक परीक्षाके लिये जिन जिन ग्रन्थोंका अध्ययन करना आवश्यक है उनका वर्णन वैद्यसम्मेलनकी नियमावलीमें किया गया है, किन्तु जिन विषयोंमें कुछ भ्रम हो सकता है, उनका खुलासा यहाँ किया जाता है। प्राकृत वैद्यपरीक्षाके परीक्षार्थी शारीरविज्ञानके लिये वाग्भट्टका शारीरस्थान अथवा कविराज नगेन्द्रनाथ सेन (लोअर चितपुर रोड कलकत्ता) की वैद्यकशिक्षाका शारीर पढ़ें। मराठीवाले शङ्करदाजी शास्त्री पदे कृत आर्यांग्ल शारीरशास्त्र, गुजरातीवाले "घरवैदु" (पं० जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी रीची रोड अहमदाबाद) के पहलेसे ७८ पृष्ट तक और बङ्गलावाले कविराजीशिक्षाका शारीर अथवा किसी अन्य पुस्तकसे पढ़ें। स्वास्थ्यविज्ञानके लिये "भारतमें मन्दाग्नि" (जगन्नाथप्रसाद शुक्ल दारागञ्ज, प्रयाग) अथवा "आरोग्यरक्षा" (वैद्यराज कल्याणसिंह हिन्दू औषधालय अजमेर) पढ़ें। मराठीवाले रावबहादुर कृष्णराव धुरन्धरकृत "आरोग्यशास्त्र" (दामोदर सांवलाराम ठाकुरद्वार बम्बई) गुजरातीवाले "आरोग्यता अने स्वच्छता" (एन० एम० त्रिपाठी प्रिंसेसस्ट्रीट बम्बई) और बङ्गलावाले बाबू शतोशचन्द्र डे एम० ए० एम० बी० कृत "स्वास्थ्यविज्ञान" (गुरुदास चट्टोपाध्याय कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता) पढ़ें।

आयुर्वेदविशारद परीक्षावालोंको शारीरस्थानके लिये सुश्रुतके शारीरस्थानका अध्ययन "प्रत्यश शारीर" से (कविराज गणनाथ सेन, ६५ बीडनस्ट्रीट कलकत्ता) मिलान करते हुए करना चाहिये। निघण्टुके लिये जिन्हें निघण्टु शिरोमणि प्राप्त न हो अथवा जिन्हें शीघ्रतामें उसे तैयार करनेमें असुविधा हो, वे भावप्रकाशके अन्तर्गत हरीतक्यादि निघण्टु पढ़कर तैयारी करें। नाड़ीज्ञानके लिये रावण कृत नाड़ीपरीक्षा अथवा कणाद कृत नाड़ी विज्ञान देखना चाहिये। स्वास्थ्यविज्ञानके लिये वाग्भट्टका सूत्रस्थान पढ़ना चाहिये। इसके सिवाय हिन्दीवाले "स्वास्थ्यरक्षा" (हरिदास एण्ड कम्पनी २०१ हरिसन रोड कलकत्ता) अथवा "भारतमें मन्दाग्नि" (जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, दारागञ्ज-प्रयाग। मराठीवाले रावबहादुर धुरन्धर कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आरोग्यशास्त्र" गुजरातीवाले आरोग्यता अनेस्वच्छता, और बङ्गलावाले बाबू शतीशचन्द्र दे कृत 'स्वास्थ्यविज्ञान' भी पढ़ें। आयुर्वेदाचार्यके सब ग्रन्थ नियमावलीके ही अनुसार हैं।

प्रश्नपत्र और अङ्कप्राप्ति।

प्रत्येक प्रश्नपत्रके १०० अङ्क माने जावेंगे, कमसे कम ३३ नम्बर पानेसे उन विषयोंमें परीक्षार्थी पास समझा जावेगा। सब उत्तर-पत्रोंके पाये हुए नम्बरोंका जोड़ औसत सैकड़ा ४० होनेसे परीक्षार्थी पास समझा जावेगा। औसत सैकड़ा ४० से ५० तक नम्बर पानेसे तृतीय श्रेणीमें, ५० से ६० तक नम्बर पानेसे द्वितीय श्रेणीमें और इससे अधिक नम्बर पानेसे परीक्षार्थी प्रथम श्रेणीमें पास समझा जावेगा।

विशेष सूचना।

परीक्षार्थियोंको दावात और कलम साथ लेते आना होगा। उन्हें स्याही और उत्तर लिखनेके लिये कापी और स्याही सोखता परीक्षा-स्थानमें ही प्राप्त होंगे। परीक्षार्थियोंको परीक्षा देनेके निमित्त आवेदनपत्र कार्तिक कृष्ण ८ तक मेरे पास भेज देना चाहिये। परीक्षाके लिये परीक्षाके नगरमें परीक्षा तिथिसे कमसे कम एक दिन पहले पहुंच जाना चाहिये; और वहांके व्यवस्थापकसे मिलकर अन्य सामयिक सूचनाएं प्राप्त करनी चाहिये। व्यवस्थापकोंके नाम पीछे प्रकाशित किये जावेंगे।

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्य,

मन्त्री आयुर्वेद विद्यापीठ, दारागञ्ज-प्रयाग।

पुनश्च

पाठ्यक्रमकी जो पुस्तकें अन्यत्र प्राप्त न हों उन्हें परीक्षार्थी आयुर्वेदविद्यापीठ कार्यालयको पत्र लिखकर मँगा लें।

इसका फल भी अच्छा हुआ। इस वर्ष सब मिला कर ४८ परीक्षार्थियोंने परीक्षा देनेकी इच्छा प्रकट की। यद्यपि परीक्षामें सब सम्मिलित नहीं हुए; केवल २७ परीक्षार्थियोंने उपस्थित होकर परीक्षा दी; तथापि इससे यह प्रकट है कि क्रमशः यह परीक्षा अधिक आकर्षक होती जाती है। यह आनन्दकी बात है कि कई अन्य स्थानोंकी परीक्षा पास हुए वैद्य भी उत्सुकताके साथ आयुर्वेदविद्यापीठकी परीक्षामें सम्मिलित होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षाकेन्द्रोंका प्रबन्ध ।

परीक्षाकी सुविधा और ठीक प्रबन्धके लिये हर एक परीक्षा-केन्द्रमें व्यवस्थापक और कई निरीक्षक नियुक्त किये गये थे। उसका ब्योरा नीचे दिया जाता है।

✓ **प्रयाग**—प्रयागमें सब मिलाकर १३ परीक्षार्थी आने वाले थे। इनमें तीन आयुर्वेदाचार्यके, चार आयुर्वेद विशारदके और छः प्राकृतवैद्य परीक्षाके थे। किन्तु परीक्षाके समय केवल छः परीक्षार्थी उपस्थित हुए। इनमें दो आयुर्वेदाचार्यके और चार प्राकृतवैद्यपरीक्षाके थे। प्रयागके व्यवस्थापक यहांके रईस और उत्कट आयुर्वेदप्रेमी रायबहादुर लाला रामचरणदास नियुक्त हुए थे। आपने परीक्षार्थियोंको अपने खुल्दाबादके बगीचेमें ठहराया और वहीं उनके भोजन पानका बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। यही नहीं बल्कि अन्तिम दिन परीक्षार्थियोंको एक विदाईका भोज भी दिया। जिसका कार्य श्रीयुक्त मेजर बी. डी. बसु आई, एम. एस- महोदयकी अध्यक्षतामें हुआ; उसमें कितने ही वैद्य, रईस और आयुर्वेदप्रेमी सज्जन एकत्र थे। श्रीयुक्त मेजरबसुने परीक्षार्थियोंको बहुत अच्छा उपदेश किया और कहा कि आपमेंसे कई इस वर्ष उत्तीर्ण होंगे और कई नहीं भी होंगे। परन्तु उत्साह भङ्ग नहीं करना चाहिये। भला आपतो अभी नवयुवक हैं; परन्तु प्रत्येक चिकित्सकको आजन्म विद्यार्थीकी अवस्थामें रहना चाहिये। विद्यार्थीकी अवस्था बहुत ही महत्वकी है। जो अनुत्तीर्ण हों वे फिर परीक्षा दें और उत्तीर्ण हों। जो उत्तीर्ण होकर वैद्यकका काम करने लगेंगे वे यह न समझें अब हमारा कर्तव्य पूरा हुआ; बल्कि असली कर्तव्य क्षेत्र वहींसे आरम्भ होगा। संसार-के अन्य वैद्यक उन्नति करते जा रहे हैं। आप लोग भी नयी नयी खोजोंसे, नये नये अनुभवोंसे अपने आयुर्वेदको उन्नत करें, उसकी श्रीवृद्धि करें। बहुतसे भयङ्कर रोग प्रकट हो रहे हैं उनके विषयमें ज्ञान प्राप्त करें। पश्चिमकी जो बातें आप अच्छी समझें उन्हें अपने लिये स्वीकार करनेमें न हिचकें। पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा वैद्य, पं० गिरिजाशङ्कर शर्मा वैद्य और जगन्नाथप्रसाद शुक्लने भी समयोचित बातें कहीं। परीक्षार्थियोंकी ओरसे श्रीयुक्त चतुरसेन वर्माने एक बहुत उत्तम भाषण किया और आयुर्वेदविद्यापीठके सञ्चालकोंको विश्वास दिलाया कि सम्पूर्ण परीक्षार्थी भिन्न भिन्न स्थानोंमें उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वप्रियता बढ़ानेमें और आजन्म उसकी योग्य सेवा करनेमें अपना गौरव समझेंगे। प्रयागमें परीक्षाके निरीक्षक पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा वैद्य, डाक्टर लक्ष्मीकान्त शर्मा एल.एम. पी, जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, पण्डित बाबादीन शुक्ल, पण्डित प्राणनाथ चतुर्वेदी, पण्डित देवकीनन्दन तिवारी, पण्डित गिरिजाशङ्कर वैद्य, पण्डित विश्वेश्वर मिश्र और बाबू सोहनलाल जैन वैद्य थे। बाबू सोहनलाल जीने परीक्षार्थियोंके भोजनदानका प्रबन्ध करनेमें भी बड़े ही उत्साह और परिश्रमसे भाग लिया था। मौखिक परीक्षा अर्थात् भेषज परिचय और रोगी परीक्षा मेजर बी. डी. बसु, पण्डित केदारनाथ चतुर्वेदी, पण्डित बच्चूराम शर्मा, डाक्टर लक्ष्मीकान्त, पण्डित ठाकुर प्रसाद शर्मा प्रभृतिके द्वारा हुई।

लखनऊ—यहांकी परीक्षाका सम्पूर्ण प्रवन्ध वहांकी वैद्यसभाके सञ्चालकोंने अपने जिम्मे लिया था। परीक्षार्थियोंके स्थान भोजन तथा आवश्यक सामग्रीका प्रवन्ध सब सभाकी ओरसे हुआ था। प्रबन्ध और निरीक्षणके लिये उसने एक कार्य कारिणी समिति संगठित करली थी जिसके सभासद पं० विन्ध्येश्वरनाथ वैद्य, पं० ब्रजगोपाल झिंगरण वैद्य (मंत्री), पं० लक्ष्मीनारायण कौल नेत्र वैद्य, पं० गङ्गा प्रसाद मिश्र वैद्य, और पण्डित राधेनारायण वाजपेयी प्रजावैद्य थे। लखनऊकेन्द्रके व्यवस्थायक रीडक्रिश्चियन कालेजके संस्कृताध्यापक पण्डित नारायण दत्तजी शास्त्री नियुक्त हुए थे। मौखिक परीक्षाके लिये पण्डित क्षमापति वाजपेयी वैद्य, पण्डित रामनाथ शास्त्री, पण्डित श्यामलाल जैतली वैद्य, और पण्डित रामनारायण मिश्र राजवैद्य नियुक्त हुए थे। यहां पर पांच परीक्षार्थी आयुर्वेदविशारद और एक प्राकृत वैद्य परीक्षामें उपस्थित होने वाले थे, परन्तु आयुर्वेदविशारदका एक परीक्षार्थी उपस्थित नहीं हुआ। शेष पांचपरीक्षार्थियोंने परीक्षा दी। यहां पर एक परीक्षार्थी पदकपरीक्षाका भी था। उससे ज्योतिष, धर्मशास्त्र तथा सांख्य-मीमांसाका आयुर्वेदसे सम्बन्ध विषयमें परीक्षा ली गयी। परीक्षा प्रेमभवन औषधालयमें ली गयी।

दिल्ली—यहाँ की परीक्षाका सम्पूर्ण प्रबन्ध श्रीयुक्त सांवलदासजी रईसने अपने जिम्मे लिया था और अपने ही स्थानमें ठहरा कर तथा भोजन पानका प्रबन्ध कर उन्हें बहुत सुखसे रखा। आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत उत्साहसे इसमें भाग लिया। व्यवस्थापक महामहोपाध्याय पण्डित बांकेरायजी नवल गोस्वामी तथा महामहोपाध्याय पण्डित हरनारायण शास्त्री महोदय थे। श्रीयुक्त नवल गोस्वामी महोदयने सम्पूर्ण व्यवस्थानियमानुसार रखी और नित्यप्रतिकी परीक्षाका विवरण आयुर्वेद विद्यापीठ कार्यालयमें भेजते रहे। निरीक्षकोंमें श्रीमान् पं० श्रीनिवासाचार्य आयुर्वेदाचार्य, श्रीमान् पण्डित मथुरा प्रसाद वैद्यराज और श्रीमान् पण्डित शिवनारायणजी वैद्यराज थे। मौखिक परीक्षा पण्डित श्रीनिवासाचार्य आयुर्वेदाचार्य, पण्डित मथुराप्रसाद वैद्यराज, और पण्डित मनोहरलाल शर्मा वैद्यराजने ली। प्रबन्धके विषयमें सेठ सांवलदासजीका हाथ श्रीयुक्त चतुरसेन वर्माने बहुत कुछ बटाया और यद्यपि उन्हें प्रयागमें आयुर्वेदाचार्यकी परीक्षा देने आना था; तथापि वहाँ का प्रबन्ध पूरा कराकर तब आप यहाँ आये थे। यहाँ ११ आयुर्वेद विशारदके परीक्षार्थी तथा २ प्राकृत वैद्य परीक्षाके परीक्षार्थी उपस्थित होनेवाले थे; परन्तु उनमेंसे केवल पाँच उपस्थित हुए। इनमेंसे तीन आयुर्वेद-विशारदके और दो प्राकृत परीक्षाके थे।

अजमेर—यहाँ चार आयुर्वेद विशारद परीक्षाके और दो प्राकृतवैद्य परीक्षाके परीक्षार्थी उपस्थित होनेवाले थे, परन्तु उनमेंसे एक प्राकृत वैद्य परीक्षा और चार आयुर्वेद विशारद परीक्षाके परीक्षार्थी उपस्थित हुए। यहाँ की परीक्षाकी व्यवस्था श्रीमान् पं० रामदयालुजी शर्मा राजवैद्य महोदयने की थी। आपके द्वारा परीक्षार्थियोंको बहुत आराम मिला। बाहरसे आनेवालोंके लिये भोजन पानकी व्यवस्था भी आपके ही द्वारा हुई थी। परीक्षा भी आपके ही भवनमें हुई। निरीक्षकोंमें चिकित्सक चूड़ामणि पण्डित हरिश्चन्द्रजी त्रिपाठी, श्रीयुक्त पण्डित शिवदत्तजी काव्यतीर्थ हेड पण्डित गवर्नमेण्ट हाई स्कूल, पण्डित नन्दकिशोर शर्मा, वैद्यराज कल्याणसिंहजी हिन्दू औषधालय, श्रीयुक्त पण्डित रामचन्द्रजी शर्मा, पं. नथमलजी त्रिवेदी, रायबहादुर पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द्र ओझा, बाबू हरनारायणजी बी. ए. हेड मास्टर, श्रीयुक्त सूर्यकुशलजी यती, और पण्डित हरिश्चन्द्रजी त्रिवेदी थे। सब कार्यवाही नियमानुकूल हुई और जब किसी सामयिक विषयको व्यवस्थाकी आवश्यकता हुई तब व्यवस्थापक और निरीक्षकोंकी कमिटीने मिलकर उसका निर्णय किया। जहाँ जहां परीक्षर्थियोंने कापियोंमें काटकूटकी थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ निरीक्षकोंमें से किसी एक सज्जनके हस्ताक्षर किये गये। भेषजपरिचय और रोग परीक्षा कितनी ही औषध और रोगी दिखा कर ली गयी। परीक्षक पण्डित रामदयालुजी राजवैद्य और पण्डित हरिश्चन्द्र शर्मा वैद्य थे।

लाहौर—लाहौरके आसपासका पहले कोई आवेदनपत्र नहीं था, इसलिये वहां परीक्षाका केन्द्र नहीं रखा गया था; परन्तु वैद्यभूषण सम्पादक श्रीयुक्त धर्मदेव जी शर्माके अनुरोधसे वहां भी केन्द्र नियुक्त किया गया। केन्द्र नियुक्त होने पर वहांसे तीन आवेदनपत्र आये और तीनों ही परीक्षामें सम्मिलित हुए। इनमें एक आयुर्वेद-विशारद और दो प्राकृत वैद्य परीक्षाके थे। लाहौरकेन्द्रकी व्यवस्था लाहौरको वैद्यसभाने सम्यकरूपसे रखी। भोजन और रहनेके स्थानका प्रबन्ध भी सभाकी ओरसे था। व्यवस्थापक थे श्रीयुक्त सरदारीलाल जी वैद्यराज। निरीक्षकोंका कार्य पण्डित धर्मदेव जी वैद्यभूषण, पण्डित हेमराज जी विशारद और श्रीयुक्त चुन्नीलाल जी वैद्यराज ने किया।

पूना—पूनेमें तीन परीक्षार्थी आयुर्वेद-विशारदके और एक प्राकृत-वैद्य-परीक्षाके लिये आनेवाले थे; परन्तु प्राकृतवैद्यपरीक्षाका परीक्षार्थी उपस्थित नहीं हुआ। पूनेकी परीक्षाका सम्पूर्ण प्रबन्ध पूनेके वैद्यमण्डलने किया। व्यवस्थापक प्राणाचार्य बाळशास्त्री लागवणकर और वैद्यपञ्चानन पण्डित कृष्णशास्त्री कवड़े बी. ए. थे। निरीक्षकोंका काम पण्डित कृष्णशास्त्री कवड़े, पण्डित बाळशास्त्री लागवणकर, वैद्यभूषण पण्डित गणेशशास्त्री जोशी और पण्डित सदाशिव वासुदेव भावे वैद्यने सँभाला।

बम्बईमें एक परीक्षार्थी गुजरातसे परीक्षा देनेके निमित्त आनेवाला था और इसलिये बम्बई केन्द्रकी समस्त व्यवस्थाका भार आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्यने अपने ज़िम्मे लिया था और पण्डित दुर्गाशङ्कर केवलराम शास्त्री, पण्डित हरिप्रपन्न शर्मा वैद्य, श्रीयुक्त दुर्लभश्याम जी ध्रुव, पण्डित त्रिभुवनराम जी शर्मा और पण्डित अमृतलाल जटाशङ्कर चाँदलियाकी एक निरीक्षक समिति भी बन गयी थी। इसी तरह कलकत्ता और जबलपुर भी परीक्षाके केन्द्र बनाये गये थे; परन्तु वहां परीक्षा देनेके लिये किसीका आवेदनपत्र नहीं मिला, इसलिये वहां परीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो सकी। आशा है, भिन्न भिन्न स्थानोंमें केन्द्र करनेसे आगामी वर्ष और अधिक परीक्षार्थी उससे लाभ उठा सकेंगे।

परीक्षक।

पिछले वर्ष प्रायः तीनों परीक्षाओंके एक एक विषयके वे ही परीक्षक थे। इससे परीक्षाफल मिलनेमें बहुत विलम्ब हुआ। इसलिये इस वर्ष परीक्षकोंकी संख्या बढ़ा दी गयी; जिससे उनपर उत्तर-पुस्तकें जाँचनेका अधिक भार न पड़े। इसलिये इस वर्ष प्राकृतपरीक्षाके परीक्षक एकदम अलग नियुक्त किये गये थे। आचार्य और विशारद परीक्षाके कुछ विषयोंके परीक्षक वे ही थे और कुछ विषयोंके अलग अलग नियुक्त हुए थे। प्राकृतपरीक्षामें स्वास्थ्यविज्ञानके परीक्षक वैद्यपञ्चानन पंडित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी, शारीरके डाक्टर लक्ष्मीकान्त शर्मा वैद्य, निघण्टुके वैद्यराज पंडित गणपति शर्मा, चिकित्सा और रसायनके वैद्यपञ्चानन पंडित कृष्णशास्त्री कवड़े बी. ए. और निदानके पंडित रामनारायण मिश्र राजवैद्य नियुक्त हुए थे। आयुर्वेद विशारद परीक्षामें स्वास्थ्य-विज्ञानके परीक्षक आयुर्वेदमार्तण्ड पंडित यादव जी त्रीकम जी आचार्य, शारीरके वैद्यावतंस कविराज गणनाथ सेन, निदानके आयुर्वेदमार्तण्ड पंडित लक्ष्मीराम स्वामी, निघण्टुके वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेन और चिकित्सा रसायनके पंडित श्याम-सुन्दराचार्य वैश्य रसायनशास्त्री नियुक्त हुए थे। आयुर्वेदाचार्य परीक्षाके अन्य सब विषयोंके वे ही परीक्षक थे जो आयुर्वेद विशारदके थे; किन्तु चिकित्सा और रसायनके परीक्षक पंडित डी. गोपालाचार्लू महोदय नियुक्त हुए थे। वैद्यराज गणपति शास्त्रीकी अकस्मात् उन्हीं दिनों शोचनीय मृत्यु हो जानेसे प्रश्नपत्रोंको उनके यहां भेजनेसे व्यवस्थापकोंको रोकनेके पत्र भेजे गये और उनके विषयकी उत्तर पुस्तकें सब प्रधान कार्यालय मँगवा ली गयीं। इसके पश्चात् आयुर्वेदविद्यापीठकी कार्यकारिणीसमितिने निश्चय किया कि वैद्यराज गणपति शास्त्रीके बदले चिकित्सक चूड़ामणि पंडित ठाकुरप्रसाद शर्मा परीक्षक नियुक्त किये जायँ। अतएव प्राकृत परीक्षाके निघण्टु विषयकी उत्तर पुस्तकें उन्होंने जांची। आयुर्वेद विद्यापीठको इस वर्ष भिन्न भिन्न केन्द्रोंके व्यवस्थापकों और निरीक्षकोंसे बड़ी सहायता मिली और उनको बहुमूल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायतासे परीक्षाका काम बहुत ही सुलभ रीतिसे हो गया । यही नहीं बल्कि इस पद्धतिसे अनेक स्थानोंके अनेक अनुभवियोंके अनुभवका भी इसमें उपयोग हुआ । अतएव अवश्य ही सब सज्जन धन्यवादके पात्र हैं । किन्तु विशेष धन्यवाद रायबहादुर लाला रामचरणदास बहादुर और दिल्लीके रईस सेठ सांवलदास जीको देना चाहिये । वैद्यक अथवा विद्या व्यवसाय आपका प्रधान विषय न होने पर भी आपने जिस उत्साह से इस कार्य में योग दिया है वह सर्वथा अन्य धनपात्रोंके अनुकरण योग्य है । किन्तु कुछ परीक्षकोंके सम्बन्धमें किसी अंशमें शिकायत करने की जगह है । इसमें सन्देह नहीं कि उनके अगाध पाण्डितत्यसे आयुर्वेद-विद्यापीठ गौरवान्वित होता है और यह भी ठीक है कि ऐसे सुयोग्य पुरुषों पर आयुर्वेद विद्यापीठ के समान अन्य भी कई कार्योंकी पूर्तिका भार रहता है ; तथापि यदि कुछ अधिक तत्परता दिखाई जाय तो जो काम वे कई चिट्ठी और तार पाने पर पूर्ण करते हैं उसे निश्चत समय से बहुत पहले भी भेज सकते हैं । ऐसा होनेसे समय पर काम होगा और पत्र व्यवहारमें बहुत सा समय नष्ट नहीं होगा । इस वर्ष कुछ परीक्षकोंने तो यहां तक फुर्ती दिखायी कि परीक्षाफलकी स्वीकृतिके लिये जो तिथि नियुक्त थी उसके भी एक दो दिन बाद उनके यहां से परीक्षाफल पहुँचा !

परीक्षाफल ।

प्रयागकेन्द्रमें जो परीक्षार्थी बैठे थे, उनमेंसे सम्यक् रूपसे कोई परीक्षार्थी उत्तीर्ण नहीं हुआ । छःमेंसे एक परीक्षार्थी बिलकुल नापास है और अन्य कोई तीन तीन कोई चार चार चार विषयोंमें उत्तीर्ण हैं । दिल्ली केन्द्रके परीक्षार्थियोंमेंसे एक प्राकृतवैद्य परीक्षामें और दो विशारद परीक्षामें उत्तीर्ण हुए हैं । शेषमें एक एक विषयमें और एक तीन विषयोंमें अनुत्तीर्ण है । लाहौर केन्द्रके तीनों परीक्षार्थी उत्तीर्ण हैं । लखनऊ केन्द्रके पांच परीक्षार्थियोंमें तीन उत्तीर्ण हैं, शेष दो तीन तीन विषयोंमें उत्तीर्ण हैं । पूनेके तीन परीक्षार्थियोंमें एक उत्तीर्ण, एक अनुत्तीर्ण और एक तीन विषयोंमें उत्तीर्ण है । अजमेरके पांच परीक्षार्थियोंमें तीन उत्तीर्ण और दो केवल एक एक विषयमें अनुत्तीर्ण हैं । उत्तीर्ण छात्रों का ब्योरा निम्न अनुसार है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदविशारद—१ पं० भगवानदीन मिश्र बहराइच ४५३ नम्बर, प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण इसके सिवाय, पदक परीक्षामें भी इन्होंने ५० नम्बर पाये हैं। अतएव ये सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए और इन्हें स्वर्णपदक प्राप्त होगा। २ श्रीयुक्त गङ्गाचरण भवानी सहाय हिसार ३६६ नम्बर प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण (रौप्यपदक), ३ पण्डित शिवदर्शन बाजपेयी फतेगढ़ ३६६ नम्बर प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण (रौप्यपदक), ४ पं० मनमोहन झा अजमेर ३३६ नम्बर द्वितीय श्रेणीमें उत्तीर्ण ५ पण्डित पुरुषोत्तम गणेश नोंडल पूना ३३७ नम्बर द्वितीय श्रेणीमें उत्तीर्ण, ६ श्रीयुक्त धन्वन्तरिप्रसाद नूरपुर कांगडा ३१० नम्बर द्वितीय श्रेणीमें उत्तीर्ण, ७ श्रीयुक्त चन्दूलाल गुप्त हिसार ३०६ नम्बर द्वितीय श्रेणीमें उत्तीर्ण, ८ पण्डित श्रीलाल शर्मा जेवर बुलन्दशहर २८२ नम्बर तृतीय श्रेणीमें उत्तीर्ण, और ६ पण्डित जयनारायण पाण्डेय लखनऊ २३८ नम्बर तृतीय श्रेणीमें उत्तीर्ण।

प्राकृतपरीक्षा—१ पं० फिरायाराम शर्मा सरगोधा पञ्जाब ३७४ नम्बर प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण (रौप्यपदक), २ पं० मूलचन्द शर्मा अजमेर ३२८ नम्बर द्वितीय श्रेणीमें उत्तीर्ण, ३ श्रीयुक्त सागरदत्त रामलाल पहासू बुलन्दशहर २३४ नम्बर तृतीय श्रेणीमें उत्तीर्ण और ४ पं० विश्वनाथ शर्मा उधमपुर जम्बू २१८ नम्बर तृतीय श्रेणीमें उत्तीर्ण।

ऐसी परीक्षाएँ अब तक यदि कहीं होती हैं तो एक एक ग्रन्थ की होती हैं; किन्तु आयुर्वेदविद्यापीठका क्रम पहलेसे ही भिन्न रहा है। आयुर्वेदविद्यापीठकी इच्छा यह नहीं है कि कोई मनुष्य केवल ग्रन्थ रट कर ही वैद्य बने; किन्तु उसमें कुछ विचार शक्ति भी आवे, कुछ अन्वेषक बुद्धि और सिद्धान्त समझनेकी शक्ति भी आवे। इसलिये अपनी परीक्षामें विद्यापीठ ग्रन्थोंको गौण मानता है, उसकी दृष्टिमें विषयोंकी प्रधानता ही उत्तम कसौटी है। जो विषय पूछा जाय उस पर परीक्षार्थी अपनी विचार शक्ति लगा कर विषयका अच्छा प्रतिपादन कर दे उसीसे विद्यापीठको सन्तोष है। ऐसा प्रतिपादन चाहे एक ग्रन्थके आधार पर हो चाहे अनेक ग्रन्थोंके अवलोकनका सार हो। अभी नया ढङ्ग होनेके कारण अवश्य ही परीक्षार्थियोंको वर्ष दो वर्ष कुछ असुविधा होना सम्भव है; किन्तु इसके बाद उन्हें भी कोई असुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होगी। क्योंकि इसके लिये ग्रन्थ पढ़ते समय ही वे केवल रटनेका ही बल नहीं रखेंगे बल्कि उस विषयको अच्छी तरह समझ कर और उसकी बातों पर पूर्ण रूपसे विचार कर अभ्यास करनेका ढङ्ग स्वीकार करेंगे। मालूम पड़ता है। इसीलिये अभी कुछ परीक्षार्थियोंकी यह शिकायत हुआ करती है कि आयुर्वेद-विद्यापीठकी परीक्षाएँ बहुत कठिन होती हैं। प्रथम तो प्रश्नपत्र ही कठिन होते हैं तिस पर परीक्षक लोग विशेष उदारतासे अवलोकन कर नम्बर नहीं देते। उधर परीक्षकोंको प्रायः शिकायत रहती है कि कई परीक्षार्थियोंको उत्तर लिखनेका अच्छा ढङ्ग नहीं आता। ऐसी दशामें उन्हें जब तक सन्तोष न हो तब तक किसी परीक्षार्थीको पास कर देना अन्याय जँचता है। सचमुच वैद्य बनना बड़े ही उत्तरदायित्वका विषय है। अन्य विषयोंकी परीक्षामें विशेष योग्यता बिना भी यदि कोई उत्तीर्ण हो जाय तो समाजकी कोई विशेष हानि नहीं हो सकती; क्योंकि उसके अधीत विषय केवल मनोरञ्जन अथवा ज्ञानवृद्धिके लिये होते हैं; किन्तु वैद्यका मामला बड़ा ही नाज़ुक है। उत्तीर्ण होते ही उसका पाला मनुष्योंके जीवन मरणके प्रश्नसे पड़ता है। विशेष कर वैद्यसम्मेलनका सर्टिफिकेट जिसके पास है, सर्वसाधारणकी दृष्टिमें उस वैद्यका विशेष महत्व है, उस पर लोगोंका विशेष विश्वास स्वाभाविक ही होगा, वह समाजका विशेष आदर पात्र होगा। किन्तु यदि उसकी योग्यता उच्च कोटिकी न हुई तो समाजका विश्वास पलटा खावेगा और उससे केवल उसीकी हानि नहीं होगी बल्कि वैद्यसम्मेलनकी प्रतिष्ठा और सर्वप्रियतामें भी बट्टा लग सकेगा। तथापि परीक्षक लोग यथा सम्भव इस विषय पर दृष्टि रखते ही हैं और आशा है अब और भी विशेष रखेंगे कि जहाँ तक हो सके किसी योग्य परीक्षार्थीका उत्साह भङ्ग न होने पावे। जब हम इस बातका विचार करते हैं कि विद्यापीठकी ओरसे शिक्षाकी कोई व्यवस्था नहीं है, जिन संस्थाओंके द्वारा अभी वैद्यककी शिक्षा मिलती भी है उनके सबके क्रम अलग अलग हैं। ऐसी दशामें परीक्षार्थीको विशेष कष्ट और परिश्रमके साथ परीक्षाकी तैयारी करनी पड़ती है। प्राचीन ढङ्गके पण्डितवैद्योंको नये ढङ्गसे शिक्षा देनेका क्रम अभ्यस्त नहीं; इसलियेपरीक्षार्थी पर विषयोंकी तैयारीका बोझा विशेष रहता है। इन सब बातोंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार करने पर अवश्य ही परीक्षार्थियोंके साथ विशेष सहानुभूति दिखानेकी इच्छा होती है। इस वर्ष दो तीन परीक्षार्थियोंके साथ ऐसी सहानुभूति कार्यकारिणी समितिने दिखायी भी है। यदि कोई परीक्षार्थी सब विषयोंमें बहुत अच्छे नम्बर पाकर पास हुआ है किन्तु किसी एक विषयमें यदि कुछ ही नम्बरोंके कारण वह अनुत्तीर्ण हो रहा हो तो उस पर दया दृष्टि की गयी है। आयुर्वेदविद्यापीठको अवश्य ही शोक है कि दो वर्षोंसे आयुर्वेदाचार्य परीक्षामें परीक्षार्थी बैठते हैं; परन्तु अब तक एक भी परीक्षार्थी इसमें उत्तीर्ण नहीं हुआ। किन्तु इस विषयमें विद्यापीठ विवश है। उसका कारण परीक्षा अथवा परीक्षकोंकी कड़ाई नहीं; किन्तु परीक्षाकी गुरुता है। जो किसी विषयके आचार्य होंगे उनकी योग्यता और उत्तरदायित्व बहुत उच्च कोटिका होना चाहिये। उसी दृष्टिसे उन्हें कसौटीमें कसनेमें विद्यापीठ विवश है। तथापि इस परीक्षाके परीक्षार्थियोंको अनुत्साहित नहीं होना चाहिये। इस वर्ष कुछ विषयोंकी तैयारीका बोझा उन परसे हट गया है; आगामी वर्ष शेष विषयोंकी तैयारीमें उन्हें विशेष कष्ट नहीं होगा। आयुर्वेदविद्यापीठके सभापति महोदयकी भी यही सम्मति है।

संशोधित पाठ्यक्रम।

परीक्षार्थियोंकी अड़चनोंका अनुभव होनेसे तथा आयुर्वेदकी पढ़ाई एक विशिष्ट मार्गमें लानेकी आवश्यकताके कारण यह विशेष अभीष्ट हो रहा है कि इस समय जितनी शिक्षण संस्था हैं, सबका पाठ्यक्रम एक सा हो। इसी विचारसे गत वर्ष मथुरा में कविराज गणनाथ सेन, पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी, पण्डित यादव जी त्रीकम जी आचार्य, पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी, पण्डित गणपति शास्त्री, पण्डित रामस्वरूप शर्मा (पीलीभीत) पण्डित मनोहरलाल शर्मा (दिल्ली) प्रभृति विद्वान् सज्जनोंने एक पाठ्यकी संशोधित सूची तैयार की थी और सम्मेलनने उसे स्वीकार कर कविराज गणनाथ सेन महोदयको इसलिये उसे सौंपा था कि इस सूचीके अनुसार वे उपयुक्त ग्रन्थोंके पाठ निश्चित कर दें। विचार था कि ऐसा होने पर फिर वह पाठ्यक्रम भारतवर्षके भिन्न भिन्न प्रान्तोंके और भी पण्डितोंको दिखा लिया जाता और उस पर उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मति ग्रहण कर उसे इस योग्य बनाया जाता कि वह सम्पूर्ण देशकी आयुर्वैदिक संस्थाओंमें बिना बाधा प्रचलित किया जा सके। किन्तु आयुर्वेदविद्यापीठको शोक है कि वह पाठयक्रम इस वर्षके भीतर तैयार नहीं हो सका। अवश्य ही इस कार्यमें बाधक ढिलाईकी अपेक्षा विविध आपत्तियां ही विशेष रहीं और इसीलिये वह तैयार नहीं हो सका। क्योंकि आरम्भमें कविराज जीने इसका कार्य बहुत कुछ पूर्ण किया था; किन्तु बीचमें उन्हें कई चिन्ताओं और मानसिक कष्टोंसे सामना पड़ा, गाड़ीकी टक्करके अपघातसे भी आपको बहुत दिनों तक व्यथित रहना पड़ा, महीनों आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल रहा और इधर स्वागतकारिणीके कार्योंका बोझा भी आप पर था तथापि आशा है इस सम्मेलनमें वह आयुर्वैदिक विद्वानोंके समक्ष उपस्थित हो सकेगा और वर्ष भरमें और भी उसके सम्बन्धमें जो कार्यवाही आवश्यक होगी वह की जा सकेगी। जिस उत्सुकताके साथ आयुर्वैदिक विद्वान और परीक्षार्थी इस पाठयक्रमकी बाट जोह रहे हैं उससे प्रकट होता है कि लोग स्वयं एक सर्वसम्मत पाठयक्रमकी आवश्यकताका अनुभव कर रहे हैं। इस वर्ष इस विषयकी चिट्ठियोंका उत्तर देते देते जैसे कार्यालयको हैरान होना पड़ा है। उससे विदित होता है कि उसके प्रचार करनेमें उतनी हैरानी नहीं भोगनी पड़ेगी।

परीक्षाका समय।

इस वर्ष कुछ सभासदोंकी सम्मतिसे परीक्षाके समयमें यह परिवर्तन किया गया कि सम्मेलनके पूर्व ही परीक्षाएँ हो जायँ और उनका परीक्षाफल सम्मेलनमें घोषित कर दिया जाया करे। तदनुसार इस वर्ष ऐसा ही किया गया है। इस वर्ष परीक्षा कार्तिककी पूर्णिमाके समय होनेसे कुछ स्थानके प्रबन्धकोंको असुविधासे सामना पड़ा क्योंकि उस समय कई स्थानोंमें मेलोंकी भीड़ रहती है; इससे निरीक्षण, स्थान आदिकी व्यवस्थामें कुछ कठिनाई होती है। अतएव आगामी वर्ष परीक्षाकी तिथि निश्चित करते समय इस विषय पर विचार किया जा सकता है। किन्तु कुछ परीक्षार्थियोंका कथन है कि अध्ययनका उपयुक्तकाल जाड़ेकी ऋतु है; अतएव यदि जाड़ेके अन्तमें परीक्षाएँ हों तो शीतकालमें विषय तैयार करनेका ठीक अवसर मिले। किन्तु ऐसा होनेसे विद्यापीठको अड़चन है। क्योंकि सम्मेलनका समय कार्तिकसे फाल्गुन तक किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीनेमें रखना ठीक जँचता है; उधर परीक्षा यदि गर्मियोंमें अथवा उनके आरम्भमें हों तो आगामी परीक्षाके सम्बन्धमें वैद्यसम्मेलनकी सलाह उसे प्राप्त नहीं हो सकती और परीक्षाफलका उत्सव प्रायः एक साल बाद पड़ जाता है। तथापि यदि सम्मेलन चाहे तो इस पर भी उचित विचार करे।

आयुर्वेदविद्यालयकी आवश्यकता ।

यद्यपि इस समय देशमें कई छोटी छोटी आयुर्वैदिक पाठशालाएं विद्यमान हैं परन्तु इस बातकी बहुत ही अवश्यकता प्रतीत हो रही है कि कमसे कम देशके किसी एक मध्य स्थानमें आयुर्वेदका एक बड़ा विद्यालय हो। अवश्य ही यह विद्यालय नाममात्रको नहीं होना चाहिये। बल्कि मेडिकलकालेजोंके ढङ्ग पर उनकी रचना होनी चाहिये। विद्यालयमें पढ़ाईकी समुचित व्यवस्था होनी चाहिये उसका शिक्षाक्रम चार पांच वर्षका हो। केवल पढ़ाई न हो बल्कि बाहरसे आनेवाले विद्यार्थियोंके रहनेके लिये एक छात्रावास भी हो। इसके सिवाय उन्हें केवल ग्रन्थ न सिखाये जायँ बल्कि उनसे तरह तरहके प्रयोग कराये जायँ; अतएव एक प्रयोगशाला भी हो। जब प्रयोगशाला होगी तब अवश्यही विद्यार्थियोंको औषधियोंका तैयार करना भी बतलाना होगा अतएव एक औषधालय भी होना चाहिये। जब औषधालय है तब औषधियोंके उपयोग करनेका ढङ्ग भी मालूम होना चाहिये और इसके मालूम करनेके लिये विद्यार्थियोंको प्रत्यक्ष रोगी दिखाकर रोग निश्चय करनेका अभ्यास होना चाहिये; अतएव उसके साथ एक आतुरालय भी चाहिये जिससे विद्यार्थी रोगोंको भिन्न भिन्न अवस्थाओंका अनुभव भी करते जावें। यही क्यों जिस शारीर शिक्षाकी न्यूनताके लिये आजकल वैद्योंको बहुतेरोंके सामने नीचा देखना पड़ता है उसकी भी व्यवस्था होना आवश्यक है। नरकंकाल और सब प्रकारके चिकित्सकोपयोगी अस्त्रशस्त्रोंका संग्रह भी चाहिये और इस बातका उद्योग होना चाहिये कि वहां प्रत्यक्ष चीर फाड़ भी की जाय। जो औषधियां गीली अवस्थामें ही लेना आवश्यक हैं उनका एक बगीचा भी चाहिये बल्कि आवश्यक तो यह है कि ऐसे बगीचेमें यथासम्भव सब प्रान्तोंकी वनौषधियां मँगाकर लगायी जायँ और विद्यार्थियोंको उनकी पहचान करायी जाय। यही नहीं सूखी वनौषधियां खनिज द्रव्य, जान्तवद्रव्य आदिका एक संग्रहालय भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य चाहिये। इन सब कामोंका यथार्थ अनुभव और उपयोग करनेके लिये ज्ञानविस्तारकी बहुत ही आवश्यकता होगी। अतएव कौन अस्वीकार करेगा कि उसके साथ एक अच्छे पुस्तकालयकी भी आवश्यकता नहीं है? जहां तक विद्यापीठको विदित है देशमें एक भी ऐसा आयुर्वैदिक विद्यालय नहीं है; और न देशकी अभी ऐसी स्थिति है कि ऐसे विद्यालय देशमें अनेक हो सकें। इसलिये यह बहुत आवश्यक है कि देश भरमें कमसे कम एक विद्यालय ऐसा अवश्य हो। ऐसे विद्यालयको चलानेके लिये अनुमान दश लाख रुपयेकी पूंजी होना आवश्यक है। अवश्य ही केवल वैद्योंके बूते यह विराट आयोजन सिद्ध नहीं हो सकता; परन्तु यदि वैद्य लोग अपनी शक्ति और प्रभावका उपयोग करें तो यह कार्य असम्भव भी नहीं है। कठिन अवश्य है। परन्तु साध्य है, कुछ परिश्रम करना होगा, कुछ स्वार्थत्याग करना होगा, कुछ आरामको त्यागकर देशके अनेक भागोंमें घूमना होगा, सालके कुछ दिनोंकी आमदनीका मोह भी त्यागना होगा, देशके भाइयोंके सामने, राजा रईसोंके सामने, नम्रतासे हाथ फैलाना होगा, देशके एक एक भाईसे, एक एक आयुर्वेद-प्रेमीसे, एक एक अपने रोगीसे इस महदनुष्ठानके लिये कुछ न कुछ प्राप्त करना होगा, जिनसे एक बारमें नहीं मिलेगा उनसे अनेकबार मिलकर अपना विचार सुनाना और उनकी सहानुभूति प्राप्त करना होगा। जिसमें प्रत्येक देशवासी यह समझ सके कि इस विद्यालयमें मेरा भी अधिक नहीं तो एक पैसा ही लगा है; अतएव इसमें मेरा भी स्वत्व है, यह मेरी भी चीज़ है, उसका उद्योग करना होगा। अवश्य ही इस कार्यकी सिद्धिमें अनेक बार अपने अपमानका अनुभव होगा, ग्लानि और त्वेषके अवसर आवेंगे; परन्तु अपने स्वार्थके लिये अपने निजके लाभके लिये नहीं आदरभाजन देशके लिये, भारतके गौरवके लिये, अपने ऋषियों और देवताओंके परिश्रमसे लोककल्याणके लिये अवतरित आयुर्वेदके अभ्युदयके लिये क्या आप यह सब करनेको तैयार नहीं होंगे? क्या इसके लिये कमर कसकर खड़े नहीं हो जायँगे? क्या, संसारको यह नहीं दिखा देंगे कि अब हमने एकताका, संघशक्तिका लाभ समझ लिया है, अब हमने ईर्षा, द्वेष और आलस्यको लात मार दिया है। अधिक नहीं दो लाख रुपयोंको पूंजी इकट्ठी हो जानेसे ही कार्यका आरम्भ हो जायगा फिर और रकम धीरे धीरे इकट्ठी होती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस रकमका इकट्ठा होना असम्भव नहीं है। देशमें कमसे कम दो हज़ार राजा और ताल्लुकेदार होंगे यदि उनसे औसत सौ रुपयेका भी चन्दा हो जाय तो उसी दम दो लाख रुपये हो सकते हैं। अधिक नहीं तो कमसे कम देशके १० करोड़ मनुष्य आयुर्वेदकी औषधिसे लाभ उठाते होंगे, वे सब नगरसे लेकर देहातके कोनोंतकके फैले हुए वैद्योंके पास ही तो जाते हैं। उनसे आप अधिक नहीं एक एक पैसा भी लेना आरम्भ करें तो आप जानते हैं कितना रुपया इकट्ठा हो सकेगा? उसका योग १२ लाख साढ़े बासठ हज़ार रुपये होगा; फिर कैसे कहें कि आपके लिये यह काम असम्भव है? चाहिये केवल उद्योग, उद्योग, उद्योग। क्या आप लोग यह उद्योग शीलता नहीं दिखा सकेंगे? सच मानिये आपके इस उद्योगके फलसे जो जो कार्य होगा उससे देशके करोड़ों भाइयोंका आशीर्वाद वर्षण होगा, आपके देवता और ऋषियोंका आप पर वरदहस्त होगा। उठिये उद्योगमें लगिये।

परीक्षोत्तीर्णोंको पदक।

किसी भी काममें कर्तव्यकी प्रेरणा तो ज़बरदस्त होती ही है; परन्तु आदर मान और प्रतिष्ठाका आकर्षण भी थोड़ा नहीं होता। इसीलिये प्रत्येक संस्थाकी ओरसे जो परीक्षाएं होती हैं उनमें परीक्षार्थियोंका उत्साह बढ़ानेके लिये कुछ कुछ पारितोषिक देनेका क्रम रहता हैं। आयुर्वेदविद्यापीठके हाथ आर्थिक दुरवस्थाने बेतरह जकड़ रखा है; परन्तु देखते हैं कि हमारे देशके धनी पुरुष अब अपने धनका सदुपयोग करना जान गये हैं। उन्हें अब मालूम होने लगा है कि हमारे दानका श्रोत किधर जाना चाहिये। हमारे वर्णाश्रम धर्मकी व्यवस्था ही ऐसी है कि सदासे विद्याव्यासङ्गी लोगोंकी रक्षा राजा महाराजा करते आये हैं और उनकी आर्थिक सहायताका भार वैश्यवर्गने अपने जिम्मे रखा है। अवश्य ही संसारमें ऐसी कोई जाति विरली ही मिलेगी जो दान धर्ममें वैश्योंका मुकाबिला करे; किन्तु अब तक प्रायः खेदके साथ यह देखा जाता था उनका दान अस्थानीय हो रहा है। उससे भी अधिक आवश्यक कार्यमें उस दानका सदुपयोग हो सकता था; किन्तु देखते हैं कि धीरे धीरे उस शिकायतका अवसर बीतता जा रहा है। इस एक ही वर्षके बीचमें हमें आप लोगोंसे ऐसे दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैश्य भाइयोंका परिचय करानेका अवसर मिला है, जिन्होंने आयुर्वेद-विद्यापीठके छात्रोंको पदक प्रदानसे उत्साहित करनेका यश प्राप्त किया है। वे महाभाग वैश्य एक काशी रसायनशालाके सभापति बाबू मंगतराय विश्वेश्वर प्रसाद जी और दूसरे कलकत्तेके श्रीयुक्त विशनजी मालजी महोदय हैं। श्रीयुक्त विशन जी मालजीने भाद्रमासमें अपनी ऐसी इच्छा प्रकाशित की कि इस वर्षकी आयुर्वेद-विद्यापीठकी परीक्षामें जो छात्र सर्व प्रथम हुआ होगा, उसे हम एक स्वर्णपदक देना चाहते हैं। तदनुसार आश्विनकृष्ण २ के अधिवेशनमें आयुर्वेदमहामण्डल और आयुर्वेदविद्यापीठने धन्यवाद सहित आपका दान स्वीकार किया और मथुरा सम्मेलनके समयको आयुर्वेदविशारद परीक्षामें सव प्रथम होने वाले छात्र श्रीयुक्त प्रतापसिंह शर्माको आपका पदक प्राप्त हुआ है। पहले सज्जन श्रीयुक्त मंगतराय विश्वेश्वर प्रसाद जीने काशीरसायनशालाके अध्यक्ष श्रीयुक्त श्यामसुन्दराचार्य जीके द्वारा अपनी इच्छा प्रकट की कि इस वर्ष की आयुर्वेदविशारद परीक्षामें सर्व प्रथम होने वाले छात्रको हम एक स्वर्ण पदक और अन्य प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण छात्रोंको रौप्य पदक देना चाहते हैं। तदनुसार आयुर्वेदमहामण्डल और आयुर्वेदविद्यापीठने स्वीकार कर स्वर्णपदक श्रीयुक्त भगवानदीन मिश्रको देना निश्चय किया है। आप आयुर्वेदविशारद परीक्षामें तो प्रथम हैं ही, किन्तु विशेष पदक परीक्षामें भी उत्तीर्ण हुए हैं। शेष दो रौप्यपदक इस वर्ष आयुर्वेदविशारद परीक्षामें प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए दो छात्रोंको देना निश्चय हुआ है। पहले पदकोंकी तैयारीमें जितने खर्चका अन्दाज लगाया गया था उससे कममें तैयार हुए। इसलिये तीन रौप्य पदक आपके ही रुपयोंमें मथुराकी परीक्षामें प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए छात्रोंको देना निश्चय हुआ है। इस प्रकार आपकी उदारतासे एक स्वर्णपदक और पांच रौप्यपदक इसी सम्मेलनमें दिये जावेंगे। इतना होने पर प्राकृत वैद्यपरीक्षाका सर्वोच्च छात्र बच रहता था; उसकी पूर्ति काशी रसायनशालाके मैनेजर श्रीयुक्त पं० अर्जुनदत्त शर्मा जीने अपनी उदारतासे कर दी। आपके दानसे प्राकृतपरीक्षामें सर्वोच्च आनेवाले पण्डित फिरायाराम शर्माको एक रौप्यपदक दिया जावेगा। विशेषता यह कि रसायनसालाके उक्त दोनों सज्जनोंने आगामी वर्ष भी पदक प्रदान करनेकी उदारता प्रकट की है। चतुर्थ वर्षके सर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परीक्षोत्तीर्ण श्रीयुक्त चतुरसेनवर्माको भी एक स्वर्णपदक अपना नाम न चाहनेवाले एक उदार सज्जनकी ओर से दिया जायगा। आशा है इससे परीक्षार्थियोंको विशेष उत्साह उत्पन्न होगा। ऊपरके चारों सज्जनोंकी उदारताके लिये आयुर्वेविद्यापीठ कृतज्ञ है। आशा है अन्य धनी पुरुष आपका अनुकरण करेंगे।

विद्यापीठकी नियमावली।

अब तक आयुर्वेदविद्यापीठकी स्वतन्त्र और विस्तृत नियमावली नहीं थी। इससे कार्यनिर्देशमें असुविधा उत्पन्न हुआ करती थी। ईश्वर कृपासे आयुर्वेदविद्यापीठको कार्यप्रणाली विस्तृत हो रही है। इसलिये यह आवश्यक हुआ कि आयुर्वेदविद्यापीठकी नियमावली नियमोपनियमोंके साथ और भी विस्तृत होनी चाहिये। तदनुसार विद्यापीठकी कार्यकारिणी समितिने उसकी रचना की है और फिर सर्वसाधारणके विचारके लिये प्रकाशित कर उसे वैद्योंके पास भेजा है। सब लोगोंकी उस पर सम्मति मँगानेके लिये एक तिथि निश्चय कर लोगोंकी रायका विचार कर एक उपसमिति द्वारा उसका फिर संशोधन कराया है। वह संशोधन स्वीकृतिके लिये इस सम्मेलनके सामने उपस्थित किया जायगा। आशा है इस प्रकार यह नियमावली भी कार्योपयोगी हो जायगी। इस वर्ष कार्य इसीके अनुसार हुआ है।

भवदीय

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

मन्त्री आयुर्वेदमहामण्डल आयुर्वेदविद्यापीठ.

वैद्यक डाइरेक्टरी।

अहमदाबादके वैद्य पञ्चानन पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी वैद्यक डाइरेक्टरीका काम कर रहे हैं। आपने गत दो वर्षोंमें जो कार्य किया है उसकी रिपोर्ट इस प्रकार है:—

श्रीवैद्यसम्मेलनके चतुर्थाधिवेशनके समय वैद्यक डाइरेक्टरी तैयार करनेका भार मैंने अपने ऊपर लिया था। गत दो वर्षोंमें जहाँ तक हो सका, वहाँ तक मैंने इस कार्यके उपयोगी साहित्यका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह किया है। आज आपकी सेवामें उस सम्बन्धमें जो कार्य हुआ है वह तथा भविष्यमें क्या कर्तव्य है, यह संक्षेपमें निवेदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप लोग इस कार्यसे विशेष रूपसे परिचित हो यथासाध्य सहायता करनेके लिये तैयार होंगे।

आवश्यकता।

सज्जनगण, यह अत्यन्त प्रसन्नताकी बात है कि वर्तमान समयमें आयुर्वेदप्रेमी अपने आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये विविध प्रकारसे प्रयत्न कर रहे हैं। स्थान स्थान पर पाठशालाएँ और सभाएँ स्थापित हो रहीं हैं, आयुर्वेदीय ग्रन्थ छप रहे हैं, सामयिक पत्र प्रकाशित हो रहे हैं, इस प्रकार आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये भिन्न भिन्न प्रदेशमें भिन्न भिन्न कार्य हो रहे हैं। वास्तविकमें विचार किया जाय तो ये सब सामयिककार्य हमें आयुर्वेदकी उन्नति होनेकी आशा दे रहे हैं। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि इन समस्त कार्योंकी आवश्यकता है; किन्तु इनके साथ साथ हमें एक वैद्यक डाइरेक्टरीकी भी बड़ी आवश्यकता है। आयुर्वेदके प्राचीन-अर्वाचीन ग्रन्थोंका संग्रह कितना है और कहां कहां है, आयुर्वेदीय सार्वजनिक संस्थाएँ कितनी हैं और कहां कहां हैं, आयुर्वेदीय वनस्पतियोंके संग्रहस्थान कितने हैं और वे वनस्पतियां कहां कहां मिलती हैं, इस समय आयुर्वेदीय विद्वान् कितने हैं और वे कहां कहां हैं इत्यादि विषयोंके पूर्ण ज्ञान होनेके लिये हमारे पास कुछ भी साधन नहीं है। ऐसी अवस्थामें इन समस्त विषयोंका जिसमें संग्रह हो वैसी एक वैद्यक डाइरेक्टरीकी बड़ी आवश्यकता है। यदि हमें अपने आयुर्वेदके प्रेमियोंमें परस्पर परिचय बढ़ाना है, यदि हमें आयुर्वेदके विरोधियोंको अपनी शक्ति दिखलानी है, यदि हमें देशके सुशिक्षित समाजका और देशके नेताओंका ध्यान आयुर्वेदकी ओर आकर्षित करना है, यदि हमें उच्च अधिकारियोंके उस भ्रमका खण्डन करना है कि आयुर्वेदीय पद्धतिसे उपचार केवल गंवार लोग ही करवाते हैं, तो हमें आयुर्वेद सम्बन्धी समस्त विषयोंका एक स्थानमें संग्रह कर उनके समीप धरना चाहिये। इस प्रकारके संग्रहका नाम ही वैद्यक डाइरेक्टरी है। अब कहनेकी जरूरत नहीं है कि वैद्यक डाइरेक्टरी की कितनी आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यक डीरेक्टरीमें किन किन विषयोंका संग्रह किया जायगा ?

इस डाइरेक्टरीमें क्या क्या और कैसी कैसी बातोंका संग्रह होगा यह जाननेकी इच्छा स्वाभाविक होगी इससे उस संग्रह सम्बन्धी संक्षिप्त सूचना यहांपर दी जाती है।

१ प्रत्येक वैद्यका नाम, पता, जाति, वय, अभ्यास, भाषा, इत्यादि बहुत सी जानने योग्य बातें डायरेक्टरीके भिन्न भिन्न आसनोंमें छपेंगी। छपे हुए फार्मके नमूनेपरसे डायरेक्टरीमें जो संग्रह किया जायगा उसका ठीक ख्याल आ सकेगा। इसके उपरान्त अन्य कोई जानने योग्य बात होगी वह डायरेक्टरीके रिमार्क-वाले विभागमें छपेगी। कोई वैद्यक परीक्षा दी हो तो वह कौनसी और कहां पर? कोई पदवी प्राप्त हुई हो तो वह कौनसी और किसकी ओरसे? कोई राजामहाराजा या रईसका आश्रय हो तो वह किसका है? अपना स्वतंत्र औषधा-लय हो तो उसका नाम और किसी दूसरे संस्था इत्यादिमें कार्य करते हों तो उसका नाम प्रभृति। वैद्यक उपचारके उप-रान्त वैद्यकसे सम्बन्ध रखनेवाला कोई कार्य करते हो तो वह कार्य—जैसे कि अध्यापकीका कार्य, वैद्यकके पुस्तक लिखने प्रकाशित करनेका कार्य, वैद्यक सम्बन्धी व्याख्यान देनेका कार्य, शास्त्रसिद्ध औषधियां बनाकर विक्रय करनेका कार्य इत्यादि।

वैद्योंके सम्बन्धमें उपरोक्त वृत्तान्त डायरेक्टरीमें प्रकाशित किया जायगा। उसके ऊपरान्त निम्न जानने योग्य विषयोंका भी संग्रह डायरेक्टरीमें प्रसिद्ध करनेका विचार है।

२ इस समय पर्यन्त मालूम हुए ग्रन्थ—मुद्रित और अमुद्रित—जिनका अस्तित्व होगा ऐसे ग्रन्थोंकी एक सम्पूर्ण सूची छपेगी। जिसमें ग्रन्थका नाम, उसका मुख्य विषय और मूलकर्ताका नाम तथा समय छपेगा। संस्कृतभाषाके ग्रन्थोंकी नामावलिको प्रथम स्थान मिलेगा; किन्तु जहां तक बन सकेगा भारतवर्षकी समस्त भाषाओंमें जिन जिन मूल ग्रन्थोंके भाषान्तर हुए होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह और भिन्न भिन्न भाषाओंमें स्वतंत्र ग्रन्थ छपे होंगे उनके नाम प्रभृति इस डाइरेक्टरीमें प्रकाशित किये जायंगे।

३ भारतवर्षमें वैद्यक शिक्षा सम्बन्धी जो जो संस्थाएँ चल रही होंगी उनके नाम, किसकी ओरसे चल रही हैं, किसका आश्रय है, कैसा अभ्यास क्रम है, कितने वर्ष अभ्यास करना होता है और शिष्यवृत्ति (स्कोलरशिप) पदवी प्रभृति वृत्तान्त।

४ भारतवर्षमें इस समय शास्त्रसिद्ध और अनुभवसिद्ध औषध बनते हों ऐसे कारखानोंके नाम, उनके स्वत्वाधिकारियोंके नाम और कितने वर्षसे चलता है इत्यादि।

५ भारतवर्षमें इस समय वैद्यक सम्बन्धी जो जो सामयिकपत्र निकलते हों उनके नाम, उनके सम्पादक व प्रकाशकके नाम, कितने वर्षसे निकलते हैं, वार्षिक मूल्य क्या है इत्यादि।

६ भारतवर्षमें वैद्यक साहित्यके या वनस्पतिके जानने योग्य कोई संग्रहस्थान हो तो उसकी सूची; वैसे ही बड़े बड़े नगरोंमें अन्य सामान्य संग्रहस्थान हैं और जो वैद्यकसे सम्बन्ध रखनेवाले साहित्य, वनस्पति, ग्रन्थादि हों ऐसे संग्रहस्थानोंकी नामावली।

७ भारतवर्षमें जिन्होंने एक एक विषयका अच्छा अभ्यास और अनुभव किया हो और उसी विषयका जिनको सम्पूर्ण ज्ञान हो ऐसे अभ्यासियोंकी सूची। जैसे कि कोई केवल वनस्पतिको ही शोध व संग्रह करते हों, वनस्पति पहुँचानेका कार्य करते हों, रसायनशास्त्रका खास अभ्यास किया हो और रसायन बनानेका तथा पारदसंस्कार सम्बन्धी उत्तम ज्ञान रखते हों, और साधु सन्यासी प्रभृति वैद्यक सम्बन्धी किसी उपचारमें कुशल हों उनके नाम पते प्रभृति।

८ आयुर्वेदका इतिहास।

९ देशके राजामहाराजा या श्रीमन्त जो कि आर्य वैद्यकशास्त्रके खास अनुरागी होकर इस विद्याकी सहायता कर रहे हों उनकी सूची।

१० भारतवर्षके भिन्न भिन्न स्थानके जंगल कि जहांसे वैद्य लोग उपयोगी औषधियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

११ आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये जो जो सभाएँ चलरही हों उनका विवरण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीतक क्या कार्य हुआ है ?

इस डाइरेक्टरीके कार्यको आरम्भ किये दो वर्ष पूर्ण हुए हैं, इन दो वर्षोंमें जो कार्य हुआ है वह यहां पर निवेदन किया जाता है।

१ वैद्योंका वृत्तान्त;–इस डाइरेक्टरीमें वैद्योंका वृत्तान्त छपेगा। इस वृत्तान्तको प्राप्त करनेके लिये हमने एक प्रकारके फार्म हिन्दी, अंगरेजी, और गुजराती भाषामें ३०००० छपवाये हैं। इनमेंसे करीब १५००० फार्म भिन्न भिन्न स्थानपर हमने संवादपत्र और अपने मित्रोंको सहायतासे पहुंचा दिये हैं। इनमेंसे अभीतक कोई २५०० फार्म आये हैं। १५००० फार्ममेंसे केवल २५०० वैद्योंका वृत्तान्त भरकर आना यह कितने शोककी बात है। यहांपर यह भी निवेदन करदेना अनुचित नहीं है कि बहुतसे वैद्य अभी इस कार्यके महत्वको नहीं समझते। हमने संवादपत्रोंमें सूचना दी थी कि अपने अपने गांवके और आसपासके गांवके वैद्योंके फार्म भरवाकर भेज सकें ऐसे कुछ सहायकोंकी आवश्यकता है। इस समाचारको पढकर जितने सहायकोंकी हमें आवश्यकता थी उतने नहीं मिले। कुछ सहायक मिले और उन्होंने फार्म मंगवाये; किन्तु उन्होंने कुछ फार्म भरकर भेज दिये और उसके साथही लिखा कि हमारे यहांके वैद्य फार्म भर देना स्वीकार नहीं करते। आप लोग इससे समझ सकते हैं कि हमारे वैद्य लोग सामयिक बातोंसे कितने अजान हैं। फिरभी हम हताश न होकर वैद्योंसे फार्म भरवानेके लिये भिन्न भिन्न प्रकारसे उद्योग कर रहे हैं। भारतवर्षमें सहस्त्रों वैद्य होंगे। इन वैद्योंका वृत्तान्त एक स्थानपर संग्रह करलेना हमारे एकही के यत्नसे नहीं हो सकता। इसमें भिन्न भिन्न नगरोंके उत्साही सज्जनोंकी सहायताकी आश्यकता है।

२ वैद्यक ग्रन्थोंकी सूची;—समस्त चिकित्साओंकी जननीरूप इस आयुर्वेदविद्याका ग्रन्थ-संग्रह—साहित्य अत्यन्त महान् था। हमारे वैदिक समयसे लेकर अभी तक वैद्यक सम्बन्धी अनेक ग्रन्थ बने हैं। किन्तु शोककी बात है कि धर्म सम्बन्धी और राज्य सम्बन्धी विवादोंके कारण वह सब नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। जो ग्रन्थरत्न नष्ट हुए हैं, उनका शोक करते बैठ रहनेसे काम नहीं चलेगा; अब हमें रहे हुए ग्रन्थोंकी रक्षा करनी होगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका पठनपाठन एवं संशोधन तथा मुद्रण होना चाहिये। इन कार्योंको यथाविधि पूर्ण करनेमें वैद्यकग्रन्थोंकी सूची अत्यन्त उपयोगी होगी। हमने ग्रन्थोंकी सूचीके लिये भी फार्म छपवाये हैं और भिन्न भिन्न पुस्तकालयाध्यक्षोंके पास तथा वैद्योंके पास वे फार्म भेज दिये हैं, इसके सिवाय जर्मनीसे ३६ रुपयेका बड़ा सूचीपत्र मँगवाया है, जिसमें कई संस्कृत ग्रन्थोंके नाम दिये गये हैं, उसमेंसे वैद्यक ग्रन्थोंको चुन लिया गया है, इस कार्यमें एसियाटिक सोसाइटीके रिपोर्टकी भी सहायता ली गयी है। यह कार्य जितना आवश्यक है, उतना ही कठिन भी है; किन्तु आयुर्वेदीय प्राचीन ग्रन्थोंके सुप्रसिद्ध संशोधक और प्रकाशक आयुर्वेदीय ग्रन्थमालाके सम्पादक श्रीयुत् वैद्य यादवजी त्रीकमजी आचार्यकी सहायतासे इस कार्यको जब तक होगा मैं शीघ्र ही अनेक अंशोमें पूर्ण कर सकूंगा। इस सूचीमें संस्कृतभाषाके प्राचीन ग्रन्थोंके सिवाय वर्तमान समयकी प्रान्तीय भाषाओंके ग्रन्थोंका भी वृत्तान्त जहां तक हो सकेगा दिया जायगा।

३ वैद्यक संस्थाएं,—आयुर्वेद सम्बन्धी सभाएं, पाठशालाएं, धर्मार्थ औषधालय, प्रभृति वैद्यक संस्थाओंका विवरण इस डाइरेक्टरीमें दिया जायगा, इसके लिये हमने कई एक संस्थाओंको स्वयं देखा है और कई एकोंको देखनेका विचार है। इसके सिवाय कई संस्थाओंका विवरण हमने अपने मित्रोंकी सहायतासे और उन संस्थाओंके सञ्चालकोंसे प्राप्त किया है। विशेष कर गुजरात, राजपूताना, और उत्तर भारतके कई स्थानोंकी संस्थाओंका विवरण हमने प्राप्त किया है। बङ्गाल प्रान्तकी संस्थाओंका विवरण हम अपनी इस यात्रामें प्राप्त करनेका विचार कर रहे हैं। आशा है कि इस कार्यमें इस प्रान्तके वैद्यबन्धु योग्य सहायता देंगे।

४ वनस्पतिके संग्रहस्थान एवं प्राप्तिस्थान;—हमारे आयुर्वेदीय वैद्योंको जितनी वस्तुओंके ज्ञानकी और वस्तुओंकी आवश्यकता पड़ती है; उनमें वनस्पति प्रधान वस्तु है। हमारी प्रायः समस्त औषधियोंमें वनस्पतियोंकी आवश्यकता होती है; इसलिये इनके ज्ञान सम्पादन करनेके लिये संग्रह स्थान उपयोगी है और उनको सुलभतासे प्राप्त करनेके लिये उनके उत्पत्तिस्थान जाननेकी आवश्यकता है। हमने अभी तक ऐसे कई एक स्थानों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पता संग्रह किया है। इस कार्यमें हमें सुप्रसिद्ध बोटेनिस्ट (वनस्पति शास्त्री) श्रीमान् जयकृष्ण इन्द्रजीकी सहायता अधिक रूपसे प्राप्त हुई है।

५ **आयुर्वेदका इतिहास**;—इस डाइरेक्टरीमें आयुर्वेदका इतिहास भी देना मुझे आवश्यक मालूम होता है। यह तो आप स्वीकार करेंगे कि हमें इस समय आयुर्वेदके सविस्तर यथार्थ इतिहासकी अत्यन्त आवश्यकता है। किस समय एवं किस कारणसे आयुर्वेदकी उन्नति हुई थी और किस समय एवं किस कारणसे आयुर्वेदकी अवनति हुई है, यह जाननेके पश्चात् ही आयुर्वेदकी भावी उन्नतिके कारणोंका वैद्योंको यथार्थ ज्ञान होगा। आयुर्वेदका साहित्य अत्यन्त विस्तृत है और उसके हर एक अङ्गका इतिहास लिखना चाहिये; किन्तु अपने देशमें इतिहास एक अपरिचित वस्तु है। इतिहास लिखने पढ़नेका शौक बहुत कम मनुष्योंको रहता है, फिर वैद्यकका इतिहास और वह भी भिन्न भिन्न अङ्गोंका यह कितनी दूरकी बात है! आयुर्वेदके और उसके भिन्न भिन्न अङ्गोंके इतिहास लिखनेकी आवश्यकता है, उस आवश्यकताको पूर्ण करनेके लिये आप लोगोंमें से कुछ सज्जन चाहें तो कर सकते हैं और वह समय आवेगा भी; किन्तु मेरा विचार है कि एक संक्षिप्त इतिहास इस डाइरेक्टरीमें प्रकाशित करूं। मैंने इस कार्यके लिये भी कुछ साहित्यका संग्रह किया है। यदि इस विषयमें कोई सज्जन मुझे सहायता देंगे तो उसे सहर्ष स्वीकार करूंगा। इस कार्यमें प्रो० कालेकी मुझे बहुत कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी; किन्तु शोकके साथ निवेदन करना पड़ता है कि वे इसी वर्ष में स्वर्गवासी हो गये!

इनके सिवाय और भी वैद्यक सम्बन्धी कई उपयोगी बातें इस डाइरेक्टरीमें प्रकाशित की जायँगी जो मैं प्रथम ही निवेदन कर चुका हूँ।

देशी नरेशोंसे निराशा।

मैंने प्रथम निवेदन किया तदनुसार वैद्य लोग अपना वृत्तान्त भेजनेमें अत्यन्त विलम्ब कर रहे हैं और इस प्रकार कार्यको पूर्ण करनेमें बहुत कठिनता प्राप्त होगी, ऐसा समझकर मैंने कुछ देशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेशोंकी सेवामें एक एक प्रार्थनापत्र भेजा, जिसमें उनके राज्यका वैद्यक सम्बन्धी वृत्तान्त तैयार करवाके इस डाइरेक्टरीके लिये भेज देनेकी प्रार्थना की थी; किन्तु दो चारको छोड़कर अन्य नरेशोंने इस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। मैंने गतवर्ष निवेदन किया था, तदनुसार बड़ोदा नरेशसे कुछ सहायता मिली है और मिलनेकी आशा है। इसके सिवाय श्रीदरभङ्गा नरेशने भी अपने राज्यके वैद्योंके नाम प्रभृति भीजवानेकी कृपा की है। अभी देशी नरेशोंके पास कोई विदेशी आकर किसी प्रकारकी सहायता मांगे तो उसे वे देनेको तैयार होंगे; किन्तु हमारी प्रार्थनाएं उनके कर्णमें पहुँचनी कठिन होती हैं, कदापि हम किसी प्रकार पहुंचा भी दें, तथापि वे हमारे उचित प्रस्तावोंके महत्वको नहीं समझते। देशी नरेशोंके सम्बन्धमें मुझे निवेदन करना अच्छा नहीं मालूम होता है, फिर भी कहे बिना नहीं रहा जाता कि बहुतसे देशी नरेश अभीतक अपने देशकी प्राचीन और उपयोगी विद्याओंके उद्धारसे होनेवाले लाभोंसे अपरिचित हैं। हमें आशा है कि देशी नरेशोंके आश्रित वैद्य-बन्धु अपने अपने आश्रयदाताको डाइरेक्टरीके उद्देश समझाकर अपने राज्यका वैद्यक वृत्तान्त भेजवानेकी चेष्टा करेंगे।

सहायकोंको धन्यवाद।

मैं कहूं या न कहूं फिरभी आप समझ सकते हैं कि ऐसे एक महान् कार्यको करनेके लिये कितने सहायकोंकी आवश्यकता है। मैं इस कार्यके लिये जहां तक संभव होगा तन, मन और धनसे इस कार्यको पूर्ण करनेकी चेष्टा करूंगा; किन्तु इस कार्यके महत्वको समझकर मेरे वैद्यवन्धु केवल अपने अपने प्रान्त और गांवके वैद्यक सम्बन्धी वृत्तान्त भेजनेकी कृपा करेंगे तो मैं इस कार्यको अनेक अंशोंमें शीघ्र पूर्ण कर सकूंगा। जिन सज्जनोंने अभी तक इस कार्यमें सहायता की है उन सज्जनोंको मैं अन्तःकरणसे धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूं कि आपमेंसे कई उत्साही सज्जन इस कार्यकी आवश्यकता और महत्वको समझ कर सहायता करनेके लिये तैयार होंगे। अभी आपकी सेवामें एक एक फार्म उपस्थित किया जाता है उसे ग्रहण करें और उसे लिख कर मुझे यहां पर दे दें या पोष्ट द्वारा भेज दें। इसके सिवाय जो सज्जन इस कार्यमें विशेषरूपसे सहायता कर सकते हैं वे अधिक फार्म पत्र लिखकर मंगवा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जनगण, आप जानते हैं कि वर्तमान समयमें हर एक प्रकारके व्यवसायवाले अपने अपने व्यवसायकी सुविधाके लिये प्रतिवर्ष डाइरेक्टरी प्रकाशित करते हैं, इस समय जो यूरोपके सर्व प्रकारके व्यवसाय बढ़ रहे हैं और करोड़ों रुपया हमारे देशमें से प्रतिवर्ष ले जा रहे हैं, इनमें उन लोगोंको डाइरेक्टरियोंसे बड़ी सहायता मिलती है, किस किस नगरमें किस किस वस्तुके कौन कौन व्यापारी हैं, यह एक स्थानमें बैठा हुआ मनुष्य डाइरेक्टरीकी सहायतासे जान ले सकता है। यह भी आपको मालूम होगा कि भारतवर्षके समस्त डाक्टरोंकी भी एक डाइरेक्टरी छपी है। अब हमें भी एक ऐसी ही डाइरेक्टरी तैयार करनी है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि इस वैद्यक डाइरेक्टरी—आर्य वैद्यक सम्बन्धी समस्त विषयोंके संग्रहका एक कोष तैयार हो जानेसे इस देशके आधुनिक देशी वैद्योंके इतिहासमें एक जानने योग्य बात हुई मानी जा सकती है और ऐसे एक अपूर्व संग्रह तथा कोषकी आवश्यकता और कीमत इस समय जितनी समझी जा सकती है उससे भी भविष्यमें अधिक समझी जायगी।

अब अपने वक्तव्यकी समाप्तिमें यह भी निवेदन कर देना चाहता हूं कि मैं अपनी गुजरात-आयुर्वैदिक-फार्मसीकी ओरसे २० वर्षसे गुजरातीभाषामें मासिक पत्र निकाल रहा हूं, जिसका दो वर्षसे हिन्दी संस्करण भी निकलता है। इसके साथ साथ कई वैद्यक सम्बन्धी ग्रन्थ भी प्रकाशित किये गये हैं। मैं उक्त प्रकारसे कई वर्षसे आयुर्वेदकी सेवा कर रहा हूँ, उन कार्योंको करते हुए मुझे एक वैद्यक डाइरेक्टरी तैयार करनेका भी विचार हुआ था। वह विचार आज अखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनकी सम्मतिसे कार्यमें परिणत होता हुआ देखकर मुझे बड़ा ही सन्तोष होता है। मैं इस सम्मेलनको धन्यवाद देता हूँ तथा परमेश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि वह दिन प्रति दिन अधिक प्रभावशाली बनकर आयुर्वेदके सेवकों और शुभचिन्तकोंकी ऐसी अनेक कामनाओंको पूर्ण करे।

वैद्य जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी

ता० २५-डिसम्बर १९१४ सम्पादक "वैद्यकल्पतरु"

अहमदाबाद (गुजरात)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तिक मन्त्रियोंकी रिपोर्ट ।

इस वर्ष कई प्रान्तिकमन्त्रियोंने अपनी विधिवत् वार्षिक रिपोर्ट नहीं भेजी। केवल मद्रासके मन्त्री पण्डित डी० गोपालाचार्य वैद्यरत्न महोदयने अपनी रिपोर्ट अच्छी भेजी है। यथार्थमें प्रान्तिकमन्त्रियों-के द्वारा बहुत कार्य हो सकता है और भिन्न भिन्न प्रान्तोंकी बहुत सी बातें मण्डलको अनायास इनके द्वारा विदित हो सकती हैं और मण्डलके उद्देश्य देशव्यापी हो सकते हैं; परन्तु प्रायः देखा जाता है, मद्रास प्रान्तीय मन्त्री पण्डित डी० गोपालाचार्लू वैद्यरत्न महोदय और गुजरात प्रान्तीय मन्त्री पण्डित जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी महोदय जितने ध्यानसे मण्डलके कार्योंको देखा करते हैं यदि उसी प्रकार अन्य प्रान्तीयमन्त्री सचेष्ट रहें तो मण्डलकी उपयोगिता बहुत बढ़ जाय। विशेषकर इस वर्ष संयुक्तप्रान्त, विहार, बङ्गाल, मध्यप्रदेश, मध्यभारत और पञ्जाबके मन्त्रियोंने विशेष उल्लेख योग्य कोई कार्य नहीं किया है। बम्बई प्रान्तीय मन्त्री आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित यादवजी त्रीकमजी आचार्य, महाराष्ट्र-प्रान्तीय मन्त्री वैद्य-पञ्चानन पण्डित कृष्णशास्त्री कवड़े और राजपूताना प्रान्तीय मन्त्री आयुर्वेदपञ्चानन पण्डित पूनमचन्द तनसुख व्यास महोदयोंसे मण्डलको समय समय पर अच्छी सहायता मिलती रही है। विहार प्रान्तके मन्त्रीके कार्यकी पूर्ति मुस्तफ़ापुरके पण्डित रामावतार शर्मा वैद्य महोदयने योग्यताके साथ की है। जिन सज्जनोंसे विधि-वत रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है उनके फुटकल पत्रव्यवहारसे रिपोर्ट-योग्य अंश छांटकर हम यथासम्भव रिपोर्टके इस भागकी पूर्ति करेंगे। यहां पर अपने सब प्रान्तीय मन्त्रियोंको धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य है; क्योंकि आप लोगोंके द्वारा मण्डलका अंग प्रभाव-शाली हुआ है और मण्डलके उद्देश्योंको देशव्यापी करनेमें बहुत सहायता मिली है।

मद्रासप्रान्तीय विवरण।

इस बातको लिखते हुए बड़ा आनन्द होता है कि इस राज-धानीमें और वर्षोंकी अपेक्षा इस वर्षमें आयुर्वेद विद्याकी अभिवृद्धि बढ़ कर हुई है; और आयुर्वेदप्रेमी जनसमुदाय इसकी सेवामें सोत्साह संलग्न हो सफलता प्राप्त कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन वैद्यशालाकी स्थापना।

लोक विदित, सकल जनोंका यात्राधाम कावेरी नदीके तोरवर्ती श्रीरङ्गनाथ विरजित श्रीरङ्गक्षेत्रमें गत जून मासमें श्रीमान् देशभूषण आर. के. प्रसन्न वेङ्कटेशराव पन्तलु जमींदार महोदयने श्रीप्रसन्न वेङ्कटेश आयुर्वेद वैद्यशाला नामका धर्मौषधालय स्थापित किया है, इस वैद्यशालाको १००००) की कीमतका एक बड़ा भवन आपसे मिला है; तथा इस औषधालयको चिरकाल स्थायी बनाये रखनेके लिये एक सभा स्थापित कर औषधालयके कोषमें ३००००) तीस हजार रुपये रख कर, इस वैद्यशालाको चिरस्थायी स्वरूप दिया गया है। उस सभाको गवर्नमेण्टसे रजिस्टर्ड भी करा दिया है। यह वैद्यशाला स्थापित होनेके दिनसे बहुत अच्छा काम कर रही है, यह वैद्यशाला वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचारलु मद्रास आयुर्वैदिक कालेजके प्रिंसिपालके अमोघ प्रयत्नसे स्थापित हुई है, और इस समय वैद्यशालाके कार्यकर्ता भी उक्त मद्रास आयुर्वैदिक कालेजके प्रिंसिपाल साहेबके शिष्य श्रीयुक्त गणपतिशास्त्री आयुर्वेद भूषण नियुक्त हैं। आप वैद्यशालामें सब प्रकार दत्तचित्त होकर काम करते हैं। उसीका फल है कि इस नवीन स्थापित औषधालयमें प्रतिमास लगभग ४००० चार हजार रोगी चिकित्सा करा कर स्वास्थ्य प्राप्त कर रहे हैं। इस छोटे नगरमें और स्वल्पकालमें इतनी संख्याका होना हमारे आयुर्वेदके प्रति लोगोंके आत्माभिमानका सर्वोत्कृष्ट प्रमाण मिल रहा है। आशा है सद्ग्रहस्थ अन्यधनी लोग भी इस कार्यमें सदाशयता दिखलावेंगे, आयुर्वेदकी उन्नतिके पथ प्रदर्शक इस औषधालयके दाताके धर्मार्थ काम मोक्षोंके साधनमें श्रीरङ्गनाथ सहायक हों।

२ आयुर्वेद वैद्यशाला और पाठशाला कुम्भकोण।

कुम्भकोण नगरमें आनरेबुल पी० के० रामानुजाचार्य प्रभृति महानुभावोंके प्रशंसनीय सदुद्योगसे गत मार्च मासमें आयुर्वैदिक औषधालय और एक वैद्यक पाठशाला स्थापित हुई है। इस विद्यालयमें विद्यार्थियोंका पठनपाठन द्राविड़ भाषामें होता है। इस विद्यालय और औषधालयको चिरस्थायी बनानेके लिये द्रव्य सञ्चय हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ श्रीचेन्नपुरी (मद्रास) आयुर्वैदिक पाठशाला और धर्मौषधालय।

इस वर्षमें इस कलाशालाकी विद्वत् परीक्षामें छः विद्यार्थियों-ने उत्तीर्ण हो आयुर्वेदभूषण नामकी उपाधि प्राप्त की है। अभी कलाशालामें २३ विद्यार्थी गण अध्ययन करते हैं। पहिले-के उत्तीर्ण हुए सब २३ विद्यार्थी आयुर्वेद भूषणकी उपाधि ग्रहण कर मद्रास, मलबार, पञ्जाब, राजपूताना आदि अनेक प्रान्तोंमें औषधालयोंमें और कितने ही स्वयं स्वतन्त्र चिकित्सा कर रहे हैं।

इस वर्ष वैद्यशालामें ही आन्ध्र भाषामें पढ़ाई करानेके लिये एक अलग विभाग श्रीमान् वैङ्कटगिरि महाराज के० सी० आई० ई० के प्रोत्साहनसे खोला गया है, इस वैद्यशालाके साथ एक बहुत अच्छा पुस्तकालय है, इस पुस्तकालयमें आधुनिक कालके मुद्रित आयुर्वेदके कला ग्रन्थ हैं और हस्त लिखित, ताल पत्रवाली काश्यप-संहिता, आयुर्वेदसूत्र आदि बहुत अच्छे अच्छे ग्रन्थ संगृहीत हैं। कलाशालाके साथ वैद्यशाला भी रखी गयी है। जिसमें विद्यार्थी लोग रोगपरीक्षा, चिकित्सा, औषधिनिर्माण करनेका अभ्यास करते हैं। औषधालयमें प्रति वर्ष १०००० दस हज़ारके ऊपर रोगियोंकी चिकित्सा होती है। इस वैद्यशाला और औषधा-लयका खर्च वैद्यरत्न पण्डित डी० गोपालाचार्लू ए० वी० एस० के मूलधनसे आयुर्वेद प्रचारिणी सभाकी निरीक्षणतामें चलता है।

वैङ्कटरमण वैद्यशाला और पाठशाला महिलापुर (मद्रास)

इस वैद्यशाला और पाठशालाका काम सामान्यतः भली प्रकार चलता है। इस वर्ष ३ विद्यार्थियोंने विद्वत् परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर आयुर्वेदविशारदकी उपाधि प्राप्त की है। हालमें ७ विद्यार्थी नवीन रीतिसे आयुर्वेदका अध्ययन कर रहे हैं। आरम्भसे १२ विद्यार्थी आयुर्वेदविशारदकी उपाधि ग्रहण कर सब लोग इस प्रान्तके नगरोंमें स्वतन्त्र चिकित्सा कर रहे हैं। इस वैद्यशाला और पाठ-शालाका व्यय निर्वाह आनरेबल कृष्ण स्वामी एय्यरके मूलधनसे होता है; और गवनमेण्ट भी इस वैद्यशालाको १००) वार्षिक सहायता करती है।

श्रीकन्यका परमेश्वरी आयुर्वेद धर्मार्थ वैद्यशाला।

श्रीमान् वैद्यरत्न पं० डी० गोपालाचार्लू ए० वी० एस्. प्रिंसि-पाल मद्रास आयुर्वैदिक कालेजकी प्रेरणा और प्रयत्नसे १६ वर्ष पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वैद्यशालाकी संस्थापना हुई थी, इसमें प्रति वर्ष करीब ६०००० साठ हज़ार रोगियोंकी चिकित्सा होती है। मद्रासमें जनरल हास्पिटलसे इस वैद्यशालाका दूसरा नम्बर है। इसका व्ययनिर्वाह कन्यका परमेश्वरी देवस्थानके धर्मादेसे चलता है और गवर्नमेण्ट इसको प्रतिवर्ष ५००) रुपये सहायतार्थ देती है।

मैसूर गवर्नमेण्ट आयुर्वैदिक कालेज।

इस कलाशालामें नियमपूर्वक यथा पूर्व पठन पाठन हो रहा है। विद्वत् परीक्षामें उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको 'आयुर्वेद-विद्वान्' की उपाधि मिलती है। इस वर्ष उत्तीर्णोंकी संख्या ६ है। इस समय कितने ही विद्यार्थी कलाशालामें पढ़ रहे हैं। इस पाठशालामें भी आंग्ल एनाटोमी, फिजियालोजी आदिका बोध कराया जाता है। इसके साथके गवर्नमेण्ट औषधालयमें प्रति वर्ष ३४००० रोगियोंकी चिकित्सा होती है और इसके सिवाय मैसूर गवर्नमेण्टकी ओरसे मैसूर राज्यमें ३० धर्मौषधालय स्थापित हैं।

आयुर्वेद पाठाशाला त्रावनकोर।

इस पाठशालामें वैद्यक ग्रन्थोंका अध्ययन मात्र होता है, त्रावनकोरकी गवर्नमेंट अपने राज्यमें ६० वैद्यक औषधालय स्थापित कर आयुर्वेदकी सेवा कर रही है। यहां (केरल देशमें) वाग्भटकृत अष्टाङ्ग हृदयकी साम्प्रदायिक चिकित्सापद्धतिके अनुसार वैद्य लोग बहुत निपुणतासे चिकित्सा करते हैं।

आयुर्वेद वैद्यशाला (रामेश्वरम्)

इस धर्मौषधालयमें दूर देशसे आये हुए अनेक रोगी यात्री भी आयुर्वैदिक चिकित्सासे रोग विमुक्ति पाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं।

आयुर्वेदवैद्यशाला वा कलाशाला कोचीन।

इसका कार्यक्रम अभी शुरू होनेवाला है, हालमें यह काम ४००००) चालीस हज़ार रुपयोंसे आरम्भ किया जायगा, आगे इसका व्यय भार कोचीन गवर्नमेण्ट ग्रहण करनेका विचार करती है। इसके सञ्चालक महाराज सहोदर राजाराम वर्मा हैं। आशा है महाराजाऽभिमानित यह कलाशाला और औषधालय शीघ्र ही आयुर्वेद-सेवा और देश-सेवा करनेको प्रस्तुत हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद प्राचारिणी सभा (रजिस्टर्ड) मद्रास ।

विशेष कर इसी वर्षमें आयुर्वेद हितैषी बहुतसे सज्जन इस सभाके सभ्य हुए हैं। इस सभाके संचालक वैद्यरत्न पं० डा० गोपालाचार्लू ए. वी. एस. महानुभाव हैं। आयुर्वेदको प्राणात्प्रिय मानने वाले उक्त महाशयने इस गतवर्षमें आयुर्वेदकी सेवार्थ मद्रास प्रान्तके ८-१० जिलोंका दौरा किया और आयुर्वेद सम्बन्धी व्याख्यान आदि देकर जनसमुदाय और वैद्य महाशयोंका आयुर्वेदके प्रति प्रेम बढ़ानेका पूर्ण प्रयत्न किया। इसके सिवाय डिस्ट्रिक्ट कानफरेंस इत्यादिसे आयुर्वेदविद्याकी अभिवृद्धि करनेके लिये गवर्नमेण्टमें प्रार्थनापत्र भेजवाये हैं।

✓ दक्षिण इण्डिया आयुर्वैदिक एण्ड यूनाननी असोसियेशन ।

इस सभामें सब वैद्य और हकीम लोग मिलकर आयुर्वेद और यूनानी हिकमतकी तरक्कीके लिये प्रयत्न करते हैं।

आर्य-वैद्य-समाज (कोटेकल, एस, मलवार)

यह समाज आयुर्वेदको उन्नतिके लिये अपने प्रान्तमें १२ वर्षसे लगातार अच्छा प्रयत्न कर रही है और प्रतिवर्ष एक वार बड़ा वैद्यसम्मेलन भी किया जाता है। मलवार प्रान्तके रईस, वैद्य और सद्गृहस्थ लोग इस समाजकी उन्नति करनेके उपायमें लगे रहते हैं।

✓ ईस्टइण्डियन मेडिकल असोसियेशन (सदर्न इण्डिया)

यह असोसियेशन आयुर्वेद और यूनानी विद्याकी अभिवृद्धिके लिये प्रयत्न कर रही है।

वैद्यक कलानिधि मद्रास ।

यह आयुर्वेदका प्रचार करने वाला द्राविड़ भाषाका वैद्यक-मासिक पत्र है। इस मासिकपत्रसे सामान्य (संस्कृतानभिज्ञ) जन समुदायमें आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान बहुत अच्छा प्रचारित होता है। इस पत्रके सम्पादक आयुर्वेद शास्त्रमें कुशल पण्डित एम० दुराई स्वामी आयङ्गर आयुर्वेद भूषण महोदय हैं।

धन्वन्तरी ।

यह केरल भाषाका वैद्यक मासिकपत्र मलवारसे निकलता है। केरल देशमें आयुर्वेदका प्रचार सफलता पूर्वक चिरकालसे कर रहा है, और इससे लोगों को बहुत लाभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद ग्रन्थ प्रचार ।

वैद्यरत्न पं० डी गोपालाचार्लु ए. वी. एस. महोदय संस्कृत भाषासे अनभिज्ञजनोंके सुगमतया बोधनार्थ और आयुर्वेदके प्रचारार्थ, चरक, सुश्रुत, इन दोनों ग्रन्थोंका आन्ध्रभाषामें अनुवाद छपवा रहे हैं और इसके पहिले माधवनिदान आदि आठ ग्रन्थोंका भाषानुवाद आयुर्वेद ग्रन्थमालामें छपवाया है और संस्कृतमें, आयुर्वेदसूत्र, आनन्दकन्द, काश्यपसंहिता, भेड़ सहिता, संशोधन कर छपवानेको तैयार कर रखा है । ये ग्रन्थ संस्कृत लिपि (नागरी) में में ही मुद्रित होंगे ।

ऊपरके इस सविस्तृत लेखसे, एतत्प्रान्तीय आयुर्वेदकी अभिवृद्धिका परिचय आप भली प्रकार पा गये होंगे और अब मैं सहर्ष अपने अन्तिम लेखसे यह बात दिखलानेकी कोशिश करता हूँ कि इससे भी बढकर आगे बहुत अच्छी तरक्की होवेगी ।

गत फर्वरी १४ को सर्वलोक प्रिय मद्रास गर्वनर श्रीमान् लार्डपेण्टलेण्ड साहेब मद्रास आयुर्वैदिक कालेज और तत्सम्बन्धी औषधालयकी काररवाई देखनेके इरादेसे उक्त आयुर्वैदिक कालेजमें पधारकर उसे अलंकृत किया । आप कालेजमें एक घंटे भर रह कर पाठ्यप्रणाली, विद्यार्थियोंके अभ्यासार्थ स्थापित औषधिनिर्माणशालाकी हरी सूखी वनस्पति, आदि, औषधिभाण्डागार, पुस्तकालय, और औषधालयको भलीभाँति फिर कर देखा और आपको जहां जहां सन्देह था वहां वहां कालेजके प्रिंसिपाल साहिबसे दरियाफ़्तकर भलीभांति विदित किया। आपको उसके देखनेसे बहुत संतोष हुआ । तदर्थ आपने कालेजकी विजिटर्स पुस्तकमें इस तरह लिखा कि, इस कालेजमें आयुर्वेदशास्त्रकी पाठ्यप्रणाली बहुत अच्छी है और इस देशके सब प्रान्तोंके विद्यार्थी देखनेसे इस कालेजकी दिन बदिन तरक्की मालूम होती है ।

गतएप्रिल मास में कलाशालाके वार्षिक महोत्सवमें सभापति स्थानापन्न राज्याङ्ग महामन्त्री आनरेबल पी० एस० शिवस्वामी ऐय्यर सी० एस० आई० ई०, सी० आई० ई०, ने व्याख्यान देते समय आयुर्वेदके विषयमें सहानुभूति प्रकट की और गत नवंबर मासमें आपने ही यूनिवर्सिटी एड्रेसमें विद्यार्थी लोगोंको हितबोधन करनेके वक्त आयुर्वेदके विषयमें वर्णित कियेवाक्योंसे भी आयुर्वेदकी अभिवृद्धिकी आशा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शासन निर्माण सभासदोंमेंसे कितनोंहीने जो प्रजाप्रतिनिधिस्थानापन्न थे उन सभ्योंकी ओरसे गवर्नमेण्टको आयुर्वेदाभिवृद्धिके लिये पूछे जाने पर गवर्नमेण्टकी ओरसे उत्तर दियागया कि काम पड़ने पर करने योग्य कार्य किया जायगा। ऐसा सन्तोषप्रद उत्तर हमारे आयुर्वेदके भावी सौभाग्यका सूचक है।

गुजरात प्रान्तीय विवरण।

बम्बईके भारतीय वैद्यमण्डलके प्रबन्धसे सन् १९१४ के मई महीनेमें जो एक अधिवेशन हुआ था, उसमें पं० जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी महोदयने पञ्चम वैद्यसम्मेलन और उसके सन्देशेपर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया था। उसमें सम्मेलनका स्वरूप, उसके नियम, उसके क्रमशः कार्य वृद्धिका विवरण, उसके संगठनकी शैली और उसके प्रति भारतीय वैद्योंके कर्तव्यपर अच्छा विवेचन किया था। इसके सम्बन्धमें आपने प्रधान कार्यालयको भी लिखा था कि यदि ऐसे महत्कार्योंपर कोई कार्यकर्ता अपनी वाहवाहीके विचारसे धींगाधींगी कर बैठे तो उसका परिणाम बड़ी संस्थाको किस प्रकार भोगना पड़ता है। मथुराके सम्मेलनमें विद्यापीठकी ओरसे कुछ योग्य सज्जनोंको उपाधिपत्र दिये गये थे; परन्तु मथुराकी स्वागतकारिणी सभाके मन्त्री चिकित्सकचूडामणि पण्डित रामचन्द्र शर्मा महोदयको उनसे सन्तोष नहीं हुआ और आपने अपनी ओरसे सम्मेलनके सभापति श्रीमान् कीर्तिकर महोदयके हस्ताक्षर कराकर एक उपाधिपत्र और बांटा * यद्यपि वैद्यसम्मेलन तथा आयुर्वेद महामण्डल और आयुर्वेदविद्यापीठका इन उपाधियोंसे कोई सम्बन्ध नहीं था तथापि पं० रामचन्द्रजीका वैद्यसम्मेलनसे घनिष्ट सम्बन्ध होनेके कारण इस विषयपर बड़ा गौगा उठा और इसके लिये पण्डित जटाशंकर जीको लोगोंका समाधान करनेके लिये बड़ा परिश्रम करना पड़ा। बड़ौदेकी आयुर्वेदप्रचारिणीसभाके उत्सवके समय श्रीयुक्त

---

*मथुरामें जो कई अनन्वित कार्यवाहियां हुई उनका यह मानों स्वर्ण कलश था। इस विषय पर कई सभासद लोग अब तक पूछपाछ कर रहे हैं और कई सभासद तो बारम्बार आयुर्वेद महामण्डलको इसका प्रत्यक्ष विरोध करनेके लिये दबा रहे हैं। परन्तु मण्डलने कई कारणोंसे इस पर प्रस्ताव और वाद विवादके रूपमें विचार करना उचित नहीं समझा तथापि ऐसे कार्योंसे उसे दुःख अवश्य होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जटाशंकर जीने बहुत उत्तम भाषण किया और सम्मेलनके कार्योंका भी दिग्दर्शन कराया। अहमदाबादकी वैद्यसभाका इस वर्ष फिर पुनरुज्जीवन हुआ और आयुर्वेदमहामण्डलसे उसका सम्बन्ध स्थापित हुआ। आपने वैद्यडाइरेक्टरीके सम्बन्धमें जो कार्य किया उसका विवरण अन्यत्र दिया गया है। आप अहमदाबादमें एक आयुर्वैदिक स्वास्थ्यनिवास (सेनिटोरियम) स्थापित करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। ईश्वर इसमें आपको सफलता देवे।

राजपूताना प्रान्तीय विवरण।

राजपूताना प्रान्तके मन्त्री पण्डित पूनमचन्द तनसुख व्यास आयुर्वेदपञ्चाननने मथुराके सम्मेलनसे लौटते ही अपने कार्यकी ओर ध्यान देना आरम्भ किया। शीघ्रतासे आपने प्रधान कार्यालयसे पत्र व्यवहार कर यह निश्चय कर लिया कि विशेष कर राजपूताना प्रान्तके मन्त्रीको किस ढङ्गसे और किस क्रमसे अपना काम करना चाहिये। आपके लिये जो आवश्यक कागजपत्र थे वे भी प्रधान कार्यलयसे भेज दिये गये। आपने अपने पाससे ही खर्च कर राजपूतानाका दौरा करना निश्चय किया। आपने समाचार पत्रोंमें राजपूताना प्रान्तके वैद्योंके लिये कई बार सूचना प्रकाशित कर उनमें जागृति और उत्तेजना उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया। आपने इस बातका भी उद्योग किया कि राजपूतानाके प्रधान प्रधान नगरोंमें कुछ वैद्योंका एक डेपुटेशन घूमे; परन्तु इस उद्योगमें आपको अन्य वैद्योंका यथेष्ट उत्तेजन नहीं मिला। उन्होंने राजपूतानेके कई वैद्यराजोंसे इस विषयमें बातचीत की और पत्रव्यवहार किया; प्रधान कार्यालयने भी उक्त प्रान्तके प्रधान वैद्योंको लिखा कि वे मन्त्री जीको सहायता पहुँचावें। कई वैद्योंने अपने अपने नगरमें सहायता पहुँचानेका वचन दिया; परन्तु बाहर जानेका अवकाश नहीं निकाल सके। आपने अपना कार्यक्रम इस ढङ्गसे करनेका संकल्प किया जिससे राजपूतानेके वैद्योंकी तैयारी एक वर्षमें ही इस ढङ्गकी हो जावे कि वे प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन कर सकें और उसका कार्य चला सकें। उनका यह भी उद्योग था कि आगामी वैद्यसम्मेलनका निमन्त्रण भी राजपूतानेके लिये किया जा सके। किन्तु दुःख है कि आपके प्रारम्भिक बन्धान जैसे बँधे थे और प्रारम्भमें बीकानेर, अजमेर, जोधपुर आदि नगरोंमें जाकर आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य आरम्भ किया था वह तत्परता स्थिर नहीं रह सकी अथवा उसके लिये आप यथेष्ट अवकाश नहीं पा सके। अजमेरके प्रायः सभी वैद्योंने और विशेष कर वैद्यराज पण्डित रामदयालु जो शर्मा और वैद्यराज कल्याणसिंह जीने आपकी सब तैयारियोंके अनुकूल कार्य करनेका वचन दिया था। सम्मति आदिके सम्बन्धमें जयपुरके आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी महोदयने भी सहायता करनेका वचनदिया था।

मन्त्रीजी ने प्रान्तिक कार्यालयकी एक कार्यकारिणी समिति बना ली थी और उसके दो तीन अधिवेशन भी हुए। उनमें प्रान्तिक कार्यालयके कार्यक्रम पर विचार हुआ करता था। यह क्रम बहुत अच्छा था और यदि मन्त्रीजीने इसे जैसे उठाया था वैसे ही अन्त तक इसे चलाते तो इसकी सफलतासे अन्य प्रान्तवालोंको उपदेश मिलता और अन्य प्रान्तके मन्त्री लोग भी अपनी सहायताके लिये ऐसी समिति स्थापित कर सकते। इस समितिकी ओरसे राजपूतानेके प्रधान प्रधान नगरोंके वैद्योंको लिखा गया कि वे अपने अपने नगरके वैद्योंकी नामावली भेजें और अपने अपने नगरमें एक एक आयुर्वेद सम्बन्धी सभा स्थापित करें। मालूम पड़ता है, इस पर वैद्योंका ध्यान जैसा चाहिये वैसा आकर्षित नहीं हुआ। केवल बीकानेरमें मन्त्रीजीके स्वयं जानेसे और बीकानेरकी कौंसिलके मेम्बर पण्डित जीवनरामजी हर्षके तत्पर होनेसे वहांके वैद्योंमें उत्साह आया। मन्त्रीजो ने वहां एक बहुत बड़ी सभा की; उसमें आपने बतलाया कि आयुर्वेदके आन्दोलनको अपनाना विशेष कर राजपूतानेका कर्तव्य है। आपका उद्योग सफल हुआ और वहां एक आयुर्वेदप्रचारिणी सभा स्थापित हो गयी। वह मन्त्रीजीकी प्रारम्भिक कार्य तत्परताका स्मारक स्वरूप अब तक चल रही है। वहां पर मन्त्रीजी को कई दिनों तक ठहरना पड़ा और उसकी जड़की मज़बूतीके आवश्यक कार्य कर लौटना पड़ा। उक्त सभामें वहांके रईस, विद्वान, प्रसिद्ध प्रसिद्ध सेठ साहूकार उपस्थित हुए थे और इस कार्यके साथ अपनी सहानुभूति दिखाई थी। बीकानेर राज्य भरमें इस सभाके सभासद बढ़ाना निश्चय हुआ। इसके मन्त्री वैद्यराज पण्डित जीवनरामजी हर्ष कौंसिल मेम्बर महाशय हैं। इस यात्रामें आपको इस बातका अनुभव हुआ कि राजपूतानेमें सफलता पानेके लिये जरा टीमटामकी आवश्यकता है। व्याख्यान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाता, चपरासी, आवश्यक रिपोर्ट और कागजपत्र, आयुर्वैदिक सभाओंके लाभ बताने वाले निबन्धोंका साथ रहना आवश्यक है। वैद्य लोग बाहरी आन्दोलनकी बातें सुन उत्साहित तो अवश्य होते हैं; परन्तु स्वयं कुछ करनेके लिये तैयार नहीं होते। इसके सिवाय परस्परके द्वेष और मनोमालिन्यके कारण एक दूसरेकी सहायता करनेके लिये कम वैद्य तैयार होते हैं। इस बातका अनुभव सर्वत्र मिलता है कि जैसे आर्यसमाज आदि अन्य सम्प्रदायके सभासद अपने अपने कामोंको चलानेके लिये धन खर्च करनेमें समय पर कंजूसी नहीं करते वैसा वैद्योंमें कहीं भी नहीं देखा जाता। वैद्योंके लिये गांठका पैसा निकालना सब जगह एक कष्टकर काण्ड प्रतीत होता है।

मन्त्रीजी ने अजमेरमें सभा स्थापित करनेका कई बार उद्योग किया किन्तु हर बार कुछ न कुछ विघ्न आड़े आये। आप जोधपुर भी गये थे और वहांके वैद्योंको आपने अपने पक्षमें भी किया था किन्तु आपको वहांसे कारण वश बहुत शीघ्र लौटना पड़ा, इसलिये वहां सभा स्थापित नहीं हो सकी। आप राजपूतानेकी स्थिति और वैद्योंमें सामयिक उत्साह लानेकी आवश्यकताके विचारसे योग्य वैद्योंको समुचित उपाधियोंसे सम्मानित करनेके विषयमें लिखते हैं—

"अवश्य ही इस प्रयत्नसे विद्वानों और अपने उद्योगसे आयुर्वेदका महत्व और गौरव बढ़ानेवाले चिकित्सकोंका एक प्रकार आदर किया जा सकेगा। जिससे उनमें तथा उनके सहयोगियोंमें औरभी आगे बढ़नेकी उत्सुकता होगी और इस प्रकार सङ्घशक्ति द्वारा आयुर्वेदकी उन्नति करने और सम्मेलनकी शक्ति बढ़ानेमें अच्छी सहायता प्राप्त होगी, इसमें सन्देह नहीं कि जिस विद्याके उपासकोंको आदर और उत्तेजन नहीं मिलता उनमें हर घड़ी मुरदनगी छायी रहती है। यूरोप जैसे आत्मकर्तव्य समझने वाले देशोंमें भी लोगोंको उपाधियों द्वारा निर्दिष्ट उद्देश्य साधनकी ओर आकर्षित किया जाता है। जहां योग्योंका आदर नहीं होता वहां योग्य बननेके लिये चढ़ा उपरी नहीं होती, उत्साहकी वृद्धि नहीं होती। नवीनोंकी जाने दीजिये पुराने भी निरुत्साही जीवन बिताते हैं। ज्ञानवृद्धिके लिये प्रतिस्पर्द्धाका तो नाम भी नहीं होता और न किसी और उपायसे आगे बढ़नेके लिये मन बढ़ता है। ऐसी दशामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगोंका सम्पूर्ण प्रयत्न किसी तरह धन कमा लेनेकी ओर रहता है, आयुर्वेद शास्त्रकी तात्विक वृद्धिकी ओर नहीं। इस प्रकार वह समुदाय इतना संकुचित बनता जाता है कि सार्वजनिक कामके लिये सहायक ढूंढ़े भी कठिनतासे मिलते हैं। इस लिये वैद्यसम्मेलनकी ओरसे भारतवर्षके कुछ योग्य सज्जनोंको प्रतिवर्ष सम्मानित करना आवश्यक है। ऐसा करनेसे आज नहीं कुछ वर्षोंके पश्चात वास्तविक लाभ दिखाई पड़ेगा।

"अवश्य ही कुछ लोग इसके विरोधी होंगे और उनकी उचित युक्तियोंका खण्डन करना भी कोई सहज काम नहीं है, फिर भी आयुर्वेदकी वर्तमान अवस्था पर ध्यान देनेसे इस बातकी आवश्यकता अवश्य प्रतीत होती है कि उपाधि प्रदानसे जितनी हानि होती है, उससे कहीं बढ़कर लाभ होता है और हुआ भी है। जिसका प्रमाण यही है कि इस समयके कार्य करनेवाले उत्साही सज्जनोंमें आधेसे अधिक ऐसे हैं जो सम्मेलन द्वारा सम्मान पाये हुए हैं। उपाधि प्रदान कार्यमें जब विचारकी कमीसे अयोग्योंका सम्मान हो जाता है तब लोग उस कार्यसे घृणा प्रकाशित करते हैं। पर एक इसी कारणसे इस कार्यको रोक देना उचित नहीं है। हम लोगोंको उचित है कि ऐसा प्रबन्ध करें कि यथाशक्य अयोग्योंका सम्मान न होने पावे। इसका यही उपाय है कि बहुत थोड़ी उपाधियाँ दी जाया करें। ऐसा विचार करते समय पक्षपात छोड़कर नीरक्षीर विवेकसे सिद्धान्त स्थिर किया जाया करे। जब तक किसीकी योग्यताका सबको विश्वास न हो जाय तब तक उसे उपाधि न दी जाय। ख़ास कर राजपूतानेकी प्रत्येक रियासतमें जो एकदो प्रसिद्ध और योग्य वैद्य हों यदि उन्हें सम्मानित किया जाय तो राज दरबार और रियासतमें वैद्यसम्मेलनके उद्देश्य प्रचारित करनेमें बड़ी सहायता पहुँचेगी।"

मन्त्रीजी राजपूतानेमें व्याख्यानों द्वारा जागृति करानेके लिये अपने पाससे द्रव्य खर्चनेके लिये तैयार थे; परन्तु इस वर्ष भी कोई योग्य आयुर्वैदिक व्याख्यानदाता नहीं मिलनेसे वह काम नहीं हो सका। वैद्य डाइरेक्टरीके लिये भी बहुत कम फार्मोंका उत्तर अहमदाबाद पहुँचा है। मन्त्रीजी दुबारा राजपूतानामें भ्रमणके लिये निकलनेवाले थे; परन्तु भिन्न भिन्न स्थानके वैद्योंसे उन्हें यथेष्ट प्रोत्साहन नहीं मिला; यहाँ तक कि लोगोंने उन्हें उत्तर भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया । इसलिये मन्त्रीजी भी निरुत्साहित हो गये । आपने भारतवर्षके वैद्योंसे और सभाओंसे लिखापढ़ी कर यह संग्रह कर छपा दिया कि ब्राह्मी कहाँ कैसी किस भाव पर मिलती है । इससे वैद्योंको ब्राह्मी मँगानेके विषयमें अच्छी सहायता मिल सकेगी ।

विहार प्रान्तीय विवरण ।

विहार प्रान्तीय मन्त्री चिकित्सक चूड़ामणि पण्डित चन्द्रशेखरधर मिश्र राजवैद्य इस वर्ष अपनी जमींदारीके काममें फँसे रहनेसे आयुर्वेदमहामण्डलका कोई काम नहीं कर सके, इसलिये रिपोर्ट भी वे नहीं भेज सके । उनके बदले विहारप्रान्तीय वैद्यसम्मेलनके मन्त्री वैद्यराज पण्डित रामावतार मिश्र महोदयने एक रिपोर्ट भेजी है और बहुत अच्छी भेजी है, जिसके लिये उन्हें धन्यवाद है । जिसमें विहार प्रान्तमें प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन होनेका वर्णन लिखा है । इसके सिवाय विहारके अन्य आयुर्वैदिक आन्दोलनोंका भी पता दिया गया है । जो हो, नियमबद्ध प्रान्तिक वैद्यसम्मेलन कर विहारप्रान्तने सब प्रान्तोंसे आगे पैर रखा है और अच्छे कार्यका सर्व प्रथम आरम्भ किया है । आशा है, अन्य प्रान्तोंमें विहारके इस सदुद्योगका अनुकरण होगा । पण्डित रामावतार जीने विहार प्रान्तके समाचारपत्रोंमें इस विषयकी सूचना छपवायी थी कि इस प्रान्तमें जहाँ आयुर्वैदिक पाठशाला तथा धर्मार्थ औषधालय हों वहाँके लोग मुझे सूचित करें; परन्तु मालूम पड़ता है, अधिक सूचनाएँ उन्हें नहीं मिली हैं । आपकी रिपोर्ट यों है:—

समस्त भारतवर्षमें इस समय आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये विविध कार्य्य हो रहे हैं ; परन्तु विहार प्रान्तके वैद्योंकी मण्डलीमें इसकी कोई विशेष चर्चा नहीं सुनी जाती ।

आयुर्वेदके कुछ प्रेमी महाशयोंने इस निद्रावस्थाको देख कर "विहार प्रान्तमें भी कुछ आयुर्वेदकी प्रतिष्ठा तथा उन्नति" के उद्देश्यसे विहार प्रान्तकी सुप्रसिद्ध संस्था "वेदरत्नविद्यालय" के वार्षिकोत्सवके समय "आयुर्वेद महामण्डल" के सुयोग्य मन्त्री श्रीयुत पण्डित जगन्नाथप्रसाद शुक्ल जीके सभापतित्वमें विहारप्रान्तीय "वैद्यसम्मेलन" का नियमानुकूल संगठन किया । उक्त समय पर विहार प्रान्तके प्रसिद्ध प्रसिद्ध आयुर्वेदकी उन्नतिके पूर्ण हितैषी प्रायः ५० वैद्यगण उपस्थित हुए, और प्रायः ५०० से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक दर्शकगण भी उपस्थित थे। उस समय सभामें अत्यन्त उत्साह और गौरवके साथ बहुत उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

सम्मेलनकी आज्ञानुसार मन्त्रीने उन प्रस्तावोंको कार्यमें लानेके लिये तथा उनको प्रतिष्ठित करनेकेलिये यथाशक्य परिश्रम किया।

(१) भारत सरकार तथा विहारसरकारके पास प्रार्थना पत्र भेजा कि:—

वैद्योंको औषधि बनानेके लिये आवश्यकतानुसार विष तथा उपविष मिला करें; तथा लैसंसदारोंको लैसंसदेते समय विष-उपविष औषधियोंका निर्खनामा भी दिया जाय।

(२) विहार संस्कृत संजीवन समाजके मन्त्री महोदयके निकट पत्र भेजा गया कि:—

अन्य प्राचीन वेद—शास्त्रोंके समान आयुर्वेदकी भी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध करें।

परन्तु अभी तक सामान्य उत्तरके अतिरिक्त स्वीकृति सूचक पत्र नहीं आया।

यद्यपि विहारप्रान्तमें आयुर्वेदके प्रेमी सहायक और वैद्योंकी संख्या बहुत अधिक है; परन्तु शोकका विषय है कि अभी तक इस प्रान्ताय सम्मेलनके केवल ३५ ही सभासद हो सके हैं। इस वर्ष इसके लिये विशेष परिश्रम किया जा रहा है और लोगोंका रुचि बढ़ती जा रही है। आशा है कि आगामि वर्ष सभासद तथा सहायकोंकी संख्या भी बहुत बढ़ जायगी।

वैद्य सम्मेलनको, समस्त वैद्यवरों, धनी, सेठ, तथा साहूकारों-का प्रतिष्ठापात्र बनाने तथा इस सम्मेलनकी अच्छी स्थिति होनेके लिये भिन्न भिन्न नगरके आयुर्वेदके प्रेमियोंसे पत्रव्यवहार हो रहा है। आशा है कि इसका सन्तोष दायक परिणाम होगा।

सम्मेलनकी आर्थिकदशा अभी बहुत साधारण है, अतः बड़े बड़े कार्य्योंके करनेमें असुविधा रहती है।

सम्मेलनने यह प्रस्ताव उपस्थित कर कि "यह वैद्यसम्मेलन, अखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके साथ सहानुभूति रखता है, और इसके साथ आयुर्वेदकी समुन्नतिके प्रयत्नोंमें सम्मिलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहनेकी आवश्यकता स्वीकार करता है" अखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनसे सम्बद्ध हो चुका है।

आशा है कि परमपिता परमात्माकी कृपासे यह सम्मेलन उक्त विराट सभाके अनुगामी होकर समस्त वैद्यवरोंका प्रतिष्ठाभाजन होगा, तथा उसके साथ साथ यह सम्मेलन भी अपने प्रान्तमें आयुर्वेदकी प्रतिष्ठाको समुन्नत कर अपने उद्देश्यको पूर्ण कर सकेगा।

विद्यालय तथा औषधालय।

गयाके निकट खरखुरा नामक ग्राममें परलोकवासी पण्डित ब्रजभूषण अवस्थी जीने तीस सहस्र वार्षिक आयकी सम्पत्तिसे एक संस्था स्थापित की है। पाठशाला विभागमें एकआयुर्वेदके भी अध्यापक हैं, जिसमें पण्डित हरदेव मिश्र वैद्य काव्यतीर्थकी नियुक्ति है। इस समय उसमें दश छात्र पढ़ते हैं। पाठशालाके साथ धार्मिक औषधालय भी है। पण्डित जगदीश मिश्र औषधि तैयार करते और रोगियोंको दवा देते हैं। गतजनवरी महीनेसे १३ नवम्बर तक ६७७६ रोगियोंको धर्मार्थ औषधि दी गयी है। एक वर्षमें १३३६) आयुर्वेदीय विभागमें खर्च होते हैं।

दूसरी प्रसिद्ध संस्था हाजीपुर (मुजफ्फरपुर) की आयुर्वेदीय एडवर्ड संस्कृत पाठशाला है। इसमें आयुर्वेदके अतिरिक्त अन्यान्य विषय भी पढ़ाये जाते हैं। इस समय १५ छात्र आयुर्वेदकी लघुत्रयी तथा बृहत्रयी पढ़ते हैं। उसका प्रबन्ध और व्ययभार वैद्यराज पं० ब्रजविहारी चतुर्वेदी तथा उनके बन्धुगण सँभालते हैं। सरकारसे भी ३०) मासिक सहायता मिलती है। इस समय चतुर्वेदी जीके भाई पं० अयोध्याप्रसाद चतुर्वेदी वैद्यके निरीक्षणमें इसकी पढ़ाई और प्रबन्ध है।

रियासत टिकारीमें महाराजाकी ओरसे धर्मार्थ औषधि बांटने तथा विद्यार्थियोंको पढ़ानेके लिये वैद्य रहते हैं। राज्यकी ओरसे सब प्रकार की दवा तैयार होती है और आवश्यकतानुसार सर्वसाधारणको धर्मार्थ दी जाती है। पाठशाला भी है; परन्तु इसका सविस्तर वर्णन विदित नहीं हुआ।

महाराज दरभङ्गाके यहां श्रीरमेश्वरलता विद्यालयमें वैद्यनियत हैं, जो पढ़ाते तथा धर्मार्थ औषधि वितरण करते हैं। इस समय इस विभागमें १० विद्यार्थी पढ़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटना जिलेके घोषवरी ग्रामके जमींदार बाबू तृप्तिनारायण सिंह जी आयुर्वेदके बहुत ही हितैषी हैं और धर्मार्थ औषधि भी बांटते हैं ।

पटना जिलेके भरतपुराके बाबू साहब भी एक धर्मार्थ औषधालय चला रहे हैं जिसमें पं० श्रीपति मिश्र जी वैद्यका कार्य करते हैं । विशेष विवरण नहीं मिला ।

वैद्य तथा उनके औषधालयोंका संक्षिप्त विवरण ।

आराके श्रीयुत् पण्डित ब्रह्मदेव नारायण मिश्र, आप अपने यहां आयुर्वेदके विद्यार्थियोंको स्वयं पढ़ाते हैं। इस समय २० विद्यार्थी पढ़ते हैं । पांच चरक, एक सुश्रुत, एक वाग्भट, शेष निदानादि पढ़ते हैं ।

आप अपने औषधलायसे गरीबोंको बिना मूल्य औषधि प्रदान करते हैं । रोगियोंकी संख्या प्रायः ५०—६० प्रति दिन रहती है । आप वैद्यकका एक उत्तम ग्रन्थ लिख रहे हैं अभी तैयार नहीं हुआ है । आपके यहां "प्राणदा" नाम प्लेगकी औषधि आविष्कृत हुई है; वर्षमें प्रायः, १०००० रोगियोंको दी गयी, यह दवा बहुत गुणकारक प्रतीत हुई है ।

श्री पं० चन्द्रशेखरधर मिश्र वगहा, चम्पारन । आप विहार प्रान्तके आयुर्वेदके उत्साही कार्यकर्त्ताओंमें मुख्य हैं । आपके औषधालयका सविस्तर विवरण गतवर्ष प्रकाशित हो चुका है । इस वर्ष विशेष वृत्तान्त ज्ञात नहीं हो सका ।

श्री पं० व्रजविहारी चतुर्वेदी, बांकीपुर-आप आयुर्वेदके सच्चे सुधारकों में से हैं । आप अपने यहाँ विद्यार्थियोंको स्वयं पढ़ाते हैं । इस समय ३ वृहत्रयी और ११ आयुर्वेदके अन्यान्य ग्रन्थ पढ़ते हैं । आपने एक औषधालय खोला है । आपके यहां प्रायः ५०—६० रोगियोंकी दैनिक संख्या रहती है । गरीबोंको दवा बिना मूल्य दी जाती है । बाँकीपुरमें सैकड़ों डाक्टरोंके होते हुए भी आपने अपने परिश्रमसे आयुर्वेदकी अच्छी प्रतिष्ठा स्थापित की है ।

आयुर्वेदीय औषधालय, मुस्तफापुर ।

यह बहुत ही प्राचीन औषधालय है । दानापुर, तथा इसके आसपासके प्रायः धनी पुरुषोंके यहां औषधिका व्यवहार रहता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्प्रति इस औषधालयकी इतनी प्रतिष्ठा हो गयी है कि इस जगहके क्या धनी और क्या गरीब कोई भी डाक्टरी दवा करानेकी इच्छा तक नहीं करते। प्रातःकाल पचास ६०से अधिक रोगियोंकी भीड़ रहती है।

रोगियोंको विना मूल्य दवा दी जाती है, मूल्य देना उनकी इच्छा पर निर्भर है। जो बहुत गरीब हैं, उनको स्थान भोजनका भी प्रबन्ध कर दिया जाता है। औषधियोंका मूल्य बहुत ही न्यून लिया जाता है। यदि कोई डाक्टर यहां दवा करना चाहते हैं तो बिना इसका अनुकरण किये कभी फलो भूत नहीं होते।

दमेकी दवा—इस औषधालयमें प्रायः ५ वर्षसे प्रत्येक रविवारको दमेकी दवा विना मूल्य दी जाती है। प्रायः प्रत्येक रविवारको १०—१५ मनुष्य इसका व्यवहार करते हैं। यह दवा बाहर भी टिकट भेजने पर बिना मूल्य ही भेजी जाती है। अबतक प्रायः तीन सौके लगभग रोगी इस दवासे आराम हुए।*

सञ्जीवनी बूटी—इस औषधालयसे यह सर्व रोगकी अव्यर्थ दवा आविभूत हुई है। प्रायः चार वर्षसे इसका प्रचार होरहा है। प्रायः १०० सर्पदष्ट मनुष्योंकी दवा औषधालयसे की गयी और वे आरोग्य हुए। मनुष्यका श्वास चलता हो तब तक इस दवा का व्यवहार किया जाय तो कभी नहीं मरता। बाहर दवा बराबर भेजी जाती है। और सब जगह से अव्यर्थताकी सूचना आती है*

आर्वेयुदीय ग्रन्थोंका अध्ययन तथा रस उपरस उपविषकी क्रियादिकी भी शिक्षा दी जाती है। आठदश विद्यार्थी यहांसे शिक्षा पाकर चिकित्साका कार्य कर रहे हैं।

मुस्तफापुर में "वैद्यरत्न विद्यालय" प्रायः ३ वर्षोंसे स्थापित है। उसमें इस समय प्रायः साठ ७० विद्यार्थी हैं। सबोंकी चिकित्सा तथा औषधि बिना व्यय इसी औषधालयसे की जाती है। एक आयुर्वेदका बहुत उपयोगी प्राचीन तथा नवीन परीक्षित औषधियों संग्रह तैयार किया गया है।

श्री पं० शिवचन्द्र मिश्रजी काव्यतीर्थ मुजफ्फरपुर।

आप आयुर्वेदकी उन्नतिके बड़े उत्साही और अक्लान्त परिश्रम करने वाले हैं। आप अपने यहां विद्यार्थियोंको आयुर्वेदाय

*सार्वजनिक उपकारकी दृष्टिसे ऐसी औषधि वैद्योंके जाननेके लिये प्रकाशित कर देनी चाहिये। मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ पढ़ाते तथा औषधि करते हैं। मुजफ़्फ़पुरमें आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपके औषधालयका नाम शारदा औषधालय है।

श्री० पं० गङ्गाधर मिश्रजी वैद्यराज आप गयाके आयुर्वेदके सच्चे ज्ञाता और आयुर्वेदकी उन्नतिके अनन्य प्रेमी हैं। आप इसके प्रचारमें सदादत्तचित्त रहते हैं। आपने एक "धन्वन्तरीय औषधालय" स्थापित किया है। उसमें गरीबोंको विना मूल्य दवा दी जाती है। आप तथा आपके औषधालयकी गयामें अच्छी प्रतिष्ठा है।

श्रीनैामीलालदेवजी वैद्यरत्न नदपुरा पटना—आप आयुर्वेदके ग्रन्थोंके अच्छे ज्ञाता तथा सर्वप्रकारकी शास्त्रीय औषधियोंको तैयार करते हैं। आपके यहाँ एक औषधालय है। जिसका नाम "शास्त्रीय औषधालय" है। प्रायः रोगियोंकी संख्या ३००० वार्षिक रहती है। आपने अपने आसपासके गावोंमें आयुर्वेदकी अच्छी प्रतिष्ठा दिखलाई है। आप आयुर्वेदकी उन्नतिके सच्चे अभिलाषी हैं और उसके लिये यथाशक्ति तन, मन, धनसे सहायतार्थ उद्यत हैं।

श्रीयुत पण्डित नवनीत मिश्रजी तथा श्रीयुत पण्डित भुनेश्वर मिश्रजी भी आयुर्वेदकी चिकित्सा तथा इसकी उन्नतिके अभिलाषी हैं।

औरङ्गाबाद निवासी श्री० पं० विश्वनाथ मिश्र जी आयुर्वेदके अच्छे विद्वान् हैं। आपके यहाँ १० विद्यार्थी इस समय शिक्षा पाते हैं। दरभङ्गाके श्री० पं० घनश्याम शर्मा जी विहारमें आयुर्वेदके अच्छे विद्वान् तथा चिकित्सक हैं। आप प्रान्तीय सम्मेलनके उत्साही कार्यकर्त्ता तथा आयुर्वेदकी उन्नतिमें दत्तचित्त हैं।

श्री पण्डित घनश्याम शर्मा जी विहारमें आयुर्वेदके अच्छे विद्वान तथा चिकित्सक हैं। आप प्रान्तीय सम्मेलनके उत्साही कार्यकर्ता तथा आयुर्वेदकी उन्नतिमें दत्तचित्त हैं।

आयुर्वेदीय औषधिपर सर्वसाधारणताका विचार।

पूर्वके वृतान्तोंके अवलोकनसे आप अनुभव कर सकते हैं कि आयुर्वेदकी प्रतिष्ठा सर्वसाधारणमें कैसी है। विशेषता यह है कि विहारके सर्वसाधारणका झुकाव अधिकतर आयुर्वेदीय औषधिकी ही ओर है। यहाँ जिन राजा महाराजा तथा जमींदारोंके यहां धर्मार्थ दवा दी जाती है, सर्वत्र इसीको अपनाया गया है। परन्तु शस्त्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याके प्रचार न होनेसे हटात् लोगोंको डाक्टरोंकी शरण लेनी पड़ती है; और उसके संयोगवश उनका शिष्य भी लोगोंको बनना पड़ता है। आयुर्वेदमहामण्डलका संगठन, इसकी नियमावली देख कर सर्वसाधारण आशावान् हैं कि उसके नियमानुसार वैद्यक-विद्याका सुधार शीघ्र होगा।

१० विहारप्रान्तमें "आयुर्वेदमहामण्डल" के उद्देश्योंका प्रचार किस प्रकार होगा।

इस प्रान्तमें राजा महाराजा तथा सर्वसाधारणमें आयुर्वेदीय चिकित्साका बहुत ही समादर है। कुछ दिनों तक "महामण्डल" के उद्देश्योंका ख़ूब प्रचार किया जाय तथा "वैद्यकसम्मेलन" का बराबर समारोहके साथ वार्षिकोत्सव होता रहे तथा "महामण्डल" इस कार्यमें सहायता देता रहे तो आशा है कि इस प्रान्तमें आयुर्वेदके प्रेमी तथा तत्वज्ञ बहुत ही शीघ्र इसके सुधारमें तत्पर हो जायगे। विहारमें जो नवीन विश्वविद्यालय स्थापित होने वाला है उसमें सरकार आयुर्वेदकी शिक्षा भी देनेका प्रबन्ध कर रही हैं। इसमें सरकारसे भी बहुत कुछ सहायता मिलनेकी आशा है। परमपिता परमात्मासे यही प्रार्थना है कि इस सम्मेलनकी स्थितिको द्रढ़ कर, इस दीन हीन आयुर्वेदको पुनः पूर्व गौरवको प्राप्त करावें।

बम्बईका विवरण।

बम्बई प्रान्तीय मन्त्री आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित यादव जी त्रीकमजी आचार्य ने इस वर्ष बम्बईमें आयुर्वेदमहामण्डलके उद्देश्योंका प्रचार करनेमें अच्छा परिश्रम किया। आपकी सम्मति है कि निखिल-भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनके उद्देश्योंका प्रान्त प्रान्तमें प्रचार करनेके लिये भिन्न भिन्न भाषाभाषी प्रान्तोंका एकएक अलग सम्मेलन हो। तदनुसार आपने मराठी और गुजराती भाषाभाषियोंके सम्मेलन अलग करनेका प्रयत्न किया है। अभी तक यद्यपि यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ तथापि आशा है कि आगामी वर्ष गुजरातियों और महाराष्ट्रोंके प्रान्तिक सम्मेलन हो सकें। बम्बई प्रान्तके आबकारीके अफ़सरोंने आसवअरिष्टों पर जो लैसंस लगानेका उद्योग किया था उसके लिये मन्त्री जीने बड़ा उद्योग किया और उद्योगका जो फल हुआ उसका वर्णन अन्यत्र दिया गया है इस वर्ष बम्बईमें एक ऐसा दल दिखाई पड़ा जो अपना प्रभाव बढ़ानेके लिये आयुर्वेदमहामण्डलके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयमें कई झूठी सच्ची बातें फैलाकर उसके विषयमें लोगोंको सन्दिग्ध करनेका उपक्रम किया था और उसने विद्यापीठके उपाधि वितरणको सबसे आगे किया था। इसके लिये पण्डित यादव जीने सार्वजनिक वैद्यक सभामें व्याख्यान दिये और लोगोंका भ्रम निवारण किया। अभी यहां कलकत्तेमें आकर आपने स्वागतकारिणीके सदस्योंका परस्पर मनोमालिन्य दूर कर सबको मिलाने और यों मिलकर सम्मेलनको प्रभावशाली बनानेके लिये कई दिनों तक जो परिश्रम किया है, उसका संवाद आप सब लोगोंसे छिपा नहीं है। आपने अपनी जो वार्षिक रिपोर्ट भेजी है वह नीचे दी जाती है :—

√१—बम्बई शहरमें दो आयुर्वेदीय सभा विद्यमान हैं। १ वैद्यसभा २ भारतीयवैद्यमण्डल। पहलीकी स्थापना आजसे २५ वर्ष पहले हुई है, उसके स्थायी अध्यक्ष श्रीमान् डा० देशमुख बी० ए० एम० डो० हैं। दूसरीकी स्थापना डेढ़ वर्ष पहले हुई है। उसके स्थायी अध्यक्ष वैद्यराज पोपट प्रभुराम एल० एम० एस० हैं दोनों सभा बड़े उत्साहसे अपना कार्य कर रही हैं।

२—बम्बईमें आयुर्वेदीय विद्यालय दो हैं। १ आयुर्वेदविद्यालय इसकी स्थापना आजसे १५ वर्ष पहले स्व० वा० वैद्यराज प्रभुराम जीवनरामने की है। इसमें डाक्टरीके प्रायः सब विषय और वाग्भट-अष्टांग हृदय सिखलाया जाता है। इसको जोड़ कर एक धर्मार्थ औषधालय तथा रुग्णालय भी है। इसमें मुख्य व्यवस्थापक वैद्यराज पोपट प्रभुराम एल. एम. एस. हैं। इसमें सब अध्यापक डाक्टर और वैद्य अवैतनिक कार्य करते हैं। इसका स्थायीकोष एक लक्ष रुपयेके अन्दज है।

दूसरा आयुर्वेदीयविद्यालय कोट संस्कृत पाठशालाको जोड़कर है। इसमें चरक-सुश्रुत-धन्वन्तरीयनिघण्टु ये ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। इसके अध्यापक श्रीयुत पण्डित प्राणजीवन हरिहर शास्त्री हैं; और स्थायी-परीक्षक वैद्य पं० यादव जी त्रीकम जी आचार्य हैं। इसमें दश विद्यार्थी तक प्रतयेकको ६-८ रुपये मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है। उसके सब व्ययका निर्वाह बम्बईके धर्मनिष्ठ और आयुर्वेदप्रेमी श्रीमान सेठ देवकरण नान जी देशाई चलाते हैं।

इसके अतिरिक्त श्रीयुत स्वामी युक्तानन्द जी भिषगरत्न. वैद्यराज आपा शास्त्री साठे, वैद्यराज पण्डित हरिप्रपन्न जी, राजवैद्य बालाशङ्कर बावा भाई, वैद्यराज़ वासुदेव शास्त्री ऐनापुरे, वैद्य यादव जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रीकम जी आचार्य आदि वैद्यमहोदय अपने घर पर छात्रोंको आयुर्वेदकी शिक्षा देते हैं।

बम्बईमें चार धर्मार्थ आयुर्वेदीय औषधालय हैं, एक आयुर्वेद-विद्यालयको जोड़ कर है। इसका व्यय निर्वाह बम्बईके स्व० वा० भाटिया गृहस्थ श्रीमान् दयाल भीमजीके निकाले हुए चालीस हजार रुपयेके सूदसे चलता है। इसके व्यवस्थापक वैद्यराज पोपट प्रभुराम एल० एम० एस० हैं। दूसरा बम्बईके कपड़ेके व्यापारियों-की मण्डलीकी तरफसे और उसके खर्चसे चलता है। वैद्य गण-पत त्र्यंबक लावगणकर इसके चिकित्सक हैं। तीसरा बम्बईके सुप्रसिद्ध बालकृष्ण मन्दिरवाले गोस्वामीवर्य वल्लभ सम्प्रदायाचार्य श्री १०८ गोकुलनाथजी महाराजके व्ययसे उन्हींके मन्दिरमें चलता है। इसके चिकित्सक श्रीमान् प० छन्नूलालजी वैद्यराज हैं। चौथा धर्मार्थ औषधालय बम्बई वैद्यसभाकी तरफसे चलता है। उसके चिकित्सक आयुर्वेदभूषण वैद्यराज त्र्यबकलाल त्रिभुवन मुनि तथा आ० भू० वैद्यराज त्रिभुवनरामजी शर्मा हैं।

बम्बईसे आयुर्वेदीय मासिक-पत्रोंमें संस्कृत भाषामें "आयु-र्वेदीय ग्रन्थमाला" निकलती है। वह इस वर्षसे मासिक रूपसे निकलना बन्द करके सम्पूर्ण ग्रन्थोंके आकारमें निकलना आरम्भ हुई है। दूसरा मासिक-पत्र मराठीमें "आयुर्वेद" नामक इस वर्षसे श्रीयुक्त वैद्य दामोदरकेतकर निकालने लगे हैं।

बम्बईमें आज तीन वर्षसे जामनगरके सुप्रसिद्ध स्वर्गीय राजवैद्य श्रीमान् झण्डू भट्टजीके पौत्र श्रीयुत वैद्यराज जुगतराम जीने विदेशीय बाष्प सञ्चालित यन्त्रोंकी सहायतासे चूर्ण-वटिका-टीकडियाँ अवलेह-रसक्रिया-आसव-घृत-तैल आदि आयुर्वेदीय भेषज-प्रयोग तैयार करनेका बड़ा कारखाना निकाला है। ऐसे कारखाने-इस समय भारतवर्षमें बड़ी जरूरत है। इस त्रुटिकी पूर्ति श्रीयुत वैद्यराज जुगतरामजीने करके आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति और चिकित्सकों पर बड़ा उपकार किया है। यह कारखाना अवश्य वैद्योंको आश्रय देने योग्य है।

महाराष्ट्र प्रान्तीय विवरण।

महाराष्ट्र प्रान्तीय मन्त्री वैद्यपञ्चानन पण्डित कृष्णशास्त्री कवड़े बी० ए० ने इस वर्षसमाचारपत्रोंके द्वारा अच्छी जागृति रखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय समय पर आप आयुर्वेदमहामण्डलके संवाद समाचारपत्रोंमें छपाते रहे। आपके तथा पूनेके अन्य वैद्योंके उद्योगसे वहां "वैद्यक-मण्डल" स्थापित हुआ है, वह आयुर्वेदकी जागृतिके लिये बहुत कुछ काम कर रहा है। उसके द्वारा एक धर्मार्थ औषधालय और एक आयुर्वैदिक पाठशाला चल रही है; उसकी भी अधिकांश व्यवस्था आपके और प्राणाचार्य बाळशास्त्री लागवणकर महोदयके जिम्मे है। विहारके समान बम्बईकी सरकार भी पूनेमें एक संस्कृत विद्यालय खोलना चाहती है, इसके लिये आयुर्वेदमहामण्डल और पूनेके वैद्यक-मण्डलने उद्योग किया है कि उसके साथ आयुर्वेदका भी विभाग रहे। इस वर्ष बम्बई प्रान्तकी राजनैतिक परिषद सतारा शहरमें हुई थी, उसमें भी यह विषय उठा था; और इसका एक स्वतन्त्र प्रस्ताव उपस्थित किया गया था। प्राणाचार्य बाळशास्त्री लागवणकरने इस विषय पर बहुत ही जोरदार व्याख्यान दिया। सताराके डाक्टर भिडेने भी हृदयसे इसका अनुमोदन किया और पण्डित कृष्णाशास्त्री कवड़ेने भी उसकी आवश्यकता भरपूर समझा दी। अतएव प्रस्ताव हुआ कि सरकार संस्कृत कालेज़के साथ आयुर्वेदका भी विभाग रखे और उसमें प्रयोग सहित आयुर्वेदकी शिक्षा देने की व्यवस्था करे। उसके साथ आयुर्वेदीय रुग्णालय और बनौषधि उद्यान रख-नेकी भी व्यवस्था करे, औषधियां बनानेका अनुभव प्राप्त करनेके लिये प्रयोगशाला और रसशाला रखे। परिषदमें इस विषय पर भी चर्चा उठी कि प्रत्येक म्युनिसिपलिटी और लोकलबोर्ड अधिक नहीं तो जिले पीछे एक एक आयुर्वेदीय औषधालय खोलें। इस विषयमें आयुर्वेदमहामण्डलने भी जो उद्योग किया है उसका विवरण अन्यत्र दिया गया है।

आपकी सम्मति है कि सम्मेलनके साथ जो प्रदर्शिनी हुआ करती हैं, वे केवल पदार्थ दिखानेवाली दूकानें न रहें बल्कि उनके द्वारा कुछ उपयोगी कार्य साधन भी होना चाहिये। प्रदर्शिनीके साथ कुछ ऐसी उपसमितियां बनें जो प्रदर्शिनी निरीक्षण कर भिन्न भिन्न विषयों पर कुछ सिद्धान्त स्थिर किया करें। प्रदर्शिनीमें जो पदार्थ आवें उनमें उनका पूरा विवरण और सिद्ध पदार्थों की प्रस्तुत प्रणाली तथा उनके उपकरण साथही लिखे या छपे टंगे रहें। जिससे भिन्न भिन्न उपसमितियों द्वारा यह निश्चित किया जासके कि ग्रन्थोक्त पाठके अनुसार औषधियों तैयार करनेके लिये कौन कौन साधन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान हैं और किनके प्राप्त करनेका प्रयत्न करना चाहिये। यह भी निश्चय होना चाहिये कि धातूपधातुकी शुद्धि करते समय जो संस्कार करने पड़ते हैं वे इस समय भी पहलेके समान ही करने चाहिये अथवा अन्य नये साधन भी उपयोगी हो सकते हैं? पहले जिस स्थितिमें धातु उपधातु मिलती थीं, उस स्थितिमें इस समय वे नहीं मिलती। रसायनशास्त्रकी दृष्टिसे यदि शुद्ध धातु लें तो गुणाधानके लिये उन धातुओंके संस्कार करना हो तो कौनसे करने चाहिये। पारदपर जो अठारह संस्कार किये जाते हैं उनमेंसे दोष निराकरणके लिये कौन और गुणाधानके लिये कौन हैं? रसायन-शास्त्रकी दृष्टिसे इस समय शुद्ध पारा मिल सकता है, यदि उसका व्यवहार किया जाय तो गुणोंमें कुछ अन्तर पड़ेगा अथवा नहीं? इत्यादि।

महाराष्ट्र प्रान्तकी काम करनेवाली आयुर्वैदिक-संस्थाओंमें पूनेका वैद्यकमण्डल सर्व प्रसिद्ध है। पूनेके समान वाई (ज़िला सतारा) स्थानमें भी वैद्यक-मण्डल स्थापित हुआ है। महाराष्ट्रके वैद्यकपत्रोंमें पूनेकी "वैद्यक-पत्रिका" साप्ताहिक चल ही रही है, अब थाना ज़िलेके कल्याण स्थानसे "आर्य वैद्यक बोध" नामका एक साप्ताहिक पत्र और भी निकला है। सोलापुरसे "भिषग्विलास" नामक मासिक पत्र पहलेसे ही निकल रहा है; इस वर्ष बम्बईसे "आयुर्वेद" नामका एक और मासिकपत्र निकला है। पहलेमें अँग्रेज़ी ढङ्गकी वैद्यक चर्चा रहती है और दूसरेमें शुद्ध आयुर्वैदिक आन्दोलन मचाया जाता है।

पुस्तकोंमें कानपुर कृषि-कालेजके प्रोफेसर दामलेने "वन-स्पति विचार" नामकी वनस्पति शास्त्र पर पुस्तक लिखी है। पूनेके श्रीयुक्त फणशेने "नाड़ीशास्त्र" नामकी बढ़िया पुस्तक तैयार की है। प्रसूतिकाका उपचार कैसे करना चाहिये इस विषय पर वैद्यकपत्रिकामें जो लेखमाला आयी थी वह पुस्तक रूपमें प्रकाशित हो रही है। वैद्यकपत्रिका कार्यालयसे "धातुरत्न" नामक छोटी पुस्तक और भी प्रकाशित हुई है। बम्बईके निर्णयसागर प्रेससे डल्लन टीकाके सहित सुश्रुत प्रकाशित हो रहा है; यही प्रेस चक्रदत्त टीकाके सहित चरकसंहिता भी प्रकाशित कर रहा है।

पूनेमें बाळशास्त्री लागवणकरका आयुर्वेदविद्यालय चल ही रहा है। इसमें जो विद्यार्थी तैयार होते हैं। वे वेदशास्त्रोत्तेजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभाकी परीक्षा द्वारा अथवा आयुर्वेदविद्यापीठ आदि अन्य परीक्षाओं द्वारा परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुआ करते हैं। इसी विद्यालयके विद्यार्थी श्रीयुक्त गणेश त्रिम्बक जोशी वेदशास्त्रोत्तक सभाकी तीनों परोक्षा उत्तीर्ण कर बड़ोदेको परोक्षामें भी उत्तम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए हैं; जिससे उन्हें "वैद्यभूषण" की उपाधि मिली है। इसके सिवाय "मराठी वैद्यक वर्ग" नामसे जो संस्था चल रही है, उसका विस्तृत विवरण गत वर्ष छापा ही गया है। सतारामें भी कई वर्षसे "आयाँग्ल वैद्यकशाला" नामकी संस्था चल रही है और अपनी शक्तिके अनुसार काम कर रही है। बेळगाँवके पण्डित गोपाळ वामन गोडबोले आयुर्वेदके लिये बड़ा परिश्रम कर रहे हैं। पूनेके प्राणाचार्य बाळशास्त्री लागवणकर महाराष्ट्र वैद्योंके शिरोभूषण हैं। महाराष्ट्रके सुयोग्य वैद्योंको आयुर्वेदविद्यापीठ यदि सम्मानित करता रहे तो उनमें काम करनेका उत्साह अधिक बढ़ेगा।

मध्यप्रदेशका विवरण।

मध्यप्रदेशके मन्त्री महोदय सूचित करते हैं कि "मध्यप्रदेशमें आयुर्वेद सम्बन्धी कोई विशेष कार्य नहीं हो रहा है।" तथापि मालूम पड़ता है कि यदि इस विषयमें उद्योग किया जाय तो लिखने योग्य कुछ समाचार अवश्य मिल सकेगा। खैरागढ़ रियासतमें पण्डित मनमोहनप्रसाद जी राजवैद्य अच्छा काम कर रहे हैं। रायगढ़ रियासतमें पण्डित नारायणप्रसाद जी दीक्षित राजासाहबकी चिकित्साके साथ ही सर्वसाधारणको भी आयुर्वैदिक चिकित्सासे लाभ पहुँचा रहे हैं। यदि इन दोनों स्थानोंके नरेश अपने यहां अस्पतालके समान एक एक आयुर्वैदिक औषधालय भी खुलवा दें तो सर्वसाधारणका बड़ा उपकार हो। प्रारम्भमें यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी डिसपेंसरीके साथ ही एक एक वैद्यकी व्यवस्था कर देनेसे और उसके लिये आवश्यक द्रव्यकी स्वीकृति कर देनेसे काम चल सकेगा। बिलासपुरके पण्डित ताराचन्द दुवे तथा पण्डित नारायणप्रसाद जी आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये प्रयत्नशील हैं। आप इस बातका उद्योग कर रहे हैं कि यहां एक धर्मार्थ औषधालय खुलवाया जाय। जबलपुरमें पण्डित गोविन्दप्रसाद जी शास्त्री और पण्डित रामभजन शर्माके उद्योगसे हितकारिणी हाई स्कूलमें आयुर्वेदकी शिक्षाका भी एक छोटा विभाग खुला है। उसमें पण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोविन्दप्रसाद जी शिक्षा देते हैं। अमरावतीमें पण्डित पण्ढरीनाथ मुले और बहरानपुरमें पण्डित हरिप्रसाद मिश्र आयुर्वेदके प्रभावकी वृद्धि कर रहे हैं। सागरके वैद्यराज देशाई धर्मार्थ औषधि बांटनेमें अग्रगण्य हैं। वैद्यराज पं० धरणीधर जी शर्मा और वैद्यराज श्रीयुक्त भालचन्द्र नवाल्थे जी के द्वारा भी वहां आयुर्वैदिक चिकित्साका अच्छा प्रचार है। मण्डलामें श्रीयुक्त पं० गयाप्रसाद पाठक आदिके द्वारा एक एडवर्ड पाठशाला चल रही है उसमें आयुर्वेदकी भी शिक्षा दी जाती है। हुशंगाबादके श्रीयुक्त ब्रह्मचारी जी धर्मार्थ औषधि प्रदान कर वहां वालोंका अच्छा उपकार कर रहे हैं।

मध्यभारतका विवरण।

मध्यभारतके मन्त्री चिकित्सक चूडामणि पण्डित वाल्मीकि शर्मा राजवैद्य जीने अपने प्रान्तकी कोई रिपोर्ट नहीं भेजी; परन्तु आप स्वयं आयुर्वेदकी अच्छी सेवा कर रहे हैं। श्रीमान् रीवां नरनाथके साथ रहते हुए आप जङ्गल पहाड़ोंका भ्रमण किया करते हैं और जहाँ जाते हैं वहाँ दवाइयोंकी भी ढूंढ खोज किया करते हैं। इस प्रकार आपने कितनी ही लुप्तप्राय औषधियोंकी खोज की है। कामराज, भोजराज, बलराज आदि सप्तराज औषधियोंके विषयमें आपने खोज की है। निघण्टुग्रन्थोंमें कहीं इन नामोंका पता नहीं लगता; परन्तु इन औषधियोंके प्रयोगका फल प्रत्यक्ष देखा जाता है। इसलिये आप उनके विषयमें इस सिद्धान्त पर आये हैं कि हो न हो ये औषधियाँ अष्टवर्गमें से हों। आपने वायु रोग पर व्याघ्रादि तैल और रीवाँ नरनाथके नाम पर वेंकटेश तैल तैयार किया है। वह रीवाँके सरकारी स्टेशनरीस्टोर्ससे सर्वसाधारणके लाभके लिये मोल भी मिलता है। आपके यहाँ रोगियोंका रजिस्टर रहता है, जिससे आप इस बातको प्राप्त करते रहते हैं कि किस रोगमें कौन दवा किस श्रेणी तक लाभ पहुंचाती है। श्रीमान् रीवाँ नरेशका ध्यान भी आयुर्वेदकी ओर आकार्षित हुआ है और आप इस बातके इच्छुक हैं कि आयुर्वेदका एक साङ्गोपाङ्ग कालेज होना चाहिये और आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये विधिवत प्रयत्न होना चाहिये। मध्यभारतमें रीवाँ, बुन्देलखण्डके कई रजवाड़े, तथा ग्वालियर, इन्दौर, भूपाल, रतलाम, आदिके रजवाड़े हैं; परन्तु कहींके भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्योंमें आयुर्वैदिक आन्दोलनोंमें सहायक होनेका उत्साह नहीं है। इधर रीवाँके बाल्मोकि जी और उधर इन्दौरके पण्डित गणेशदत्त जी तथा पं० ख्यालीराम जी और पण्डित सूर्यनारायणजी राजवैद्य और उज्जैनके पं० परशुरामजी तथा सोहावलके वैद्यराज अयोध्याप्रसाद प्रयागदत्तजी प्रभृतिका ध्यान सम्मेलनकी ओर अवश्य आकर्षित हुआ है। बघेलखण्डके सोहावलके श्रीमान् राजा साहब और श्रीमान् नागोद नरेश आयुर्वेदके अच्छे प्रेमी हैं और उसका अभ्यास भी करते हैं तथा औषधियाँ तैयार कर वितरण करनेका भी आपको शौक है। श्रीमान् अजयगढ़ नरेश भी आयुर्वेदके प्रेमी और ज्ञाता सुने जाते हैं; परन्तु आयुर्वेदमहामण्डलने जब जब आपके पास पत्र भेजा तब तब आपने उसका उत्तर तक नहीं दिया। मालूम पड़ता है आप अपने प्रेमको अपने राज्यके भीतर ही सुरक्षित रखना चाहते हैं। उज्जैनके पण्डित परशुराम जी एक उद्योगी और उत्साही सज्जन हैं। आपने वैद्योंको इस विषयका कई बार परामर्श दिया है कि वे रोगियोंका रजिस्टर रखा करें। इन्दौर राज्यमें कई वर्ष पहले तक स्थान स्थानमें सरकारी वैद्य नियुक्त रहा करते थे और वे सर्वसाधारणको आयुर्वैदिक औषधियाँ वितरण किया करते थे परन्तु अब वहाँ वैद्योंका बहिष्कार हो गया है। जहाँ सुविधा हैं वहाँ केवल डाक्टरोंकी ही नियुक्ति है। इन्दौर राज्यके वैद्योंको इस बातका प्रयत्न करना चाहिये कि उनका पहलेका हक बहाल किया जाय। बड़े बड़े नगर और कसबोंमें स्वन्तत्र आयुर्वैदिक डिसपेंसरी खोली जावें और देहातोंमें जहाँ स्वतन्त्र वैद्यकी नियुक्ति नहीं हो सकती, वहाँ जहाँ तहाँ वैद्योंको सहायता देकर इस कार्यका सम्पादन किया जाय और कुछ ऐसे भी वैद्य रखें जावें जो राज्यमें घूम कर लोगोंको औषधि देते रहें। ग्वालियर राज्यमें आयुर्वेदकी ऐसी कुछ अधिक प्रतिष्ठता तो नहीं है; परन्तु खास लश्करमें श्रीमान् ग्वालियर नरेशने एक धर्मार्थ औषधलय खोला है, जिसका काम एक प्रवीण वैद्यकी देख रेखमें हो रहा है। इन्दौर ग्वालियर जैसे विशाल राज्योंमें आयुर्वेद सम्बन्धी और भी अधिक प्रभावशाली काम देखनेकी हम इच्छा रखते हैं। भूपाल, रतलाम, जावरा, पन्ना-छतरपुर, चरखारी आदि रियासतोंमें आयुर्वेदकी क्या स्थिति है, इसकी खबर हमें कुछ नहीं मिली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बङ्गाल–संयुक्तप्रान्त और पञ्जाब।

संयुक्तप्रान्तके प्रान्तीय मन्त्री पण्डित सूर्यप्रसादजी वाजपेयीने स्वयं इस प्रान्तमें आयुर्वेदके लिये क्या किया है और प्रान्तकी आयुर्वैदिक रिपोर्ट संग्रह करनेके लिये उन्होंने क्या उद्योग किया है इस विषयका हमें कुछ पता नहीं है। आपकी हमारे पास न कोई रिपोर्ट आयी और न ऐसा कोई पत्रव्यवहार ही है जिससे हम रिपोर्टका कुछ मसाला छांट सकें। पञ्जाब प्रान्तीय मन्त्री पण्डित गणपति शर्मा जीका परलोकवास हो गया। इसके पश्चात हमने पञ्जाबके दो तीन वैद्यराजोंसे निवेदन किया कि अपने प्रान्तकी आयुर्वैदिक स्थिति पर वे कुछ लिख कर भेजें; परन्तु किसीने भी यह कष्ट स्वीकार नहीं किया। इस लिये इन दोनों प्रान्तोंके वैद्यकपत्रों, पाठशालाओं और औषधालयोंके सम्बन्धमें हमें जो कुछ मालूम है वह अन्यत्र भिन्न भिन्न स्तम्भोंमें लिखेंगे। बङ्गालप्रान्तके मन्त्री कविराज ज्ञानेन्द्रनाथ सेन बी० ए० महोदयने भी अपने प्रान्तकी कोई रिपोर्ट नहीं भेजी; किन्तु आपके कर्तव्यका नमूना इस सम्मेलनके रूपमें ही आप लोग देख रहे हैं।

नोट—प्रान्तीय रिपोर्टोंकी आदि भूमिकामें लिखा गया है। कि मद्रास प्रान्तके सिवाय अन्य प्रान्तके मन्त्रियोंने विधिवत रिपोर्ट नहीं भेजी। किन्तु इसमें हमारी भूल है। गुजरात और बम्बई प्रान्तके मन्त्रियोंकी भी रिपोर्ट आयी है। बम्बई प्रान्तकी रिपोर्ट योग्य स्थानपर सम्मिलित है। और गुजरात प्रान्तीय रिपोर्टके कुछ अंश भिन्न भिन्न स्थलोंमें सङ्कलित कर लिये गये हैं। शेष नीचे परिशिष्ट रूपसे देते हैं:—

गुजरात प्रान्तीय विवरण।

(परिशिष्ट)

धर्मार्थ औषधालय।

इस प्रान्तमें धर्मार्थ औषधालय अनेक हैं; किन्तु उनमेंसे अधिक औषधालयोंमें डाक्टरी औषधियोंका उपयोग होता है। जो देशी दवाखाने हैं उनका भी वृतान्त सम्बाद पत्रोंमें सूचना देने पर भी नहीं मिला। आगामि वर्षमें इसके लिये अधिक उद्योग करूँगा। गत वर्षमें जिन धर्मार्थ औषधालयोंका विवरण लिखा गया था वे दोनों औषधालय अच्छी तरहसे चल रहे हैं। अहमदाबादके औषधालयकी व्यवस्था ठीक है। इसके सिवाय झाड़ेश्वरके अमीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिभाई गुलाब भाई धर्मार्थ औषधालयकी स्थिति बहुत ही अच्छी है। इस औषधालयके वैद्य श्रीयुक्त अमृतलाल भाई बड़े ही उत्साही और विद्वान् वैद्य हैं।

वैद्यक ग्रन्थ।

इस वर्ष वैद्यक सम्बन्धी कोई जानने योग्य ग्रन्थ इस प्रान्तमें प्रकाशित नहीं हुआ। स्वर्गवासी वैद्यराज शङ्करदाजी शास्त्री पदेके लिखे हुए आर्यभिषक्‌की द्वितीयावृति "सस्तु साहित्य वर्धक मण्डल" की ओरसे प्रसिद्ध है तथा गुजराती वैद्य कलपतरुके ग्राहकोंके उपहारके लिये "गरीबोनो वैद्य" इस नामकी पुस्तक निकली है। गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटीने "अग्निमांद्य" नामक मराठी निबन्धका गुजरातीमें अनुवाद प्रसिद्ध किया है। हिन्दी भाषामें ✓"वाजी कर कलपतरु" नामकी पुस्तक वैद्य जटाशङ्कर लीलाधरकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

देशीराज्योंमें आयुर्वेदीय वैद्योंके लिये क़ानून।

✓राजकोटके ठाकुर साहबने एक क़ानून बनाया है कि उनके राज्यमें वैद्यककी परीक्षा दिये बिना कोई मनुष्य वैद्यकका काय नहीं कर सकेंगे। ऐसा ही पोरबंदर राज्यमें भी क़ानून हुआ है। इस वर्ष पोरबंदर स्टेटकी ओरसे वैद्योंकी परीक्षा ली गयी थी। इस क़ानूनसे लाभ होनेकी सम्भावना है; किन्तु राजाओंका यह भी कर्तव्य है कि परीक्षाके सम्बन्धमें बहुत विचार करके परीक्षा लें और साथ ही आयुर्वेदीयग्रन्थोंके पढ़ानेका और अन्य प्रकारसे वैद्योंको योग्य आश्रय देनेका प्रबन्ध करें। यदि देशीनरेशोंका इन बातों पर आयुर्वेदमहामण्डल विशेषरूपसे ध्यान आकर्षित करेगा तो अवश्य लाभ होगा।

मन्त्रीकी ओरसे किये हुए कार्य।

१—भारतवर्षके वैद्योंकी डाइरेक्टरीका कार्य जिसकी स्वतन्त्र रिपोर्ट लिखी गयी है।

२—अहमदाबाद वैद्यसभाकी सुव्यवस्था करानेके लिये और आयुर्वेदमहामण्डलके साथ उसका सम्बन्ध जोड़नेके लिये आवश्यक उद्योग किया।

३—बम्बईके भारतीयवैद्यमण्डलके प्रबन्धसे "मथुराका वैद्य-सम्मेलन" इस विषय पर गत सम्मेलनोंकी समालोचना समेत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान बम्बईके सुप्रसिद्ध "गुजराती" पत्रके वा "वैद्यकल्पतरु" के कई एक अङ्कोंमें प्रसिद्ध हुआ है।

४—षष्ठवैद्यसम्मेलन कलकत्तेके लिये गुजरातप्रान्तमेंसे अधिक रूपसे प्रतिनिधि जायँ इसके लिये योग्य आन्दोलन किया गया।

५—लेडी हार्डींज, प्रो० काले और पनवेलके कृष्णशास्त्रीके परलोक गमनके लिये प्रान्तीय कार्यालयकी ओरसे शोक सभा कर उनके आत्मीयोंके साथ समवेदना प्रकाशित की गयी।

६—आयुर्वेदमहामण्डल-प्रधानकार्यालयकी सभाके अनुसार समय समय पर वैद्यसम्मेलन सम्बन्धी आवश्यक सूचनाएँ संवाद-पत्रोंमें प्रकाशित की गयीं।

७—इसके सिवाय आयुर्वेदकी उन्नतिके लिये तथा वैद्यसम्मेलनके साथ लोगोंकी सहानुभूति बढ़ानेके लिये विविध प्रकारके कार्य किये गये।

सभाएं-पाठशालाएं और धर्मार्थ औषधालय।

सभाएँ

गतवर्ष इस विषय पर अपना विचार प्रकट किया गया था कि देशके अनेक भागोंमें वैद्यक सभाएं स्थापित हैं; परन्तु वे ऐसी कुछ काल्पनिक मृगतृष्णामें पड़ी हुई हैं कि आयुर्वेद महामण्डलसे मिलकर काम करना भी उन्हें कदाचित अभीष्ट नहीं है। यथार्थमें जिसे वे स्वतन्त्रता समझती हैं वह उच्छृङ्खलता अथवा विचार-विभ्रमके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यद्यपि इस वर्ष कई सभाओं-ने आयुर्वेद महामण्डलसे सम्बन्ध स्थापित किया तथापि कलकत्ते-की तीनों वैद्यक सभाएं, मद्रासकी आयुर्वेद प्रचारिणीसभा, पूनेका वैद्यक मण्डल, बम्बईका भारतीय वैद्यमण्डल तथा लाहौरकी वैद्य-सभा अब तक मिल जुलकर काम करनेके लिये तैयार नहीं हैं। यद्यपि पूनेके वैद्यमण्डल और लाहोर की वैद्यसभाने सम्बद्ध सभा न होने पर भी आयुर्वेदविद्यापीठकी परीक्षाओंका प्रबन्ध किया है और अच्छा किया है, तथापि समझमें नहीं आता कि नियमानुसार इस निखिल भारतवर्षीय वैद्यक संस्थामें मिलजानेमें वे अपनी क्या हानि समझती हैं। हमारे सामने हिन्दी साहित्यसम्मे-लनका उत्तम उदाहरण रहने पर भी यदि हम न चेतें तो हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्भाग्यका ही दोष है। हिन्दी साहित्यसम्मेलन, वैद्यसम्मेलनसे पीछेकी संस्था है; परन्तु इस समय भारतवर्षमें एक भी ऐसी संस्था नहीं है, जो नागरी प्रचार अथवा हिन्दीकी उन्नतिके लिये स्थापित होने पर भी हिन्दी साहित्यसम्मेलनसे सम्बद्ध न हो। पश्चात्ताप तो इस बातका है कि कई सभाएं मांगने पर भी अपनी सभाका विवरण तक इस वार्षिक इतिहासमें सम्मिलित करनेके लिये नहीं भेजतीं। इसलिये यदि यहां पर किसी सभाका नाम रह जाय तो सञ्चालक लोग हम पर रुष्ट न हो कर अपने ही आलस और हेकड़ी पर अप्रसन्न हों। हमारे प्रास जिन सभाओंका वर्णन आया है और जिनका वर्णन अन्य उपायसे हम संगृहीत कर सके हैं, उनका वर्णन देते हैं। जिन सभाओंका वर्णन पीछे प्रान्तिक-मन्त्रियोंकी रिपोर्टमें आचुका है, उनका वर्णन हम यहां अलग नहीं करेंगे।

लखनऊकी वैद्यसभा—आयुर्वेद महामण्डलकी सम्बद्ध सभाओंमें लखनऊकी वैद्यसभा एक मुख्य है। गतवर्ष इसका सम्पूर्ण पूर्व इतिहास दिया गया था। यह सभा अपना काम बड़े उत्साहसे कर रही है। इस वर्षमें इस सभाके ३२ साधारण अधिवेशन हुए। इसके अधिवेशनोंमें साधारण कार्यवाहीके अतिरिक्त वैद्योंके मतलबकी बातें हुआ करती हैं। इस वर्ष प्रत्यक्ष शारीर सम्बन्धी कई व्याख्यान हुए, रक्तसंवहनक्रिया तथा अन्य आयुर्वैदिक विषयोंपरभी समय समय पर व्याख्यान होते रहे। साधारण अधिवेशनोंके अतिरिक्त इसके चार विशेष अधिवेशन हुए। वैद्य-सम्मेलनके जन्मदाता और आयुर्वेदकी सेवाको ही अपने जीवनका महान्‌लक्ष्य समझनेवाले स्वर्गीय शङ्करदाजी शास्त्री पदेका स्मरण दिन चैत्रमें मनाया गया। एक विशेष अधिवेशन वैद्यसभाके आश्रयदाता और कान्यकुब्ज औषधालयके सञ्चालक पण्डित भैरव प्रसाद जी पाण्डेकी मृत्युपर शोक प्रकाशित करनेके लिये हुआ। आयुर्वेदविद्यापीठकी परीक्षाओंका प्रबन्ध इस सभाने बहुत अच्छा किया और परीक्षार्थियोंको मुफ्तमें स्थान और भोजनका प्रबन्ध किया। इस वर्ष इस सभाके ३४ सभासद थे। इस वर्ष सभाकी आमदनी १७०-) की हुई पिछले वर्षके ८६॥।≡)। जमा थे। इस प्रकार सभाकी पूंजी २५६)। हुई; जिसमें १५०≡) इस वर्षमें खर्च हुए। सभाके पास इस समय १०६॥।≈) की बचत है। सभा एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक पाठशाला खोलनेका विचार कर रही है। इस सभाके उत्साही सभासद सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेनेपर तत्पर रहते हैं और सर्वसाधारण लोगोंकी सहानुभूति भी इस सभाके साथ बहुत अच्छी है। इस वर्ष इस सभाके मन्त्री पण्डित व्रजगोपाल भिंगरन वैद्य तथा पण्डित राधेनारायण वाजपेयी प्रजावैद्य थे।

मुरादाबाद आयुर्वेदप्रचारिणीसभा—प्रयागकी आयुर्वेद-प्रचारिणी सभाके पश्चात ही यह सभा स्थापित हुई थी; परन्तु आजकल मालूम पड़ता है, इसका काम कुछ सुस्त है; क्योंकि इसके कार्योंका पता न तो किसी पत्रमें छपा हुआ मिला और न मँगाने पर भी हमें प्राप्त हुआ। इसके वर्तमान मन्त्री महोदयको इसे एक कार्यकर्त्री सभा बनाये रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। तब इस सभाके उत्साही सभासदोंने विशेष कर पण्डित दुर्गादत्त जी पन्त वैद्य महोदयने अपने उद्योगसे जो आयुर्वेद विद्यालय स्थापित किया है वह साधारण अच्छी दशामें चल रहा है। यद्यपि प्रबन्धकी कमीके सम्बन्धमें एकआधनोट पत्रान्तरमें पढ़े गये हैं; तथापि डाक्टर भरद्वाजके उद्योगसे उसमें शवच्छेदकी आज्ञा मिल गयी है। आशा है, क्रमशः उसके अन्य प्रबन्ध भी धीरे धीरे सुधार लिये जावेंगे। हमारी समझमें इस समय किसी वैद्यककी पाठशालाके लिये संस्कृतकी उच्चयोग्यता होने पर शिक्षाके अधिकारी होनेका प्रतिबन्ध रखना सफलताका द्योतक नहीं हो सकता। हां वैद्यकके ग्रन्थोंके गुरुमुख द्वारा अथवा टीकाओंके द्वारा साधारणतः अर्थ समझनेकी शक्ति रखते हुए जो विद्यार्थी साधारण संस्कृत जानता हो उसे भी वैद्यकके ग्रन्थ पढ़ानेमें आगा पीछा नहीं देखना चाहिये। इस पाठशालामें पहले नियम था कि जो संस्कृतकी मध्यमा परीक्षा पास न हों वे इस पाठशालामें पैर ही नहीं रख सकते; किन्तु वह नियम नहीं चल सका और प्रथमा परीक्षा पास वालोंके लिये भी विद्यालयका दरवाज़ा खुल गया है।

मारवाड़ (किशनगढ़ रियासत) में दो तीन वर्षसे एक वैद्यक-सभा स्थापित हुई है। इसके संचालक वैद्यराज पण्डित वंशीधर शर्मा महोदय हैं। मालूम पड़ता है यह सभा नियमित कार्य नहीं करती, हां, कभी कभी इसके अधिवेशन हो जाया करते हैं। इस वर्ष मार्च महीनेमें इसका द्वितीय अधिवेशन बड़ी धूमधामसे हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। कई व्याख्यान दाताओंके बढ़िया व्याख्यान हुए। व्याख्यानोंमें आयुर्वेदके महत्व पर अच्छा विवेचन हुआ। मन्त्री जीने अपने व्याख्यानमें वैद्यसम्मेलनका सन्देशासर्वसाधारणको सुनाया और पञ्चम वैद्यसम्मेलनके कार्योंका दिग्दर्शन किया। धर्मार्थ औषधालय खोलने पर बहुत ज़ोर दिया और ऐसा औषधालय खोलनेका निश्चय भी हुआ।

बीकानेरमें आयुर्वेदप्रचारिणी सभा स्थापित होनेका समाचार अन्यत्र प्रकाशित किया गया है। यद्यपि वैद्यराज जीवनराम जी हर्ष (कौंसिल-मेम्बर) उत्साह पूर्वक कार्य करते हैं, तथापि ऐसे बहुतसे वैद्य हैं, जिन्हें इस विषयमें अरुचि है, इससे सभाकी उन्नति सुविधाके साथ नहीं हो सकती। पण्डित जीवनरामजीके गले अन्य कई सभाओंकी भी ढोलकी टँगी है, इसलिये वे इच्छा रहने पर भी अकेले सब काम सँभालनेमें समर्थ नहीं हो सकते। यह सभा बीकानेर राज्यकी प्रधान सभा है, इसलिये आशा है राज्यभरमें इसके सभासद बनानेका प्रयत्न किया जायगा। इसकी पहली सभाएँ बड़े समारोहके साथ हुई हैं। अब यदि लोगोंको आरोग्यताके नियम बताने, व्यावहारिक कार्योंका ढङ्ग समझाने, ऋतु और समयके अनुसार कार्यक्रम सुझानेके लिये समय समय पर इसके अधिवेशन होंगे तो लोगोंका झुकाव बराबर सभाको ओर बना रहेगा।

इस वर्ष **भागलपुरमें** भी एक "आयुर्वेदसभा" स्थापित हुई है। इसके उद्योगी वहांके वैद्यराज पण्डित परमानन्द च्यवनलाल वैद्यभूषण महाशय हैं। मन्त्रीका काम श्रीयुत पण्डित महावीरप्रसाद जी मिश्र कर रहे हैं। इसके प्रारम्भिक अधिवेशन बड़े उत्साह और ठाठके हुए हैं। आशा है भविष्यमें भी सभाका काम उत्साह पूर्वक चलता रहेगा।

अहमदाबादकी "वैद्यसभा" अपने दूसरे उठानमें पूरे ताकतसे उठी है और आशा है अब वह कार्यक्षेत्रमें बराबर उद्यत रहेगी। अब इस सभाने अच्छे विद्वानोंसे भाषण कराकर लोगोंमें वैद्यकज्ञानकी वृद्धि करनेका क्रम आरम्भ किया है। प्रजामें आरोग्यता सम्बन्धी व्याख्यानों द्वारा आरोग्यताके नियम फैलाये जाने लगे हैं। इसके प्रमुख वैद्य पञ्चानन जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी महाशय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अधिवेशन प्रत्येक रविवारको हुआ करते हैं। बाहरके वैद्य भी इसके सभासद हो सकते हैं। सभासदोंका चन्दा एक रुपया वार्षिक निश्चित हुआ है। इसके मन्त्री वैद्यशास्त्री नारायणशंकर देवशंकर (स्वामीनारायणके मन्दिरके पास) हैं। इसके प्रमुख जटाशंकरजी महोदय एक आयुर्वेदीय आरोग्यभवन स्थापित करना चाहते हैं। शहरके बाहर साबरमती नदीके किनारे इसके लिये जमीन ले ली गयी है। आप उसमें एक उपचारगृह और एक आयुर्वेदीय पाठशाला स्थापित करना चाहते हैं। ईश्वर आपका उद्देश्य सफल करे।

✓ प्रयागकी **आयुर्वेद प्रचारिणी** सभा यद्यपि आयुर्वेदिक आन्दोलनके इस द्वितीय उठानके समयकी सबसे पहली सभा है और उसीके अनुकरण पर अब अनेक स्थानोंमें आयुर्वेद प्रचारिणी सभाएं स्थापित हो रही हैं। परन्तु प्रयागकी सभा स्वयं घोर निद्रामें निमग्न है। उसके द्वारा कोई विशेष कार्य इस समय नहीं हो रहे हैं। तब उसने यह किया था कि जिस समय प्रयागमें इस वर्ष विसूचिका और फसली बुखारका जोर था उस समय सभाएं कर और वैद्य तथा डाक्टरोंके व्याख्यान कराकर सर्वसाधारणको ऐसे समयके आहार-विहार और व्यवहारका ज्ञान कराया था। विगतवर्षके समान इस वर्ष भी माघमेलेके समय आयुर्वेद महामण्डलके व्यय और आयुर्वेद प्रचारिणी सभाके सभासदोंके परिश्रमसे एक औषधालय चलाया गया। साढ़े पन्द्रह सौ रोगियोंने इस औषधालयसे लाभ उठाया। लोगोंने बड़े आग्रहके साथ इस औषधालय पर विश्वास प्रकट किया। मेलेमें इस वर्ष हैज़ा भी फैला था; परन्तु आनन्दकी बात है कि इस औषधालयसे दवा करानेवालोंमें कोई बीमार नहीं मरा। ज्वर, खांसी, अतिसार, दाद, नेत्रविकार, उदररोग, अजीर्ण शिरकी पीडा आदिके रोगी अधिक आये। इस औषधालयके कार्यसे यात्रियों, रोगियों और मेलेके सरकारी प्रबन्धकर्ताओं सभीको अच्छा सन्तोष हुआ।

ऊपर जिन सभाओंका वर्णन हुआ, वे सब आयुर्वेदमहामण्डलसे सम्बद्ध हैं। आयुर्वेद महामण्डलसे पृथक रहकर भी कई सभाएं अच्छा काम कर रही हैं। उनका जहां तक विवरण हम संग्रह कर सके हैं नीचे देते हैं:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बईमें इस समय दो सभाएं चल रही हैं एक तो पुरानी "बम्बई वैद्यसभा" है और दूसरेका नाम "बम्बई भारतीय वैद्य-मण्डल" है। पहली सभाके सम्बन्धमें गतवर्षके विवरणमें हमें बहुत कुछ मीठी तीखी बातें कहनी पड़ी थीं। परन्तु हम सुनकर प्रसन्न हुए हैं कि इस सभाकी कार्यपद्धतिमें अब बहुत कुछ सुधार हुआ है और उस सुधारका श्रेय हमारे सभासद और उस सभाके उपप्रमुख वैद्यराज त्र्यम्बकलाल त्रिभुवनदास मुनि महोदयको है। मथुरा सम्मेलनके समय इस सभाके एक कार्यकर्ता श्रीयुक्त चांद-लिया महोदय आये थे और तबसे आपने भी इस विषयका बहुत प्रयत्न किया कि संघशक्तिकी किसी तरह अवहेलना न की जाय। मथुरासम्मेलनका संवाद भी आपने गुजरातीके पत्रोंमें प्रकाशित करनेका अच्छा उद्योग किया था। यह सभा एक वर्षसे प्रत्येक रविवारको हुआ करती है और भिन्न भिन्न अनुभवी विद्वानोंके द्वारा इसमें व्याख्यान कराये जाते हैं। व्याख्यानोंमें भिन्न भिन्न वनस्पति-योंके चमत्कारिक गुण और उसके औषधि प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया गया है और यह हुआ भी आवश्यक है। इस सभाने इस वर्ष धन्वन्तरि उत्सव बड़े ठाठके साथ मनाया था। इस सभाके द्वारा एक धर्मार्थ औषधालय और एक सुन्दर पुस्तकालय स्थापित है। इसके वर्तमान कार्यकर्ता बड़े उत्साहसे काम कर रहे हैं।

बम्बईका "भारतीय वैद्यमण्डल" डाक्टर पोपट प्रभुराम जीके उद्योगका फल है। इस सभाने भी साल भरमें पाँच सात व्याख्यान दिलाये हैं। जिनमें वैद्यराज जटाशङ्कर जीका वैद्यसम्मेलन सम्बन्धी व्याख्यान बहुत ही विस्तृत, प्रभावशाली और विचार पूर्ण हुआ था। यह मण्डल एक आरोग्य मण्डल स्थापित करनेकी इच्छा कर रहा है। मालूम पड़ता है, यह मण्डल वैद्यसभाकी तीव्रचालकी बराबरी नहीं कर सकता और उससे पीछे बना रहता है। ऐसी दशामें क्या यह उत्तम न होगा कि ये दोनों संस्थाएँ एक हो जायँ और जो काम करना हो संयुक्त शक्तिसे करें?

बड़ौदेमें "आयुर्वेदप्रचारिणीसभा" स्थापित हुई है। यह भी अपना काम उत्साह पूर्वक कर रही है। इसके मन्त्री वैद्यभूषण पण्डित माधवदिवाकर वैद्य हैं। यह सभा भी सालमें कई बार विविध विषयों पर व्याख्यान कराया करती है। अभी प्रायः इसके अधिवेशन मासिक होते हैं और प्रति वर्ष धनतेरसको धन्वन्तरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्सव बड़ी धूमधामसे करती है। इस वर्ष इस उत्सवके सभापति बड़ौदेके दीवान महोदय हुए थे। बड़ौदा और नवसारीके वैद्यों, डाक्टरों और अफसरों तथा रईसोंने भी इसमें योग दिया था। इसके मन्त्री लिखते हैं कि जब तक हमारी सभाका संगठन नियमबद्ध न हो जाय तब तक मण्डलसे हम उसका सम्बन्ध करना नहीं चाहते। अभी इस सभामें चन्देका कोई नियम नहीं है। यह सभा मण्डलके साथ सहानुभूति रखती है।

सूरतमें भी एक वैद्यसभा स्थापित होनेका समाचार मिला है। यह सभा भी समय समय उत्तम विषयों पर व्याख्यान कराया करती है और इस वर्ष धन्वन्तरि उत्सव बड़े उत्साहसे किया था।

अहमदाबादकी वैद्य सभासे वहांके कुछ वैद्योंने अलग होकर अपनी एक दूसरी वैद्यसभा स्थापित की है। पहले इसके मासिक अधिवेशन हुआ करते थे इस समय कुछ मालूम नहीं कि सभा क्या कर रही है।

महाराष्ट्र प्रान्तकी वैद्यक संस्थाओंका वर्णन प्रान्तिक विवरणमें हो चुका है। इन सबोंमें पूनेका "वैद्यमण्डल" विशेष उल्लेख योग्य है। इसके मन्त्री उत्साही वैद्यपञ्चानन पण्डित कृष्ण शास्त्री कवड़े बी० ए० हैं। थोड़े ही समयमें मण्डलने अपना अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया है। इसका उद्देश्य आर्य वैद्यकके अनेक विषयोंकी चर्चा करना, वनस्पतिके पञ्चाङ्ग और खनिज औषधियोंका संग्रह करना, आयुर्वेदीय धर्मार्थ औषधालय स्थापित करना, आतुरालय स्थापित करना, प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध वैद्यकग्रन्थोंका संग्रह करना, शास्त्रशुद्ध औषधियाँ तैयार कर लोगोंको पहुंचाना, आर्यवैद्यकके तत्व प्रतिपादनके लिये नये ग्रन्थ लिखना, वैद्यकसम्बन्धी अन्य भाषाओंके ग्रन्थोंका उपयुक्त ज्ञान अपनी भाषामें कर लोगोंके सामने रखना, रसायनशास्त्रकी विधिसे औषधियोंका पृथक्करण कर उनके गुणावगुणकी यथार्थ कल्पना शास्त्रीय रीतिसे प्रकट करना, आदर्श वैद्यक पाठशाला खोलना और अन्य शक्य उपायोंसे आयुर्वेदका उज्वल स्वरूप लोगोंके सामने रखना, सभाके लिये स्थान श्रीयुक्त डाक्टर गोपाल सदाशिव पळसुलेने मुफ्तमें दिया है। यही नहीं सभाके वनस्पति संग्रहालयके लिये रावसाहब नरहर गदाधर फड़केने अपना एक समूचा मकान सब दिनके लिये दे दिया है। इसकी पक्की लिखापढ़ी भी हो गयी है। इसी मकानमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वैद्यमण्डलने" एक धर्मार्थ औषधालय खोला है। इस वर्ष प्लेगकी बीमारीके समय अपने प्रथम वर्षकी आयुमें ही इस औषधालयने बड़ा काम किया। इसका काम अवैतनिक, वैद्यभूषण गणेश त्र्यम्बक जोशी, पण्डित हरिशास्त्री साने, पण्डित कृष्ण शास्त्री कवड़े महाशय बड़े उत्साहसे कर रहे हैं। इस औषधालयके द्वारा प्लेगकी औषधि केवल पोस्ट खर्च लेकर बाहर भी भेजी गयी है। हज़ारों रोगियोंने थोड़े ही समयमें इससे लाभ उठाया है। इसी औषधालयमें पूनेके "मराठी वैद्यक वर्ग" नामक पाठशालाके विद्यार्थियोंको औषधि तैयार करने, रोगियोंकी परीक्षा करने और औषधि देनेका अनुभव प्राप्त कराया जाता है। इस प्रकार स्थान मिल जानेसे "वैद्यमण्डलने" वनस्पति संग्रहालयका भी काम आरम्भ कर दिया है। इसके लिये जो वनौषधि भेजना चाहें वे लोग किसी वृक्षके फल, फूल, पत्ती आदि सहित एक डाली या क्षुप हो तो जड़ सहित वृक्ष लेकर एक काग़ज़ बिछा कर किसी सपाट चिकनी पट्टी पर रख ऊपर से चिकनी पट्टीसे दबाकर रख दे। चार दिन तक बराबर काग़ज़ बदलता रहे इसके लिये एक फार्म सभा भेजती है, उसे पूर्ण कर भेजना चाहिये। सभाने एक पुस्कालय भी खोला है और उसमें कुछ पुस्तकोंका संग्रह हो भी गया है। इस मण्डलकी सभा प्रायः प्रति रविवारको हुआ करती है, और उसमें भिन्न भिन्न शास्त्रीय वैद्यक विषयों पर व्याख्यान और निबन्ध वाचन हुआ करता है। सभाकी साम्पत्तिक स्थितिको देखते हुए सभा जो काम कर रही है उससे साश्चर्य आनन्द मालूम होता है।

इस वर्ष काश्मीर जम्बूमें आयुर्वेदसम्बन्धी चर्चा होनेका समाचार पाकर हम प्रसन्न हुए हैं। जम्बूके श्रीभरद्वाजमहौषधालयके अध्यक्ष आयुर्वेदपञ्चानन पण्डित रघुनाथ शर्मा सरकारी सहायतासे वहाँ एक पाठशाला चला रहे हैं। उसका एक विद्यार्थी इस वर्ष विद्यापीठकी परीक्षामें भी उत्तीर्ण हुआ है। आपके ही उद्योगसे जम्बूमें एक "वैद्यसभा" भी स्थापित हो गयी है। उसके सभापति रणवीर हाईस्कूलके संस्कृत टीचर पण्डित हृषीकेश जी हैं। मन्त्रीका काम पं० रघुनाथ शर्मा और उपसभापतिका पण्डित बलदेव जी राजवैद्य करते हैं। पं० नत्थीराम जी चूड़ामणि विशारद वैद्य उपमन्त्री हैं। इसी वैद्यसभाकी ओरसे एक औषधालय भी स्थापित है जिसमें ग़रीबोंको धर्मार्थ औषधि दी जाती है। राज्यकी ओरसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी एक धर्मार्थ औषधालय है; जिसमें पण्डित रघुनाथ शर्माकी नियुक्ति है और सबको धर्मार्थ औषधि दी जाती है। महाराज काश्मीर अपने निजी ख़र्चसे भी एक औषधालय जम्बूमें चलाते हैं, जिसमें ३०) मासिककी दवा मुफ़ दी जाती है। जम्बू वैद्यसभाके अधिवेशन समय समय पर होते रहते हैं।

मध्यप्रदेशके सागरमें पण्डित धरणीधर शर्मा वैद्यके प्रयत्नसे वसन्तपञ्चमीको एक 'वैद्यकसभा" स्थापित हुई है। प्रत्येक पन्द्रह दिनोंमें इसके अधिवेशन होते हैं। परन्तु हमें इस बातकी सूचना नहीं मिली कि आजकल सभा क्या कर रही है।

ज़िला बदायूँके सहसवान नगरमें वहांके उत्साही वैद्य पं० ईश्वरप्रसाद अशर्फ़ीलाल जीके उद्योगसे आयुर्वेदप्रचारिणी सभा स्थापित हुई है। यद्यपि यह सभा अब तक नियमपूर्वक आयुर्वेद-महामण्डलसे सम्बद्ध नहीं है; परन्तु इसने समय समय पर आयुर्वेदमहामण्डलके कार्योंके साथ सहानुभूति प्रकाशित की है और जिस समय बम्बईके वैद्यसम्मेलनके कार्योंसे अनजान वैद्योंने उसपर कुछ आक्षेप किये थे तब इस सभाने उसका विरोध किया था।

ऋषिकुल (हरिद्वार) के उत्सवके समय इस वर्ष भी आयुर्वेद-सम्बन्धी आन्दोलन किया गया और "भारतीयोंका आयुर्वेद" इस विषय पर निबन्ध पाठ हुआ। जबसे ऋषिकुलमें वैद्यराज पण्डित नारायणदत्त जी पहुँचे हैं तबसे वहां आयुर्वेदकी चर्चाको विशेष बल मिला है। ऋषिकुलमें आपके ही तन्त्रसे एक औषधालय भी चलता है; जिससे ब्रह्मचारियोंको शुद्ध देशी औषधि मिलती हैं। साथ ही अब आयुर्वेदकी पढ़ाई भी होने लगी है। आशा है इसके द्वारा आयुर्वेदके अच्छे विद्वान निकालनेका प्रयत्न होगा।

मध्यप्रदेशके जबलपुर नगरमें इस वर्ष वैद्यपरिषदकी स्थापना हुई है। कुछ अधिवेशन भी इसके उत्साह पूर्वक हुए हैं; परन्तु अब सभा क्या कर रही है इसकी ब्योरेवार सूचना हमें नहीं मिली है। इस परिषदके स्थापक और सञ्चालक वैद्यशास्त्री पण्डित गोविन्दप्रसाद जी हैं।

गत वर्ष फ़र्रुख़ाबादमें एक "वैद्यसमिति" स्थापित हुई थी। २८ फरवरी और १ मार्चको इसका एक शानदार जलसा भी हुआ था। इसके मन्त्री श्रीयुक्त कुँवर श्यामसिंह जी वैद्य तथा पण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल वैद्य (मुहल्ला भवानीदास) थे। नहीं कहा जा सकता कि इस समय सभाकी स्थिति क्या है और वह क्या काम कर रही है।

दो तीन वर्ष पहले ज्वालापुर (हरिद्वार) में एक "आयुर्वेद-प्रचारिणीसभा" स्थापित हुई थी; परन्तु मालूम पड़ता है अब उसका अस्तित्व नहीं है; क्योंकि पत्र भेजने पर भी उसके सम्बन्ध-में कुछ समाचार विदित नहीं हुआ।

कानपुरकी वैद्यसभामें जबसे फूट हुई; तबसे फिर उसका अस्तित्व ही न रहा। जिस समय कानपुरकी वैद्यसभाके एक दलके कुछ वैद्य वैद्यसम्मेलनकी तैयारीमें लगे थे, उस समय दूसरे दलके वैद्योंने उसका घोर विरोध किया था और अपने विरोधका कारण यह बतलाया था कि हम वैद्यसम्मेलनका अधिवेशन विशेष ठाठके साथ करना चाहते हैं और एक सालमें अपने शहरमें एक बढ़िया आयुर्वेदविद्यालय स्थापित कर बाहरसे आये हुए वैद्योंको कुछ अपनी कारगुजारी दिखाना चाहते हैं। उसको दो वर्ष हो गये; परन्तु यह सुननेमें न आया कि उन वैद्योंने आयुर्वेद विद्यालय स्थापित कर लिया है। इसके सिवाय वैद्यसम्मेलनको निमन्त्रित करना एक ओर रहा, उस दलके वैद्य किसी वैद्यसम्मेलनमें उप-स्थित तक नहीं हुए। जो हो, कमसे कम कानपुरके वैद्योंको अपनी सभा तो जिलाये रखना चाहिये।

✓ फीरोजपुर जिलेके **अबोहर** नगरमें पण्डित नन्दलाल शर्मा भिषग्रत्न महोदयके उद्योगसे आयुर्वेद प्रचारिणी सभा स्थापित हुई है। उसके सभापति भी आपही हैं। लाला हुकमचन्द साहूकार मन्त्री हैं। ४१ सभासद हैं। प्रतिसप्ताह अधिवेशन होते हैं। सौ सवा सौ मनुष्य उपस्थित होकर विविध विषयोंपर व्याख्यान सुना करते हैं।

मथुराकी सभा कई बार पत्र भेजने पर भी न चेती उसके मन्त्री वैद्यराज पण्डित सोहनलालजीने लिखा था कि होलीके पश्चात् सभाका पुनसंङ्गठन होगा; परन्तु फिर उस सम्बन्धको कोई सूचना नहीं मिली। किन्तु चिकित्सक चूड़ामणि पण्डित रामचन्द्रजी शर्माके पत्रसे मालूम होता है कि वहांकी पुरानी सभा कोई बन्द नहीं हुई किन्तु कोई काम भी नहीं कर रही है। मथुरामें एक सद्वैद्य सभा अलग स्थापित हुई थी इसके वैद्यराज पण्डित नटवरलालजी चतुर्वेदी थे। कुछ दिनों तक इस सभाके मासिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन हुए; परन्तु अब वे भी बन्द हैं। पुस्तकोंके नाम मथुरासे पञ्चमवैद्यसम्मेलनके साथकी प्रदर्शिनीकी रिपोर्ट "भैषज्यगुणरत्नावली" नामसे प्रकाशित हुई है। मथुराके वैद्य जयकृष्णजी मुखिया गरीबोंको मुफ़्त दवा दिया करते हैं; किन्तु बीमारोंका रजिस्टर नहीं रखा जाता। वृन्दावनके नवात्साही वैद्यपण्डित उमाशंकरजी आयुर्वेदाचार्य भी ग़रीबोंको मुफ्त दवा दिया करते हैं। मथुरा जिलेके बलदेव स्थानमें वैद्य परमानन्दजीके औषधालयसे ग़रीबोंको मुफ़्त दवा मिलती है। गोकुलमें भैषज्य निकेतनके मालिक पण्डित रामचन्द्रजी शर्मा गरीबोंको नित्य एक घण्टा धर्मार्थ औषधि देते हैं और रोगियोंका छपा हुआ रजिस्टर भी रखते हैं। आपका एक विद्यार्थी भी इस वर्ष विद्यापीठकी परिक्षामें उत्तीर्ण हुआ है। यहांके वैद्योंमें परस्पर फूट ऐसी जबरदस्त है कि अनेक बार प्रयत्न करने पर भी वह नहीं मिटती।

✓ हरिद्वारकी हितकारिणी सभा एक आयुर्वैदिक पाठशाला चला रही है। उसके और कार्योंका हमें विवरण तो नहीं मिला; परन्तु इतना मालूम हुआ है कि उसकी पाठशालाके ८ छात्र "वैद्यकुलभूषण" की परीक्षामें उत्तीर्ण हुए हैं। विद्यालयके प्रधानाध्यापक श्रीयुक्त पण्डित प्रभुदयालुजी वैद्य हैं।

हृषीकेशमें भी कुछ दिनोंसे एक वैद्यक सभा स्थापित है। प्रति रविवारको उसके अधिवेशन हुआ करते हैं। विशेषकर जङ्गली जड़ी बूटियोंकी खोजकर वे वैद्योंको दिखलायी जाती हैं।

दिल्लीके हकीम हाजिकुल मुल्क हाजी अजमलखां साहबकी तिब्बी कानफरेंस इस वर्ष अमृतसरमें हुई। अमृतसरमें भी उसका दुर्भाग्य उसके पीछे रहा लखनऊकी तरह अमृतसरके भी वैद्य हकीम उसके विरुद्ध हो गये। विरोध होने पर भी हकीम साहबके प्रभावसे कानफरेंस किसी तरह हो गयी और उसकी प्रदर्शिनी भी हुई। ३००के करीब मनुष्योंकी भीड़ प्रतिदिन होती थी। एक दिन व्याख्यानवाचस्पति पण्डित दीनदयालुजी शर्माने भी ३०० मनुष्योंकी उपस्थितिमें अपना व्याख्यान सुनाया। कुछ वैद्य भी उपस्थित हुए। सब जगह इसका विरोध वैद्य हकीमोंके द्वारा क्यों होता है यह समझनेमें तो हम असमर्थ हैं। खुद दिल्लीके वैद्य भी इसमें हृदयसे सम्मिलित नहीं हैं। कुछ लोग खुल्लम खुल्ला कहते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें हिन्दू वैद्य हकीमोंको वास्तविक कोई महत्व नहीं दिया जाता है।

ज्यों ही यह प्रसिद्ध हुआ कि तिब्बी कानफरेंसका अधिवेशन अमृतसरमें होगा त्यों हो वहांके हिन्दू वैद्यहकीमोंमें दूसरे ही प्रकारको जागृति हुई। उन्होंने उसमें मिलकर काम करनेके बदले एक नयी संस्था स्थापितकी और उसका नाम "भारत हिन्दू वैद्य हकीम सभा" रखा। २४ और २५ जनवरीको अधिवेशन हुए, सभापति प्रयागके मेजर वामनदास वसु आई. एम. एस. महोदय हुए थे। आपने अपना अँग्रेजीमें भाषण सुनाया और उसमें कितने ही महत्वपूर्ण विषयोंका विवेचन किया। यह एक प्रकारसे पञ्जाब प्रान्तीय वैद्य हकीम सभाके स्वरूपकी थी और प्रतिवर्ष होती रहती तो अच्छा ही था; परन्तु जिसकी उत्पत्ति केवल विरोधके लिये थी स्थानिक विरोधका कारण दूर हो जानेसे उसके प्रति लोगोंका उत्साह भी न रहा। इसके जिन कार्यकर्ता पण्डित साहब दयालुजी प्रभृतिने इस उद्योगका आरम्भ किया था उन्हें इस बातका विचार करना चाहिये था कि जिस कार्यमें हम कुछ वर्ष भी स्थिर न रह सकें उसमें हाथ लगाना व्यर्थ है। क्या एक वर्षके अधिवेशनसे ही आपने पञ्जाबके नहीं भारतवर्षके हिन्दू वैद्य हकीमोंको एक केन्द्रमें कर लिया? उनमें अभीष्ठ जातोयभाव और आत्माभिमानकी उत्पत्ति कर दी? यदि नहीं तो अपनी शक्तिको सोचे बिना ऐसा महत्कार्य स्वीकार ही क्यों किया था? आशा है कमसे कम पञ्जाब प्रान्तीय सभाके स्वरूपमें यह सभा फिर चितायो जायगी।

इसवर्ष पण्डित प्रतापसिंह शर्मा आयुर्वेदविशारदने राजपूताना और बङ्गालके कई स्थानोंमें भ्रमण किया। आप जहां जहां गये वहांके वैद्योंका ध्यान आयुर्वेदमहामण्डलकी ओर आकृष्ट किया और कितने ही रईसोंको आयुर्वेदका प्रेमी बनाया। रियासत बलरामपुर (गोंडा) के रविचक्र नगर निवासी श्रीयुक्त बलवन्तसिंह और हिसारके वैद्यराज पण्डित श्रीदत्तजी शर्मा अपने अपने नगरोंमें आयुर्वेदप्रचारिणी सभा स्थापित करनेका प्रयत्न कर रहे थे। नहीं मालूम आप लोग अपने प्रयत्नमें कहां तक सफल हुए हैं। दिल्लीकी वैद्यसभाके अस्तित्व अथवा कार्योंके सम्बन्धमें हमें कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। पूनेके वसन्तव्याख्यान-मालामें इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष वेगोदीरण विषयपर प्राणाचार्य बाळशास्त्री लागवणकरका और अरिष्ट विज्ञानपर नासिकके श्रीयुक्त दातार शास्त्री वैद्यराजका व्याख्यान हुआ था। इसके सिवाय रुधिराभिसरणपर काशीनिवासी वैद्यराज अप्पाशास्त्री साठेका व्याख्यान हुआ।

धन्वन्तरि उत्सव—अपनी राष्ट्रीय विभूतियोंका स्मरण करना उनके उत्सव मनाना और उनके स्मरणमें कुछ करना अपनेको वैभव युक्त बनाना और अपनेमें योग्यता लानेका परिचायक है। जब हम सोचेंगे कि हमारे पूर्व पुरुष ऐसे महत्वशाली थे तब कहां तक हममें महत्वाभिलाष उत्पन्न नहीं होगा और कहां तक हम अवनतिके कीचड़में पड़े सड़ा करेंगे। हम इस बातसे प्रसन्न हैं कि काशीसे जिस धन्वन्तरि उत्सवका आरम्भ वैद्यराज कन्हैयालाल जीने किया था और जिसे अब भी उनके नाती वैद्यराज रघुनन्दन जी दीक्षित करते जा रहे हैं, उसका प्रचार क्रमशः देश भरमें बढ़ता जा रहा है। इस वर्ष निम्न लिखित स्थानोंमें इसके होनेकी हमें सूचना मिली है:—काशी, प्रयाग, लखनऊ, अहमदाबाद, बड़ोदा, सूरत, बम्बई, पूना, मिरज और सारंबाड़में। आशा है, प्रत्येक शहरके वैद्य क्रमशः इस उत्सवका आरंभ करेंगे। अपने धन्वन्तरि भगवदांश एक अवतारी पुरुष थे और दीवालीके पहले धनतेरसको समुद्र मन्थन करते हुए अवतरित हुए थे। इसलिये धनतेरसको धन्वन्तरि उत्सव उसी प्रकार करना चाहिये जैसे रामनौमी कृष्णाष्टमी, व्यासपूजा आदि करते हैं। तब इसे केवल धार्मिक स्वरूप न देकर कुछ व्यावहारिक स्वरूप भी रखना चाहिये। जिससे वैद्योंको अपनी उन्नतिके उपाय समझ पड़ें, अपने महत्वशाली बननेका विचार उनमें उत्पन्न हो। भागवतमें उनके सम्बन्धमें लिखा हुआ है:—

सवै भगवतस्साक्षाद्विष्णोरंशांश सम्भवः
धन्वन्तरिरितिख्यात आयुर्वेद दृगिज्यभाक्।

धन्वन्तरि महाराजकी एक स्वर्ण प्रतिमा काशीमें पण्डित रघुनन्दन जीके यहाँ है जहाँ मूर्ति न हो वहाँ उसका फोटो (जो उक्त वैद्यराज जीसे मिलता है) अथवा निम्न ध्यान पूर्वक उनका स्मरण करते हुए आयुर्वेदके विविध विषयोंकी चर्चा करनी चाहिये:—

शंखं चक्रं जलौकां दधदमृतघटं चारुदोर्भिश्चतुर्भिः
सूक्ष्मस्वच्छातिहृद्यां शुकपरि विलसन्मौलिमम्भोजनेत्रम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालाम्भोधोज्वलांगं कटितट विलसच्चारु पीताम्बराढ्यं
बन्दे धन्वन्तरिं तं निखिलगदवन प्रौढ़ द्रावाग्निलीलम्।

धन्वन्तरि उत्सव करते ही हम लोगोंको भगवान् धन्वन्तरिके दूसरे अवतार धन्वन्तरि काशिराज दिवोदासका स्मरण होगा। जिन्होंने हज़ारों वर्ष पहले धन्वन्तरि सम्प्रदायकी सृष्टि कर शल्य-तन्त्रका प्रचार किया, और हज़ारों सुश्रुत, पौष्कलावत, औपधेनव प्रभृति राजकुमारोंको इस विद्यामें निष्णात बनाया। आज जब उस विषयका स्मरण और उच्चारण करनेसे भारतीय गौरवकी वृद्धि होती है तब यदि हम स्वयं शल्यचिकित्साके निष्णात हों और अभी जैसे यह कह कर प्रसन्न होते हैं कि शल्यचिकित्साके आद्यप्रवर्तक हमीं लोग हैं और आज कलकी सर्जरी, हमारी नकल मात्र है, उसी प्रकार हम स्वयं करके दिखाने लगें तो कितना अधिक हमें और हमारे देशवासियोंको सन्तोष होगा। हमारे यहाँ वैद्यका पीयूष-पाणि होना परमावश्यक है। धन्वन्तरिका स्मरण कर, उनकी भक्ति श्रद्धा कर यदि हम उनकी प्रसन्नता लाभ कर सकें, उनका आशीर्वाद पा सकें तो हमारे पीयूषपाणि होनेमें समय ही कितना लगेगा। इसके लिये भी विभूति पूजा आवश्यक है।

शङ्कर उत्सव—धन्वन्तरि उत्सवके समान ही वैद्यसम्मेलनके आदि प्रवर्तक और आयुर्वेदकी निष्कपट सेवामें ही जीवन बितानेवाले स्वर्गीय शङ्करदाजी शास्त्री पदे महोदयका उत्सव भी सालमें एक बार होना बहुत ही आवश्यक है। इससे हम यह सिद्ध कर सकेंगे कि हमारे लिये जो प्रयत्नशील है, उसकी ओरसे हम उदासीन नहीं हैं। शास्त्री जीके कुटुम्बी भले ही न हों; परन्तु जिस समाजकी सेवामें उन्होंने जीवन बिताया है, वह सारा वैद्यसमाज उनका कुटुम्बी है और उनका स्मरण कर उनके कार्योंको आगे बढ़ानेके लिये प्रयासी है। उनका स्वर्गवास चैत्र शुक्ल नौमीको १२ बजे दिनमें हुआ था। यातो उस दिन या चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको उनका उत्सव मनाना आवश्यक है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदको उन्होंने उत्तर भारतमें काम करनेको इच्छासे प्रयागमें अपना पीठ स्थापित किया था। इस वर्ष प्रयाग और लखनऊमें यह उत्सव किया गया। आशा है अन्य नगरोंमें भी यह होने लगेगा। इधर शरद ऋतुमें धन्वन्तरि उत्सव और इधर बसन्त ऋतुमें शङ्कर उत्सव कर अधिक नहीं तो सालमें दो बार हम सर्वसाधारणके हृदय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदका प्रेम और प्रभाव स्थापित करनेका अवसर पावेंगे और संसारको दिखा सकेंगे कि भारतका वैद्यसमाज अपनी उन्नतिकी कामना कर रहा है।

पाठशालाएं।

इस समय देशमें जो कोई आयुर्वैदिक पाठशालाएं स्थापित हैं उनमेंसे कुछका वर्णन प्रसङ्ग क्रमसे पहले हो चुका है। शेषमें जिनका वृत्तान्त हमें मिल सका है, उनका नीचे देते हैं। **मद्रासका** आयुर्वेद विद्यालय वैद्यरत्न पण्डित डी० गोपालाचार्यजीके परिश्रम और उत्साहका फल स्वरूप उन्नतिके साथ चल रहा है। **मैसूरका** सरकारी आयुर्वेदविद्यालय राज्यकी पूर्ण सहायतासे उत्तम चल रहा है और प्रतिवर्ष कई "आयुर्वेद विद्वान" निकालता है। **बम्बईका** आयुर्वेद विद्यालय डाक्टर पोपट प्रभुरामके उद्योगसे चलता जा रहा है; किन्तु उसके सहायक लोग भी उसके क्रमसे प्रसन्न नहीं इसलिये उसके बहुतेरे सहायक उससे क्रमशः अलग हो रहे हैं। डाक्टर साहब उसके संस्कार और उन्नतिकी नवीन कल्पना कर रहे हैं; आशा है वह आगामी वर्ष तक प्रकट हो जायगी। **जयपुरके** राजकीय विद्यालयका वृत्तान्त इस वर्ष हमें प्राप्त नहीं हुआ; किन्तु विद्यालय अच्छी तरह चल रहा है और आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित लक्ष्मीराम स्वामीके तत्वावधानमें उन्नति करता जा रहा है। यह विद्यालय राजकीय संस्कृत पाठशालाके अन्तर्गत है। **पीलीभीतका** ललितहरिसंस्कृत विद्यालय भी वहांके राजा लालताप्रसाद जीकी कीर्तिध्वजा फहरा रहा है और क्रमशः उन्नति करता जा रहा है। इसके साथ एक औषधालय भी है जिसमें रोगियोंको धर्मार्थ औषधि दी जाती है और विद्यालयके विद्यार्थियोंको प्रत्यक्ष रोग निदान और चिकित्साकी विधि बतायी जाती है, औषधियोंकी तैयारी आदिका भी अनुभव कराया जाता है। अब सर्जरी, एनाटमी और फिजियालोजी (चीरफाड़, शारीर और इन्द्रियविज्ञान) की शिक्षाकी सुविधाके लिये वहां चीरफाड़का भी प्रबन्ध किया गया है। इसका कार्य एक सुयोग्य डाक्टरकी देखरेखमें होता है। छात्रोंको छात्रवृत्ति भी मिलती है और परीक्षामें जानेवाले परीक्षार्थियोंको मार्गव्यय भी मिलता है। आयुर्वेदाध्यापकोंमें पण्डित रामस्वरूप शर्मा आयुर्वेदाचार्य पढ़ाईमें अच्छा परिश्रम करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्लीका **बनवारीलाल** आयुर्वेदविद्यालय सेठ बनवारी-लालजीके स्मारकका ही काम नहीं देता, बल्कि आयुर्वेदका बड़ा उपकार कर रहा है। पण्डित मनोहरलाल शर्मा आयुर्वेदाध्यापक प्रभृति इसकी उन्नतिके उद्योगी हैं। इस वर्ष इसकी वैद्यवर श्रेणीमें २ और वैद्यश्रेणीमें ३७ परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं।

दिल्लीमें **तिब्बी कानफरेंसकी** ओरसे हकीमीके साथ ही आयुर्वेदकी शिक्षाके लिये भी जो कक्षा है, उसके पाठ्यक्रमका वर्णन गत वर्ष किया जा चुका है। डाक्टर बी० के० मित्र महोदयके परिश्रम और प्रबन्धसे इसकी स्थिति अच्छी है। इस वर्ष इसकी प्रबन्धकारिणी समितिमें इस बातका झगड़ा उठा था कि इसमें पढ़ाई संस्कृतके द्वारा हो अथवा हिन्दीके द्वारा। वहाँके दो तीन प्रतिष्ठित वैद्योंका कथन था कि जैसे यूनानीकी शिक्षा अरबी और फारसीके द्वारा होती है, इसी तरह आयुर्वेदकी शिक्षा संस्कृतके द्वारा होवे। बहुमतसे यही बात पक्की रही।

दिल्लीके सेठ **सांवलदासकी** उदारतासे खारी बावड़ीके पास एक तीसरा आयुर्वेदविद्यालय सेठ प्रसादीलाल जीके स्मारक में चल रहा है। बाहरी विद्यार्थियोंको सुविधाके अनुसार भोजन और स्थान भी दिया जाता है। इस समय विद्यालय में १७ छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं। इनमें ३ विशारद परीक्षाके लिये तैयार हैं। इसमें आयुर्वेदविद्यापीठके पाठ्यक्रमके अनुसार पढ़ाई होती है। प्राकृत परीक्षा और विशारदपरीक्षाकी जो पढ़ाई करना चाहते हों ऐसे विद्यार्थी इसमें भर्ती हो सकते हैं। इसका काम आयुर्वेद-विद्यापीठके उत्साही परीक्षोत्तीर्ण वैद्यराज श्रीयुक्त चतुरसेनजी वर्मा महोदय सँभालते हैं। विद्यालयके साथ एक औषधालय भी है, उसमें सब लोगोंको मुफ्त दवाइयाँ दी जाती हैं; असमर्थ रोगि-योंको स्थान और पथ्यकी भी व्यवस्था की जाती है। इस प्रकार मानों औषधालयके साथ रुग्णालय भी है और उससे विद्यार्थी अपने अभ्यासमें लाभ उठाते हैं। इसीमें एक "भेषजभण्डार" स्थापित किया गया है, जिसमें आयुर्वेद और यूनानीकी औषधियाँ हरी सूखी प्रस्तुत रखी जाती हैं। अर्क, रस, आसव, अवलेह आदि तैयार होते हैं और विद्यार्थियोंको भी उनके बनानेका ढङ्ग बताया जाता है। बाहरके वैद्य भी सूखी औषधि आदि मँगाने पर वी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी० द्वारा पा सकते हैं। विद्यालयके साथ ही एक पुस्तकालय भी है, जिसमें विद्यार्थियोंके सिवाय अन्य लोग भी बिना कुछ फीस दिये पुस्तकें पढ़ सकते हैं।

आयुर्वेदविद्यापीठके पाठ्यक्रमके अनुसार शिक्षा देनेवाला एक आयुर्वेदविद्यालय हृषीकेशमें कालीकमलीवाले बाबा रामनाथ जीने खोला है और इस एक वर्षमें उसे अच्छा स्वरूप दे दिया है। आयुर्वेदाचार्य पण्डित घनानन्दजी पन्त, तथा अन्य कई वैद्योंके तत्वावधानमें अब यह भविष्यमें चलाया जावेगा। यह विद्यालय १५ सुयोग्य छात्रोंको भोजन वस्त्र देता है। द्वितीय श्रेणीकी योग्यतावाले २५ छात्रोंको बाबाजीके क्षेत्रसे भोजन मिलता है और तृतीय श्रेणीकी योग्यतावाले छात्रोंको अन्य क्षेत्रोंसे भोजनका प्रबन्ध हो सकता है। इस विद्यालयमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्णके छात्र लिये जाते हैं। संस्कृत जाननेवालोंको आयुर्वेदविशारदकी और मिडिल तक हिन्दी जानने वालोंको प्राकृत वैद्यपरीक्षाकी शिक्षा दी जाती है। इसमें शिक्षाके सिवाय औषधि निर्माणक्रिया तथा चिकित्सानुभव भी कराया जाता है। कर्मयोगी और उत्साही बाबाजी वनौषधि वाटिका और सर्जरीके लिये भी उद्योग कर रहे हैं। बाबाजीके उद्योगसे ही वहाँ धर्मार्थ औषधालय भी है; इसलिये छात्रोंको प्रत्यक्ष रोगनिदान भी कराया जाता है। बाबाजीके पुरुषार्थसे भारतवर्ष भरके पुण्य क्षेत्रोंमें इतने पुण्यकार्य अन्न-सत्र आदि चल रहे हैं कि उनका स्मरण करनेसे आश्चर्य और साथ ही आनन्द होता है कि ऐसे ही साधु महात्माओंके पुण्य प्रतापसे भारतकी रक्षा हो रही है। साथ ही जिन मारवाड़ी उदार धनिकोंके द्वारा आपको ऐसे कार्यों के लिये यथेष्ट सहायता मिलती है वे भी धन्य हैं।

मारवाड़ी सज्जनोंकी उदारता, गुण ग्राहकता और कीर्तिकी घोषणा करता हुआ जो श्रीविशुद्धानन्दविद्यालय कलकत्तेमें कई वर्षोंसे चल रहा है, उसमें, उसके कई दशान्तिके अभिलाषी सभासदोंके उद्योग और पण्डित प्रतापसिंह शर्मा आयुर्वेदविशारदके अनुरोध और प्रयत्नसे एक आयुर्वैदिक विभाग भी खोल दिया गया है। अभी इस विभागके लिये ५००) वार्षिककी मंजूरी हुई है। जिसका काम जयपुर विद्यालयके आयुर्वेदाचार्य परीक्षोत्तीर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जानकीलाल जी वैद्य कर रहे हैं यहांकी पढ़ाई भी आयुर्वेद-विद्यापीठके शिक्षाक्रमके अनुसार होती है।

कांगड़ीके **गुरुकुलमें** पूर्व क्रमके अनुसार ही आयुर्वेदकी पढ़ाई हो रही है। उसका विशेष वर्णनपत्र भेजने पर भी हमें नहीं मिला। ज्वालापुरके **महाविद्यालयमें** भी पढ़ाई क्रमशः उच्च श्रेणीकी हो रही है। वैद्यराज पं०रामचन्द्रजी यहां आयुर्वेदकी शिक्षा देते हैं और साथ ही एक औषधालय भी है जिसमें केवल यहींके ब्रह्मचारियोंको ही औषधि नहीं दी जाती, बल्कि दूर दूरके लोग भी इस औषधालयकी चिकित्सासे लाभ उठाया करते हैं। अब गुरुकुलके ब्रह्मचारियोंका गला भी धीरे धीरे विदेशी औषधियोंसे छुटकारा पाता जा रहा है और अमृतोपम देशीऔषधियाँ उन्हें नये प्रबन्धके अनुसार मिलना सुलभ हो गया है। हरिद्वारके ऋषिकुलमें जिस क्रमसे पढ़ाई होती है, उसका वर्णन गतवर्ष किया गया है। क्रमशः पढ़ाईमें उन्नति हो रही है और कई ब्रह्मचारी आयुर्वेदकी परिक्षाके लिये तैयार हो रहे हैं।

खुरजा (बुलन्द शहर)के सेठ राय नत्थीमल बहादुरकी उदारतासे वहां एक हाईस्कूल और एक संस्कृत पाठशाला है। साथ ही उसमें एक आयुर्वेदीय विभाग भी है। इसमें आयुर्वेदविद्यापीठके क्रमसे पढ़ाई होती है। इस वर्ष वहांके छात्रोंने विद्यापीठकी परीक्षा भी दी है। अब औषधियोंके दिखाने आदिका भी प्रबन्ध कर दिया गया है। इसके मन्त्री लाला चिम्मनलाल साहब उत्साही सज्जन हैं।

पटियाला राज्यके शिक्षाविभागके अधीन पटियालामें एक आयुर्वेदिक पाठशाला है। पहले सं० १९६९ तक यह स्कूल पटियाला संस्कृत स्कूलकी शाखारूपमें था; परन्तु संवत १९७० से अब स्वतन्त्र संस्थाके रूपमें है। इसके अध्यापक विद्वान, उत्साही और कुशल वैद्य पण्डित रामप्रसाद वैद्योपाध्याय महोदय हैं। अभी इसमें श्रीदयानन्द कालेजके पाठ्यक्रमके अनुसार वैद्य कविराज और वैद्य वाचस्पति परीक्षोत्तीर्ण वैद्य तैयार किये जाते हैं। अभी इसमें प्रथम वर्षमें माधवनिदान भगन्दरनिदान पर्यन्त, शार्ङ्गधर संहिता मध्यमखण्ड पर्यन्त, भावप्रकाश निघण्ट विषवर्ग तक, सुश्रुत सूत्रस्थान और रसेन्द्रसारसंग्रह प्रथम अध्याय तक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे वर्षमें माधवनिदान सम्पूर्ण, नाड़ीविज्ञान सम्पूर्ण, रसेन्द्रसार-संग्रह, भावप्रकाशका निघण्टु, सुश्रुतका शारीर और शार्ङ्गधर ये सब सम्पूर्ण कर पहली परीक्षा ली जाती है। वैद्य वाचस्पतिके लिये इन दो वर्षोंके पश्चात् तृतीय वर्षमें सुश्रुतका निदान और चिकित्सास्थान, चरकसंहिता चिकित्सा स्थान, चक्रदत्त वातव्याधि पर्यन्त तथा चतुर्थ वर्षमें चरक विमान स्थान, सुश्रुत उत्तरतन्त्र और वाग्भट सूत्रस्थान तक पढ़ाया जाता है। वैद्यक विषयोंमें निबन्ध भी लिखाये जाते हैं), पाठशालाकी पढ़ाई और प्रबन्ध अच्छा है। उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको एक वर्ष तक अध्यापकके पास रह कर चिकित्सा रोगनिदान औषधिनिर्माण, वनौषधि पहिचान आदिके लिये रहना पड़ता है। विद्यार्थियोंको भोजनका प्रबन्ध स्वयं करना होता है। इसमें शीघ्र विद्यापीठके क्रमके अनुसार पढ़ाई होनेकी आशा है।

हरिद्वारमें आयुर्वेदमार्तण्ड पण्डित शिवचन्द्र शर्मा महोदयने जो धन्वन्तरिविद्यालय स्थापित किया था, वह चलता जा रहा है। इसकी नींव तो आपने १५ वर्ष पहले डाली थी; परन्तु ३ वर्षसे आप इसे विशेष उत्साहके साथ चला रहे हैं। अब तक इस विद्यालयसे १२२ छात्र तैयार होकर भिन्न भिन्न स्थानोंमें अपना काम कर रहे हैं। इनमें कुछ ऐसे भी विद्यार्थी हैं जो अन्य विद्यालयोंसे पढ़ कर यहां अनुभव प्राप्त करनेके लिये आये हैं। यहां औषध प्रस्तुत प्रणाली, वनौषधियोंकी पहचान करायी जाती है।

काश्मीर राज्यके जम्बूमें पण्डित रघुनाथ शर्माकी ओरसे एक आयुर्वैदिक पाठशाला चलती है, इसका ख़र्च राज्यकी ओरसे मिलता है। इसमें ६० विद्यार्थी पढ़ते हैं। वस्त्र भोजन आदि पाठशालासे दिया जाता है। पं० रघुनाथ शर्मा जी स्वयं इसके मुख्याध्यापक हैं। आप विद्यार्थियोंको बड़े प्रेमसे पढ़ाते हैं।

हरिद्वारकी हितकारिणी सभाकी पाठशालामें विद्यार्थियोंको औषधालयमें निदान और चिकित्साका अनुभव कराया जाता है। बाहरके विद्यार्थियोंके लिये स्थानका प्रबन्ध है। इसके अध्यापक पण्डित प्रभुदयालु जी वैद्यवाचस्पति महोदय हैं। इसमें वैद्यकुलभूषण परीक्षावालोंको माधवनिदान, शार्ङ्गधर, भावप्रकाशका निघण्टु और कणादकृत नाड़ीपरीक्षाकी पुस्तक पढ़नी पड़ती है। उच्च परीक्षा वैद्य काविरत्नवालोंको मधुकोष टीका सहित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवनिदान, रसेन्द्रसारसंग्रह, सुश्रुत शारीर, वाग्भट सूत्रस्थान तथा चिकित्सास्थान तक पढ़ना होता है। कुछ व्याकरण जानने-वाले ही इसमें लिये जाते हैं। जिन विद्यार्थियोंने इस पाठशालामें नहीं पढ़ा है, इसकी परीक्षा नहीं दे सकते। इसके प्रधानाध्यक्ष आनरेबल रायबहादुर लाला हरीचन्द जी मजिस्ट्रेट मुलतान हैं।

बलियाके वैद्यराज पण्डित हरिद्वार शर्मा जीने नये चौकमें एक आयुर्वेदीय पाठशाला खोली है, इसमें आयुर्वेदविद्यापीठके पाठ्यक्रमके अनुसार पढ़ाई होती है। इस शहरमें यूनानी चिकित्साका ही दौरदौरा है, आयुर्वेदकी चर्चा बहुत कम है। इसलिये वैद्यराज जीका साहस और उत्साह प्रशंसनीय है। इस पाठशाला-के विद्यार्थियोंने इस वर्ष प्राकृत वैद्यकी परीक्षा भी दी है। आठ विद्यार्थी प्राकृत वैद्य कक्षा में पढ़ते हैं।

प्रयागकी धर्मज्ञानोपदेश पाठशालामें कुछ विद्यार्थी आयुर्वेदकी भी शिक्षा पाते हैं; परन्तु अभी तक पाठ्यक्रम सिलसिलेवार नहीं है। इसलिये इसमें पढ़कर कोई वैद्य नहीं हो सकता। इस वर्ष ११ विद्यार्थी लोलिम्बराज और अञ्जननिदान पढ़ते थे। विद्यार्थी इस योग्य हैं कि यदि उन्हें ढङ्गसे शिक्षा दी जाय तो परीक्षा देने योग्य हो सकते हैं।

महाराष्ट्रकी अन्य संस्थाओंका वर्णन पहले हो चुका है। हमें मालूम हुआ है सोलापुरमें एक आयुर्वेद विद्यालय पांच वर्षसे स्थापित है। इसमें इस वर्ष पांच विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। दूसरी कक्षाकी परीक्षामें दो विद्यार्थी शारीर, इन्द्रियविज्ञान, वाग्भट सूत्र-स्थान और माधवनिदानमें उत्तीर्ण हुए हैं। पहली कक्षाकी परीक्षामें दो विद्यार्थी शारीर और माधवनिदानमें उत्तीर्ण हुए हैं। इसमें संस्कृत, मराठी और अंग्रेजोमें शिक्षा दी जाती है। इसके पहले दो विद्यार्थी उत्तीर्ण होकर अपने काममें लग चुके हैं। इसके अध्यापक उत्साही वैद्य पण्डित कृष्णराव गड़बोले महाशय हैं।

सताराके महाराष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यालयमें २१ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इसमें पांच स्त्रियां हैं जो सूतिका शास्त्र, स्त्री- बाल-चिकित्सा आदिकी शिक्षा पा रही हैं। पांच आजन्म सभासद इसमें शिक्षकका काम करते हैं। तीन वर्षमें शिक्षा समाप्त होती है। विद्यार्थियोंको एक रुपया महीना फीस देनी पड़ती है। शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल मराठी भाषामें दी जाती है। वाग्भट, माधवनिदान, मदनपालनिघण्टु, रसरत्नसमुच्चय, शार्ङ्गधर तथा पश्चिमी विज्ञानके अनाटमी, (शारीर) केमिस्ट्री (रसायनशास्त्र), फिजियालोजी (इन्द्रिय विज्ञान), मेटीरियामेडिका, मेडिसन, सर्जरी, मिडवाइफरी आदिकी शिक्षा दी जाती है। स्त्री विद्यार्थियोंके रहने और पढ़ानेका अच्छा प्रबन्ध है। विद्यार्थियोंको देशी दवा बनाना और प्रत्यक्ष रोग निदान सिखाया जाता है। आगामी वर्ष मुर्देकी चीरफाड़का काम भी आरम्भ हो जायगा।

८ मध्यप्रदेशकी **खैरागढ़** रियासतमें पण्डित काशीनाथ झा महोदयने एक संस्कृत पाठशाला खोली है उसमें आपने आयुर्वेदकी शिक्षाका भी विभाग रखा है। तीन राजवैद्य उसमें मुफ्तमें शिक्षा देते हैं। आप इस पाठशालामें आयुर्वेदविद्यापीठके शिक्षा क्रमके अनुसार शिक्षा देते हैं।

मध्यप्रदेशके मण्डला नगरमें पण्डित हरदेव शर्मा वैद्यरत्न महोदयने "**एडवर्ड आयुर्वेदीय पाठशाला**" खोली है। आप स्वयं इसमें शिक्षा देते हैं। इसमें भी आयुर्वेदविद्यापीठके शिक्षा क्रमके अनुसार पढ़ाई होती है।

लुधियानाकी ब्राह्मण सभाके अधीन संस्कृत विद्यालय चल रहा है उसमें आयुर्वेदकी भी शिक्षा दी जाती है। विद्यालयके अतिरिक्त अन्य स्थानोंके विद्यार्थी भी इसकी परीक्षामें सम्मिलित होते हैं इसके मुख्याध्यापक वैद्यराज पण्डित गोकुलचन्द्र शर्मा हैं। इस वर्ष इसकी प्रथमा परीक्षामें ७ परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए हैं। उन्हें "आयुर्वेदविशारद" की उपाधि मिली है।

सिन्धु हैदराबाद (तोमापारा) के वैद्यराज मुरलीधर प्रेमचन्द्र जी शास्त्रीने एक आयुर्वेद पाठशाला खोली है। अभी इसका प्रबन्ध सन्तोष जनक नहीं हुआ है; परन्तु वैद्यराज जी उसका प्रबन्ध करनेके उद्योगी हैं। पाठशालामें साथ ही औषधि निर्माण क्रिया भी बतायी जाया करेगी।

पूनेमें **शास्त्रोत्तेजक सभाकी** ओरसे आयुर्वेदकी परीक्षा हुआ करती है। इस वर्ष नासिकके वैद्यराज देवधर शर्मा शास्त्रीकी एक स्त्री विद्यार्थिनी इसमें परीक्षा देना चाहती थी; परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रियोंने उसे परीक्षामें नहीं लिया। स्त्रियोंको इस आवश्यक अङ्गकी शिक्षासे वञ्चित रखना हमारी समझमें अनुचित है।

लाहौरके श्री दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालेजके साथ आयुर्वेदिक विभाग है और इसे सरकारकी ओरसे भी मान्यता प्राप्त है। इसमें वैद्यकविराज और वैद्यवाचस्पतिकी उपाधि उत्तीर्ण विद्यार्थियोंको दी जाती है। शिक्षा चार वर्षमें पूर्ण होती है। पाठ्यक्रमका व्योरा हम गतवर्ष दे चुके हैं। इस वर्षकी परीक्षाका फल उसके अधिकारियोंने अब तक हमारे पास नहीं भेजा।

हरिद्वारमें धामणगाँवके सेठ जयरामदास रामचन्द्र जीकी ओरसे एक पाठशाला थी; परन्तु इस वर्ष उसका कुछ विवरण हमें प्राप्त नहीं हुआ। बङ्गलौरमें वैद्यपञ्चानन व्ही० डी० पण्डितकी ओरसे एक आयुर्वेद पाठशाला चल रही है; परन्तु उसका भी विवरण हमें नहीं मिला।

दो वर्षसे बाँकीपुरमें पण्डित ब्रजविहारी चतुर्वेदी, साहित्याचार्य पण्डित रामावतार शर्मा, महामहोपाध्याय पण्डित रघुनन्दन त्रिपाठी प्रभृतिके उद्योगसे एक पण्डित सभा स्थापित हुई है। इसके प्रधान उद्योगी वैद्यराज पण्डित ब्रजविहारी चतुर्वेदी हैं। इसके द्वारा प्रति वर्ष वसन्त पञ्चमीको विद्यार्थियोंको विविध विषयमें परीक्षा ली जाती है। आयुर्वेदकी भी परीक्षा हुआ करती है। प्रथमा, मध्यमा और आचार्य परीक्षाका क्रम है। कितने ही विद्वानोंको बिना परीक्षा भी उपाधियाँ दी जाती हैं। इस वर्ष प्रथमा परीक्षामें १८ और आचार्य परीक्षामें दो विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए हैं।

धर्मार्थ औषधालय।

भारतवर्षके प्रत्येक भागमें इस समय कितने ही धर्मार्थ औषधालय चल रहे हैं। इनमेंसे प्रसंग क्रमसे कितनों ही का वर्णन पहले हो चुका है। इसके अतिरिक्त जिनका वर्णन हमें मिल सका है, उनका वर्णन नीचे देते हैं। इनके सिवाय भारतवर्षके प्रायः सभी वैद्योंके यहां गरीबोंको मुफ्त दवा दी जाया करती है; परन्तु न तो उनके यहां ऐसोंका कोई रजिस्टर रहता और न वे वैद्य यह समझते ही हैं कि इस प्रकारकी गणना रखने और उसकी सूचना देनेका कुछ अर्थ है। किन्तु वे यदि विधिवत् रजिस्टर रखें और कितने लोगोंको उन्होंने धर्मार्थ औषधिसे लाभ पहुँचाया यह बतलाते रहें तो सर्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधारणको प्रमाण पूर्वक यह बतलाया जा सके कि वैद्योंके द्वारा इतने भारतीयोंकी चिकित्सासे लाभ पहुँच रहा है ।

बीकानेर राज्यके नोहर स्थानमें वहांके सुयोग्य सेठ श्रीयुक्त भानीराम जी तथा हरपतराय जीने एक "धर्मार्थ आयुर्वैदिक औषधालय" आठ वर्ष हुए स्थापित किया था । इसमें नगर निवासी ही नहीं बाहरके लोग भी औषधिसे लाभ उठाते हैं । इसका काम इस समय पं० रामचन्द्र जी दीक्षित वैद्य कर रहे हैं । इस औषधालयसे सन् १९१० में ४८८२ सन् १९११ में ५०१३ और सन् १९१२ में ५५२० मनुष्योंने लाभ उठाया था । लगभग १५ रोगी नित्य लाभ उठाते रहे । सन् १९१३ में ६० रोगी तक नित्य आते रहे ।

कानपुरमें जैनी भाइयोंके चन्देसे श्री दिगम्बर जैन औषधालय चल रहा हैं । लगभग १२५ रुपये मासिक इसमें खर्च होता है । औषधालयसे सर्वसाधारण लाभ उठाते हैं ।

कई स्थानोंमें इस बातका प्रयत्न हो रहा है कि रुग्णालय सहित आयुर्वैदिक औषधालय खोले जायँ । अर्थात् ऐसे औषधालय हों जहां रोगी भी रखे जायँ और उनकी चिकित्सा और सुश्रूषा की जाय । हम सुनकर प्रसन्न हुए कि इस वर्षके चैत्र महीनेसे पूनेके प्रसिद्ध वैद्यराज प्राणाचार्य बाळशास्त्री लागवणकर महोदयने अपने औषधालयके साथ रुग्णालय भी खोल दिया है ।

यह आनन्दकी बात है कि वैद्योंमें सार्वजनिक सेवाका भाव नये ढङ्गसे उत्पन्न हो रहा है । यों तो प्रत्येक वैद्यके यहां जो रोगी जाते हैं, उनकी सभी वैद्य दवा करते हैं; परन्तु सार्वजनिक यात्राओं और मेलोंके समय जो हज़ारों आकर बीमार पड़ते हैं और किसीसे जान पहचान न होनेके कारण कष्ट उठाते और निस्सहाय प्राण गंवाते हैं, टोली बनाकर उनकी सेवा करनेका भाव अभी तक वैद्योंमें कम है । प्रयागकी आयुर्वेदप्रचारिणी सभाके सभासद कई वर्षोंसे माघमेलेके समय ऐसा करते हैं । अब हम सुनकर प्रसन्न हुए कि बम्बईमें भी "आयुर्वेद-सेवकसमाज" स्थापित हुआ है और उसकी ओरसे कुछ स्वयं सेवक इस वर्ष महाराष्ट्रप्रान्तके पण्ढरपुरके मेलेके समय गये थे । जिस समय आयुर्वेद और उसके सेवकों पर हीनता की छाप मारनेवाला मेडिकल रजिस्ट्रेशन एक्ट बम्बईमें पास हुआ उस समय आयुर्वेदकी सेवा कर उसका स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वसाधारणके सामने रखनेके लिये वहां एक "आयुर्वेद सेवक-समाज" स्थापित हुआ था। उसीके सभासद श्रीयुक्त विनायक शिवराम केतकर वैद्य (अहमदाबाद) महोदयने अपने अन्य तीन सभासद मित्रोंके साथ पण्ढरपुरके मेलेका प्रबन्ध किया था। यह मेला आषाढ़में हुआ करता है और वहां प्रायः हैज़ा होता ही है। इसलिये इन लोगोंने अपने पास सञ्जीवनी, लशुनादिगुटिका (वैद्यामृत), कर्पूरादिवटी, आनन्दभैरव (रसरत्न समुच्चय); अग्निकुमार (योगरत्नाकर), वातराज, अजवाइन, सौंफ, दालचीनी आदिका अर्क, ज्वरके लिये ज्वरांकुश खांसीकी दवा तथा कुछ मात्राएं रख ली थीं। इन लोगोंने खाली औषधिका ही प्रबन्ध नहीं किया; बल्कि पहले ही वहां पहुँचकर यात्रियोंको अपने व्याख्यानों द्वारा यह समझाना आरम्भ किया कि कैसा आहार विहार रखनेसे बीमार पड़नेकी सम्भावना नहीं होगी। दूकानदार और यात्रियोंको इन्होंने यह भी समझाया कि बिगड़े तथा सड़े हुए प्रदार्थ बेचना तथा खरीदना हानिकारक हैं। समाजके सेवक वैद्य पाण्डुरङ्ग वासुदेवदात्ये, वैद्य गंगाधर दत्तात्रय केतकर तथा वैद्य दामोदर कृष्ण केतकर मेलेके मैदानोंमें घूमकर दुःखी रोगियोंकी ढूंढखोज करते थे। इस कार्यका पण्ढरपुरके निवासी और अधिकारियों तथा यात्रियोंके हृदय पर अच्छा परिणाम हुआ।

हरिद्वारके पण्डित शिवचन्द्रजी शर्मा महोदय केवल हरिद्वार में ही नहीं अन्यत्र भी घूम फिर कर आयुर्वेदकी सेवा किया करते हैं; किन्तु आपको वैद्योंसे कोय सम्बन्धी विशेष मदद नहीं मिलती। यद्यपि धनियोंसे समय समय सहायता मिलती रहती है; तथापि उनके कार्योंकी पूर्तिके लिये वह बस नहीं। इससे आपका बहुतसा समय चिन्तामें बीता करता है। आपकी ओरसे कई धर्मार्थ औषधालय चल रहे हैं। उनमेंसे एक हरिद्वारमें ही है। जिसमें साधु, सन्त, महात्मा, संस्कृत विद्योपजीवी विद्यार्थी तथा सर्व साधारण यात्रियोंको बिना दाम औषध दी जाती है। इसमें इस वर्ष लग भग १५ हज़ार लोगोंकी चिकित्साकी गयी। बद्रीनारायणकी यात्रा करनेवालेंको एक महीनेके उपयोगके लिये दवाकी थैली दी जाती है; जिसके सेवनसे रास्तेमें जलका विकार नहीं होता। इस प्रकारकी थैलियां इस वर्ष लगभग तीन हज़ार लोगोंको दी गयीं। चैत्रसे भाद्र महीने तक आप स्टेशन पर ही एक नोटिस वितरण कराते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। इससे यात्रियोंको औषधि लेनेकी सूचना और इस यात्रामें हमें किस प्रकार रहना चाहिये इसका बोध होता है। यही नहीं आप असमर्थ यात्रियोंको मूंगकी दाल, चावल, साबूदाना आदि पथ्य भी देते हैं आपका तीसरा धर्मार्थ औषधालय मुज़फ़्फ़र नगरके **श्यामली** शहरमें है। इसमें आप ४०) मासिक खर्च करते हैं। १० महीनेमें पांच हज़ार रोगियोंने यहांकी दवासे लाभ उठाया। इसके साथ एक पाठशालाभी है,) जिसमें ६ दश विद्यार्थी वैद्यक शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसका संचालन पण्डित लालचन्दजी भिषगाचार्यके द्वारा होता है। आपका चौथा औषधालय **जलालाबादमें** है। इसमें एक वर्षमें पन्द्रह सौ रोगियोंको धर्मार्थ औषधियां दी गयीं। इसके साथ भी एक वैद्यक पाठशाला है, जिसमें १५ विद्यार्थी हैं। इसके मुख्याधिष्ठाता पण्डित चन्दनलाल वैद्यभूषण हैं। आपका पांचवां धर्मार्थ औषधालय **कांधलासें** खुला है। इसकी व्यवस्था अभी व्यवस्थित नहीं हुई है। मेरठके डालमपाड़ा स्थानमें आपने एक औषधालय खोला है। और उसमें अपने शिष्य वैद्यभूषण पं० हरिवंशलाल वैद्यकी नियुक्ति की है। इसमें सब लोगोंको मुफ़्त औषधि दी जाती है। **सहारनपुरमें** आपके तन्त्रसे पं० परशुरामजी वैद्यभूषण, कलशियामें प० हरद्वारीलाल वैद्यवर, सहारनपुर जिलेके **नोसरहेड़ीमें** पण्डित मंगतराम वैद्य, अम्बालामें पण्डित बैजनाथ भिषगाचार्य, **नैसील** पीपलीरदौरमें पं० कुन्दनलाल वैद्यवाचस्पति अपने स्वतन्त्र औषधालय चलाते हैं। हरद्वारके **सरखड़ो** स्थानमें पण्डित चन्द्रभानु वैद्यजी ने मुफ़्त दवा देकर सालमें छः सौ रोगियोंको आराम किया। दिल्ली ज़िलेके **कराला** स्थानमें पण्डित मामचन्द्र शर्मा वैद्यभूषण धर्मार्थ औषधालय चला रहे हैं। पण्डित शिवचन्द्र जीने **शाकम्भरीके** मेलेमें दो वैद्य और चार उपवैद्य (कम्पोंडर) धर्मार्थ औषधि बांटनेके लिये भेजे थे। वहांके यात्रियोंको इनसे बड़ी सहायता मिली। **गढ़मुक्तेश्वरके** मेलेमें भी आपकी ओरसे पण्डित हरकेश दत्तजी आयुर्वेदाचार्य धर्मार्थ औषधि बांटने गये थे। **कुरुक्षेत्रके** मेलेमें भी आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिशनने काम किया। ईश्वर आपके मिशनको अधिक सबल और लोक सेवामें सक्षम बनावे।

✓ हरद्वारकी हितकारिणी सभाकी ओरसे सन् १९०४ ईस्वीसे धर्मार्थ औषधालय चल रहा है। इसके वैद्य अमीर-गरीब किसी-के भी घर जानेमें फीस नहीं लेते। गरीब रोगियोंको अनुपानकी वस्तुएं भी दी जाती हैं। रातदिन रोगी जब चाहे औषधि पा सकता है। बाहरके रोगियोंको भी पत्र द्वारा सलाह दी जाती है। इसमें बीमारोंको दैनिक संख्या लगभग २५-३० होती है। गर्मीमें यात्राके समय ४०-४५ रोगी तक आते हैं। इसका वार्षिक व्यय १३००) हुआ करता है। आनरेबल हरीचन्दजी रायबहादुर इसका सब खर्च देते हैं।

✓बम्बईका झण्डूफर्मास्युटिकलवर्क्स एक प्रसिद्ध नाम लेने योग्य संस्था है। इसका महत्व इस लिये नहीं कि यह धर्मार्थ-औषधि देता है; बल्कि इसलिये है कि धर्मार्थ औषधि देनेवालोंको कम दाममें औषधियां पहुँचा कर सहायता पहुँचाता है। इसका काम यान्त्रिकबलसे होता है; इससे औषधियां सस्ती तैयार हो सकती हैं। वैद्योंको यह बात बतला दी जाती है कि इसमें बनी औषधियोंमें वचनाग आदि जहरीले पदार्थ किस प्रमाणमें डालें गये हैं।

काशी हरिद्वार आदि तीर्थ स्थानोंमें रामकृष्णसेवाश्रमकी ओरसे अच्छी लोकसेवा हो रही है। परन्तु दुःखकी बात है कि महात्मा रामकृष्णपरमहंसके नामपर जो संस्था चले उसमें आयुर्वैदिक औषधियोंके बदले विदेशी औषधियोंका व्यवहार किया जाय! रामकृष्ण सेवाश्रमकी ओरसे प्रयागमें भी एक औषधालय है; परन्तु उसमें भी विदेशी औषधियां दी जाती हैं। जोहो, हरिद्वारके पास कनखलमें जो सेवाश्रम है, उसकी रिपोर्ट हमें प्राप्त हुई है। इसमें सभी श्रेणीके यात्रियोंको दवा दी जाती है। यहांके औषधालयके साथ एक आतुरालय भी है। जिसमें रोगियोंके रहने और उनके खानपानकी व्यवस्था है। सन् १९१३ ईस्वीमें आश्रमका काम पहले-को अपेक्षा अधिक बढ़ गया है। रोगियोंकी संख्या भी ३ सैकड़ा वृद्धिपर है। सभी सार्वजनिक कार्योंके समान इसे भी अर्थकष्ट भोगना पड़ रहा है। इसके व्यवस्थापक स्वामी कल्याणानन्द जीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजीमें एक अपील छपाकर आश्रमको सुचारु रूपसे चलानेके लिये सर्वसाधारणसे सहायता मांगी है। रोगियोंके रहनेके लिये जो स्थान है वह भी संकीर्ण है। कमसे कम १२ रोगियोंके रहने-योग्य जगहका और भी प्रबन्ध होना आवश्यक है। संक्रामकरोगोंसे पीड़ितोंके लिये एक अलग विभाग तैयार करानेकी आवश्यकता है। गत वर्ष ९७०७ मनुष्योंको औषधियोंकी सहायता मिली, इनमें ६५७६ पुरुष ३१३१ स्त्रियां थीं। इनमें ७४४८ हिन्दू और ६६४ मुसलमान, ४ कृस्तान १४१३ चमार और १५३ मेहतर थे। हिन्दुओंमें उच्चजातिके ३५ फी सैकड़ा थे।

उन्नाव जिलेके **चमरौली** स्थानमें आश्विनमहीनेमें रामलीला हुआ करती है। उस समय आसपासके लोग भी इकट्ठा होते हैं। इस वर्ष वहांके पण्डित शिवदुलारे जी वैद्य और श्रीयुक्त गौरीशङ्कर जी हकीमने गरीबोंको मुफ़ दवाइयां बाटीं। लगभग पांचसौ लोगोंने इससे लाभ उठाया। खांसी, दाद, जूड़ी, तिजारी और आंखके सुर्मेकी औषधियोंकी अच्छी खींच रही। इस समय मेलेमें एक छोटी प्रदर्शिनी भी की गयी, जिसमें बहुतेरी जड़ी-बूटियां दिखायी गयी थीं। प्रदर्शिनी उन्नावके वकील पं० विश्वम्भरनाथ जीने खोली थी। आपका अच्छा प्रभावशाली व्याख्यान हुआ इस प्रदर्शिनीके उत्पादक पं० सूर्यप्रसादजी बाजपेयी हैं।

धूलिया (बम्बई प्रान्त) में "प्राणिरक्षा संस्था" स्थापित है। इसकी ओरसे गोरक्षा आदिके काम होते हैं। अब संस्थाने एक धर्मार्थ औषधालय भी खोला है। विशेष समाचार नहीं मिला।

बम्बईके **हीराबाग** धर्मशालामें जो औषधालय सेठ माणेकचन्द हीराचन्द जीकी ओरसे चल रहा है उसमें लगभग २५ हजार मनुष्य प्रतिवर्ष औषधिसे लाभ उठाते हैं।

कोटड़ा रेहावाला (कच्छ) में श्रीयुक्त **गोपालजी प्रयाग जी कोठारीकी** ओरसे एक धर्मार्थ औषधालय चलता है। यद्यपि आप डाक्टरीके अभ्यासी हैं; तथापि आपका आयुर्वेद पर बहुत प्रेम है और आपने अपने औषधालयमें आयुर्वैदिक औषधियोंके बांटनेका भी एक विभाग कर दिया है। आप बड़े उत्साही और परोपकार प्रिय हैं। आपके औषधालयमें इस वर्ष ८ हजार रोगियोंको मुफ्त दवा दी गयी। गरीब रोगियोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन, अनुपान, शीशी आदि भी मुफ्त दी जाती है। इस विभागको गतवर्ष उदार सज्जननेंासे लगभग ४००) की मदद मिली थी।

काठियावाड़के रामवाड़ी (पो० अमरेली) स्थानमें श्रीयुक्त गोविन्द अमृत वैद्यने "नैसर्गिक उपचार पद्धति" नामकी संस्था स्थापित की है। इसमें जहां तक बनता है औषधियोंका सहारा न लेकर स्वाभाविक आरोग्यदायक आहारविहार और उपचारके नियमोंसे ही रोग आराम करनेका प्रयत्न किया जाता है। आपका सिद्धान्त है कि वायु, प्रकाश, जल, पृथ्वी, विजली आदि महाभूतोंका शरीरपर वाह्योपचार करनेसे कोई भी औषधि लिये बिना अथवा शस्त्रक्रिया किये बिना रोग अच्छे हो सकते हैं; और यह बात अब अनुभवसे भी सिद्ध हो गयी है। इस विषयके अपने सिद्धान्त प्रचलित करनेके लिये संस्थाकी ओरसे "आरोग्य" नामका मासिकपत्र निकाला जाता है। बाहरके रहने वाले लोगोंको उनके रोगका व्योरेवार वर्णन आनेसे उसके लिये उपयोगी उपचार पद्धतिपर एक रुपया फीस लेकर लेख भी भेजा जाता है।

अधिक समय, अधिक व्यय और अधिक अनुभवसे तैयार होनेवाली रसादि औषधियां सभी वैद्य तैयार नहीं कर सकते अथवा उसके लिये अवकाश नहीं निकाल सकते। इसलिये आयुर्वेदीय पद्धतिसे चिकित्सा करनेवालोंको सहायता पहुंचानेके विचारसे अहमदाबादमें पण्डित जटाशङ्कर लीलाधर त्रिवेदी और जामनगर (काठियावाड़)में स्वर्गवासी महात्मा झण्डूभट जीका स्थापित किया औषधालय है। पण्डित जटाशङ्कर जीके औषधालयका नाम "गुजरात आयुर्वैदिक फार्मसी" है, जो २५ वर्ष पहले स्थापित हुई थी। इसके चार विभाग हैं। १ औषधि तैयार करनेका विभाग २ वैद्यकग्रन्थ प्रकाशित करनेका विभाग ३ वैद्यक मासिकपत्र प्रकाशित करनेका विभाग और ४ आयुर्वेदीय आरोग्यभवन विभाग। इनमेंसे तीन विभागोंका काम कई वर्षसे चल रहा है अब इस वर्षसे आरोग्यभवनका भी काम आरम्भ होगा। जगह ले ली गयी है और उसमें इमारत बन रही है। जामनगरवाले औषधालयका नाम "जामनगर रसशाला" है। यह ५० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक महात्मा झण्डूभट जी इधर धन्वन्तरिसमान पूज्य माने जाते हैं। इनके पुत्र वैद्यराज शङ्करप्रसादजी इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सञ्चालक हैं और इन शङ्करप्रसाद जीके पुत्र वैद्य जुगतराम जी बम्बईमें झण्डू फार्मसी चला रहे हैं।

गोंडालके वैद्यराज जीवराम कालीदास जीने रसशाला औषधाश्रमके नामसे एक औषधालय सं० १९५६ से स्थापित किया है। इसके द्वारा सस्ते दरमें लोगोंको औषधियां पहुंचायी जाती हैं। इस वर्ष लगभग ढाई हज़ार लोगोंको मुफ्त औषधियां दी गयीं। इस कार्यालयकी ओरसे "आयुर्वेद रहस्यार्क" नामक एक गुजरातीपत्र भी निकलने लगा है। इसके साथ ही आयुर्वेदाध्ययन-शाला तथा रोगिसुश्रूषाभवन खोलनेका भी उद्योग हो रहा है। श्रीमान् गोंडालनरेश इसके संरक्षक हैं।

काठियावाड़के मोरबी रियासतमें भी मोरबी स्टेट फार्मसी नामसे एक औषधालय है। श्रीमान् मोरबी-नरेशकी सहायतासे यह चल रहा है। इसके व्यवस्थापक वैद्यराज विश्वनाथ जी प्रसिद्ध विद्वान हैं।

बङ्गलोरमें वैद्यपञ्चानन वी० डी० पण्डितके तन्त्रसे एक आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय चलता है। उसमें मैसूर सरकारकी आज्ञासे वंगलोरकी म्युनिसिपलिटी १५०) साल देती है। अवश्य ही यह सहायता बहुत कम है; और वहांकी प्रजाका झुकाव भी इधर वैसा नहीं है। आपके ही द्वारा कनाड़ी पुस्तकभण्डार चलता है। यदि आपको यथेष्ट सहायता मिले तो आप आयुर्वेदसम्बन्धी बहुत सी पुस्तकें प्रकाशित करें। मैसूर सरकार कहती है कि पहले आप बीस हज़ार रुपये इकट्ठा करें तब सरकार भी सहायता करेगी। आपके ही द्वारा धन्वन्तरि आयुर्वेदपाठशाला चल रही है। जिसमें विद्यार्थियोंको भोजन, स्थान और पुस्तकें भी मुफ्त देनी पड़ती हैं। उक्त औषधालयमें १५७७९ लोगोंने दो वर्षमें लाभ उठाया है। दन्त-चिकित्सामें अस्त्रप्रयोग भी होता है।

रावलपिण्डीमें वैद्यराज गोस्वामी शिवलाल जीने जो योगीन्द्र औषधालय खोला है, उसमें इस वर्ष दो हज़ार एक सौ ८५ रोगी आये। इनमेंसे एक हज़ार १३९ रोगी भिन्न भिन्न रोगोंसे अच्छे हुए। एक अँग्रेज और कई प्लेग रोगी भी अच्छे हुए।

बाबियाल (अम्बाला) के वैद्यराज हीरालाल शर्मा अपने औषधालयमें उन रोगियोंको मुफ्त औषधि देते हैं, जिनके लिये आर्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाजके मन्त्री सिफारिश करते हैं। ऐसा संकुचित भाव वैद्योंके लिये शोभाजनक नहीं है।

✓ जम्बू (काश्मीर) के **श्रीभारद्वाज औषधालयमें** लगभग एक हज़ार रोगियोंको धर्मार्थ दवा दी गयी, जिसमें लगभग ४००) खर्च हुए। इसमें वैद्य हकीमोंसे तो दाम लिया जाता है, शेष रोगियोंको धर्मार्थ दवा दी जाती है। अशक्तोंको पथ्य और अनुपान भी दिया जाता है। इसके प्रतिष्ठापक आयुर्वेदपञ्चानन पण्डित रघुनाथ शर्मा और प्रबन्धकर्ता पण्डित लब्धराम शर्मा हैं। इस वर्ष २१८३ रोगियोंका इलाज हुआ।

✓ भागलपुर (बिहार) में सेठ आनन्दरामजी और उनके भाई बाबू गोवर्द्धनदास जीने **"आनन्द औषधालयके"** नामसे सन् १९१२ में एक औषधालय खोला था, वह अब तक उनके पुत्र बाबू वंशीधर ढाढानियाके उद्योगसे चलता जा रहा है। इससे भागलपुरके लोगोंको बड़ी सुविधा प्राप्त हुई है। लगभग एक सौ मनुष्य नित्य औषधालयको औषधिसे लाभ उठाते हैं और प्रायः ६० सैकड़ा मनुष्य आराम होते हैं। आस पासके दूर दूरके लोग इसमें दवा कराने आते हैं। लगभग चार हज़ार रुपये सालका इसमें खर्च है।

हुशंगाबाद (मध्यप्रदेश) ज़िलेके **सूढ़ापार** (पो० बाम्बई)-में पण्डित रघुनाथप्रसाद वैद्यका एक आयुर्वेदीय औषधालय है। इसमें गाँवके ३३० मनुष्योंने औषधि सेवन कर लाभ उठाया। इस स्थानके सिवाय बाबईके तालुकेदार पण्डित दौलतरामजी मानिकचन्दने इस औषधालयकी औषधियाँ अपने मकान पर धर्मार्थ बांटी। वैद्यजी चाहते हैं कि इस ज़िलेके जिस गाँवके लोग (जहाँकी आबादी १००० मनुष्योंसे कम न हो) अपने यहाँ अच्छी तरह निदान जाननेवाले एक वैद्यकी व्यवस्था कर लेंगे वहाँ वहाँ लगनेवाली औषधि मैं मुफ्त दे देऊंगा, और समयानुसार उन औषधालयोंका निरीक्षण भी किया करूँगा। यहां फसली ज्वर, आमज्वर, कासश्वास और मन्दाग्निके रोगी अधिक आये।

✓ **सागरके** पण्डित धरणीधर शर्माने अपने औषधालयमें चार हज़ार रोगियोंको धर्मार्थ औषधि दी। आप अपने यहाँ बीमारोंका रजिस्टर भी रखते हैं। यहींके वैद्यराज श्रीयुक्त भालचन्द्रजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवात्थेके चिकित्साभवनमें भी तीन हज़ार रोगियोंको धर्मार्थ औषधियां दी गयीं।

मध्यप्रदेशमें बरहानपुर नगरमें दीन दरिद्रियोंके लिये धर्मार्थ औषधि देनेके लिये पण्डित हरिप्रसाद जी मिश्र वैद्य एक औषधालय चला रहे हैं। आपके यहाँ चार पाँच पीढ़ियोंसे औषधालय है। इस वर्ष लगभग ५८० रोगियोंने धर्मार्थ औषधि प्राप्त कर लाभ उठाया। वैद्यराजजी विद्वान् और धर्मोपदेशक भी हैं। आपके पास प्राचीन अनुभूत प्रयोगोंके तीन ग्रन्थ भी हैं। इनके प्रयोग बड़े कारगर हैं। आप उन्हें ठीक कर सर्वसाधारणमें भी प्रकट करेंगे।

डूंडलोद-शेखावाटीमें कलकत्तेके धर्मरत्न सेठ रामचन्द्र जी गोइनकाके पुत्र रायबहादुर सेठ हरीराम जी गोइनकाने एक परोपकारी औषधालय जारी किया है। साल भरमें १५ सोलह हज़ार रोगियोंको दवाइयाँ दी जाती हैं।

झालरापाटनमें स्वधर्मपरायण जैन मण्डलीने लगभग डेढ़ वर्ष से "शान्ति औषधालय" के नामसे धर्मार्थ औषधालय खोला है, जिसका काम पण्डित बालमुकुन्द शर्मा वैद्यकी देखरेखमें चलता है। एक उपवैद्य और दो परिचारक हैं। काम उत्साहपूर्वक होता है।

जयपुर राज्यके "पुण्यके कारख़ाने" की ओरसे धर्मार्थ औषधियां बांटी जाती हैं। इसके सिवाय यहांके अन्य राजवैद्य भी धर्मार्थ औषधियां दिया करते हैं। परन्तु जिसे धर्मार्थ औषधालय कहना चाहिये ऐसे कोई नहीं हैं। जयपुर राज्यके अन्तर्गत शेखावाटी, रामगढ़, डूंडलोद, सीकर प्रभृति स्थानोंमें धनियोंकी ओरसे धर्मार्थ औषधियां दी जाती हैं; किन्तु उसकी नियमबद्ध रिपोर्ट नहीं प्रकाशित होती।

अजमेरका हिन्दू औषधालय पूर्ववत सुप्रबन्धके साथ चल रहा है और वैद्यराज कल्याण सिंहजीके उद्योग और परिश्रम से उन्नति पर है। यहांका जैन औषधालय भी चल रहा है। वैद्यराज पण्डित रामदयालुजी शर्मा राजवैद्य महोदयके औषधालयसे भी हजारों रोगी लाभ उठा रहे हैं। नसीराबादका परमार्थ जैन औषधालय उसी प्रकार पण्डित रामचन्द्रजी विशारदके तत्वावधानमें चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। इसमें नित्य ५० रोगियोंका औसत रहता है। इस वर्ष अजमेरके इन औषधालयोंका वृत्तान्त न मिलनेसे विस्तृत विवरण नहीं दिया जा सका।

चिड़ावा (शेखावटी)में रायसूर्यमल शिवप्रसादजी बहादुरने गरीब लोगोंके लिये धर्मार्थ औषधालय खोला है। अच्छे सुयोग्य वैद्य पं० जगन्नाथ शास्त्री वैद्यकी नियुक्तिमें औषधालयका काम चल रहा है। सब प्रकारकी कीमती औषधियां भी समय पर काम आनेके लिये प्रस्तुत रहती हैं। अभी इसी वर्ष यह औषधालय खुला है।

श्रीयुक्त पं० प्रतापसिंह शर्माने इस वर्ष मारवाड़में प्रचार कर कई स्थानोंमें आयुर्वेदकी जागृति की थी। उन्हींसे मालूम हुआ कि **मलसीसर**में एक आयुर्वैदिक औषधालय है; परन्तु उसकी अवस्था अच्छी नहीं है। वहांके ठाकुर साहब उत्साही पुरुष हैं। आपके द्वारा इस औषधालयकी भी उन्नति हो सकेगी।

कालीकमलीवाले बाबा रामनाथ जो उत्तराखण्डकी यात्रा करनेवालोंकी सुविधा करनेके लिये जो कर रहे हैं वह आदर्श है। इसवर्ष उनके कामोंमें कई सुधार भी किये गये हैं। हरिद्वारसे हृषीकेश जानेके रास्तेमें सत्यनारायण एक चट्टी है। वहां एक औषधालय है। उसके दो विभाग हैं। प्रथम विभागमें सालभरके खर्चके लिये काष्ठादि जङ्गली जड़ी बूटी संग्रह की जाती हैं। जो काष्ठादि और रसादि पदार्थ दिल्ली आदि बाहरी स्थानोंसे मँगाये जाते हैं, वे भी यहीं रहते हैं। औषधियां तैयार कर यहीं जमा रहती हैं और यहींसे खर्चके लिये औषधालयमें जाती हैं। दूसरा औषधालय विभाग है; जिसमें एक महीनेके खर्चके लिये औषधियां रहती हैं। औषधिके अतिरिक्त अनुपानकी वस्तुएं अदरख, शहद आदि भी यहींसे मिलती हैं। इस वर्ष ७२०० रोगियोंको दवा दी गयी: नित्यकी औसत हाजिरी २० रही। यह औषधालय मारवाड़ी पञ्चायती सभाके खर्चसे बाबाजी चलाते हैं। औषधियोंका खर्च इसीसे समझा जा सकता है कि इसवर्ष बङ्गभस्म १५सेर, अभ्रक २० सेर तथा इसी प्रकार अन्य कई औषधियां तैयार हुई हैं। इसके तीसरे विभागमें बद्रीनाथके यात्रियोंको एक बनी बनायी दवा जलविकार रोकनेके लिये इकट्ठा देदी जाती है। दूसरा धर्मार्थ-औषधालय हृषीकेशमें है। यहां दवाइयां सत्य नारायणसे तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर आती हैं। कुछ पाचन आदि यहां भी तैयार होते हैं। इसका भी खर्च पञ्चायती सभा देती है। यहां अनुपानकी, औषधियोंके अतिरिक्त खिचड़ीदूध आदि पथ्यकी वस्तुएं भी मिलती हैं। यहां भी जलविकार अवरोधक औषधि दी जाती है। यहां रोगियोंकी संख्या नित्य २५ से ४० तक होती है। तीसरा औषधालय बद्रीनाथमें है, इसका वार्षिकव्यय ४००) के लगभग है। यह खर्च हाथरसके सेठ श्री हरसुख राय कन्हैयालालजी देते हैं। रोगियोंको दैनिक संख्या १० से २५ तक रहती है। इसमें रोगियोंके ठहरनेका स्वतन्त्र स्थान नहीं है तौभी बाबाजीकी अधिकृत धर्मशालाओंमें अभीष्ट स्थान मिल जाता है। जब तक यात्रा रहती है, तब तक यह औषधालय चलता रहता है। चौथा औषधालय उत्तर काशीमें है। यहां भी अनुपान और पथ्यकी वस्तुएं दवाके अतिरिक्त दी जाती हैं।

हृषीकेशमें पञ्जाबियोंकी ओरसे **पञ्जाबसिन्धक्षेत्र** नामका बृहत्सत्र है। एक संस्कृत पाठशाला और औषधालय भी है; परन्तु औषधियां डाक्टरों द्वारा दी जातीं हैं। "धर्मशालामें सनहकीको मार" इसीको कहते हैं। क्या इसकी कमिटी इधर ध्यान देकर देशी औषधियोंकी व्यावस्था नहीं करेगी ?

फर्रुखाबादमें कुंवर श्याम सिंहजीने एक धर्मार्थ औषधालय खोला है, जिसमें इस वर्ष ५६०० रोगियोंको औषधियां दी गयीं। आप उत्साही हैं; परन्तु शहरके अन्य वैद्य आपके सार्वजनिक कामोंमें सहायक नहीं होते, इसीसे आप स्थानीयसभा भी न चला सके।

सीतापुर जिलेके **नीलगांव** रियासतमें वहांके ठाकुरसाहबने जो धर्मार्थ औषधालय खोला है वह अब तक वैद्यराज पूर्णानन्दके प्रबन्धसे चल रहा है। एक रुपये रोजकी औषधियों तथा वैद्य, कम्पौण्डर और नौकरका खर्च रियासतसे मिलता है। इस वर्ष रोगियोंकी संख्या अनुमान १० हजार दो सौ रही। इसमें दो हज़ारके करीब व्रणवाले आये जिनकी शस्त्रचिकित्सा भी की गयी। ज्वर, कास, कण्डु, वातोदर, मन्दाग्नि आदिके रोगी अधिक आये।

कानपुर जिलेके महाराजपुर **पालीके** रईस ठाकुर शङ्करबकस सिंहने जो धर्मार्थ औषधालय खोला था, उसकी व्यवस्था इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष अच्छी नहीं रही। बीमारोंका रजिस्टर भी नहीं रखा गया। औषधियां बांटी अवश्य गयीं। आशा है, ठाकुर साहब इसका प्रबन्ध शीघ्र बहुत अच्छा कर देंगे।

इस वर्ष सूर्यग्रहणके समय कालीकमलीवाले बाबाजीकी प्रेरणासे वैद्यराज गनानन्दजी पन्त कुरुक्षेत्रके मेलेमें धर्मार्थ औषधियां देनेके लिये गये थे। आप वहां एक महीने तक रहे। लगभग दो हज़ार रोगियोंको दवा दी गयी। इस औषधालयके सामने डाक्टरी काम फीका रहा। अदरख, शहद आदि अनुपानकी वस्तुओंके अतिरिक्त साबूदाना आदि पथ्यकी भी वस्तुएँ दी गयीं।

दिल्लीके रईस लाला लक्ष्मीनारायण (म्युनिसिपल कमिश्नर आनरेरी मजिस्ट्रेट) ने अपनी बनायी हुई धर्मशालाके विशालभवनमें सन् १९१० ईस्वीसे एक धर्मार्थऔषधालय खोला है। आपने उसके व्ययनिर्वाहार्थ एक उपयुक्त सम्पत्ति रजिस्टरी करा दी है। जिसमेंसे प्रतिवर्ष दो हज़ार रुपये खर्च होते हैं। औषधालयमें प्रायः शास्त्रोक्त रस, चूर्ण, अवलेह, अर्क, क्वाथ आदि प्रति समय तैयार रहते हैं और काममें आते हैं। इस वर्ष लगभग छः हज़ार रोगियोंको औषधियां दी गयीं। औसत ६० फी सैकड़ा रोगियोंको आराम होता है। औषधालयकी व्यवस्था आयुर्वेदाचार्य गोपीरमण देवाचार्य वैद्य करते हैं।

सहारनपुर ज़िलेकी लण्ढौरा रियासतमें श्रीमहाराज बलवन्तसिंह तथा कुँवर तुङ्गलसिंह जीकी सहायतासे पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्यने एक धर्मार्थ औषधालय खोला है। अन्य लोगोंसे भी इसमें सहायता ली जाती है। वैद्यराज जीने अपने नामके आगे "उपदंशचिकित्सक" की उपाधि लगा रखी है और ख़ास कर गर्मी सुज़ाकके रोगियोंको अभयदान देते हुए आपने एक विज्ञापन प्रकाशित किया है! यों तो धर्मार्थ औषधालयमें जिस रोगके रोगी आवें उन्हें औषधि देनी ही चाहिये; परन्तु ख़ास कर नीति भ्रष्टताकी बीमारियोंके बीमारोंको अभयवचन देकर आकाशमें चढ़ाना चाहे अधिक सहायता पानेका सुलभ मार्ग ही क्यों न हो; किन्तु उन्हें अधिक नीति भ्रष्ट करनेमें सहायता होनेके कारण किसी वैद्यके लिये कभी अभिनन्दनीय नहीं हो सकता। जो हो, इस औषधालयमें ५४२ रोगियोंको दवा दी गयी और १५२ रोगी औषधालयमें रखकर आराम किये गये, इनमें गर्मी, सुजाक, शोथ, कामला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुजली, सन्निपात, चौथिया आदिके रोगी थे। गरीब रोगियोंको खुराक आदि भी दी गयी। खर्च २१७) हुआ इसमें चन्देकी आमदनी ८८) आयी।

वैद्यराज पं० ईश्वरप्रसाद अशर्फीलाल शास्त्रीने बदायूं जिलेके सहसवान नगरमें एक धर्मार्थ औषधालय और पाठशाला खोली है। पाठशालामें आयुर्वेद विद्यापीठके क्रमसे पढ़ाई होती है। आपके औषधालयमें गरीबोंको मुफ़ दवा दी जाती है।

अलीगढ़में बाबू हरिदास बी० ए० वकीलके तन्त्रसे एक देशी अस्पताल फफाले मुहल्ले में खोला गया है। इसका खर्चा सर्व साधारणके चन्देसे चलता है। इसमें शिवनारायण दुवे वैद्यकी नियुक्तिमें काम हो रहा है। गरीब रोगियोंके घर भी वैद्य बिना फीसके जाते हैं। भगन्दर, बवासीर, नासूर आदिके चीर फाड़का भी प्रबन्ध है। गरीबोंके लिये स्थान और भोजनका भी प्रबन्ध किया जाता है। इसीके साथ एक पाठशाला भी खोली गयी है, जिसमें विद्यार्थियोंको ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं और इस अस्पतालमें प्रत्यक्ष निदान और चिकित्सा तथा चीरफाड़की शिक्षा दी जाती है।

लखनऊके हिन्दी साहित्य सम्मेलनके समय प्रतिनिधियोंके स्वास्थ्यकी खबर रखनेके लिये वहांकी वैद्यसभाके सभासद पंडित ब्रजगोपालजी और पण्डित लक्ष्मीनारायण नेत्रचिकित्सकने अच्छा परिश्रम किया। पण्डित लक्ष्मीनारायणजीकी नेत्र चिकित्साकी कुशलतासे मथुरा वैद्यसम्मेलनके समय प्रतिनिधियोंको बहुत सन्तोष हुआ। आपने वहीं लोगोंके सामने कई नेत्र रोगियोंको आराम कर सफलता प्राप्त की थी।

बलियाके नया चौक मुहल्ले में पण्डित हरिद्वार शर्माजीने एक औषधालय खोला है, उसमें इस वर्ष ५४२४ लोगोंको मुफ़्में दवा दी गयी। इनके सिवाय १२७३ लोगोंने स्वेच्छासे मूल्य दिया। औषधालयके साथ ही आपकी एक पाठशाला भी है, जिसमें आयुर्वेदविशारद परीक्षाके लिये, एक और प्राकृत परीक्षाके लिये ८ विद्यार्थी तैयार हो रहे हैं।

इनके सिवाय हरिद्वारमें धामणगाँववालोंकी ओरसे जो धर्मार्थ औषधालय चलता है उसकी कोई खबर नहीं मिली। ज्वालापुर महाविद्यालयके औषधालयका भी वर्णन नहीं मिला। हैदराबादमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ मुकुन्दरामजी मुन्दड़ा और जोगाई आँबेके सेठ वेंकटलाल जी बंशीलाल जीके प्रयत्नसे जो "मारवाड़ी वैश्य धर्मार्थ औषधालय" खुला था उसका भी इस वर्षका वर्णन नहीं मिला। अबोहर फीरोजपुर निवासी पण्डित नन्दलाल शर्मा भिषग्रत्नने अबोहर और पटियाला स्टेटके महेन्द्रगढ़में औषधालय खोला है, इनमें गरीबोंको धर्मार्थ औषधियां दी जाती हैं। सीसूपुर कानपुरके कुंवर गोपाल सिंह जीका स्वर्गवास होनेसे उनका धर्मार्थ औषधालय बन्द हो गया। अजमेर कमिश्नरीके केकड़ी स्थानके धर्मार्थ जैन औषधालयका समाचार नहीं मिला।

रीवांके राजवैद्य पण्डित वाल्मीकिप्रसाद शर्मा चिकित्सक चूड़ामणिका उद्योग पूर्ववत् चल रहा है। आपके औषधालयसे हजारों मनुष्य प्रतिवर्ष लाभ उठा रहे हैं।

प्रयागके रईस बाबू कन्हैयालाल जीके यहाँ सब प्रकारकी औषधियाँ धर्मार्थ बँटा करती हैं। अब आपने उसका प्रबन्ध और भी उत्तम कर लिया है; पण्डित नारायण दीक्षित राजवैद्य जीके द्वारा इसका कार्य सुव्यवस्थित चल रहा है। नाना प्रकारकी रसौषधियां तथा साधारण औषधियां तैयार होती और बँटती रहती हैं। यहाँके रईस चौधरी महादेवप्रसाद जीके यहाँ इस वर्ष पारेका संस्कार करनेके लिये तीन वैद्य बराबर लगे रहे। आपके यहाँ भी सभीको धर्मार्थ औषधियाँ दी जाती हैं। विशेष कर स्वर्णमालिनी बसन्तकी जहाँ जिसे ज़रूरत हो वह वैद्यका पत्र देनेसे लेजा सकता है। प्रयागके प्रयागराज महौषधालयमें इस वर्ष लगभग साढ़े पाँच हज़ार रोगियोंने धर्मार्थ औषधि प्राप्त की। प्रयागके पण्डित ठाकुरप्रसाद शर्मा, पण्डित शिवराम पाण्डे, पण्डित केदारनाथ शर्मा, पण्डित दीनानाथ शर्मा, पं० बच्चूराम शर्मा, बाबू जयकुमार जैन वैद्य, बाबू कन्हैयालाल अग्रवाल प्रभृतिके यहाँ अनेक गरीबोंको मुफ़्त दवा मिला करती हैं। झूंसीके लाला किशोरीलाल जीके यहाँ दशमूलकी औषधि जिन्हें आवश्यकता हो मुफ़्त दी जाती हैं। इस प्रकार देशमें और भी न जानें कितने औषधालय होंगे जहाँ से प्रति वर्ष हज़ारों लोगोंका उपकार होता है; परन्तु न तो उनकी रिपोर्ट रखी जाती और उसके प्रकाशित करनेका प्रयत्न होता। यहाँ तक कि आयुर्वेदमहामण्डलके अनेक उपाय करने परभी उनका संवाद नहीं मिलता। यदि सब जगह रोगियोंका रजिस्टर रखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय और आयुर्वेदमहामण्डलको बराबर सूचना मिलती रहे तो मालूम पड़े कि भारतके करोड़ों मनुष्य आयुर्वेदसे ही आरोग्यता लाभ कर रहे हैं।

सामयिकपत्र।

इस वर्ष सामयिकपत्रोंमें आयुर्वेद सम्बन्धी चर्चा विशेष रूपसे अन्य वर्षोंकी अपेक्षा अधिक रही। यद्यपि आयुर्वेदके सामयिक आन्दोलनोंमें अब भी सामयिकपत्र उतनी दिलचस्पी नहीं दिखाते तथापि इसवर्ष मद्रासकी कौंसिलमें आयुर्वेद सम्बन्धी प्रश्नका अनादर होनेपर देशभरके समाचारपत्रोंने ऊंची आवाज़ उठायी। बङ्गाल के बङ्गलापत्रोंने कलकत्तेकी स्वागतकारिणी समितिके झगड़े और प्रदर्शिनीके कार्योंका विचार किया। हितवादी और नायकने इसपर विशेष लिखापढ़ी की। भारतमित्र समय समय पर अपनी गम्भीर विवेचना पूर्ण सम्मति आवश्यक आयुर्वैदिक विषयोंपर प्रकट करता रहा। बम्बई में कुछ लोगोंने आयुर्वेद-महामण्डलकी व्यर्थ निन्दा करनी चाही थी कलकत्तासमाचारने उसका बेलाग उत्तर दिया था। बङ्गवासीमें विविध प्रकार के जीवजन्तुओं और वृक्षोंपर कौतूहलजनक लेख प्रायः निकलते रहे। वीरभारतने आयुर्वेदमहामण्डलके आन्दोलनोंको बराबर स्थान दिया। मिथिलामिहिरमें सार्वजनिक स्वास्थ्यसम्बन्धी लेख प्रायः प्रकाशित होते रहे। बिहारी और पाटलिपुत्रने सामान्य रीतिसे आयुर्वैदिक विषयोंकी चर्चा की। अभ्युदयने कौंसिलमें होनेवाले आयुर्वैदिक प्रश्नोंपर बराबर बारीक दृष्टि फेंकी। आनन्दमें मेस्मेरिजम सम्बन्धी कई लेख आये। श्रीवेंकटेश्वर समाचारने इस वर्ष केवल कार्यालय सम्बन्धी सूचनाएं प्रकाशित कर दीं; किन्तु अपने स्वतन्त्र लेखोंसे आयुर्वेदको बहुत कम सहायता पहुंचायी। हां, कुछ लोगोंके भुलावेमें आकर आयुर्वेदमहामण्डलके सम्बन्धमें एक छः कालमकी जानकारीसे शून्य लेख अवश्य प्रकाशित किया। मराठीके केसरीमें इसवर्ष कितने ही उपयोगी लेख प्रकाशित हुए। सामयिक आन्दोलनोंपर बड़े ही मार्केकी सम्मतियां इसमें प्रकाशित हुईं। अनन्तमूलके सम्बन्धमें कई लेखकोंके विवेचन प्रकाशित हुए। इन्दुप्रकाशने मण्डलके कार्य विवरण प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर बहुत सहायता पहुंचायी। गुजरातीने मथुरा सम्मेलनकी दीर्घआलोचना कई अंकोंमें छापी। मुम्बईसमाचार और सांजवर्तमानने भी मथुरा सम्मेलनकी कार्यवाही विस्तारके साथ छापी। अमृत बाजार पत्रिका, पञ्जाबी, मराठा, बङ्गाली, हिन्दू और मद्रास टाइम्स जैसे कुछ अंग्रेजी पत्रोंमें भी इस वर्ष आयुर्वेदकी चर्चा होती रही।

मासिकपत्रोंमें भी इस वर्ष स्वास्थविज्ञान और वैज्ञानिक लेखोंका अभाव नहीं रहा। सरस्वतीमें मनकी माप और वनस्पति-विचार पर ऐसे उत्कृष्ट लेख निकले जैसे हिन्दीपत्रोंमें इसके पहले नहीं देखे गये। सुश्रुतके वर्णित चीरफाड़के यन्त्रों पर भी एक नोट प्रकाशित हुआ। देहातके स्वास्थ्य पर भी एक चुटीला नोट निकला। बालकोंकी बढ़ती हुई मृत्यु, एक्सकिरण, हैडोजन-के चमत्कार, वृक्षोंमें जीव तथा पदार्थ और शक्तिसम्बन्धी लेख विचारणीय थे। मर्यादामें रङ्गरसायनविद्या पर एक अच्छा लेख प्रकाशित हुआ। चित्रमयजगतमें आस्ट्रेलियाके जीवजन्तु और क्षयरोगियोंके निवासगृहके सचित्र लेख प्रकाशित हुए। इस वर्ष काशीकी नागरीप्रचारणी पत्रिकामें मनोविकारोंके विकास पर बहुत बढ़िया निबन्ध निकला। स्वदेशबान्धवमें संयम, मद्यपान, बालविवाह और आलस्य पर अच्छे लेख निकले। हितकारिणी में प्रतिमास स्वास्थ्यसम्बन्धी बढ़िया नोट और विद्यार्थियोंकी आरोग्यता पर लेख आया करते हैं। गृहलक्ष्मीमें हिस्टीरिया, दीर्घ-जीवन, रोगीसेवा, पीनेकी चीजें, मलेरिया, क्षयरोगसे बचनेके उपाय, स्वास्थ रहनाप्रकृतिक है आदि अच्छे लेख प्रकाशित हुए। कन्यामनोरञ्जनमें वैद्यकके दोहे, कई अङ्कों में अच्छे निकले। सवेरे उठना तथा पाकविद्यापर भी लेख अच्छे रहे। औदुम्बर-में चिकित्साशास्त्र, मान्त्रिकचिकित्सा और मानसिकउपचार पद्धति पर बड़े मार्केके लेख निकले। मानसिकशिक्षा पर भी अच्छा लेख आया। सनाढ्योपकारकमें आरोग्यतापद्धति निदर्शन पर दो लेख निकले। सनाढ्यमें होलीसे आरोग्यता, रोगीपरिचर्या आयुर्वेदीयपत्र और जातीयपत्र, स्त्रियोंमें तमाखूकी आदत, अर्वाचीन वैद्यकव्यवसाय आदि पर अच्छे लेख निकले। स्त्रीदर्पणमें जलपर एक अच्छा लेख आया। स्त्रीधर्मशिक्षकमें उद्धत और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्र कई लेख आयुर्वेदसम्बन्धी प्रकाशित हुए। बालाचर्या, बालचर्या, स्त्रियोंके गुप्तरोग, शारीरिक शिक्षा, परीक्षित औषधियां शुभ अशुभ संकल्पोंका प्रभाव, क्षीरोग चिकित्सा, मस्तिष्कका महत्व, हल्दीके गुण, क्षयरोग, दीर्घजीवन, वैद्यकज्ञान आदि कई अच्छे लेख निकले। तलासमाचारमें स्वास्थ्यरक्षा नामका लेख निकला, आरानागरीप्रचारिणी सभाकी मुखपत्रिका साहित्यपत्रिका में ब्रह्मचर्य, वैज्ञानिक मानस वा बुद्धि, आत्मज्ञान, सौन्दर्य आदि कई बढ़िया लेख निकले। किन्तु हिन्दीसाहित्यसम्मेलन की पत्रिकामें ऐसा कोई लेख नहीं निकला जिसका झुकाव आरोग्य और सुखी जीवनकी ओर हो। कदाचित साहित्यसम्मेलन इस शास्त्रको साहित्यका अङ्ग माननेमें संकोच करता हो। एज्युकेशनलगज़ट में वैज्ञानिक और स्वास्थ्यसम्बन्धी नोट प्रायः बराबर आया करते हैं। रसायनशास्त्र, तितलीसेफूल, मानसून, जीवनमृत्यु, चने और गेहूंके पौधे, मद्यपायीकी दुर्गति, आक्सिजन, तम्बाकूकी हानि, आदि कई अच्छे लेख आये। प्रयागसे इस वर्ष विद्यार्थी नामका पत्र निकला है। यह अपने पाठकोंको कभी कभी आयुर्वेदसे सम्बन्ध रखनेवाले विषय भी बतलाया करता है। ओस, कुहरा और बादल, स्मृति अथवा याददाश्त, विचार और आचार, भूख लगनेका उपाय, विद्यार्थियोंमें भोजन वस्त्र सम्बन्धी भूल, स्मृतिशक्ति, तथा कई प्रकारके खेलों पर लेख आये। सनातनधर्मपताकामें मन-जगत और शरीर, पिछले जन्मका स्मरण और वीर्यरक्षा सम्बन्धी लेख आये। श्रीमती यशोदादेवीकी ओरसे कन्यासर्वस्व नामका एक पत्र निकलने लगा है। इसमें भी कन्याओंके उपयोगी स्वास्थ्यविज्ञान सम्बन्धी लेख प्रायः आया करते हैं। बालादिनचर्या, पाकविद्या, गृहस्वच्छता, परीक्षा की हुई औषधियां, रोगीसेवा, निद्रा आदि अच्छे लेख आये। मुलतानसे हितकारी नामका मासिकपत्र निकलने लगा है। इसमें आयुर्वेद, अतिसार, कुएका पानी, ब्रह्मचर्य, शौच, अनुभूतप्रयोग आदि लेख प्रकाशित हुए। काशीसे नवनीत नामका पत्र निकलने लगा है। इसमें कई लेख आयुर्वेदसे सम्बन्ध रखनेवाले उत्कृष्ट और अच्छे निकले। क्या ईश्वरीकोप है? शरीर कैसे पुष्ट होता है, धूम्रपानसे हानि; चंद्रमा रोग और वनस्पति, विषयासक्ति, अपच और उसका उपाय, लोगं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नशा क्यों करते हैं, मद्यपानसे हानि, मांसभक्षण निषेध आदि विचार पूर्ण लेख वैद्यकपत्रोंके लिये भी श्लाघनीय हुए। मराठी भाषाके मासिकपत्रोंमें विविधज्ञानविस्तार, नवयुग, मासिकमनोरञ्जन प्रभृतिमें आरोग्यविज्ञान सम्बन्धी लेख आया करते हैं। वङ्गभाषाके पत्रोंमें गृहस्थमें कभी कभी बड़े मार्केके लेख आते हैं। शिक्षा और स्वास्थ्यमें प्रतिमास वैज्ञानिक लेख निकलते हैं। भारतवर्ष और प्रवासीमें भी वैद्योपयोगी साहित्य जब तब आया करता है। गुजरातीका भाग्योदय प्रतिमास स्वास्थ्यविज्ञान और आयुर्वैदिक लेखोंको अपने आकारका एक अंश प्रदान करता रहता है और बहुत अच्छे विषयों पर विचार करता है।

✓ विशेष कर वैद्यक सम्बन्धी पत्रोंमें मराठीकी वैद्यकपत्रिका साप्ताहिक रूपमें प्रकाशित होती है और आयुकी प्रौढताके साथ विषयोंकी चर्चा भी विशेषताके साथ कर रही है। यद्यपि इसके विवेचनमें कभी कभी आयुर्वेदसे अधिक यूरोपीय पद्धतिको महत्त्व दिया जाता है; परन्तु यह निर्विवाद विषय है कि इससे आयुर्वैदिक आन्दोलनको बहुत बल और आधार मिल रहा है। मराठीमें एक और साप्ताहिक वैद्यकपत्र आर्यवैद्यकबोध नामसे कल्याणसे निलकने लगा है। कुछ अङ्क देखनेसे विदित होता है कि पत्र अच्छा होगा और इससे आयुर्वेदका अच्छा उपकार साधन हो सकेगा। इसमें सृष्टिशास्त्र पर अच्छी लेखमाला चल रही है। मराठीका मासिकपत्र भिषग्विलास प्रकाशित होता जा रहा है। इसके पठनसे वैद्योंको साथ ही पश्चिमी वैद्यक विज्ञानकी भी बातें मालूम हो जाती हैं। इस वर्षसे बम्बईसे आयुर्वेद नामका और भी एक मासिक पत्र प्रकाशित होने लगा है। यह शुद्ध आयुर्वेदका कट्टर मासिक पत्र है। किन्तु कभी कभी इसकी आलोचना रूपी आक्रमण बहुत तीखा हो जाता है। इसने इस विषय पर एक कड़ा लेख लिखा है कि "कोई आयुर्वेद निर्गन्धि शङ्कराचार्य आयुर्वेदीय पदवियोंकी वर्षा करे तो वह अनधिकार अर्पण और अनधिकार स्वीकार मात्र है।" इसी लेखमें सहयोगीने भूलसे लिख दिया है कि मथुराके सम्मेलनके समय डाक्टर कीर्तिकरने वैद्योंको पदवी दी है। किन्तु यह ठीक नहीं है। कुछ सज्जनोंको आयुर्वेदविद्यापीठकी ओरसे उपाधि मिली है; केवल उपाधि पत्र कीर्तिकर महोदयके हाथसे (सम्मेलनके सभापति होनेके कारण) सम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्पित हुए थे। इसी प्रकार सहयोगीको एक भ्रम और है। वह कहता है वैद्यसम्मेलनका आजतक स्वतन्त्र अस्तित्व ही नहीं है। सहयोगीका यह आक्षेप ठीक हो सकता है कि प्रथम और द्वितीय वैद्यसम्मेलन धर्म सम्मेलनके साथ हुए; परन्तु तृतीय सम्मेलनके विषयमें उसका कथन ठीक नहीं है। हिन्दीसाहित्य सम्मेलन जिन दिनों था उन्हीं दिनों वैद्यसम्मेलन होने पर भी साहित्यसम्मेलनसे वैद्यसम्मेलनकी व्यवस्थाका कुछ भी सम्बन्ध नहीं था। उसकी व्यवस्था, उसके कार्य कर्ता, उसका कोष, उसकी स्वागतकारिणीसभा, उसका स्थान, उसका स्वागत समारम्भ सब भिन्न था। फिर कानपुर, मथुरा और इस कलकत्तेके सम्मेलन तो सर्वतोभावसे स्वतन्त्र हैं। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि उसका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है? गुजराती पत्रोंमें गुजराती वैद्यकल्पतरु प्रथम नाम लेने योग्य है। आयुर्वेद सम्बन्धी सार्वजनिक विषयों पर सम्मति देनेके विषयमें यह पत्र उच्चकोटिका है। वैद्यसम्मेलन सम्बन्धी आन्दोलन भी इसके द्वारा विशेष रूपसे हुआ करता है। आयुर्वेदके नये पुराने प्रश्नों पर भी इसमें स्वतन्त्र और योग्यता पूर्वक विचार हुआ करता है। वीस नगरके धन्वन्तरीमें इस वर्ष सार्वजनिक विषयोंकी चर्चा बहुत कम रही, तथापि वैद्यक सम्बन्धी ऊँचे दर्जेके लेख बराबर प्रकाशित होते रहे। प्रकृत उपचार पद्धति सम्बन्धी लेख इसके बाँके होते हैं। इस वर्ष गोंडालके श्रीयुक्त जीवराम कालिदास जीने आयुर्वेद रहस्यार्क नामक बढ़िया पत्र निकाला है। इसमें रसायन शास्त्रके लेख और रासायनिक औषधियोंकी चर्चा योग्यताके साथ होती है।

वङ्गभाषाके वैद्यकपत्रोंमें स्वास्थ्यसमाचार पश्चिमी विज्ञान सम्मत लेख उसी प्रकार योग्यतासे निकालता चला जाता है। ढाकेका आयुर्वेदविकास क्रमशः अधिक उन्नतिपूर्ण शैलीसे योग्यता पूर्वक सम्पादित हो रहा है। वैद्यसम्मेलन सम्बन्धी आन्दोलनोंको बङ्गालमें फैलानेके लिये इससे बड़ी सहायता मिल रही है।

द्राविडीभाषाका वैद्यकलानिधि बहुत ही ऊंचे दर्जेका मासिक पत्र है, इसमें बहुतही महत्व पूर्ण और गहन विषयोंपर योग्यता पूर्वक विचार किया जाता है। कनाड़ी भाषाका वैद्यसिन्धु साधारण अच्छी शैली पर चल रहा है। उर्दूका एक मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशोपकारक योग्यतासे प्रकाशित हो रहा है और केवल उर्दू जानने वालोंको आयुर्वेदका महत्व समझा रहा है।

हिन्दीके वैद्यक पत्रोंमें देशोपकारक पाक्षिकरूपमें बराबर निकल रहा है। अबतो आयुर्वेद सम्बन्धी सामयिक विषयोंमें नोट्स भी जब तब आया करते हैं। इसमें आपसमें बातचीत और उसके उत्तर महत्वके होते हैं। सम्पादनशैलीमें और भी सुधार होनेकी आवश्यकता है। सुधानिधि मासिक रूपमें बराबर निकल रहा है। इसके सामयिक विषयों की टीका की लोगोंमें प्रायः चर्चा रहा करती है। वैद्य पत्रकी सम्पादन शैली उन्नत की गयी है और अब इसमें उच्चकोटिके लेख आने लग गये हैं; परन्तु सामयिक विषयोंकी चर्चा अभी कम रहती है। हिन्दवैद्यकल्पतरुकी विषय विवेचन शैली बहुत अच्छी होती है। वैद्योंको समय समय पर उचित सलाह और सामयिक कर्तव्य बतानेमें यह नहीं चूकता। भाषाशैली और भी उन्नत करनेकी आवश्यकता है। आरोग्यसिन्धु के वैद्यक सम्बन्धी निबन्ध आयुर्वेदके मूल्यवान धन होते हैं। सामयिक विषयोंमें इसकी सम्मति भी गम्भीर और विचार पूर्ण होती है। वैद्यभूषण में वैद्यक सम्बन्धी लेख बहुत बढ़िया आते हैं, किन्तु इसकी सम्पादन शैलीमें और भी सुधार होनेकी आवश्यकता है। सुना है बँगलाके स्वास्थ्यसमाचारका हिन्दी संस्करण भी निकलने लगा है। संस्कृतकी आयुर्वेदीयग्रन्थमालाने कई पुस्तकें पूरी करदीं अब गदनिग्रहका दूसरा भाग समाप्त होने परही है।

प्राप्त पुस्तकें।

इस वर्ष भी आयुर्वेदविद्यापीठके पुस्तकालयमें बहुत कम पुस्तकें प्राप्त हुईं। प्रत्येक प्रान्तमें कितनी ही आयुर्वेदिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं; परन्तु वैद्योंमें इस बातकी यथेष्ट प्रवृत्ति नहीं कि अपनी भारतीय संस्थामें ऐसी प्रकाशित पुस्तकोंकी एक एक प्रति भेजवावें। निम्नलिखित सज्जनोंने अपनी पुस्तकें पुस्तकालयमें भेजी हैं। उन्हें हार्दिक धन्यवाद है। आशा है, अन्य सज्जन भी इनसे उपदेश ग्रहण करेंगे।

पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्य होली चकला बम्बई।

आयुर्वेदप्रकाशः—श्रीसारस्वत माधव विरचित यह रसायन चिकित्साका उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसका कर्ता रसमाधव नामसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विख्यात काशी निवासी गुजराती ब्राह्मण था। इस ग्रन्थका काल बहुत करके १७वीं सदी होगा क्योंकि १६वीं सदीमें बने हुए भाव-प्रकाशका इसमें नाम आया है। वैद्य और विद्यार्थियोंके लिये यह बहुत उपयोगी है। पण्डित यादवजीने संशोधन कर इसे छपाया है। दाम १)

रसायनखण्ड—श्रीनित्यनाथ सिद्धविरचित रसरत्नाकर ग्रन्थका कुछ भाग श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसमें मुद्रित होचुका है। इसका वादिखण्ड, मन्त्र खण्ड और रसायनखण्ड अब तक उपलब्ध नहीं था। परन्तु यादवजी त्रीकमजी आचार्य, पं० त्र्यम्बक गुरुनाथ काले प्रभृतिकी ढूंढ खोजसे अब वे प्राप्त हुए हैं। उनमेंसे यह रसायनखण्ड जराव्याधि निवारण और वाजीकरणके निमित्त है और वैद्योंके साथही सर्व-साधारणके लिये उपयोगी है; इससे पण्डित यादवजीने इसे प्रथम प्रकाशित किया है। इसमें कितनेही ऐसे प्रयोग हैं जो अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखे हुए हैं। अनुमान है कि इसका कर्ता नित्यनाथ सिद्ध ईसाकी बारहवीं शताब्दीमें हुआ होगा। क्योंकि तेरहवीं शताब्दीके बने रसरत्नसमुच्चयमें उसका उल्लेख है और बारहवीं शताब्दीके पहले इसका समय इसलिये नहीं माना जा सकता कि यूनानी ग्रन्थोंमें 'जिस समकउलसेदारेगमाही' (बालुका मीन प्रयोग) का वर्णन है उसका वर्णन इस ग्रन्थमें भी है और मुसलमानोंके भारतमें आनेका समय बारहवीं सदीके पहले हो नहीं सकता। दाम ॥)

२ लेफ्टिनेंटकर्नल कान्होवा रणछोड़दास कीर्तिकर आई. एम. एस. बम्बई।

बम्बईके विषैलेपौधे—श्रीमान् कीर्तिकर वनस्पतियोंकी ढूंढखोज करनेमें बहुतही कीर्तिशाली हैं। पुस्तक अङ्गरेजीमें है (Poisonous plants Bombay) इसमें बम्बई प्रान्तमें मिलनेवाले १० विषैले पौधों (भिलावां, लालचीता, काजू, अंकोल, नाय, सफेदचीता, लालकनेर, मन्दार, धतूरा और जयपाल) का इसमें सचित्र विस्तृत वर्णन है। चित्र रंगीन बहुत बढ़िया हैं। वर्णन भी सम्पूर्ण है। इसी ढङ्गसे हिन्दी अथवा संस्कृतमें वनौषधियोंके वर्णनकी बहुत आव-श्यकता है।

३ पं० कृपारामजी कुष्टचिकित्सक पतकिया हवड़ा।

कुष्ट चिकित्सा—पुस्तकअंगरेजीमें है (Leprosy and Its Treatment) पं० कृपारामजीने कुष्ट चिकित्साकी सफलता सिद्ध करनेके लिये अबतक कैसे कैसे कष्ट सहे हैं और किस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक बाधा विघ्न रहने परभी उसमें सफलता प्राप्त की है। इस विषयका इसमें पूरा वर्णन है। साथही चिकित्सा सम्बन्धी कुछ बातें हैं। आपके आरोग्य किये हुए कई कुष्ठियोंके इसमें बीमारी और आरोग्य होनेकी दशाके चित्रभी हैं। दाम १) अधिक है।

४ ठक्कर जयकृष्ण इन्द्रजी भू. पू. क्युरेटर आफ फारेस्ट्स एण्ड गार्डेन्स पोरबन्दर।

वनस्पतिशास्त्र—इसके लेखक जयकृष्णजी पोरबन्दर राज्यमें जङ्गलके अफसर थे। इसलिये आपको जङ्गल पहाड़ोंमें फिरनेका बड़ा अवसर आया करता था। अपने उस सुयोगको आपने व्यर्थ नहीं खोया। सैकड़ों औषधियोंकी खोज कर वनस्पतिशास्त्र और निघण्टुकी दृष्टिसे आपने उनका पूरा वर्णन संगृहीत किया। उस राज्यमें जो पहाड़ी है उसका नाम बरडाडूंगर है। इसलिये इस पुस्तकका दूसरा नामभी "बरडाडूंगरनी जड़ी बूटी" है। बरडा डूंगरका तो नामही है परन्तु यथार्थमें यह एक पूर्ण पुस्तक हो गयी है। पुस्तक गुजरातीमें है और बहुत उपयोगी है। इसकी जोड़की पुस्तक किसी भारतीय भाषामें इस समय उपस्थित नहीं है। दाम १०)

५ रसायनशास्त्री पं० श्यामसुन्दराचार्य वैश्य काशी।

रसायनसार—श्रीयुक्त श्यामसुन्दराचार्य जीने गांठके हजारों रुपये लगाकर छः वर्ष तक रसायनशास्त्रके विविध प्रयोगोंका अनुभव स्वयं किया है और अनेक प्रकारकी जांच पडतालसे जो सारांश निकाला है उसे अनुभवके वर्णन सहित इस पुस्तकमें दर्ज किया है। उसके सिवाय समाचारपत्रोंमें भी इनकी कृतियोंके सम्बन्धमें आलोलना होती रही है, उसका भी आपने उपयोग और शंका समाधान किया है। इस प्रकार यह पुस्तक अनुभूत और प्रामाणिक प्रस्तुत हुई। इस हिन्दी युगमें ऐसी उत्तम पुस्तक तैयार नहीं हुई थी। आपने पुस्तक संस्कृत श्लोकोंमें लिखकर उसका भाष्यभी स्वयंही किया है। रसायनसम्बन्धी भट्टी और यन्त्रोंमें भी आपने अच्छा प्रकाश डाला है और उनका भी सचित्र वर्णन पुस्तकके साथ दिया है। पारद प्रकरण बहुत विस्तृत है, धातुओंका शोधन, मारण तथा चिकित्सकोपयोगी कितने ही रसायन और रसौषधियोंका वर्णन है। दाम ५)

६ कविराज विरजाचरण गुप्त कविभूषण बीडनस्ट्रीट कलकत्ता।

वनौषधिदर्पण—यह अत्यन्त उपयोगी पुस्तक दो भागोंमें कूचबिहारके महाराजाकी आज्ञा और उन्हींके व्ययसे तैयार हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक वनौषधके सम्बन्धमें संस्कृत ग्रन्थोंमें जो लिखा है उसे ज्योंकात्यों संस्कृतमें उद्धृतकर वँगभाषामें उसका विशेष वर्णन और विवेचन दिया है। हमारे निघण्टु ग्रन्थोंमें बहुतही संस्कारकी आवश्यकता है और इस ग्रन्थसे उस कार्यमें बहुत सहायता मिलेगी। इसके अवलोकनसे प्राचीन ग्रन्थोंका मतभी प्रकट होता है और मेटीरियामेडिकाके कर्ताओंका नया मत भी अवगत होता है। जिल्द सहित दोनों भागोंका दाम १०) है।

७ वैद्यरत्न पण्डित श्री गोपालाचार्लु आयुर्वेदमार्तण्ड, जार्जटौन, मद्रास।

पण्डित गोपालाचार्यजीने तेलगू भाषामें उपयोगी ग्रन्थरत्न लिखकर उसका वैद्यक साहित्य भण्डार बढ़ाना आरम्भ किया है। निम्न लिखित पुस्तकें उसी उद्योगके फल हैं। अवश्य ही पुस्तकें उपयोगी हैं और उधरके समाजमें उनका यथेष्ट आदर भी हो रहा है।

माधवनिदान—आसेतु हिमालयतक जिस माधवनिदानकी ख्याति है यह उसीका मूल सहित अनुवाद है। अर्थ विस्तार पूर्वक नये ढङ्गसे हुआ है। मूल भी तेलगू अक्षरोंमें है। दाम ३)

अर्कप्रकाश—रावणकृत अर्क प्रकाशका यह मूल सहित तेलगू अनुवाद है। आदिमें अर्कयन्त्रका चित्र है। यहभी वैद्योंका जाना हुआ ग्रन्थ है। दाम २)

आयुर्वेदपरिभाषा—आयुर्वैदिक ग्रन्थोंके पारिभाषिक शब्दोंकी इसमें परिभाषा संकलित की गयी है पुस्तक बहुत अच्छी है। दाम १॥)

पथ्यापथ्य—श्रीमान् कविराज विश्वनाथसेनके पथ्यापथ्य विषयक पुस्तककी विस्तृत विवरण सहित इसमें टीका दी गयी है। मूल भी साथ ही है। पुस्तक व्यवस्थित है। मूल्य १)

वस्तिकर्म—आयुर्वेदके बस्तिकर्म विषयको व्यवस्थित निबन्ध रूपमें पण्डितजीने बड़ी योग्यतासे ग्रथित किया है। दाम ।)

आयुर्वेदाङ्गशल्यतन्त्र—यहभी पण्डितजीका लिखा हुआ शल्यतन्त्र विषयक समालोचनात्मक और तुलनात्मक निबन्ध है। दाम ।)

अगस्त्यवैद्यक—मालूम पड़ता है कि अगस्तसंहितामें आयुर्वेदचिकित्सापद्धतिकी कोई नयी ही शैली कही गयी है। उत्तर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतमें तो उसका बिलकुल प्रचार नही है, परन्तु मालूम पड़ता है, मद्रासमें उसका एक सम्प्रदाय ही है और वह स्वतन्त्र रूपसे अपनी चिकित्सापद्धति प्रचलित किये हुए है। पण्डित डी. गोपालाचार्लूने इस सम्प्रदायकी पुस्तकें देखकर और उक्त सम्प्रदायके वैद्योंसे बातचीत कर यह सिद्धान्त निकाला है कि यह पद्धति रस-प्रक्रियासे भिन्न होते हुए भी उससे किसी प्रकार न्यून नहीं वक्कि किसी अंशमें उत्कृष्ट है। इसी विषयका यह निबन्ध है। यह निवन्ध संस्कृत अथवा हिन्दीमें हो जानेसे बहुत अच्छा होगा। निवन्ध उत्तम है। दाम।)

आयुर्वेद—यह पण्डित जीका लिखा हुआ एक गवेषणापूर्ण निबन्ध है। यह पहले आन्ध्रपत्रिकामें प्रकाशित हुआ था। इसमें दिखलाया गया है कि हमारे ऋषियों ने आयुर्वेदकी सृष्टि धर्मार्थ-काममोक्षके साधनके लिये प्रचलित किया है। हमारे पूर्वज आयुर्वेदको कैसा समझते थे और विशेष कर चीरफाड़के काममें कैसे निपुण थे यह बात अच्छी तरह दिखायी गयी है। दाम।)

अनुनार्शवैद्यपद्धति—यह ऊपरके निबन्धका तामिलभाषामें अनुवाद है। यह भी पण्डित जीकी ही कृति है। दाम।)

८ पं० व्रजवल्लभ शर्म्मा मालिक हरिप्रसाद भागीरथ पुस्तकालय कालकादेवी रोड बम्बई।

भैषज्यसारसंग्रह—किशनगढ़के प्रधानमन्त्री रायवहादुर श्यामसुन्दरलालजी बी० ए० की अनुमति से पं० धन्नूलाल जीने परीक्षित औषधियोंका मूल और टीका सहित संग्रह इसमें प्रकाशित किया है। रोगी परीक्षा कालज्ञान तथा चिकित्सा उपयोगी बातें तथा औषधियोंका शोधनमारण भी इसमें संगृहीत है। दाम।=)

९ ठाकुर कल्याण सिंह वैद्यराज नया बाजार अजमेर।

आरोग्यरक्षा—स्वास्थ्यविज्ञानसम्बन्धी यह अच्छी पुस्तक है। इसमें दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, प्रकृति, सदाचार, संक्रामक बीमारियां, आकस्मिक घटनाएँ और दुर्व्यसन पर लेख लिखे गये हैं अपने विषयकी यह साधारणतः अच्छी पुस्तक है। प्रारम्भिक वैद्यक विद्यार्थियोंको और मिडिल तकके हिन्दी और अंग्रेज़ीके विद्यार्थियोंको यह पढ़ाई जाय तो सार्वजनिक स्वास्थ्यमें बहुत कुछ, उन्नति होनेकी सम्भावना है। दाम॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा कविविनोद लाहौर।

दोषज्ञान—इसमें वातपित्तकफ सम्बन्धी विज्ञानका अच्छा ऊहापोह हुआ है। पुस्तक तैयार करनेमें अच्छा परिश्रम किया गया है। हिन्दीमें पुस्तक अपने ढङ्गकी अनोखी है। दाम ॥।)

११ वैद्यराज राधावल्लभ जी गुप्त आरोग्यसिन्धु विजयगढ़ अलीगढ़।

वेदोंमें वैद्यक ज्ञान—चारों वेदोंमें आयुर्वेदसे सम्बन्ध रखने वाली बातें कौन कौन और कहां कहां हैं, इसे खोजकर वैद्यराज जी ने शब्दार्थ और भावार्थ सहित छापा है। उद्योग प्रशंसनीय और श्लाघनीय है। दाम ≡)

१२ पं० किशोरीदत्त शास्त्री राजवैद्य नयागंज कानपुर।

प्रमेह भास्कर—इसमें सब प्रकारके प्रमेहों का वर्णन, उनका अनुभूत वर्णन और चिकित्सा आदि लिखी गयी है। पुस्तक अच्छी है।

१३ वैद्यरत्न कालिदास विद्याभूषण ८ राय बागान स्ट्रीट कलकत्ता।

चिकित्सातत्व-इसमें वैद्यरत्न जीने सिद्ध किया है कि मानसिक शुद्धि आरोग्यताका कारण है और यही चिकित्साका तत्व है कि मनकी प्रसन्नता रख चित्तशुद्धिसे आरोग्यता प्राप्त की जाय। दाम=) पुस्तक वङ्गभाषामें है।

ज्वरतत्व ओ कीटाणुतत्व—इसमें फसली बुखारका कारण पूर्वी पश्चिमी विज्ञानकी आलोचना कर ढूंढा गया है। साथही संक्षिप्त-कीटाणुतत्व पर भी विचार किया गया है। पुस्तक अच्छी है दाम=)

१४ श्रीमती यशोदादेवी कर्नैलगंज-प्रयाग।

धात्रीविद्या—श्रीमती यशोदादेवीजीने नैपाल की लेडी डाक्टर श्रीमती सत्यभामाबाई बी० ए० एम० डी० से तैयार कराकर इसे प्रकाशित किया है। स्त्रियोंके लिये उपयोगी होनेके लिये पुस्तक और भी सरलताके साथ समझानेकी आवश्यकता थी। तथापि अपने विषयकी अच्छी हुई है। दाम ।=)

१५ जगन्नाथप्रसाद शुक्ल दारागंज-प्रयाग।

प्राच्यविज्ञान—कविराज अमृतलाल गुप्त कविभूषण प्रणीत यह वङ्गभाषाकी पुस्तक है। इसमें भारतीयविज्ञानकी व्यापकता और उत्कृष्टता दिखलायी गयी है। पुस्तक बहुत अच्छी है। इसके प्रणयनमें अच्छा परिश्रम किया गया है। चिकित्साविज्ञान पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाड़ी परीक्षा—रावणकृतनाड़ीपरीक्षाकी संस्कृत पुस्तक मूल और हिन्दी टीका सहित दाम =)

धातुविज्ञान—रससे लेकर ओज तकके धातुओंका वर्णन उनके क्षय और वृद्धिका कारण तथा उनकी चिकित्साका वर्णन है। दाम=) लेखक वैद्यराज हरिशंकर शर्म्मा हरदुआगंज।

धाराकल्प—स्नेहनपदार्थों द्वारा रोगीको धारास्नान करानेकी विधिका इसमें सविस्तृत वर्णन है। मूल और भाषाटीका सहित दाम =)

कीटाणुशास्त्र—हिन्दीमें अपने ढङ्गकी एकदम नयी और अनूठी पुस्तक है। पश्चिमी कीटाणु विज्ञानका इसमें वर्णन है। दाम।)

आय व्ययका व्योरा।

गतवर्षकी पिछलीबचत ३२९।≡)। और आयुर्वेद महामण्डलकी सभासदीका चन्दा २९१।-) और आयुर्वेदविद्यापीठकी सभासदीका चन्दा १९२॥≡) इन दोनों चन्दोंमें वी० पी० का पोस्टेज भी सम्मिलित है। सम्मेलनके समय ३४३।-) प्राप्त हुए इस सहायताके सिवाय हरिप्रसादजीसे १२) पं० क्षमापति बाजपेयीलखनऊसे १२) पं० रामनाथ शास्त्रीसे १२) और सहायता मिली। इसमें प्रतिज्ञात चन्दा भी शामिलहै ५०) पं० डी. गोपालाचार्लू तथा १००) बाबारामनाथ कालीकमली हषीकेशने सहायता प्रदानकी इसके लिये इन्हें विशेष धन्यवाद है। इसवर्ष जो विद्यार्थी उच्च श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए हैं उनको पदक दिये गये हैं। पदकोंके लिये रसायनशाला काशीके प्रेसीडेण्ट बाबूमंगत राय विश्वेश्वरप्रसाद जीने ९०) प्रदान किये हैं। तथा कलकत्तेके श्रीयुक्त बिशनजी मालजीने मथुराकी परीक्षाके सर्वोच्च आनेवालेको ५०) का पदक प्रदान किया। अतः इन महानुभावोंको भी विशेष धन्यवाद दिये बिना नहीं रहा जाता। २८॥≡) की पुस्तक बिक्री हुई। आयुर्वेदप्रचारिणी सभा प्रयाग, वैद्यसभालखनऊ, वैद्यसभा मुस्तकापुरदानापुर, वैद्यसभा अहमदाबाद, वैद्यसभा मुरादाबाद, वैद्यसभा बीकानेर इन सभाओंके मंत्रियोंसे पाँच पाँच रुपया सभासम्बद्ध करनेमें कुल ३५) रु० प्राप्त हुए। २१॥=)। फुटकल आमदनी हुई ॥)॥ चिट्ठिके साथ जवाबके लिये टिकट प्राप्त हुए। ≈) पिछला चन्दा मिला ४१॥।=) धमार्थ औषधालयके लिये चन्दा हुआ। इस प्रकार १२ महीनोंमें कुल ९२२)॥। की आय हुई पिछली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचत ३२६।≈)। है इस लिये सब मिलाकर १२५१॥।) हुए। बारह महीनोंका कुलखर्च १००४≈)। हुआ। इस प्रकार यद्यपि सालके अन्तमें २४७॥)॥। की बचत हुई। तथापि आमदनीसे ८१॥।=)॥ अधिक खर्च हुआ। यह बचत स्थायीकोषकी है। इसलिये आगामी वर्षके खर्चके लिये एक पैसा भी नहीं है। इस सम्मेलनको भविष्यका अच्छा प्रबन्ध करना चाहिये। इसवर्ष आयुर्वेद-विद्यापीठके १४ सभासदोंसे चन्दा प्राप्त नहीं हुआ। आयुर्वेदमहा-मण्डलके २६ सभासदोंने इसवर्ष चन्दा देनेकी कृपा नहीं की। इनमेंसे २ स्थानिक ५ संयुक्तप्रान्तीय, एक मध्यप्रदेशीय, एक पञ्जाब प्रान्तीय, ५ बंगप्रान्तीय, एक महाराष्ट्रीय, एक गुजरात-प्रान्तीय, ३ मध्यभारतीय, २ मद्रासप्रान्तीय, एक सिंहलदेशीय और एक नैपालप्रान्तीय सभासद है। साथही दो पिछले सम्मेलनोंके सभापति एक विद्यापीठके उपसभापतिसे भी इस वर्षका चन्दा नहीं प्राप्त हुआ है। मथुराके सम्मेलनमें कानपुरके पण्डितरामेश्वर-जी मिश्रने दो वर्षतक २) मासिक देने कहा था। उसमें इसवर्ष ३ महीनेकी सहायता प्राप्त हुई है। कानपुरके डाक्टर प्रसादीलाल झा एल. एम. एस. नेभी दो वर्ष तक दो रुपये मासिककी सहा-यता देनेकी प्रतिज्ञा की थी इसमें आपने ६) इस वर्षमें भेजे हैं। विगत वर्ष जिन दो सज्जनोंने मण्डलको पांच रुपये वार्षिक सहा-यता पहुंचानेका वचन दिया था, उन्होंने इस वर्ष भी अपना वचन पूरा नहीं किया। मथुरा सम्मेलनके समय २८ सज्जनोंने ५ वर्षतक लगातार, सहायता देनेका वचन दिया था। इनमें ८ सज्जनोंने ३) वार्षिक, ७ सज्जनोंने २) वार्षिक ४ सज्जनोंने १) वार्षिक, चार सज्जनोंने ५) वार्षिक, एक सज्जनने १०) वार्षिक, २ सज्जनोंने १२) वार्षिक और २ सज्जनोंने ६) वार्षिक सहायता देने का वचन दिया था; किन्तु इन सज्जनोंमें केवल पं० सन्तराममिश्रने तीनके बदले १) सागरके पं० विश्वासराव भावेने २) अछुनेराके पं० रामशरणशास्त्रीने २) सहसवान बदापूंके पं० ईश्वरचन्द्र अशर्फीलालने ५) दिल्लीके पं० रामरत्नपाल वैद्यने २) और इटावाके पं० मुनीश्वरनाथ मुश्रान वैद्यने १०) भेजकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। एककालीनदानकी प्रतिज्ञा करने वालोंमें बौकलाबलरामपुरके बाबू महाबीर सिंहजी वैद्यने ३) और सागरके श्रीयुक्त गणेश श्रीधर देसाईसे १२) भेजकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। इस प्रकार २५२।) के प्रतिज्ञात चन्देमें केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६) इस वर्ष वसूल हुए। अवश्यही ऊपरके सभी दानियोंको मण्डलका हार्दिक धन्यवाद है। आशा है जिन सज्जनोंने अबतक अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहींकी है वे आगामी वर्ष उसे पूर्णकर उदारताका परिचय देंगे। प्रत्येक महीनेके आयव्ययका विवरण नीचे दिया जाता है :—

आय ।

पौष-संवत् १९७०-पिछली बचत ३२९।≡)। आयुर्वेदमहामण्डल का चन्दा ६) रुपया, आयुर्वेदविद्यापीठका चन्दा २४) वैद्य सम्मेलनके समय सहायतामें ३४३।-) पुस्तक बिक्री ३=)॥ सभा सम्बद्ध करायी ५) फुटकल ५≡)॥ कुल योग ७१६)।

माघ सं० १९७०-चन्दा विद्यापीठ ११) पुस्तक विक्री १-) कुल-योग १२-)।

फाल्गुन सं० ११७०-चन्दा मण्डल ३) चन्दा विद्यापीठ १४) सहायता १५) पुस्तक विक्री ५=) टिकट =)॥ धर्मार्थ औषधालय का चन्दा ४१॥≡) कुलयोग ७९≡)॥

चैत्र सं० १९७०-७१-चन्दा महामण्डल ६) चन्दा विद्यापीठ २) सहायता प्रतिज्ञात ११) फुटकल ३॥=) टिकट)॥ पिछला चन्दा २) कुलयोग २४॥=)॥

वैशाख सं० १९७१-चन्दा मण्डल ६) चन्दा विद्यापीठ ६) सहायता १२) पुस्तक विक्री ३॥≡) सभा सम्बद्ध करायी ५) कुल योग ३२॥≡)

ज्येष्ठ सं० ११७१-चन्दा मण्डल ३) चन्दाविद्यापीठ २) कुल योग ५)

आषाढ़ सं० १९७१-चन्दा मण्डल ८) चन्दा विद्यापीठ १०) पुस्तक विक्री १॥≡) फुटकल ६।) कुल योग २५।॥≡)

श्रावण सं० १९७१-पुस्तक विक्री ॥-), फुटकल १॥-)॥। कुल योग २=)॥।

भाद्र पद सं० १९७१-चन्दा मण्डल ४८।॥=) चन्दा विद्यापीठ ४-) सहायता १२) पुस्तक विक्री ३॥) सभासम्बद्ध करायी ५) फुटकल ≡) टिकट =) सहायता प्रतिज्ञात ४) कुलयोग ७७॥)

आश्विन सं० १९७१-चन्दा मण्डल ११२=) चन्दा विद्यापीठ ७९।=) पुस्तक विक्री १॥≡) टिकट =)॥ सहायता प्रतिज्ञात २) कुल-योग १९५।-)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्तिक सं० १९७१-चन्दा मण्डल १८॥≡) चन्दा विद्यापीठ१८-) सहायता १२) पुस्तक विक्री २≡) फुटकल ५) कुलयोग ५५।।।≡)

मार्ग शीर्ष सं० १९७१-चन्दा मण्डल ६।) चन्दा विद्यापीठ ११≡) पुस्तक विक्री २।=) सभा सम्बद्ध करायी ५) टिकट)॥ कुल योग २४।।।-)॥

व्यय

पौष—आफिस खर्च १)।।। इक्कागाड़ी भाड़ा ।≡)। तारमें १-)॥ परीक्षा सम्बन्धमें ४-)।।। चिट्ठी पत्री मय वी. पी. ६≡) छपाई १।) सम्मेलनकी यात्रा ३७-)।।। सहकारी मन्त्रीका वेतन २४) फुटकल २।=)॥ कुल व्यय ७७॥≡)॥

माघ—आफिस खर्च १।-)।।। चिट्ठीपत्रीमयं वी. पी. ५॥=)। फुटकल १॥)॥ छपाई १४।) वेतन २४) कुलव्यय ४६।।।)॥

फाल्गुन—आफिसखर्च ६।-) इक्का भाड़ा ॥≡) चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ६॥≡)॥ फुटकल ७-) छपाई ६८।।।=) कागज ६=) धर्मार्थ-औषधालयमें ४७॥-)।।। वेतन २४) कुल व्यय १७३॥)।

चैत्र-अफिस खर्च ३॥) इक्का भाड़ा ।।।-) चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ६।।।≡)॥ फुटकल ॥=) छपाई १२।।।) वेतन २४) पुस्तकालयमें ।) कुल-व्यय ४८।।।=)॥

वैशाख—इक्काभाड़ा ।=)।।। चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ४॥≡)॥ फुटकल ।-) छपाई २६॥) भ्रमण २६।=)।।। पुस्तकालय ।।।=) वेतन २४) कुल ८६।)

ज्येष्ठ-आफिस ख़र्च १॥≡) इक्काभाड़ा ≡) चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ६।।।=) प्रेस लिया ३४॥=) कुल ४३।=)

आषाढ—वेतन २४) इक्काभाड़ा १।=)।।। चिट्ठीपत्री ३-)।।। फुट-कल ७) कागज़ ४२।=)।।। कुल ७७॥≡)।

श्रावण—वेतन २५) आफिसखर्च २≡)।।। इक्काभाड़ा ४)।।। चिट्ठीपत्री मय वी. पी. १९॥=) फुटकल २॥≡) छपाई २६।।।=) कागज़ २३।।।=) कुल १०४।-)॥

भाद्रपद—वेतन २५) आफिसखर्च १))। इक्काभाड़ा ।≡) चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ३४॥)॥ फुटकल ६।) छपाई ७०।।।) कागज़ १॥) कुल १३९॥≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्विन—वेतन ५०) आफिसखर्च ॥।-)॥ इक्काभाड़ा ॥।=)॥। चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ११॥।-) छपाई १६) कागज १५।)॥ कुल ६४॥।-)॥।

कार्तिक—वेतन ८)। आफिसखर्च २॥।=)॥ इक्काभाड़ा ।=)॥ परीक्षा सम्बन्धी खर्च २६॥।=)। चिट्ठी मय वी. पी. २३॥=)॥। फुटकल ७) छपाई १।) कुल ७३।≡)॥

मार्ग शीर्ष-आफिस खर्च ३)॥ इक्का भाड़ा =)॥। चिट्ठी मय वी. पी. १८॥)॥ छपाई ५) कागज़ १०।-) कुलयोग ३७)॥।

इस प्रकार एक वर्षमें २५२)। वेतनमें २४॥)। आफिस खर्च ६॥।=)॥ इक्काभाड़ा १=)॥ तार ३४) परीक्षा की कापी और प्रश्नपत्र आदि भेजनेमें १५१।=)। चिट्ठीपत्री मय वी. पी. ३४॥।=) फुटकलमें २८१=) छपाई १०२॥)। कागज ४७॥)॥। धमार्थ औषधालययमें ६३॥)॥ सम्मेलनकी यात्रा तथा भ्रमणमें १=) पुस्तकालयमें खर्च हुआ कुल मिलाकर १००४≡)। व्यय हुए। इसवर्षकी आमदनी पिछले वर्षकी बचत मिलाकर १२५१॥।) है इसलिये आगामी वर्षके लिये १२५१॥।) में खर्च १००४=)। वादकर २४७॥)॥। शेषरहे

विशेष—इस हिसाब पर आयव्यय निरीक्षक पं० ठाकुरदत्तजी शर्माने यह आक्षेपकर हस्ताक्षर नहीं किये कि हिसाब नियम पूर्वक नहीं है और इस कार्यके लिये उन्होंने एक अलग वैतनिक सहकारी नियुक्त करनेकी सम्मतिदी। आपने पांच छः गलतियांभी दिखलायीं, परन्तु २ गलतियोंको छोड़ अन्य समझके फेरसे मानी गयी हैं। मन्त्रीने सम्मेलनके सामने कैफियत समझायी कि आयव्ययका व्योरा लिखनेका काम वैतनिक कर्मचारी पर रहता है। सम्मेलनका जैसा छोटा हिसाब है उसको देखते हुए जिस ढङ्गसे हिसाब रखा गया है वह समय और काम करनेवालोंकी कमीको देखते हुए ठीक है। एक महीने का हिसाब साथही ज्यों ज्यों जमा खर्च होता गया है त्यों त्यों तिथि निर्देश पूर्वक वह लिखा गया है और भिन्न भिन्न मद्दोंका खाता इकट्ठा एक एक महीनेका अलग अलग बनाया गया है। हां, पूर्व सहकारी मन्त्रीके समय दिखलायी हुई गलतियोंके अनुसार काममें कुछ विश्रृङ्खलता और गड़वड़ी अवश्यही हुई है। अनेक बार ताकीद करने परभी कई रकमोंकी रसीद नहीं काटी गयी और मन्त्रीके प्रयागमें न रहनेके समय १०) की एक रसीद नं० ६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहकारीद्वारा काटी गयी है परन्तु जमा खर्चकी बहीमें वह रकम दर्ज नहीं है। अब मन्त्रीको यह स्मरण नहींकि वह रकम भूलसे विस्मरण हो जानेके कारण उन्हींके पास रह गयी या उन्होंने मन्त्रीको देदी, इसी प्रकार एक वी. पी. नं० २४ यथार्थमें सितम्बर १९१४ को वापस आया और उसका वापसी लेबल अब तक रक्खा है, परन्तु वी. पी. रजिस्टरमें वापस लिखनेकी जगह वसूल लिख दिया गया है। इसी प्रकार छः और नौ आनेके दो वी. पीं. वसूल हैं; परन्तु रोकड़ बहीमें दर्ज नहीं हैं। शेष नं० १२४ का वी. पी. २=) काही भेजा गया और इतनाही दाम डाकघरसे मिला इसलिये इतनाही बही में दर्ज है; परन्तु वी. पी. के रजिस्टरमें २=) भूलसे लिखा गया है। एक वी. पी. ३।) की लिखी है परन्तु बहीमें ३) दर्ज है उसका कारण यह है कि २) सभासदीका चन्दा और १।) की पुस्तकें गयो थीं। इसमें ।-) दामकी एक पुस्तक सुधानिधि कार्यालयकी गयी थी जिसमें -) कमीशन मिला और ।) सुधानिधि कार्यालयको देना पड़ा। अब २) चन्देका और १) पुस्तकोंका मिलकर ३) जमा है वह ठीक है। उक्त सहकारी मन्त्रीके अलग किये जानेके बादसे इधरके नये क्लर्कके समयके हिसाबमें गड़बड़ी नहीं है और इधर सब रकमोंकी नियमानुसार रसीदें भी दी गयी हैं। इस कैफियतको सुनकर सम्मेलनने हिसाब स्वीकार किया। गलतीवाली रकमके सम्बन्धमें आय व्यय निरीक्षक महोदयने सम्मति दीथी कि सहकारी मन्त्रीसे ली जाय; परन्तु वे अब इस कार्यालयमें नहीं हैं। इसलिये सम्मेलनने उसेभी क्षमा किया और जो हिसाब है उसे स्वीकार किया।

अपील और सहायता।

इस वर्ष कलकत्तेके वैद्यसम्मेलनके समय निम्नलिखित चन्दा सहायतार्थ प्राप्त हुआ। एतदर्थ दानियोंको अनन्त हार्दिक धन्यवाद है।

नकद चन्दा।

११) वैद्यरत्न पं० लक्ष्मीराम स्वामी जयपुर।
२५) वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेन कलकत्ता।
५) पं० शंकर लक्ष्मण ज्योतिषी कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१) पं० च्यवनलाल वैद्यराज भागलपुर।
२) वैद्यराज कल्याण सिंह अज़मेर।
१) पं० मूलचन्द वैद्य अजमेर।
२) श्रीयुक्त श्रीचन्द जी यति जयपुर।
२) कुंअर श्यामसिंह जी वैद्य फरुखाबाद।
११) वैद्यराज श्यामलाल जी जयपुर।
२) बाबू राजाराम जी गुप्त कलैया बाजार चम्पारन।
३) वैद्यभूषण पं० बदरीनारायण गंगासहाय शर्मा डूंडलोद।
५) पं० नारायण दत्त वैद्य आचार्य खुरजा।
२) पं० प्रतापसिंह शर्मा आयुर्वेदविशारद उदयपुर।
११) यति श्री महाचन्द जी राजवैद्य अलवर।
१) श्रीयुक्त एम. बी. शास्त्री मंगलूर।
१५) पण्डित निरञ्जनप्रसाद शुक्ल सिहोरा।
११) पण्डित हरिप्रसाद मिश्र वैद्य खण्डवा।
२) श्रीयुक्त मन्नूलाल राजवैद्य जबलपुर।
१) पण्डित मन्नूलाल अवस्थी भैंसई (शिवराजपुर) कानपुर।
१०) पं० जुगतराम शंकर प्रसाद वैद्य बम्बई।
२) पं० मुरलीधर वैद्य मलयपुर मुंगेर।
२) बाबू सोहनलाल जैन वैद्य प्रयाग।
२) पण्डित जैसराज बसन्त लाल वैद्य भागलपुर।
१०) पण्डित बालमीकिप्रसाद जी राजवैद्य रींवाँ।
५) पण्डित सूर्यनारायण राजवैद्य इन्दौर।
२१) पण्डित रामदयालु जी शर्मा राजवैद्य अजमेर।

१६५)

प्रतिज्ञात चन्दा।

कलकत्तेके सम्मेलनमें निम्नलिखित सज्जनोंने नीचे लिखी सहायता देनी स्वीकार की। एतदर्थ आप महोदयोंको अनेक हार्दिक धन्यवाद हैं चिन्हांकित सज्जनोंका चन्दा पीछे वसूल होगया है।

२५) वैद्यावतंस कविराज गणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. कलकत्ता।
*२५) वैद्यरत्न पं० डी. गोपालाचार्लु मद्रास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*२५) पण्डित जीवनराम हर्ष मेम्बर कौंसिल बीकानेर।
* २) कविराज सुधांशुभूषण काव्यतीर्थ ढाका।
५) पण्डित हरिशंकर शर्मा हरदुआ गंज अलीगढ़।
*११) पण्डित श्यामसुन्दराचार्य वैश्य रसायनशाला काशी।
*१०) पण्डित जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी अहमदाबाद।
१५) बाबू यामिनीनाथ राय जमींदार अलवा-कागमारी-मैमनसिंह।
२) पण्डित लक्ष्मीनारायण शर्मा मद्रास।
*१०) पण्डित मुनीश्वरनाथ मुश्रान इटावा।

१३०)

वार्षिक प्रतिज्ञा।

निम्नलिखित सज्जनोंने मथुराके वैद्यसम्मेलनके समय नीचे लिखी सहायता प्रति वर्ष देते रहनेकी प्रतिज्ञाकी थी। इनमें से बहुत कम सज्जन अपनी सहायता भेजते हैं। आशा है आप लोग प्रतिवर्ष प्रतिज्ञानुसार अपनी सहायता भेजकर धन्यवादके भागी हुआ करेंगे।

३) पं० रामचन्द्र विशारद नसीराबाद।
२) गोस्वामी बनमाली लाल शर्म्मा मथुरा।
३) वैद्यराज सन्तराम वैद्यभूषण मोगा, पंजाब।
२) पं० विश्वासराव भावे श्रीरामपुरा, सागर।
२) पं० मूलचन्दवैद्य गोकुल मथुरा।
१) पं० हीरालाललक्ष्मीचन्द मारूगली मथुरा।
२) पं० रामशरण वैद्यशास्त्री अछनेरा आगरा।
२) पं० रामरत्नपाल शर्मा वैद्य दिल्ली।
५) पं० श्रीनारायण शर्मा वैद्यभूषण वेरुआ, अलीगढ़।
१) पं० सुन्दरलालवैद्य शाहाबाद।
१) पण्डित रामचरणजी गोविन्दगढ़ अलवर।
६) पण्डित कुन्दनलालजी गोकुलवाले गोकुलजीकाघेरा वृन्दावन।
३) वैद्यराज हरिशंकर शर्मा हाथरस।
३) चतुर्वेदी पं० केदारनाथ शर्मा वैद्य देशोपकारक औषधालय हाथरस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३) पण्डित दुर्गादत्त त्रिपाठी हाथरस।
२) पण्डित रघुनन्दन शर्मा चुनारीकलां आरा।
१) मुंशी जीवनसहाय मंसकीरगढ़, एटा।
२) पं० प्रहलादजी वैद्यराज वेगारपट्टी आरा।
१२) पं० विश्वनाथशुक्ल इटावा।
३) वैद्यराज पं० दुर्लभराम शुक्ल मथुरा।
३) पं० राम नारायण दीक्षित बुकिंगक्लर्क हार्डिंगगेट मथुरा।
१) पं० गोकुलचन्द मिश्र मानिकचौक मथुरा।
५) पं० हीरालाल मिश्र वैद्य आगरा।
३) श्रीयुक्त माधव प्रसाद सीताराम भार्गव मथुरा।

एककालीन प्रतिज्ञात चन्दा।

मथुरा सम्मेलनके समय जिन सज्जनोंने एककालीन दान देनेकी प्रतिज्ञा की थी उनमेंसे निम्नलिखित सज्जनोंसे सहायता मिलना शेष है।

।) श्री मोहनलाल खंडेलवाल मथुरा।
१५) पण्डित रामचन्द्र वैद्यशास्त्री अलीगढ़।
॥) श्रीयुक्त चिरञ्जीवलाल हाई स्कूल मथुरा।
२०) पण्डित बंशीधर शर्म्मा वैद्य मारवाड़ किशनगढ़।
१५) वैद्यराज सरदारी लाल फर्मास्युटिकल कम्पनी गुमटी बाज़ार लाहौर।
११) वैद्यराज राधावल्लभ जी विजयगढ़ अलीगढ़।
५) पण्डित रामलाल शर्मा विजयगढ़ अलीगढ़।
॥) श्रीयुक्त हरिनारायण सोनी होली दरवाजा मथुरा।
५) पण्डित नारायण दत्त शर्मा वैद्यराज ऋषिकुल हरिद्वार।
५) पण्डित शिवनारायण दुबे मासू भांजा, अलीगढ़।

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद विद्यापीठके संरक्षक।

श्रीमान् महाराज सया जी राव गायकवाड़ बड़ौदा।
श्रीमान् छत्रपति महाराज कोल्हापुर।
" महाराज राव साहब कच्छ।
" महाराज रमेश्वर सिंह जी महाराजा बहादुर दरभंगा।
" राय राघव प्रसाद नारायण सिंह जी बहादुर बराँव।
" कुमार सर्यू प्रसाद नारायण सिंह जी रियासत "
" पुरुषोत्तम राव नारायण राव सूबेदार ब्रह्मावर्त्त।
" डाक्टर सर भालं चन्द्र जी भाटवडेकर बम्बई।
" आनरेबल गंगाधर राव माधव चिट नवीस सी. आई. ई.
" महाराज गोस्वामी रामकृष्ण जी पुरी नागपुर।

आयुर्वेद विद्यापीठके आश्रयदाता।

श्रीमान् धर्मरत्न सेठ खेमराज जी श्रीकृष्णदास जी बम्बई।
" सेठ तुकाराम जावजी चौधरी निर्णय सागर प्रेस बम्बई
" शंकर राव माल गुजार नागपुर।
" डाक्टर फ्राम रोज़ माणिक जी सेठना बम्बई।
" भिषग्रत्न नन्दलाल जी हकीम अबोहर।
" जीवालाल जी दुबे ज्योंती मैनपुरी।
" बाबा रामनाथ जी कालीकमली वाले हृषी केश।
" रावत आनन्द सिंह जी महार कलां जयपुर २५)
" महन्त मथुरादास आत्माराम दास जी बड़ौदा ५)साल
" मुनीश्वरनाथ मुख्तार इटावा १०)साल
" बाबू शिवदयाल वैद्यमौहारी कुलपहाड़-हमीरपुर ७)साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद विद्यापीठके कार्य कर्त्ता संवत् १९७१।

नम्बर	पद	नाम	पोस्ट	ज़िला
१	अध्यक्ष	वैद्यावतंस कविराज गणनाथ सेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि कविभूषण	६५ वीडनस्ट्रीट	कलकत्ता
२	उपाध्यक्ष	पं० केदारनाथ चौबे वैद्य	लोकनाथ महादेव	प्रयाग
३	"	वैद्यरत्न पं० डी. गोपालाचार्य आयुर्वेद मार्तण्ड	जार्ज टौन	मद्रास
४	मन्त्री	जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	दारागंज	प्रयाग
५	उपमन्त्री	चि. चू. पं० रामेश्वर मिश्र वैद्य शास्त्री	नयागंग	कानपुर
६	"	पं० सूर्यप्रसाद वाजपेयी वैद्य	चमरौली	उन्नाव
७	गणक	चि. चू. पं० ठाकुर प्रसाद शर्मा मणिवैद्य	दारागंज	प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद विद्यापीठकी कार्य कारिणी समितिके सदस्य

नम्बर	नाम	पोस्ट	जिला	प्रान्त	शुल्क
१	बाबू महावीर प्रसाद गुप्त	ऊंचेकी मण्डी	प्रयाग	स्थानिक	
२	पं० गिरजाशंकर वैद्य	दारागंज	"	"	
३	पं० विश्वेश्वर मिश्रवैद्य	अहियापुर	"	"	
४	पं० रुद्र पार्शव शास्त्री	मंगलोदय कम्पनी	त्रिचूर	मद्रास	
५	पं० हरि प्रपन्न शास्त्री	विट्ठलवाडी	कालकादेवी	बम्बई	
६	आ. पञ्चानन पं० कृष्णशास्त्री देवधर	रविवारपेठ	नासिक	महाराष्ट्र	
७	पं० हेमराज हरिभाई राजवैद्य		अहमदाबाद	गुजरात	
८	पं० क्षमा पति वाजपेयी	चौक	लखनऊ	संयुक्तप्रान्त	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	नाम	पोस्ट	ज़िला	प्रान्त	शुल्क
९	पं० व्रज बिहारी चतुर्वेदी राजवैद्य		बांकीपुर	विहार	
१०	पं० रामनारायण शास्त्री	३५ बड़तला स्ट्रीट	कलकत्ता	बंगाल	
११	कविराज गिरीशचन्द्रसेन	वाजिदपुर	मैमनसिंह	पूर्व बंगाल	
१२	पं० केशव शास्त्री आत्रेय वैद्य	भिएड	ग्वालियर	मध्यभारत	
१३	पं० रामदयालु शर्मा राजवैद्य		अजमेर	राजपूताना	
१४	पं० भालचन्द गणेश नवात्थे,	गणेशपुरा	सागर	मध्यप्रदेश	
१५	पं राम प्रसाद शर्मा राजवैद्य		पटियाला	पंजाब	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद विद्यापीठके सभासद संवत् १९७१ ।

[संयुक्त प्रान्त]

नम्बर	कब से	नाम	पोस्ट	ज़िला	
१	अगहन शु० ६ सं०१९७०	श्रीयुक्त पं० शिवशंकरराम शोकहा	दारागंज	प्रयाग	२)
२	"	" पं० दुर्गा प्रसाद जी वैद्य	सासनी	हाथरस	२)
३	"	" पं० गौरी शंकर वैद्य	चमरौली	उन्नाव	२)
४	"	कविराज श्रीश्चन्द्र चक्रवर्ती	दारागंज	प्रयाग	२)
५	बैशाख कृ० १२-७१	सैयद छेदा शाह-पौहार	नर्वल	कानपुर	२)
६	अगहन शु० ६ सं० ७०	पं० छोटेलाल जी वैद्य	मु० बौहरान, डिवाई	बुलन्द शहर	२)
७	"	पं० सोहन लाल शर्मा	बेलौन-नरौरा	"	२)
८	"	पं देवीदयाल शर्मा जादवा	कुठार-सपाटु	शिमला	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	कब से	नाम	पोस्ट	ज़िला	
९	,,	पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्य	स्वामीघाट	मथुरा	२)
१०	,,	पं० रामचरण राजवैद्य	सोरों	एटा	२)
११	,,	पं० मंगला प्रसाद पाठक वैद्य	तुर्तिपार	बलिया	२)
१२	,,	पं० राधेलाल त्रिवेदी वैद्य	रानीकटरा	लखनऊ	२)
१३	,,	बा० पुरुषोत्तम दास कक्कड़	ललितभवन चौक	लखनऊ	२)
१४	,,	पं० श्याम मनोहर वैद्य	नौगवां बनथर	उन्नाव	२)
१५	,,	पं० नील कंठ दीक्षित वैद्य	आदि केशव वरुणा संगम	बनारस	२)
१६	,,	पं० गंगादत्त पन्त	काशीपुर	मुरादाबाद	२)
१७	भाद्रव शु० ४ ७१	वैद्यवर मुनीश्वरनाथ मुश्रान	आयुर्वेदोक्त चिकित्सालय	इटावा	१०)
१८	,,	पं० अयोध्याप्रसाद वैद्य ज्योतिषी		झांसी	५)
१९	,,	पं० सिद्धगोपाल मिश्र वैद्य	सोठियावां गौसगंज	हरदोई	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१	„	पं० रामेश्वर प्रसाद राम शङ्कर बाजपेयी	जगतपुर	राय बरेली	२)
२२	„	पं० ईश्वर चन्द अशर्फी लाल अध्यापक संस्कृत पाठशाला	सहसावान	बदायूं	५)
२३	श्रावण शुक्ल ४-७१	पं० राम लाल ब्रह्मभट्ट कछिपाना	हूलागंज	कानपुर	२)
२४	„	पं० महावीर प्रसाद पाठक वैद्य	बसन्तपुर	गोरखपुर	२)
२५	„	डाक्टर प्रसादी लाल झा एल. एम. एस.	मालरोड	कानपुर	२)
२६	„	पं० गजराज शुक्ल वैद्य	सेमरी-असोहा	उन्नाव	२)
२७	„	पं० चिन्तामणि श्याम बिहारी वैद्य, पुरनिया	बदोसराय	बाराबङ्की	२)
२८	„	पं० हीरा लाल मिश्र वैद्य	चौबे मोहोली की पोर	मथुरा	२)
२९	कार्तिक शु० ७-७१	पं० शिवपाल शर्मा वैद्य	पीपीगंज	गोरखपुर	२)
३०	„	पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्य शास्त्री	आरोग्य सुधा वर्षक औषधालय	अलीगढ़	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१	"	पं० कृष्णदत्त शर्मा वैद्य अध्यापक संस्कृत पाठशाला	गवाँ	बदायूँ	२)
३२	"	पं० गङ्गाधर प्रसाद शुक्ल वैद्य मालिक सुधा सञ्चारक कम्पनी	कोपरगंज	कानपुर	५)
३३	"	पं० महेशानन्द शर्मा वैद्य	नन्द प्रयाग	गढ़वाल	३)
३४	"	पं० राम शरण वैद्य	अछनेरा	आगरा	२)
३५	"	पं० पुरुषोत्तम लाल वैद्य	फ़ीरोज़ाबाद	"	२)
३६	"	पं० प्रभू दयाल वैद्य वाचस्पति	हरिद्वार	सहारनपुर	५)
३७	पौष कृ० १९-७१	डा० राम नारायण वर्मा	कारोनेशन फार्मसी	बदायूं	२)
		पञ्जाब			
३८	मा० शी० शु० ६-७०	पीरजी महाराज जरनाथ	बुबानीखेड़ा	हिसार	२)
३९	"	पं० हीरालालजी शर्मा वैद्य	बाबियाल	अम्बाला	२)
४०	"	पं० देवी दयालु शर्मा जाडवा	कुठार पो० सपाट	शिमला	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२	”	कविराज नरेन्द्रनाथ मिश्र	नियर तहसील	लाहौर	२)
४३	”	पं० राम प्रसाद जी वैद्य	आयुर्वेदिक स्कूल	पटियाला	२)
४४	”	पं० राम प्रताप शर्मा	बुवानी खेड़ा	हिसार	२)
४५	”	गोस्वामी शिवलालशर्मा	अमृत औषधालय	रावलपिंडी	२)
४६	”	डाक्टर पैरामल एम. डी.	कूचाकलालन नेशनल बैंक	अमृतसर	३)
४७	कार्तिक शु० ७-७१	पं० सदानन्द शर्मा वैद्य	रानी का रायपुर	अम्बाला	२)
४८	”	पं० भोलानाथ जी वैद्य	कूचानरसिंह दास	अमृतसर	३)
४९	”	पं० मन्नूलाल जी वैद्य	गली अनार	दिल्ली	२)
५०	”	पं० फिरायाराम जी वैद्य	मंडी फुलर वन्ना	शाहपुर	२)

बिहार और बंगाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बिहार और बंगाल।

नम्बर	कब से	नाम	पोस्ट	ज़िला	शुल्क
[illegible]	अगहन शु० ६-७०	पं० वासुदेव शास्त्री वैद्य	वराकर	बर्दवान	२)
[illegible]	वै० कृ० १२-७१	पं० लक्ष्मी नारायण वैद्य	पुनपुन	पटना	२)
[illegible]	श्रावण शु० ४-७१	पं० नारायण दत्त शर्मा आवगीला	जहानाबाद	गया	२)
[illegible]	,,	पं० परमेश्वर मिश्र वैद्य सैयदाबाद	देकुली-पभेरा	पटना	२)
[illegible]	,,	पं० नारायण प्रसाद पाठक	नया गाँव असरगंज	भागलपुर	२)
[illegible]	,,	श्रीमहाराज लाल मिश्र वैद्य	कल्याणी	मुजफ्फर पुर	२)
[illegible]	श्रावण शु० ४-७१	पं० रामनारायण शास्त्री	३५ बड़तला स्ट्रीट	कलकत्ता	२)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यप्रदेश।

नम्बर	कब से	नाम	पोस्ट	जिला	शुल्क
१	अगहन शु० ६-७०	पं० पंढरीनाथ दामोदर मुले	दहीसात	अमरावती	५)
२	"	मुंशी पन्नालाल मन्नूलाल हकीम	शुक्रवारी बाजार	जबलपुर	२)
३	कार्तिक शु० ७-७१	पं० रघुनाथ प्रसाद जी वैद्य	मूढ़ापार-बावई	होशंगाबाद	२)
		मध्यभारत और बुन्देलखण्ड			
१	अगहन शु० ६-७०	पं० अवध प्रसाद प्रयागदत्त वैद्य	सोहावल स्टेट	वाया-सतना	३)
२	"	डा० बलवन्तराय झबेरीलाल वैद्य भूषण	कीम स्टेशन	B. B. C. J. Ry.	२)
३	श्रावण शु० ४-७१	पं० केशव शास्त्री आत्रेय वैद्य	भिण्ड	ग्वालियर	२)
४	कार्तिक शु० ७-७१	पं० शंकर गोविन्द वैद्य	खरगौन	नीमाड़	२)
५	"	पं० जुगत राम जी वैद्यराज	रामगढ़	रतलाम	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

६	„	पं० राधाकृष्ण गंगाधर वैद्य C/o शंकर प्रसाद जमादार	धोन मंडी मलार गंज-जूना	इन्दौर	५)
७	„	राम दत्त रामप्रसाद मिश्र वैद्य	वियावानी चबूतरा शिव जी शालिग्राम की पाठशाला	इन्दौर	२)
८	अगहन शु० ६-७०	पं० रामकृष्णा चार्य वैद्य	अलीराजपुर	दोहद	२)
		बम्बई			
१	आ० कृ० ४-६६	पं० नारायण मोरेश्वर रानडे वैद्य	नासिक	नासिक	२)
२	„	पं० गोपाल शास्त्री वैद्य	गायकवाड़ी कालका देवी	बम्बई	२)
३	„	वैद्य अप्पा शास्त्री साठे	काकड़ वाड़ी गिरगाँव	बम्बई	११)
४	„	बा० नारायण दास पोद्दार	चेनीराम जैस राज ३८३ कालकादेवी	„	२)
५	„	पं० कृष्ण दत्त पाण्डेय वैद्य	ग्रांट रोड मिल्टर स्टीट माधो जी की चाल	गिरगाँव बम्बई	२)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६	अगहन शु० ६-७०	मोहनदास पीरूमल हकीम	शिकार पुर	सिंध	३)
७	„	श्रीमहन्त, मथुरादासजी आत्मारामदासजी	विश्वामित्र के बड़े पुल पर	बड़ौदा	५)
८	„	पं० नन्द शंकर पुरुषोत्तमभट्ट वैद्य	सलावतपुरा	सूरत	२)
९	अगहन शु० ६-७०	पं० गोपीनाथ आबा जी शर्मा दाते	नगरकर गली नं० १६०१	नासिक	२)
१०	„	पं० अनन्त हरीपाटण कर	जनस्थान	नासिक बड़ौदा	३)
११	„	पं० रामचन्द्र विष्णु नगर कर.	रोड़े के मन्दिर के पास	सूरत	२)
१२	श्रावण शु० ४-७१	पं० चन्द्र शंकर नरहरि शंकर शुक्ल वैद्य	नागर फलिया खपारिद किला पारडी		११)
१३	कातिक श० ७-७१				
१४	„	बा० सीताराम के पोद्दार	चैनराम जैसराम कालका देवी	बम्बई	५)
१५	„	सेठ गजानन्द मोदी	नं० २ मारवाड़ी बाज़ार बम्बई	बम्बई	२)
१६	„	डा० अमृत लाल जटा शंकर प्रेमजी चांदलियां मैनेजिंग डाइरेक्टर वैद्य सभा	नं २३८ कालिक देवी	बम्बई	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७	”	पं० पुरुषोत्तम गनेश नानल वैद्य	३३८ नारयण पेठ	पूना	२)
१८	”	पं० गोविन्द दत्तात्रय भावे	बुधवारपेठ	पूना	२)
		राजपूताना			
१	श्रावण शु० ४-७१	पं० ईश्वर प्रसाद जी वैद्य	केसर गंज	अजमेर	२)
२	कार्तिक शु० ७-७१	पं० वाल मुकुन्द जी वैद्य		झलरापाटन	२)
		मद्रास			
१	कार्तिक शु० ७-७१	श्रागद्दी गोपालाचार्य	बरहाम पुर	गंजाम	३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगामि वर्षके लिये आयुर्वेद महामण्डलके निम्न लिखित कार्यकर्ता निर्धारित हुए हैं।

सभापति—आयुर्वेद मार्त्तण्ड पं० लक्ष्मीराम स्वामी राजवैद्य राजकीय संस्कृत पाठशाला जयपुर।

उप सभापति—(१) कविराज योगीन्द्रनाथ सेन एम. ए. विद्या-निधि कविभूषण-कलकत्ता (२) चिकित्सक चूणा-मणि पं० ठाकुर प्रसाद शर्मा वैद्य प्रयाग।

मन्त्री—(१) पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल वैद्य प्रयाग।

उपमन्त्री—(२) डाक्टर पं० लक्ष्मी कान्त शर्मा वैद्य एल. एम. पी. प्रयाग (३) बाबू सोहन लाल वैद्य प्रयाग।

कोषाध्यक्ष—बाबू सांवलदास रईस प्रयाग।

आय व्यय निरीक्षक—वैद्य भूषण पं० ठाकुर दत्त शर्मा लाहौर।

प्रान्तिक मन्त्री।

संयुक्त प्रान्त—चि. चू. पं० रामचन्द्र शर्मा गोकुल मथुरा।

पञ्जाब प्रान्त—लाला सरदारी लालजी वैद्य गुमटी बा० लाहौर

राजपूताना—पं० रामदयालु शर्मा, आयुर्वेदोक्त औषधालय

गुर्जर प्रान्त—वैद्य पञ्चानन पं० जटा शङ्कर लीलाधर त्रिवेदी सम्पादक वैद्य कल्पतरु अहमदाबाद।

बम्बई—आयुर्वेद मार्तण्ड पं० यादव जी त्रीकम जी आचार्य सम्पादक आयुर्वेदीय ग्रन्थ माला बम्बई।

मध्यभारत—चि. चू. पं० वाल्मीकि प्रसाद राजवैद्य रींवाँ।

मद्रास-पं० एम: दुराई स्वामी आयंगार आयुर्वेद भूषण मद्रास

मध्यप्रान्त—पं० गोविन्द प्रसाद शास्त्री वैद्य जबलपुर।

महाराष्ट्र प्रान्त-वैद्यपञ्चानन पं० कृष्ण शास्त्री कवड़े बी.ए. पूना

वङ्ग प्रान्त—कविराज हेमचन्द सेन काव्य तीर्थ ढाका।

विहार—वैद्य पंचानन पं० चन्द्र शेखरधर मिश्र रत्नमाला, बहागा, चम्पारन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानिक सभासद।

मेजर वामनदास वसु आई. एम. एस.
बाबू जयकुमार जैनी।
पं० विश्वेश्वर मिश्र वैद्य।
पं० देवकी नन्दन तिवारी वैद्य।
कविराज नीलमाधव सेन वैद्य।
बाबू महावीर प्रसाद वैद्य।
बाबू मनमोहन लाल वैद्य सिराथू-प्रयाग।
पं० गिरजा शंकर जी वैद्य।

संयुक्त प्रान्तीय सभासद।

कुँवर श्याम सिंह जी वैद्य फर्रुखाबाद।
बाबू राधा वल्लभ राजवैद्य सम्पादक आरोग्यसिंधु विजयगढ़ अलीगढ़।
पं० नारायण दत्त आचार्य संस्कृत पाठशाला खुर्जा।
पं० मन्नूलाल मिश्र वैद्य विन्दकी फतेहपुर।
पं० ज्ञानेन्द्र दत्त शर्मा वैद्य मिश्रिख-सीतापुर।
पं० नारायणदत्त शर्मा वैद्य हरिद्वार।
पं० शिवरत्न प्रसाद वाजपेयी रहवां रायबरेली।
पं० धरणीधर झा वैद्य बरा शंकरगढ़।
पं० रघुवर दयालु शास्त्री वैद्य नौघरा कानपुर।
पं० रामनारायण मिश्र राजवैद्य लखनऊ।
चिकित्सक चूणामणि बाबू ज्ञानसिंह जी आगरा।
वैद्यराज पं० हरिशंकर शर्मा हरदुआ गंज अलीगढ़।
पं० श्याम सुन्दराचार्य वैश्य रसायनशास्त्री रसायनशाला काशी।
पं० नारायणलाल वैद्य असकुंडा बाजार मथुरा।

पञ्जाब प्रान्तीय सभासद।

पं० सरूपति राम शर्मा राजवैद्य भिवानी।
पं० किशोरी दत्त शर्मा शास्त्री राजवैद्य रिवारी।
पं० हृषीकेश वैद्य गुरु महल अमृतसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० मनोहर लाल वैद्यराज छिपैटी दिल्ली।
पं० हेमराज शर्मा वैद्य विशारद लाहौर।
पं० श्रीदत्त शर्मा वैद्य सेवक औषधालय हिसार।
पं० नन्दलाल हकीम अबोहर फीरोज़पुर।
पं० ठाकुर दत्त आचार्य लाहौर।
कविराज सीताराम महता सदर बाज़ार रावलपिण्डी।

राजपूताना प्रान्तीय सभासद।

आयुर्वेद पञ्चानन पं० पूनमचन्द तनसुख व्यास वैद्य व्यावर।
यति श्री महाचन्दजी राजवैद्य अलवर।
पं० भैरवदत्त असोपा बीकानेर।
साहित्याचार्य पं० गंगाप्रसाद शास्त्री भिषग्रत्न भरतपुर।
पं० श्यामलालजी राजवैद्य जयपुर।
भिषगाचार्य पं० परमानन्द शास्त्री देसूरी मारवाड़।
पं० भवानी शंकर वैद्य उदयपुर।
पं० रामचन्द्र विशारद नसीराबाद।
पं० गिरधर शर्मा नवरत्न झालरापाटन।
ठाकुर कल्याणसिंहजी वैद्यराज अजमेर।

गुर्जर प्रान्तीय।

पं० अमृतलाल प्राणशंकर झण्डेश्वर भडौंच।
पं० भोगीलाल त्रीकमलाल वकील सम्पादक धन्वन्तरि वीसनगर
पं० रविशंकर देवीशंकर राजवैद्य राजकोट काठियावाड़।

बम्बई।

आयुर्वेद महा महोपाध्याय पं० वासुदेव शास्त्री ऐनापुरे गिरगांव बम्बई।
पं० त्र्यम्बकलाल त्रिभुवनदास मुनि वैद्य नागदेवी क्रासलैन बम्बई।
पं० जुगत रामजी वैद्य भाएडूफर्मास्युटिकल वर्क्स दादर बम्बई।
भिषग्वर विट्ठल भास्कर सुकठनकर गिरगाँवरोड बम्बई।

महाराष्ट्र प्रान्तीय सभासद।

पं० वामनकेशव दातार शास्त्री वैद्य जनस्थान नासिक।
पं० गंगाधर शास्त्री गुणे वैद्य अहमद नगर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० गोपालराव गोड़बोले गोड़बोल वेलगांव ।
प्राणाचार्य पं० बालशास्त्री लागवणकर पूना ।
भिषग्रत्न पं० गणेशकृष्ण पाटणकर वैद्य सोलापुर ।

मद्रास प्रान्तीय सभासद ।

विट्ठलप्रसाद पाण्डेय मुदगल्ल लिंगसुगुर मद्रास ।
डाकूर रामचन्द्र भीवराव मोराजकर, मापुका, गोवा ।
पं० रुद्रपार्शव शास्त्री मङ्गलोदय कम्पनी त्रिचूर ।
पं० एन. रामाशास्त्री आयुर्वेद भास्कर विजवादा कृष्णा ।
ए. वेंकट रामा पण्डित ३९-४० चामराजा मुहल्ला मैसूर

बङ्ग प्रान्तीय सभासद ।

कविराज नारायण चन्द्र गुप्त कवि रंजन वैरीसाल ।
पं० कन्हैयालाल गोपालाचार्य २२२ हरीसन रोड कलकत्ता ।
पं० भूरालाल मिश्र वैद्य पञ्चानन नं० ९६ तुलापट्टी स्ट्रीट कलकत्ता
पं० कृपा राम शर्मा कुष्ट चिकित्सक सलकिया हवड़ा ।
कविराज शीतलचन्द चट्टोपाध्याय सुखिया स्ट्रीट कलकत्ता ।
कविराज यामिनी भूषणराय एम. ए. एम. वी. प्रसन्नकुमार ठाकुर लैन कलकत्ता ।
कविराज हेम चन्द सेन कविरञ्जन कुम्हार टोली कलकत्ता ।
कविराज श्यामादास वाचस्पति ग्रेस्टीट नं० ४० कलकत्ता ।
कविराज राजेन्द्रनारायण सेन कविरत्न वाराणसी घोषस्ट्रीट कलकत्ता ।
कविराज सुधांशु भूषणसेन काव्य तीर्थ सम्पादक आयुर्वेद-विकास ढाका
पं० दुर्गानारायण सेन शास्त्री शोभाबाजार नं० ३० कलकत्ता ।
कविराज ज्योतिर्मय कविचिन्तामणि नं० ५४ नीमतला स्ट्रीट कलकत्ता

विहार प्रान्तीय सभासद ।

आर्य वैद्य वा० नौमीलाल देव नदपुरा साई पटना ।
पं जैसराज वसन्तलाल मिश्र वैद्य भागलपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० ब्रह्मदेव नारायण शर्मा आरा।
पं० गंगाधर शर्मा काव्य तीर्थ गया।
पं० शिवचन्द्र मिश्र काव्य तीर्थ मुजफ्फर पुर।

मध्यप्रदेश-बरार प्रान्तीय सभासद।

पं० निरञ्जन प्रसादशुक्ल सिहोरा रोड जबलपुर।
पं० धरणीधर शर्मा वैद्य सदर बाज़ार सागर।
पं० नारायण प्रसाद दीक्षित राजवैद्य रायगढ़ स्टेट सी. पी.
पं० हरि प्रसाद मिश्र वैद्य बुरहान पुर।
कविराज क्षारस राम शर्मा वैद्य कामठी।
आयुर्वेदमार्तण्ड पं० प्रयागराज तिवारीवैद्य वार्शी टाकली अकोला
पं० मनमोहन प्रसाद राजवैद्य खैरागढ़ स्टेट सी. पी.

मध्य भारत प्रान्तीय सभासद।

वैद्य पञ्चानन पं० सूर्य नारायण शर्मा राजवैद्य आड़ा बाज़ारइन्दौर
बाबू रामरतन राजवैद्य उचेहरा नागौद।
पं० यादव रामचन्द्र वैद्य रास मण्डल-धार।
पं० परशुरामकृष्ण वैद्य माधव कालेज उज्जैन।
पं० लक्ष्मणराव पाण्डुरंग सहस्रबुद्धे जयन्द्रगंज-लश्कर ग्वालियर।
पं० बालमुकुन्दजी महाराज राजवैद्य सैलाना—रतलाम।

बड़ौदा प्रान्तीय सभासद।

चिकित्सक चूड़ामणि पं० माधव दिवाकर वैद्य दाड़िया बाज़ार बड़ौदा।
पं० घनश्याम बापू भाई वैद्य महम्मदवाडी डालियापोलबड़ौदा

नैपाल प्रान्तीय सभासद।

बाबू दामोदर दास वैद्यराज त्रिपुरेश्वर काठमाण्डू।
राजाराम गुप्त वैद्य कलैया बाज़ार आदापुर चम्पारन।

हैदराबाद प्रान्तीय सभासद।

कविराज हर गोविन्दजी राजवैद्य आयुर्वैदिक औषधालय। हैदराबाद दक्षिण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर प्रान्तीय सभासद।

आयुर्वेद पञ्चानन पं० रघुनाथ शर्मा वैद्य उर्दू बाज़ार जम्बू।

सिन्ध प्रान्तीय सभासद।

वैद्यराज पं० माधव शर्मा कुलचन्द्र शिकार पुर।

मैसूर प्रान्तीय सभासद।

वैद्य पञ्चानन वी.डी. चिकित्सक सम्पादक वैद्य सिन्धु बंगलौर

सिंहल प्रान्तीय सभासद।

पं० गंगा प्रसाद तिवारी ब्राह्मण फिज़ीशियन नं० ७४ फर्स्ट डिवीजन मर्दाना कोलम्बो।

उड़ीसा प्रान्तीय सभासद।

ब्रह्मवैद्य पं० मागुनी मिश्र शर्मा राज कविराज पुरी (जगन्नाथ)

ब्रह्मदेश प्रान्तीय सभासद।

वैद्य शिरोमणि पुन्नीलालजी इंडियन वर्मा मेडिकल हाल।
पिन्तुजा–पेगू वर्मा।

अधिकार प्राप्त सभासद।

१ कुंवर सरयू प्रसाद नारायणसिंह बहादुर बरांव।
(प्रथमसम्मेलनके सभापति)

२ आयुर्वेदविद्यानिधि पं० गङ्गाधर शास्त्री भट जयपुर।
(द्वितीयसम्मेलनके सभापति)

३ वैद्यावतंस कविराज गणनाथसेन एम. ए., एल. एम. एस. विद्यानिधि, कविभूषण कलकत्ता। (तृतीयसम्मेलनके सभापति)

४ वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेन एम. ए., विद्या भूषण कलकत्ता। (चतुर्थ सम्मेलनके सभापति)

५ लेफ्टिनेंट कर्नल कान्होबा रणछोड़दास कीर्तिकर आई.एम. एस. एफ. एल. एस. बम्बई (पञ्चमसम्मेलनके सभापति)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ पं० रामनाथ शास्त्री वैद्य मन्त्री वैद्यसभा लखनऊ ।

७ पं० प्राणनाथ शर्मा वैद्य मन्त्री आयुर्वेद प्रचारिणीसभा प्रयाग

८ पण्डित जीवन रामजी हर्ष वैद्य आयुर्वेदप्रचारिणी सभा, बीकानेर

९ पण्डित हरिनाथ शर्मा सांख्याचार्य वैद्य मन्त्री आयुर्वेद-प्रचारिणीसभा मुरादाबाद ।

१० पण्डित वंशीधर शर्मा वैद्य मन्त्री वैद्यसभा मारवाड़ किशनगढ़

११ पण्डित रामावतार शर्मा वैद्य विहारप्रान्तीय वैद्यसम्मेलन बांकीपुर ।

१२ पण्डित नारायणशंकर देवशंकर वैद्य शास्त्री मन्त्री वैद्यसभा अहमदाबाद

१३ कविराज ज्ञानेन्द्रनाथ सेन बी. ए. कविरत्न मन्त्री षष्ठवैद्य-सम्मेलन कलकत्ता ।

१४ कविराज योगेशचन्द्र काव्यतीर्थ, भिषक् शास्त्री, मन्त्री आयुर्वेद सभा मैमनसिंह ।

——oo——

आयुर्वेद विद्यापीठ ।

परीक्षाके प्रश्न पत्र । सं० १९७० वै०

प्राकृत वैद्य परीक्षा ।

निदान ।

१–निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, सम्प्राप्ति इन पदोंके अर्थ स्पष्ट-रूपसे विवृत कीजिये ।

२–विशूचिका और हैजा, एक ही रोग है या नहीं ? दोनोंके लक्षण भाषामें स्पष्ट भावसे लिपिवद्ध करना चाहिये ।

३–अलसक, विलम्बिका, हलीमक, अदित्त, और अपतानक इन रोगोंके लक्षण और विवरण भाषामें लिखिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४–पोथकी, रोहिणी, क्षतपोतक, और पाषाण गर्दभ इन रोगोंमें शरीरके कौन कौन स्थानमें रुजा होती है?

५–प्लेग, सुजाक और मधुमेह रोगके लक्षण कैसे हैं?

शारीर।

१–मस्तक, वक्षःस्थल, और उदर इन तीन स्थानोंमें (भीतर) कौन कौन आशय वा यन्त्र हैं–उसका स्थूल परिचय लिखिये।

२–सुश्रुतमें शिरावेधकी विधि कैसी लिखी गयी है?

३–गर्भिणीचर्या कैसी है? तृतीय मास और सप्तम मासमें गर्भ नष्ट होने की सम्भावना हो तो क्या क्या औषध देंगे और कैसी व्यवस्था करेंगे।

४–फुप्फुस, अन्त्र, मस्तिष्क और पेशी इन पदार्थोंका क्या स्वरूप है? और इनसे कौन कौन प्रयोजन सिद्ध होता है?

श्री गणनाथ सेनस्य।

चिकित्सा-रसायन।

१ (१) कालिङ्गमागधमानयोर्भेदः कः।

(२) शुक्ति शब्द वाचस्य पलशब्दस्य व्यवह्रियमाणस्यपिकानां कति शास्त्रकारस्याभिप्रेतानि।

२ (१) स्वरस कल्कयोर्भेदः कः।

(२) शुष्क द्रव्य विषये स्वरस परिकल्पना परिभाषा की दृशी?

(३) आसवारिष्टयोर्भेदः सलक्ष्यं प्रतिपाद्यताम्।

३ (१) "करवीर शिफा दन्ती त्रिवृत् कोशातकी फलम्।
रंभा क्षारोदकैस्तैलं प्रशस्तं लोम शातनम्" इत्यत्र क्वाथ कल्कादयः परिभाषा मनुसृत्य व्याख्येयाः।

(२) पिच्छिलबस्ते र्लक्षणं प्रतिपाद्यताम्।

४ (१) श्वित्र नाशकारग्वध गुग्गुलु चूर्णविशिष्ट कषाययोगः की दृशः।

(२) वृद्धदाडिमाष्टके योगे चूर्णक्रमः समुन्मीलय।

५ (१) वाजीकरण शुक्रलौषधयर्भेदः सुस्पष्टम् लिख्यताम्।

(२) दीपनपाचनौषधयोर्भेदः, भेदनरेचनौषधयो र्लक्षणञ्च व्याक्रियताम्।

डी. गोपाला चार्य मद्रास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निघण्टुः।

१-कति विधा हरीतकी ? कथंसोत्पन्ना ? कीदृशीच हरीतकी कस्मिन् कर्मणि शस्ता ? १८

२-किंगुणं विडंगम् ? कानिच तस्य नामान्तराणि ? १५

३-त्रिकटु शब्देनकेषाँ ग्रहणम् ? किंषड्रूषणं नाम ? शालपर्णी, पृष्टपर्णी, वृहती, कण्टकारि, गोक्षुर, शब्दानां मिलितानांका संज्ञा ?११

४-यावशूक-टंकण-तुंगक्षीरी-पिण्डीतक-काश्मीरी शब्दानांकेऽर्थाः ? ५

५-किंगुणं शिलाजतु ? कथञ्च तदुत्पन्नम् ? १२

६-केमत्स्यस्य गुणाः ? ६

७-निन्दित जल शोधनोपायः कश्चित् लिख्यताम्।

८-के शालि धान्य व्रीहि धान्ययोर्गुणाः ? १४

९-के दुग्धस्यगुणाः कीदृशश्च दुग्धं वर्ज्यम्।

१०-किंगुणं दधि ? के दधि सेवने नियमाः ? ११

श्रीयोगीन्द्रनाथ सेनस्य

सूत्र स्थान।

१-औषध सेवन करानेके काल कौन कौन हैं ? कौन कौन कालमें किस किसको औषध सेवन कराना चाहिये।

२-व्यवायी, विकाशी, दीपन और स्रंसन इन शब्दोंके अर्थ उदाहरण सहित लिखो ?

३-क्षुधित, मन्दाग्नि और दीप्ताग्निकी नाड़ी कैसी होती है ?

४-ऋतुओंके विभागका वर्णन दोषोंके सञ्चय प्रकोप प्रशमके साथ लिखो।

५-चूर्ण, लेह, गुटिका, घृत, तैल आदि कितने समयमें निर्वीर्य हो जाते हैं। १०० . यादवजी आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोग्य शास्त्र।

१ व्यायामके गुण, अति व्यायामके दोष और व्यायाम किन किनको वर्ज्य है ? २०

२ मल मूत्रादिके वेगोंको रोकनेसे क्या हानि होती है और उसका क्या उपाय है। २०

३ कैसा जल न पीना चाहिये २०

४ तैलाभ्यङ्गके गुण और तैलाभ्यङ्ग किसको वर्ज्य है। २०

५ कैसा अन्न न खाना चाहिये। २०

यादवजी आचार्य १००

आयुर्वेद विशारद परीक्षा।

निदान।

१–विषम ज्वराः कतिविधाः ? मुक्तानुबन्धित्वाभावेऽपि सन्तत ज्वरस्य कथं, विषमत्वम् ? प्रलेपकज्वरः कीदृशः कस्मिन् रोगे च प्रायो दृश्यते सहचारी ?

२–अतीसारः प्रवाहिका, ग्रहणी गदानां लिङ्गानि परस्पर भेद-प्रदर्शन पुरस्सरं वर्णनीयानि ?

३–मूत्र कृच्छ्र मूत्राघातयोः कोभेदः ? (सुजाक्) इति प्रसिद्धस्य रोगस्य कानि लिङ्गानि ? अपि नाम विंशति विध प्रमेहान्तर्गतोऽयं रोगः ?

४–किटिभ—चिप्प-कदर-परिदर-पोथकी रोगाः किंलक्षणाः परिपोटक रोगः क भवति ?

५–राजयक्ष्मा रोगस्य निश्चय प्रदानि लिङ्गानि व्याख्येयानि।

शारीर।

१—वात पित्त श्लेष्म प्रकृतीनां पुरुषाणा माकृतिप्रकृति विशेषा वर्ण्यताम्। प्रकृति निष्पत्तौ को हेतुः कश्चिद् जायन्ते वा तेन तेन दोषेण प्रकृत्यारम्भके न मनुष्याः।

२—शुक्रार्त्तवयोरव्यापन्नयोः कतिलक्षणानि, कानि च व्यापन्नयोः ? शुक्रार्त्तव दोषेषु कीदृशः प्रतीकारो विधेयः ? नार्य्याः शुक्रमस्ति न वा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—स्नायु पदार्थः सुश्रुते कीदृशः प्रतिपादितः। कति विधावा स्नायवः?

३—कति विधान्यस्थीनि? कलापदस्म कोऽर्थः? श्लेष्मधरा-कला कतिष्ठति, किं कार्य्या च।

मर्म सु विशेषेण प्राणास्तिष्ठन्तीति कथमुच्यते? प्राणहर मर्म-णांत्रीण्युदहरणानि लेख्यानि।

५—गर्भस्राव सम्भावनायां प्रदेयाः सुश्रुतोक्ता मासानुमासिक योगा लिख्यन्ताम्।

श्रीगणनाथ सेनस्य

चिकित्सा-रसायन।

१ १—'मृद्वृक्ष बेणु लोहदेर्भाण्डं यच्चतुरंगुलम्।
विस्तीर्णश्च तथोच्चश्च तन्मानं कुडवं विदुः॥"
इत्यत्र कुड़व शब्द वाच्यं यन्मानं तच्च सुप्रसिद्ध द्वादश-रूपिका तोलन परिमितं वा। उत चत्वारिंश द्रूप्यक तोलना परिमितं वा निरूप्यताम्।

२—औषधिनिष्ठाः पञ्चावस्थाः का विवृणुत।

२ १—स्वरस क्वाथ कल्कादीनां कषाय पञ्चकत्व व्यवहारे किं मानम्।

२—अतीसार नाशक ह्रीवेरादिकषायः प्रतिपाद्यताम्।

३ १—कासनाशकमरिचादि गुटिका निर्माणं कथम्।

२—युक्तया कूष्माण्ड खण्डस्य सूरणं विपचोत्सुधीः।
इत्यत्र परिभाषा मनुसृत्यावलेह–पाकःप्रदर्श्यताम्।

४ १—ताम्र मारण प्रकारः प्रतिपाद्यताम्

२—राज यक्ष्म नाशक लोकनाथ रस प्रयोगः लेखनीयः।
(प्रक्रिया विभागः कथम्)।

३—गुल्म प्लीहादि नाशक विद्याधर रस प्रयोगो लेखनीयः

५ १—भगन्दर नाशक त्रिफला गुग्गुलु योगः परिभाषा मनुसृ-त्योल्लेखनीयः।

२—विषम ज्वर नाशक पञ्चतिक्त क्वाथ प्रकारं परिभाषा मनुसृत्य व्यालेखय।

डी० गोपालाचार्य मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निघण्टुः ।

१। कानि गुडूच्या नामानि ? केच तस्या गुणाः ? १२
२। के वासक पिप्पली त्रिवृतारग्वध हरीतकीनां गुणाः ? ३०
३। अक्ष धात्री कणा कृमिघ्न शब्दैः केषां ग्रहणम् । ९
४। के दुग्धस्य गुणाः ? ८
५। किं गुणं दधि ? ८
६। के नाम जलस्य साधारणा गुणाः । ६
७। किं गुणा काञ्जी ? ६
८। के कान्त लौहस्य गुणाः । ५
९। गोधूमस्य गुणा लेख्याः ।
१०। किं गुणोमाषः । ८

श्रीयोगीन्द्रनाथ सेनस्य

सूत्रस्थान ।

१— किन किन पुरुषोंको वमन और विरेचन कराना चाहिये और किन किन पुरुषोंको वमन विरेचन नहीं कराना चाहिये । २०

२—विषयुक्त अन्नकी किस प्रकारसे परीक्षा करना और यदि उसके भक्षणस्पर्श आदिसे कोई रोग हुआ हो तो उसका क्या इलाज करना चाहिये । २०

३। प्रावृड् और शरद ऋतुमें कैसी चर्या रखनी चाहिये । २०

४—आम, पच्यमान और पक्वव्रण शोथके लक्षण क्या हैं ? २०

५ वातका स्वरूप, वातप्रकोपका काल और उसका प्रशमन लिखो । २०

१००

आरोग्य शास्त्र ।

प्राकृत वैद्य परीक्षाके ही प्रश्न विशारदके लिये थे ।

गुणाङ्क
१००

... आचार्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदाचार्य परीक्षा।

शारीरे।

१-व्याख्यायताम्।

वैद्यके तु—"स्वभाव मीश्वरं कालं यदृच्छां नियतिं तथा।
परिणामञ्च मन्यन्ते प्रकृतिपृथु दर्शिनः॥ इति॥

२-मासि मासि नियमेनार्त्तवप्रवृत्तेः को हेतुः? कस्मादावयस आरभ्य कियत्कालान्तं प्रायेण दृष्टार्तवा भवन्तिनार्यः? गर्भसम्भवे किं किमपेक्ष्यते, कानि च तावद्गर्भिणी लिङ्गानि?

३-का पुनरियमपरानाम (अपरा वा) किञ्चास्याः प्रयोजनम्?
कदाचास्याः पातः? अपातेच किंकरणीयम्?

४-सन्धयः क्वावस्थिताः कति विधाश्च?
सन्धि बन्धनञ्च कथङ्कारं सम्पद्यते?

५-"शिरा विषाण तुम्बैस्तु जलौकाभिः पटेस्तथा।
अवगाढं यथापूर्वं निर्हरेद्दुष्टशोणितम्॥
इति सन्दर्भस्यार्थः सविस्तरं व्याख्येयः।

निदाने।

१-निदानस्य किंलक्षणम्? तञ्चकतिविधमाह हरिचन्द्रः? काश्चताविधाः, इति सम्यग् दृष्टान्त सहितं व्याख्यायताम्। निर्दिश्यताञ्च वातप्रकोपणानि निदानानि। सम्प्राप्ति पदस्य कोऽर्थः?

२-कानितावद् दोषकोपस्य पृथग् लिङ्गानि। सामता निरामतादि विचारश्च कीदृशः?

३-रक्तपित्त रोगस्य असाध्य लिङ्गानि?

४-प्रमेह मधुमेहयोः को भेदः? उपेक्षितस्य मधुमेहस्य की दृशः परिणामः? "साध्याः कफात्था दश पित्तजाः षट्" याप्यानसाध्यः पवनाच्चतुष्कः। "समक्रियत्वाद् विषमक्रियत्वान्महात्ययत्वाच्च यथा क्रमंते।" इत्यस्य कोर्थः।

५-उदर्द, कोट, वीसर्प रोगणां भेदाः प्रदर्शनीयाः।

वर्णनीयानि च संक्षेपादधो लिखित रोगाणां लक्षणानि। भ्रंसथुः, वात पर्य्यादः; लिङ्गनाशः, अपतानकः फिरङ्ग रोगश्चेति।

श्रीगणनाथ सेनस्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा-रसायन।

१— निशा, तगर, रसाञ्जन, चविका, कस्तूरी, भल्लातकानामभावे प्रतिनिधित्वेन केषां ग्रहणम्? उत कारणान्तर मनुसृत्य किञ्च 'कस्तूर्यभावे कङ्कोल मिति दृश्यते अतः प्रतिनिधि द्रव्यं सामरस्येनाङ्गीकरणीयं खलु।

२—ग्रन्थकारमतमनुसृत्य, आधुनिक चरित्रकाराणां मतमविहाय चरक, सुश्रुत, वाग्भटानां कालः रचनापद्धतिः चिकित्सा वैलक्षण्येन पौर्वापर्वं विनिश्चयं यथामतिविलिख्यताम्।

३—(१) शल्य शब्दार्थः कः।

(२) यतोयतो गतिं विद्यादुत्सङ्गो यत्र यत्र च।
तत्र तत्र व्रणं कुर्याद्यथा दोषो न तिष्ठति।
अस्यार्थः शल्यतन्त्रानुसारेण व्याख्येयः।

(३) भ्रूण गंडादिषु, पणिपादादिषु च छेदन भेदनोक्तौ को हेतुः।

४—(१) वृद्धोदर परिस्राव्युदर विषयक शस्त्रचिकित्साविधानं प्रतिपाद्यताम्।

(२) गल शुण्डिनां छेदनान्तर विहिता चिकित्सा की दृशी।

(३) कति मूढ़गर्भगतयः निरूप्यन्ताम् तन्नामानि च।

६ १—अपनीत दुष्टरक्ते कीदृशं भोजनमुपयोज्यम्।

२—कथं वा शरीरभावानां सर्वेषाम्।

३—गुल्म शब्दार्थः कः सच "संचारी यदि वाचक" इतिदृश्यते तत्कथंविद्वद्भिर्निश्चीयते।

७ १—कथमेकेन व्याधिना युगपज्जनपदानां विनाशः। तस्मिन् कालेविहितोपाया राजधानीवासिनां नैव संघायन्ते-किल तर्हिं किमाचरणीयम् सशक्तिकं प्रदर्शय।

२—कथं चिकित्सां कर्तुकामस्य वैद्यवरस्य प्रश्नावलिः।

८ १—चिकित्सा शब्दार्थःकः अभेषजद्वैविध्यस्य लक्षणं निरूपय।

२—रसायन, वाजीकरणयोर्भेदम्; वृष्यस्यरूपम् तदुपयोगि योगत्रयं च निरूपयत।

९ १—अतिसारे, विरेचनरूपा, प्रमेहे हेतुव्याधि विपरीतार्थकारिणीच, चिकित्सा कदाहिता सलक्ष्यं निरूपय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—शुष्कार्शसाम् कदाहि स्वेदनं हितम् ।
अर्शो नाशक धूपाः के ।
३—अजातोदकोदर लक्षणं कथं वा ज्ञायते ।

१० १—पाण्डुरोगी, आदौस्निग्ध, तीक्ष्ण, ऊर्ध्वानुलोमिकैः संशोध्यः इतिदृश्यते तत्कथम् ।
२—देश पुरुषभेदेन यत्सात्म्यं भगवता चरकाचार्येण प्रतिपादितं तच्च सविस्तरं निरूपय ।

११ १—अधः प्रदर्शित योगस्य संयोजन मर्दन पुट प्रकाराश्च परिभाषा मनुसृत्य लेखनीयाः ।
"रसस्य तुल्यभागेन हेम भस्मं प्रकल्पयेत् ।
तालकं गन्धकं तुल्यं माक्षिकं रसकं शिकाम् ।
रस साम्येन युंजीत, इत्यादि ।
२—क्रव्याद रस प्रक्रिया भागो व्याख्येयः ।

डी० गोपालाचार्लू मद्रास

निघंण्टुः ।

१। कानि पटोलस्य नामानि ? तस्य के अवयवा ग्राह्याः ? कस्यावयवस्यचके गुणाः ? सामान्यतः पटोल शब्देन कस्यावयवस्य ग्रहणम् ?

२। (क) कतिविधोबलाया भेदः । कस्तेषां भेदविज्ञानोपायः ।
(ख) कतिविधं लवणम् ? कानितेषां नामानि ? केच लवणस्य गुणाः ।

३। किंगुणः शूरणः ? केषु च रोगेषु च हितः ।

४। भूनिम्ब कोशाम्रात्मक शिग्रु ताम्रमलकी छिन्नरुहा कृमिघ्नार्शोघ्न शब्दैः केषां ग्रहणम् ?

५। (क) किंगुणा किं रसा च हरीतकी ?
(ख) आमलक्या त्रिदोषघ्नत्वे किं कारणम् ? किंगुण केषुच रोगेषु वर्जनीया आमलकी मज्जा ?

६। (क) के गोदुग्धस्य गुणाः ? (ख) के दधि सेवने नियमाः ?
(ग) उदर रोगे कः खलु तक्रपानविधिः १५
(घ) केषुरोगेषुतक्रं निषिध्यते ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—कतिविधाः शालयः काच तत्रोत्तमा प्रोक्ता ?

८—(क) के सप्तधातवः ?

(ख) अष्टवर्ग पञ्चकोलसर्वौषधिवर्ग-तृणपञ्चमूल शब्दैः केषां ग्रहणम् ?

९—(क) को वेशवारो नाम ?

(ख) के शृत शीतस्य जलस्य गुणाः ?

(ग) केषु रोगेषु शीताम्बु परिवर्जनीयम् ?

(घ) किं दूषितस्य जलस्य लक्षणम् ?

१०—के ताम्रस्य गुणाः ?

श्रीयोगीन्द्रनाथ सेनः

सूत्र स्थान ।

१-अतिकार्श्यस्य, अतिस्थौल्यस्य च किं कारणं काच तयोश्चिकित्सा ।

२-नाडी स्वेदः कथं प्रयोज्यः ।

३-मद मूर्च्छासन्न्यासानां का सम्प्राप्तिः ।

४-विपाक लक्षणस्याल्पमध्य भूयिष्ठानां प्रति द्रव्याणां गुण वैशेष्या तत्रतत्रोपलक्षयेत् ॥

५-व्याख्यायतामयं श्लोकः ।

रसो निपातेद्रव्याणां विपाकः कर्मनिष्ठया ।
वीर्ययावदधीवासान्निपाता च्चोपलभ्यते ॥

पद्यमिमंवृणुत ।

सुश्रुत संहिता ।

१-प्रतिसारणीयः पानीयश्च क्षारः कथं कर्तव्यः ।

२-शोणितस्य पाञ्चभौतिकत्वेका युक्तिः ।

३-रूढो ऽपि व्रणः कैर्हेतुभिः पुनरीयते ।

४-तत्र कोश-दाम-स्वस्तिकानुवेल्लित-प्रतोली-मण्डल-स्थगिका-यमक-खट्वा-चीन-निबन्ध-वितान-गोफणाः पञ्चाङ्गी चेति चतुर्दश बन्ध विशेषाः । तेषां नामभिरेवा कृतयः प्रायेण व्याख्याताः । इमंसूत्रं विवृणुत ।

५-रात्रावालेपनिषेधे का युक्तिः ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोग्य शास्त्र ।

१-कैर्व्यायाम तैलाभ्यङ्ग नेत्राञ्जनान्यसेव्यानि ।
२-दूषित जलस्य किं लक्षणम्, काच तस्य प्रतिक्रिया ।
३-कथंहि जनपदोध्वंसकराणां रोगाणामुत्पत्तिः ।
४-कैर्हेतुभिः संक्रामका रोगा देहाद्देहान्तरं सङ्क्रमन्ते ।
५-शरदि किं सेव्यं किंचासेव्यम् ।

—:०:—

यादवजी आचार्य ।

सं० १९७१ के प्रश्नपत्र ।

सूत्रस्थान-स्वास्थ्यविज्ञानौ ।

(प्रथम दिवसे, प्रथम पत्रम्, कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां सं० १९७१ वै०)

१-कण्ठस्रोतोगतं जातुषं अजातुषं च शल्यं कथमाहार्यम् ? २०
२-सिराव्यधे शोणितातिप्रवृत्तौ का चिकित्सा विधेया ? २०
३-मधुररसस्य के गुणाः, कानि कर्माणि, अतिसेवितश्च मधुररसः कान् दोषानुत्पादयति ? २०
४-अतिमात्रो हीनमात्रश्चाहारः कान् दोषानुत्पादयति ? २०
५-अनूपदेशवासिभिः जाङ्गलदेशवासिभिश्च कीदृगाहार उपयोज्यो, येन ते आरोगास्तिष्ठेयुः ? २०

पं० यादवजी त्रीकमजी आचार्य ।

शारीरविज्ञानम् ।

(प्रथमदिवसे, द्वितीयपत्रम् कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां सं० १९७१ वै०)

सूचना—एतेषां प्रश्नानां प्रथम षट्कं विशारदपरीक्षार्थिभिरुत्तरणीयम् । आचार्य्यपरीक्षार्थिभिस्तु समग्रं प्रश्नदशकम् । आ. वि

१-कला, स्नायु, मर्म्म, पदानामर्थाः सोदाहरणं प्रतिपाद्यन्ताम् । प्रत्यक्षशारीरोक्ताः सिराधमनी नाडीपदानामर्थाश्च विशदीकरणीयाः । १०-१६
२-आमाशय, यकृत्, प्लीहं, वृक्क, वस्तिसंज्ञानां शारीरभागानां स्थान-संस्थानक्रियाः संक्षेपतो वर्णनीयाः १०-१६
३-अस्थीनि कतिविधानि किम्प्रयोजनकानि च ? अस्थ्नां परस्परसन्धानं सन्धिषु कथङ्कारं सम्पद्यन्ते, कतिविधा वा सन्धयः । १०-१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-प्रपद, पार्ष्णि, जङ्घा, जानु, वंक्षण, कुक्षि, कक्षा, प्रगण्ड पदैः के के शरीरावयवा लक्षणीयाः ? १०-१६

५-आर्त्तवस्य कदा कथङ्कारं वा निर्वृत्तिः, कदा च निवृत्तिः ? गर्भाशयः क कीदृशश्च ? स्त्रीणां फलकोशो विद्यते न वा ? १०-१८

६-अस्थिसंख्यानिरूपणे नव्यप्राचीनमतयोर्महान् भेदो दृश्यते स किं विधो किं हेतुश्च ? किंवात्र समाधानं कश्च पक्षः साधीयान् ? नव्यमते कति शरीरास्थीनि कुत्र कुत्रावस्थितानि ? १०-१८

७-पृष्ठवंशे कति नामास्थीनि ? ग्रीवा पृष्ठकटिकशेरुकाणा-मेकैकस्याः स्वरूपं भेदप्रदर्शनपुरःसरं निरूप्यताम् ? १०

८-जतूकास्थि क किमाकारञ्जेति सावयव विवेकं वर्ण्यताम् १०

९-जानुसन्धानं कफोणिसन्धानञ्च सविस्तरं विवृणु । १०

१०-सद्यः प्राणहराणि मर्म्माणि नामतः स्थानतश्च सम्यङ् निरूपणीयानि । १०

कविराज गणनाथ सेनः ।

निदाने ।

(द्वितीयदिवसे, प्रथमपत्रम् कार्तिक शुक्ल त्रयोदश्यां सं० १९७१ वै०।)

१—कति रोग ज्ञानकारणानि तत्र च व्याधिजन्मरूप संप्राप्तेः कथं तत्कारणत्वं, व्याधिजन्मनो ज्ञान विषयत्वात् ।

२—"सप्तमेदिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशेऽपिवा । तथा सप्तमी द्विगुणा यावन्नवस्येकादशी तथा" इति वाक्ययोरर्थं च ज्वरितं षडहेऽतीते लघ्वन्नप्रति भोजित मिति वाक्यस्य सप्तरात्रात्परं तथा-दशरात्रात्परं भेषजपान विधायक वाक्येन कथमेकार्थता ?

३—अनुलोम प्रतिलोमक्षययोः स्वरूपं सकारणं वर्ण्यताम् ।

४—अश्मरी शर्करयोर्मूत्राघात मूत्रकृच्छ्रयोर्गुल्म विद्रध्योः कुष्ठ-श्वित्रयोः प्रवाहिका ग्रहणी दोषयो श्चमिथः को भेदः ।

५—सर्वरोग प्राधान्यात्सर्वेषु समान तन्त्रेषु ज्वरस्यैव प्राथम्येनोप-देशे सत्यपि किमिति तदुपेक्ष्य वातव्याधि निदानमेव ताव-च्छोक्तं धन्वन्तरिणा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—संक्षेपतो वातादि कोपनान्यभिधाय तेषांकथमसात्म्येन्द्रियार्थादि स्वरूपत्व मिति सुस्पष्टं निरुच्यताम् ।

७—यस्य सर्वस्मिन्कालेऽगले शोफः समुत्थितस्तास्ताश्च वातपित्तकफजारुजोऽपिसमुत्तिष्ठन्ति केनरोगेण पीड़ितोऽयं विभाव्यो भिषजा ।

८—वल, काल, देश, सात्म्य, प्रकृति सहायामवयवांसि प्रविभज्य तदनुरूपं यदिपिवति ततः पिवत्यमृतम् इयं, भूमिरवद्यानांदौः शील्यस्येदमास्पदम् एकोऽयं बहुमार्गायादुर्गतेर्देशिकः परम् ।

९—कस्यचित्पुरुषस्य मुखेवैरस्यं श्लेष्मणश्चाधिक्य मङ्गानां-गौरव मरोचकस्तन्द्रा च वर्तते विरामूत्रे च न सम्यक् प्रवर्तते सन्धयश्च भिद्यन्त इव जलं च पिपासति सः कोसौनाम रोगस्तस्य भिषजा वक्तव्यः ॥

पं० लक्ष्मीराम स्वामी.

निघण्टौ ।

(द्वितीयदिवसे, द्वितीयपत्रम्, कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां सं० १९७१ वै०)

१—वासक, शतावरी, ब्राह्मी, शुण्ठी, विडङ्ग, चित्रक, त्रिवृतारग्वध, काश्मरी, हरीतकीनां गुणाः लेख्याः । ३५

२—वलापुनर्नवामरिचानां कतिभेदाः ? ६

३—क्षारदशक, पञ्चमूत्र, जीवनीयगण, पञ्चोपविषाणां शब्दैः केषां ग्रहणम् ? के दशमूलस्य गुणाः ?

४—अग्नि, धात्री, क्रिमिघ्न, सिंहास्यामृता, शब्दैः के बोध्यन्ते ? ५

५—के लौहस्य भेदाः, के लौहस्य साधारण गुणाः, के रसाञ्जनस्य भेदाः ? १०

६—किं हंसोदकं नाम ? किं घ्राणपीतस्योदकस्य गुणाः ? ५

७—किंगुणं गोक्षीरस्य ? कतिविधं क्षीरम् भेषजकर्मणि प्रयुज्यन्ते ?

८—के दधिसेवने नियमाः ? ५

९—किंगुणं काञ्जिकम् ? ४

१०—षष्टिकयवगोधूमाढकीनां के गुणाः ? १२

कविराज योगीन्द्रनाथ सेनः

चिकित्सा-रसायनयोः ।

(तृतीय द्विवसे द्वितीय पत्रम्, पौर्णिमायां सं० १९७१ वै०)

सूचना—षण्णां मध्ये केषाश्चिदपि पञ्चप्रश्नानामुत्तरमवश्य मुल्लेखनीयम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—आसवारिष्टसंधानविषये पक्वसिद्धस्याऽरिष्टइति, अपक्वसिद्धस्याऽसवइति च परिभाषा सिद्धेऽपि भगवता चरकेण क्वाथसिद्धेषु मूलकासव दुरालभासवादिष्वपि नियममुल्लंघ्य प्रयुक्तस्त्वासवशब्दोदरीदृश्यते, तत्रकिंमानम् ? २०

२—"दूष्यंदेशंबलंकालमनलं प्रकृतिं वयः। सत्वं सात्म्यं तथाहारमवस्थाश्च पृथग्विधाः। सूक्ष्मसूक्ष्माःसमीक्ष्येषां दोषौषधनिरूपणे। योवर्ततेचिकित्सायां नसस्खलति जातुचित्" इत्यत्राऽऽचार्याभिप्रायद्योतनपूर्वक मर्थोविवेचनीयः किंच, दूष्याद्याहारान्त दशेति कैश्चिदुक्तम्, अन्यैश्चावस्थाशब्देन साक मेकादशेति परिगणितम्, पक्षयोरुभयोरधिकोऽभिप्रायः ? २०

३—विंशतिशस्त्राणीति केचित्, अन्येषड् विंशतिरिति प्रवोचन् अधिकानां कानि नामानि ? तेषां विनियोगश्च कीदृशः ? २०

४—(क) षड्विधशस्त्रकर्मेतिचरके, अष्टविधमिति सुश्रुते, त्रयोदशविधमित्यष्टाङ्गहृदये दृश्यतेखलु, तेषांवैलक्षण्यं सवैपुल्यं, सलक्ष्यं, विव्रियताम् ?

(ख) गलशुण्डिकामुद्दिश्य कीदृक्शस्त्रकर्म, केन वा शस्त्रेण प्रयोज्यम्, अन्यथाकरणे का हानिः ? २०

५—वैक्रान्तः कतिविधः ? तत्रचतुर्णां विनियोगः प्रयोगेषु सोदाहरणं लिख्यताम्, किञ्च जयगुटिकायाः प्रयोगक्रमः परिभाषामनुसृत्य प्रदर्शनीयः। २०

६—अतिसारिणः कस्यामवस्थायां पिच्छावस्तिप्रयोगः हेतुव्याधिविपरीतार्थकारिणीचिकित्सा च, प्रशस्यते ? तत्रपिच्छावस्तिक्रमश्च लेखनीयः। २०

पं० डी० गोपालाचार्यः

आयुर्वेदविशारद।

सूत्रस्थान एवं स्वास्थ्य विज्ञाने।

(प्रथमदिवसे, प्रथमपत्रम्, कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां सं० १९७१ वै०)

१—शिरोवस्तिः कथं विधेया ? २०

२—विरेचनातियोगस्य किं लक्षणं का तच्चिकित्सा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—कानि च पित्तस्थानानि ? तेष्ववस्थितं च पित्तं कैः २०
कर्मभिः शरीरमनुगृह्णाति ?
४—व्यायामातिसेवनात् के दोषाः समुत्पद्यन्ते, का च २०
तच्चिकित्सा ? २०
५—शरदि स्वस्थेन कथं वर्तितव्यं ?

पं० यादवजी आचार्यः

निदानविषये ।

(द्वितीयदिवसे, प्रथमपत्रम्, कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां सं० १९७१)

विशेषः—निम्नांकित प्रश्नेषु केषांचिदपि सप्तप्रश्नानामुत्तरम् दातव्यम् ॥

१—संप्राप्तिलक्षणं व्याख्याय कस्मिंश्चिदुदाहरणे तत्समन्वयो- १४
ऽपि लेख्यः । १४
२—वातरक्तकुष्ठयोर्निदानानि निदर्शय । १२
३—प्रमेहोरःक्षतयोः पूर्वरूपाणि निरूपय ।
४—विड्विघाततालुपुप्पुटार्जुनानामधिष्ठानप्रदर्शन पूर्व- १४
रूपाणि प्रदर्शय ।
५—परिणामशूलस्योपशयमूरुस्तम्भस्यानुपशयं च प्रकाशय । १४
६—पद्यमिदं व्याख्येयम्ः— १४
यत्रस्थमामं विरुजेत्तमेव देशं विशेषेण विकारजातैः
दोषेण येनावततं शरीरम् तल्लक्षणैरामसमुद्भवैश्च । १४
७—पाण्डुरोगीतथातीसारीपित्तकराणियदि द्रव्याणि
भुङ्क्ते तदा कीदृशं तत्परिणाममनुभवति ? १४
८—शोथस्योपद्रवान्प्रदर्श्य अनन्योपद्रवकृत इत्यादि पद्यं व्या-
ख्येयम् । १४
९—यस्यपुंसः शीर्षंप्राक्सञ्चितोरविसन्ततः सान्द्रोविदग्धो-
लवणः श्लेष्माघ्राणतःप्रभ्रश्यति, तस्यकोगदोविवेक्तुं
शक्यः ? १८

पं० लक्ष्मीराम स्वामी

निघण्टौ ।

(द्वितीयदिवसे, द्वितीयपत्रम्, कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यां १९७१ वै०)

१—गुडूच्यपामार्गाश्वगन्धाप्रसारणीपिप्पल्यतिविषामदनभू-
निम्बेन्द्रयवनालकनारिकेलबिभीतकानां पर्यायनामानि-
गुणांश्चवर्णयताम् । २५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२–सुवर्णताम्रयोः के गुणाः ? १०

३–षष्टिकगोधूममाषाणां गुणा लेख्याः। १५

४–क्षीरदधिघृतानां गुणान् निर्दिश। १०

५–त्रिकटु, त्रिफला, पंचकोल, दशमूल शब्दैः केषां ग्रहणम् ? केदशमूलस्य गुणाः ? २०

६–निम्नलिखित गुणकारकौषधीनाम् पंच पंच नामानि उल्लेखनीयानि :–

वान्तिकारक, रेचक, स्वेदक, रजःप्रवर्तक, वायुशामक। २०

कविराज योगीन्द्रनाथ सेनः

चिकित्सा-रसायनयोः।

(तृतीयदिवसे, द्वितीयपत्रम्, कार्तिकशुक्लपौर्णिमायां सं० १९७१ वै०)

१–द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणां परिमाणे क्व साम्यं क्व च वैषम्यम् ? अथ च वंशी, हंसपद, त्रिल्व, माने को भेदः ? १०

२–कियन्तो धातवः का च तेषां सामान्यतः शुद्धिः ? १५

३–रससिन्दूरविधिः स्पष्टं लेखनीयः। १५

४–सन्निपातसम्बन्धिनः कश्चिदपि योगस्य विधिः सशास्त्रं वर्णनीयः। १०

५–अधोलिखितश्लोकस्यार्थं स्पष्टं वर्णयः–

अजमोदामोचरसं सशृङ्गवेरं सधातकी कुसुमम्।
मथितेन युतं पीतं गङ्गामपिवाहिनी रुन्ध्यात्॥ १॥ १०

६–मूत्राघातासवातयोश्चिकित्सा पथ्यापथ्य सहिता लेखनीया। २०

७–यस्य पिच्छिलं सफेनं कृष्णञ्च रक्तं मुखान्निस्सरति शीतकामित्वमपि दृश्यते तद्रोगस्य किन्नाम चिकित्सा च कीदृशी ? २०

पं० श्यामसुन्दराचार्य वैश्यः

प्राकृतवैद्य।

स्वास्थ्यविज्ञान।

(प्रथम दिवस, प्रथमपत्र, कार्तिक शुक्ल १३ सं० १९७१ वै०)

सूचना–नीचे लिखे १० प्रश्नोंमेंसे किसी भी सात प्रश्नका उत्तर दीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१-शुद्ध हवाकी क्यों आवश्यकता है? और किन किन कारणोंसे हमारे रहनेके स्थानकी हवा बिगड़ती है? यह विस्तारसे लिखिये। १४

२-ऋतुओंका परिवर्त्तन किस प्रकार होता है, यह समझाइये और उस परिवर्त्तनका प्राणियोंके शरीर पर क्या और किस प्रकार असर होता है यह दिखाइये, एवं, वसन्तऋतुकी चर्या लिखिये। १४

३-पानीके लिये कौनसे जलाशयका जल उत्तम है? और नदियोंमें कैसी नदियोंका जल सर्वोत्तम है? १४

४-मान लीजिये कि एक क्षयका रोगी आपकी खास सुश्रूषामें रखा गया है, उसके निजके स्वास्थ्यके लिये और उसके आसपासके लोगोंके स्वाध्यके लिये क्या क्या तजवीज रखेंगे? १४

५-छोटे बालकोंके स्वास्थ्यके लिये उपयोगी कुछ नियम लिखिये और उनके स्वास्थ्यके बिगाड़नेवाले कौन कौन कारण होते हैं, यह स्पष्ट समझाइये। १४

६-कृशमनुष्यके और स्थूल मनुष्यके खानपानमें क्या भेद रखना चाहिये? १४

७-मलमूत्रादि स्वाभाविक वेगोंके नाम लिखिये और उनमेंसे हरएकको रोकनेसे किन किन रोगोंकी उत्पत्ति होती है, यह संक्षेपमें लिखिये। १४

८-उड़द, कुलथी, यव, मूंग, साठी चावल, केला, सूरन और मत्स्यके गुण दोष लिखिये। १४

९-छः रसके नाम लिखिये और मधुर रसका कार्य एवं उसके अतियोगसे किन किन रोगोंकी उत्पत्ति होती है?

१०-परस्परके विरुद्ध अन्नपानके १०से १५ दृष्टान्त लिखिये। १४

सूचना—दो नम्बर सफ़ाईके लिये रखे गये हैं।

पं० जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी।

शारीर।

(प्रथम दिवस, द्वितीयपत्र, कार्तिक शुक्ल १३ सं० १९७१)

विशेष सूचना-नीचे लिखे ७ प्रश्नोंमें से किसी ६ प्रश्नका उत्तर देना चाहिये; किन्तु छठे और सातवें दोनों प्रश्नोंके उत्तर देनेवाले परीक्षार्थी को १० नम्बर विशेष दिये जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न।

१-गर्भ रहनेके प्रकट लक्षण क्या हैं, पांचवें महीनेमें गर्भके भीतर बालककी क्या अवस्था होती है तथा बालकके उत्पन्न होनेका समय कबसे कबतक है, खुलासा लिखिये। १५

२-उपविष्टक, नागोदर, तथा विष्कंभगर्भों से क्या मतलब है? विष्कंभगर्भकी अवस्थामें वैद्यको क्या और किस तरह करना चाहिये। १५

३-कला, सिरा, रसायनी, लसीका, वसा, धमनी, मुष्क, सुषुम्ना, पेशी, कंडरा, तथा स्नायुरज्जु, किनको कहते हैं स्पष्ट वर्णन कीजिये। १५

४-प्रगण्ड, पृष्ठवंश, ऊरु, कूर्चक, त्रिक, प्रकोष्ठ, मणिबन्ध, गुल्फ, हनु और पार्ष्णि, शरीरके किन भागोंके नाम हैं? तथा प्रत्येक सक्थिमें कितनी हड्डी होती हैं लिखिये। १५

५-मनुष्य शरीरमें कितनी पेशी होती हैं? स्त्रियोंमें पुरुषसे कितनी पेशी अधिक होती हैं और कहां होती हैं वर्णन कीजिये। १५

६-गर्भस्थान किसको कहते हैं? क्लोम और वृक्कके स्थान और उनका काम लिखिये।

७-मुखसे मलद्वार पर्य्यन्त भोजन किये पदार्थका मार्ग तथा पचनक्रम वर्णन कीजिये अर्थात् भिन्न भिन्न स्थानों पर किस प्रकारसे पचन होता है स्पष्टरूपसे लिखिये। १५

पं० लक्ष्मीकान्त एल. एम. पी.

निदान।

(द्वितीय दिवस, प्रथमपत्र, कार्तिक शुक्ल १४ सं० १९७१ वै०)

१-पित्तज अतिसार, ग्रहणी, अर्श और रक्तपित्त इनमें क्या भेद है? इनके लक्षण भी स्पष्ट रूपसे वर्णन कीजिये। २०

२-प्लेगके लक्षण वैद्यकके अनुसार किस रोगसे मिलते हैं, उसके पूरे लक्षण लिखकर यह भी बतलाइये कि दोनोंमें कितना भेद है? २०

३-रोग निश्चय करनेमें रोगीकी परीक्षा किन किन विधियोंसे करनी चाहिये। सबोंका वर्णन संक्षेपमें लिखिये। २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४-प्रसूत रोगके उपद्रव और सकल्लके लक्षण स्पष्ट रूपसे लिखिये । १५

५-विष देनेवाले मनुष्यको कैसे पहचानना चाहिये और आप रोगीको देखकर कैसे निश्चय करेंगे कि किस प्रकारका विष दिया गया है ? २५

पं० रामनारायण मिश्र राजवैद्य ।

निघण्टु ।

(द्वितीय दिवस, द्वितीयपत्र, कार्तिक शुक्ल १४ सं० १९७१)

१-हरीतकीकी जातियां और उनके गुण लिखिये । ८

२-गुडूची किस किस रोगमें कैसे कैसे वर्तनी चाहिये ? १०

३-दशमूलकी औषधियोंके नाम और गुण लिखिये । १५

४-पञ्चलवण, अम्लपञ्चक, तथा रस और उपरसोंके नाम लिखिये । २०

५-कपिकच्छु, काश, कासीस, करञ्ज और करीरके क्या गुण हैं ? १५

६-अभ्र, लोह, ताम्र, वङ्ग और पारदके क्या गुण हैं ? २०

७-शीतजल, दुग्ध, दधि, घृत, मधु और शर्कराकेगुण लिखिये । १२

पं० गणपति शास्त्री ।

पं० ठाकुरप्रसाद शर्मा मणि ।

चिकित्सा और रसायन ।

(तृतीयदिवस, द्वितीयपत्र, कार्तिक शुक्ल १५ सं० १९७१ वै०)

१-निम्नलिखित शब्दोंको परिभाषा लिखिये और उदाहरण देकर स्पष्टीकरण कीजिये,-
दीपन औषध, पाचन औषध, शमन औषध, रसायन औषध, फांट, हिम, मन्थ, कल्क, आसव और अरिष्ट । १६

२-स्नेह, स्वेद, वमन और विरेचनका क्रम चिकित्सामें कैसा और क्यों होता है ? यह भी बतलाइये कि ऋतु-भेदसे कौन कौन विरेचनकी योजना करनी चाहिये ? १६

३-(क) कोई ऐसा चूर्ण लिखिये जो सब प्रकारके [illegible] (ख) [illegible] चिकित्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते समय कौनसा काढ़ा और स्वरस दीजियेगा ?
(ग) आमातिसार पर एक काढ़ा और खांसी पर एक गुटिका लिखिये (घ) पैत्तिक श्वासकी चिकित्सा किस प्रकार करनी चाहिये ? १६

४-जिस रोगीमें निम्न लिखित लक्षण पाये जाते हों उसकी वान्ति बन्द करनेके लिये क्या योजना करनी चाहिये । इनमेंसे किसी भी तीनका उत्तर दीजिये:-

(क) ज्वर और अतिसार । (ख) तृषा
(ग) पित्तजन्यवान्ति (घ) त्रिदोषजन्यवान्ति
(ङ) ज्वर, प्रलाप, भ्रम, मोह, तृष्णा और वान्ति
(च) बालकको ज्वर और खांसीके सिवाय वान्ति भी होती हो । १५

५-(अ) रक्तपित्त, क्षय और खांसी हो तो क्या दीजियेगा ? ६
(आ) बालकोंकी कुकुरखांसी (डांग्याखोकला,) श्वेत-प्रदर और राजयक्ष्माकी चिकित्सा किस प्रकार कीजियेगा ?

६-अनन्दभैरव और सञ्जीवनी बनानेकी विधि लिखिये और यह भी बतलाइये कि इन्हें किन रोगोंमें किस प्रकार देना चाहिये । २०

पं० कृष्णशास्त्री कवड़े

नोट-इस विवरणके प्रथम २३ फार्म त्रिवेणी प्रेस दारागंजमें और शेष एडवर्ड प्रेस प्रयागमें मुद्रित हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

प्राक्कथन १
आयुर्वेदमहामण्डल ५
वैद्यसम्मेलनपत्रिका १६
सर्वसाधारणका आकर्षण १८
देशीनरेशोंका झुकाव २१
सरकार और आयुर्वेद २४
आसवअरिष्टपर अरिष्ट ३७
प्लेगमलेरिया कमीशन ४०
म्युनिसिपलिटियोंमें वैद्य ४६
वैद्योंको अभिवचन ५१
विषोपविष समस्या ५३
नूतन-प्राचीन पुस्तकें ५७
बीमारोंका रजिस्टर-आयुर्वेद-निधि ५६
वैद्योंमें प्रेम और संघशक्ति ६१
सरकारी परीक्षाओंमें आयुर्वेद ७१
डेपुटेशन और उद्देशप्रचार ७२
धूर्तताका प्रचार ७४
रसायनोंकी सत्यतापर सन्देह ७५
देवीका टीका ७७
सहायक कोष ७७
आयुर्वैदिकफर्माकोपिया ८२
आयुर्वैदिकव्याख्यानमाला ८४
आयुर्वैदिकनकशे–उपाधिचिन्ह ८६
स्वागत कारिणी सभा ८७
आयुर्वैदिकबांट ६५
आयुर्वेदविद्यापीठ ६६
वैद्यक डाइरेक्टरी ११६
प्रान्तिकमन्त्रियोंकी रिपोर्ट १२५
सभाएं-पाठशालाएं-धर्मार्थ औषधालय १५२
सामयिकपत्र १८८
प्राप्तपुस्तकें १६३
आय व्ययका ब्योरा १६६
आयुर्वेदविद्यापीठके सदस्य २०८
आयुर्वेदमहामण्डलके सभासद २२२
प्रश्नपत्र । २२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डल-कार्यालयकी पुस्तकें।

तृतीयवैद्यसम्मेलनकी रिपोर्ट–सम्मेलनका विस्तृतविवरण और १३ निबन्ध तथा प्रसिद्ध वैद्यराजोंके अनुभूत प्रयोग हैं। दाम ॥।)

सभापतिकी वक्तृता–तृतीय वैद्यसम्मेलनके सभापति कविराज गणनाथसेन एम. ए. एल. एम. एस. विद्यानिधि, कविभूषण, वैद्यावतंसकी परमोत्कृष्टवक्तृता ॥)।

चतुर्थवैद्यसम्मेलनके सभापति वैद्यरत्न कविराज योगीन्द्रनाथ सेन एम. ए. विद्याभूषणकी उत्तम वक्तृता दाम ।)

पंचमवैद्यसम्मेलनके सभापति लेफ्टिनेण्ट कर्नल कान्होबा रणछोडदास कीर्तिकर आई. एम. एस. की नूतनता पूर्ण वक्तृता दाम =) अंग्रेजीका =)

षष्ठवैद्यसम्मेलनके सभापति वैद्यरत्न पण्डित लक्ष्मीराम स्वामी आयुर्वेद मार्तण्डकी महत्व पूर्ण वक्तृता ।-)

आयुर्वेदका वार्षिक इतिहास–इसमें भारतवर्षमें आयुर्वेदिक आन्दोलन कौन कहां, कैसा हो रहा है उसका सविस्तर विवरण रहता है। सं० १९७० का दाम ।-) सं० १९७१ का ।-)

वैद्यसम्मेलन पत्रिका-इसमें विविध प्रकारके निबन्ध, अनुभूतप्रयोग और आयुर्वेदिक घटनाओंपर लेख आया करते हैं। दाम २).

नोट–वैद्यसम्मेलन पत्रिका सभासदोंको मुफ्त और उक्त पुस्तकें आधे दामोंमें मिलेंगी। सभासदों को प्रतिवर्ष २) फीस देनी पड़ती है।

पता–

मन्त्री आयुर्वेदमहामण्डल

दारागंज–प्रयाग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar